

इवान तुर्गेनेव





इवान तुर्गेनेव

पिता और पुत्र



रादुगा प्रकाशन
मास्को



पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

अनुवादक : श्याम दुबे

Иван Тургенев
НАКАНУНЕ. РОМАН

На яз. хинди

I. S. TURGENEV
ON THE EVE. A NOVEL

In Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

ISBN 5-05-001087-x

...मेरे उपन्यास 'रूदिन' को, जो मैंने क्रीमिया युद्ध के दिनों में गांव में लिखा था, एक साहित्यिक कृति के रूप में सराहा गया। 'सव्रेमेन्निक' (समकालीन) पत्रिका के सम्पादकों से अधिक, जिसमें उपन्यास छपा था, उसकी प्रशंसा पाठकों ने की। ...

'कुलीन घराना' जितना लोकप्रिय हुआ, उतनी अधिक सफलता मेरी किसी अन्य रचना को कभी नहीं मिली। इस उपन्यास के प्रकाशन के समय से मेरी गिनती ऐसे लेखकों में होने लगी जिनकी ओर लोगों को ध्यान देना चाहिए।

'पूर्ववेला' को कहीं कम सफलता मिली हालांकि पत्र-पत्रिकाओं में इसके बारे में जितने लेख छपे, उतने मेरे किसी भी दूसरे उपन्यास के बारे में नहीं लिखे गये। (कहने की आवश्यकता नहीं कि दोब्रोल्यूबोव का लेख उनमें अग्रणी था)। ...

आशा है मेरे पाठक मुझे क्षमा करेंगे अगर मैं यहां, इसी 'पूर्ववेला' को लेकर अपने साहित्यिक जीवन की एक छोटी सी घटना की चर्चा करूं।

१८५५ का लगभग पूरा साल (उससे पहले के तीन सालों की तरह) मैंने ओर्लोव प्रांत के मत्सेंस्क ज़िले में, अपने गांव में बिताया और कहीं बाहर नहीं गया। पड़ोसियों में पच्चीस वर्षीय युवा ज़मींदार, वासीली करातेयेव मेरे सबसे निकट थे। वह बड़े रोमानी, उत्साही जीव थे। साहित्य व संगीत से उन्हें अत्यंत प्रेम था, हंसी-मज़ाक़ का उनका अपना अंदाज़ था और साथ ही वह तबियत के शौक़ीन, भावुक और स्पष्टवादी व्यक्ति थे। मास्को यूनीवर्सिटी में उन्होंने शिक्षा पायी थी और गांव में अपने पिता के पास रहा करते थे, जिनको हर तीन साल में एक बार पागलपन का दौरा पड़ता था। करातेयेव की एक बहन थीं – बड़ी ही लाजवाब हस्ती, लेकिन

वह भी आख़िर में पागल हो गयीं। इन सब लोगों की मृत्यु हुए काफ़ी समय हो गया है, इसीलिए मैं इतनी बेफ़िक्री से उनके बारे में बता रहा हूं। कारातेयेव अपने को खेतीबारी के लिए मजबूर करते थे, हालांकि उसके बारे में जानते लगभग कुछ नहीं थे। पढ़ने का उन्हें ख़ास शौक़ था और मन के माफ़िक लोगों से बातें करने में उन्हें मज़ा आता था। ऐसे जीव इने-गिने ही थे। अपनी आज़ाद-ख़्याली और तीखी ज़बान की वजह से वह पड़ोसियों को पसंद नहीं थे। फिर उनके साथ जुड़ गयी नामवरी – ख़तरनाक क़िस्म के आशिक़ होने की नामवरी के कारण पड़ोसी लोग उन्हें अपनी बेटियों और पत्नियों से मिलाने में डरते थे हालांकि असल में वह उस नामवरी के हक़दार नहीं थे। मेरे यहां वह अक्सर आ जाते थे और उस काल में जब मेरा 'मूड' कोई ख़ास अच्छा नहीं था, उनका आना ही मेरे लिए मन बहलाने और कुछ ख़ुश होने का लगभग एकमात्र साधन था।

जब क्रीमिया युद्ध शुरू हुआ और कुलीनों को वालंटियर गार्ड दस्ते के लिए भरती किया जाने लगा तो हमारे ज़िले के कुलीन लोगों ने, जो कारातेयेव से ख़ार खाते थे, उनकी अक़्ल दुरुस्त करने के लिए उन्हें दूर भगाने का फ़ैसला किया और इसी गार्ड दस्ते का अफ़सर चुन लिया। अपनी नियुक्ति की ख़बर सुनकर कारातेयेव मेरे पास आये। उनका उखड़ा-उखड़ा, बदहवास चेहरा देखकर मैं चौंक गया। उनके पहले ही शब्द थे, "वहां से मैं ज़िंदा नहीं लौटूंगा; यह मुझसे बर्दाश्त नहीं होगा; वहां मैं मर जाऊंगा।" तंदुरुस्त होने का वह दावा नहीं कर सकते थे। सीने में बराबर दर्द रहता था और काठी भी उनकी कमज़ोर थी। मोर्चे की तमाम मुश्किलों के ख़्याल से ख़ुद मुझे उनके लिए डर लगता था, लेकिन मैंने उनकी आशंकाओं को दूर करने की कोशिश की। मैं विश्वास दिलाने लगा कि साल बीतते-बीतते हम फिर से मेरे इसी दूर-दराज़ बसेरे में मिलेंगे, साथ बैठेंगे, बातें करेंगे और पहले की तरह बहस करेंगे। मगर वह अपनी बात पर अड़े रहे। बाग़ में हम लोग काफ़ी समय टहले। यकायक मेरी ओर मुख़ातिब होकर वह बोले, "आपसे मेरी एक विनती है। आप जानते हैं कि कुछ बरस मैं मास्को में रहा था, लेकिन आपको मालूम नहीं कि वहां मेरे साथ एक घटना

घटी थी, जिसने मेरे मन में ख़ुद अपने को और दूसरों को उसके बारे में बताने की इच्छा पैदा कर दी। मैंने कोशिश की, मगर मैं समझ गया कि मेरे अंदर कोई साहित्यिक प्रतिभा नहीं है। आख़िर में हुआ यह कि मैंने एक कॉपी भर दी, जो मैं आपको दे रहा हूं।" यह कहते हुए उन्होंने जेब से पंद्रह पृष्ठों की एक पतली सी कॉपी निकाली और बोले, "दोस्त जैसी सांत्वना की आपकी तमाम बातों के बावजूद में जानता हूं कि मैं क्रीमिया से वापस नहीं लौटूं-गा, इसलिए मेहरबानी करके यह मसौदा ले लीजिए और इससे कुछ बना दीजिए ताकि इसका भी वही हश्र न हो जाये, जो मेरा होने जा रहा है!" मैं इंकार करनेवाला था, परन्तु यह देखकर कि मेरी इंकारी से उनको चोट लगेगी, मैंने उनकी इच्छा पूरी करने का वचन दे दिया। कारातेयेव के चले जाने पर उसी शाम को मैंने उनकी दी हुई कॉपी पढ़ डाली। उसमें सरसरी तौर पर जो लिखा था वही बाद में 'पूर्ववेला' की विषय-वस्तु बना। कहानी अंत तक नहीं लिखी गयी थी और बीच में टूट गयी थी। मास्को में अपने निवास के समय कारातेयेव एक युवती को प्यार करने लगे थे और युवती को भी उनसे मोहब्बत थी। लेकिन एक बलगार कतरानोव से मिलने पर वह उसकी दीवानी हो गयी और उसके साथ बलगारिया चली गयी, जहां कतरानोव की जल्दी ही मृत्यु हो गयी। (बाद में मुझे मालूम हुआ, कि एक वक़्त वह व्यक्ति काफ़ी मशहूर था और आज भी स्वदेश में उसे भुलाया नहीं गया है।) प्रेम की यह कहानी ईमानदारी के साथ, हालांकि अटपटे ढंग से बतायी गयी थी। कारातेयेव वास्तव में जन्मजात लेखक नहीं थे। केवल एक दृश्य – ज़ारीत्सिनो के लिए प्रस्थान का वर्णन सजीव ढंग से किया गया था और मैंने अपने उपन्यास में उसकी मुख्य बातें बरक़रार रखी हैं। असल में उन दिनों दूसरे ही पात्र मेरे दिमाग़ में घूमा करते थे। मैं 'रूदिन' लिखने जा रहा था। वही समस्या, जो बाद में मैंने 'पूर्ववेला' में सुलझाने की कोशिश की, कभी-कभी मेरे सामने आ जाती थी। प्रधान नायिका येलेना का रूप, जो उस समय के रूसी जीवन में कुछ नये ढंग का था, मेरी कल्पना में काफ़ी स्पष्ट उभर आया था। परंतु ऐसा नायक नहीं बन पा रहा था, जिस पर स्वतंत्रता की अभी धुंधली

सी, फिर भी प्रबल आकांक्षा रखनेवाली येलेना अपना सर्वस्व निछावर कर दे। करातेयेव की कॉपी पढ़ने पर बरबस ही मेरे मुंह से निकल पड़ा, "यही तो वह नायक है, जिसे मैं खोज रहा था!" उस काल के रूसियों में ऐसा व्यक्ति नहीं था। अगले दिन कारातेयेव से मिलने पर मैंने न केवल उनका अनुरोध पूरा करने का अपना संकल्प दोहराया बल्कि उनका शुक्रिया भी अदा किया, क्योंकि उन्होंने उधेड़बुन से मुझे उबार लिया था और मेरी कल्पना व सोच-विचार के अंधेरे में प्रकाश की किरण पहुंचा दी थी। इस से कारातेयेव बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने एक बार फिर कहा, "इस सबको मरने न दीजिएगा" और वह सैनिक सेवा के लिए क्रीमिया चले गये। वहां से वह नहीं लौटे, जिसका मुझे बड़ा खेद हुआ। उनका डर सही साबित हुआ। हमारे ओर्लोव के गार्ड दस्ते को सड़े सागर* के पास मिट्टी की कोठरियों में टिकाया गया था और वहीं, चौकी पर टायफ़ाइड से उनकी मृत्यु हो गयी। इस दस्ते ने पूरी लड़ाई के दौरान एक भी दुश्मन की शक्ल नहीं देखी, पर तरह-तरह की बीमारियों की वजह से लगभग आधे लोगों को गंवा दिया। अपने वचन की पूर्ति मुझे स्थगित करनी पड़ी क्योंकि मैं दूसरे काम में फंसा था। 'रूदिन' पूरा करने के बाद मैं 'कुलीन घराना' लिखने में लग गया। १८५८–१८५९ की सर्दियों में ही, जब मैं फिर से उसी गांव और उसी वातावरण में रहने लगा, जिसमें कारातेयेव से मेरा परिचय हुआ था, मुझे महसूस हुआ कि सोयी पड़ी अनुभूतियां कुलबुला रही हैं। मैंने उनकी कॉपी खोजकर पढ़ डाली और जो पात्र कहीं पीछे हट गये थे, एक बार फिर सामने आ गये। बस उसी क्षण मैंने लिखने के लिए क़लम उठा ली। जो मैंने यहां बताया है, मेरे कुछ परिचितों को उसी समय मालूम हो गया था। लेकिन आज, अपने उपन्यासों के सम्पूर्ण संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर यह सब पाठकों को बताना और भले ही कुछ देरी से, परंतु बेचारे नौजवान दोस्त को याद करके उनका पावना देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

---

* आज नाम है सेवाश खाड़ी।

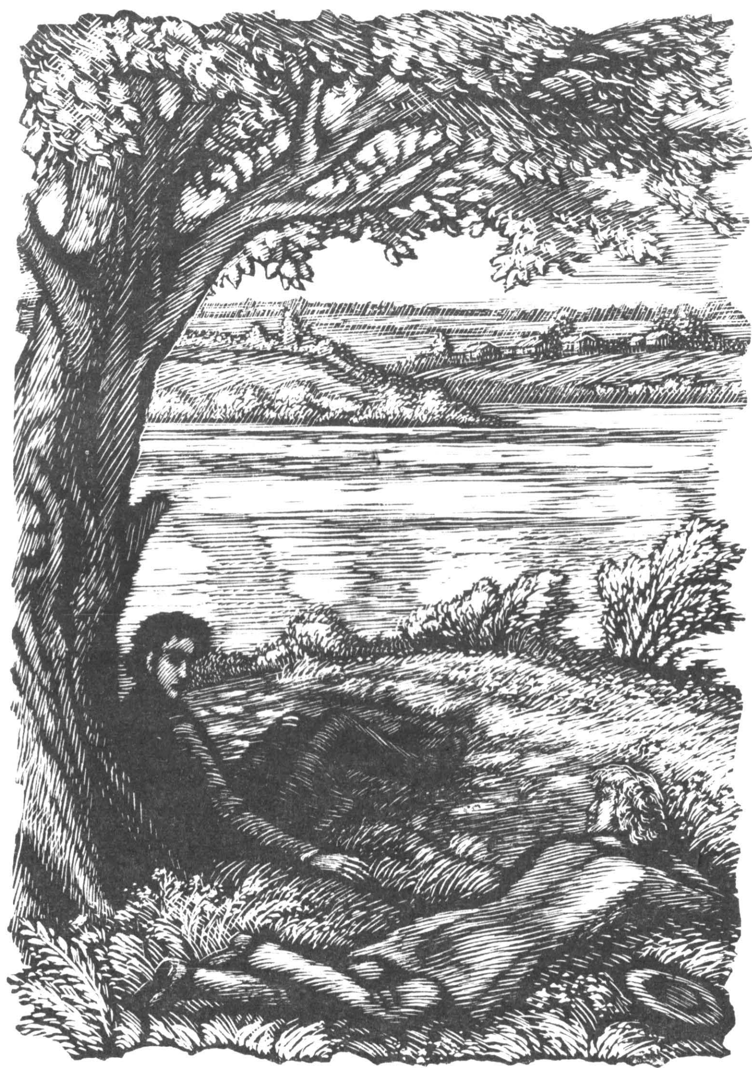
तो इस तरह एक बलगार मेरे उपन्यास का नायक बना। आलोचक महोदयों ने बारी-बारी से इस चरित्र को कृत्रिम और जीवन रहित बताकर मुझे झिड़कियां दीं, एक बलगार को ही नायक बनाने के मेरे अनोखे विचार पर आश्चर्य व्यक्त किया और पूछा, "आखिर क्यों? किस कारण से? तुक क्या है?" मामला सीधा-सादा था, परंतु उस समय मैंने उसे स्पष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं देखी।...

इवान तुर्गेनेव

१

बात १८५३ के ग्रीष्म काल की है। उस दिन शिद्दत की गर्मी थी। दो नौजवान कुन्त्सोवो से कुछ दूर, मास्को नदी के किनारे लिंडन के एक विशाल पेड़ की छाया में घास पर लेटे थे। उनमें से एक, जो देखने में कोई तेईस बरस का लगता था, क़द का लम्बा और रंग में थोड़ा सांवला था। नाक नुकीली, कुछ-कुछ टेढ़ी थी और माथा चौड़ा। होंठों में हल्की सी मुस्कान दबाये वह सीधा लेटा था और अपनी भूरी आंखों को सिकोड़कर जैसे कुछ सोचते हुए, दूर नज़र गड़ाये था। दूसरा, जो पेट के बल लेटा था, घुंघराले, सुनहरे बालोंवाला अपना सिर दोनों हाथों पर टेके था और वह भी कहीं दूर देख रहा था। अपने साथी से वह तीन बरस बड़ा था, लेकिन लगता छोटा था। उसकी रेख फूट ही रही थी और ठोड़ी पर हल्के से रोयें नज़र आते थे। उसके खिले गोल चेहरे, प्यारी कत्थई आंखों, सुंदर भरे हुए होंठों और सफ़ेद हाथों की नज़ाकत बालक जैसी और आकर्षक थी। उसके अंग-अंग से स्वास्थ्य की, यौवन की सुखद किरणें फूट रही थीं – यौवन जो निश्चिंत, आत्म-संतुष्ट और मनमौजी था। उसने नज़र घुमायी, मुस्कराया और एक ऐसे बालक की तरह सिर ऊपर उठाया जो जानता है कि लोगों को उसे देखना अच्छा लगता है। वह ढीला सा सफ़ेद लम्बा कोट पहने था, नीला रूमाल उसकी पतली गर्दन के इर्द-गिर्द लिपटा था और पास ही घास पर तीलियों का पिचका हुआ टोप पड़ा था।

तुलना में उसका साथी बड़ा-बूढ़ा लगता था और उसकी बेढब आकृति को देखकर कोई नहीं कहता कि वह भी मौज में है और आनंद ले रहा है। वह बेढंगा लेटा था और बड़ा सा सिर, जो ऊपर चौड़ा और नीचे नुकीला था, उसकी लम्बी गर्दन पर अटपटा



जान पड़ता था। उसके हाथों की स्थिति, छोटे, काले फ़ॉक-कोट में कसा उसका धड़ और अंखफोड़वे के पिछले पैरों जैसी उठे घुटनों-वाली उसकी लम्बी टांगें बेढंगापन और बढ़ा रही थीं। परंतु वह निस्संदेह एक "शरीफ़" आदमी था और उसके समूचे ऊट-पटांग व्यक्तित्व पर "शराफ़त" की छाप थी। चेहरा मामूली और कुछ हास्यजनक होते हुए भी दिखाता था कि वह गंभीरता से सोचा करता है और दिल का नेक है। उसका नाम था अंद्रेय पेत्रोविच बेरसेनेव। और उसका दोस्त, सुनहरे बालोंवाला नौजवान पावेल याकोव्लेविच शूबिन था।

"तुम मेरी तरह पेट के बल क्यों नहीं लेटते?" शूबिन ने बात शुरू की। "इसमें कहीं ज़्यादा आराम है। ख़ास तौर से अगर तुम अपने पैरों को उठाओ और एड़ियों को टकराओ–देखो, इस तरह। घास ठीक नाक के नीचे है। नज़ारा देखते-देखते थक जाओ तो डंठल पर रेंगते बड़पेटू गोबरैला को देखने लगो। नहीं तो हमेशा काम में लगी चींटियां हैं। मेरी मानो, यह बेहतर है। और तुमने कार्डबोर्ड की पहाड़ी का सहारा लिए बैले नर्त्तकी जैसी क्लासिकी मुद्रा बना रखी है–न हिलना, न डुलना। सोचो तो, अब तुम्हें आराम करने का पूरा हक़ है। एम० ए० हो गये हो–आख़िर कोई मज़ाक है! आराम कीजिए, जनाब, हाथ-पैर पसारकर ज़रा सुस्ता लीजिए।"

शूबिन ने यह सब नकसुरी आवाज़ में, अलसाये ढंग से कुछ मज़ाकिया लहज़े में कहा (जैसे बिगड़े हुए बच्चे घर के दोस्तों से कहते हैं जो उनके लिए टॉफ़ी लाते हैं)। जवाब न मिलने पर उसने कहना जारी रखा:

"चींटियों, झींगुरों और कीड़ों-मकोड़ों की दुनिया की दूसरी हस्तियों की जिस बात से मैं एकदम दंग रह जाता हूं वह है उनकी आश्चर्यजनक गंभीरता। आगे-पीछे ऐसे ग़रूर के साथ दौड़ते हैं मानो इनकी ज़िंदगी का भी कोई मतलब हो। मानव–सृष्टि का सिरमौर, उच्च कोटि का प्राणी इनको देखता है और इन्हें रत्ती भर परवाह नहीं। अरे, मच्छर तो उड़कर सीधा सृष्टि के सिरमौर की नाक पर आ बैठेगा और उसका रक्तपन करने लगेगा। कैसा अपमान है! लेकिन अगर दूसरी दृष्टि से देखा जाये तो इनका

जीवन हमारे जीवन से किस माने में घटिया है? और अगर अकड़ के मारे हमारे पैर ज़मीन पर नहीं पड़ते, तो ये भी क्यों न अकड़ें? तो दार्शनिक महोदय, ज़रा इस समस्या का समाधान कीजिए! चुप क्यों हो? क्या बात है?"

"क्या ..." बेरसेनेव ने चैतन्य होते हुए कहा।

"क्या!" शूबिन ने दोहराया। "तुम्हारा मित्र तुम्हारे आगे गहन विचारों का प्रतिपादन कर रहा है और तुम सुनते भी नहीं।"

"मैं दृश्य में खो गया था। देखो, ये खेत धूप में कैसे चमचमा रहे हैं!" (बेरसेनेव कुछ तुतलाता था।)

"रंग निखर आये हैं," शूबिन ने कहा। "यह प्रकृति का ठाठ है!"

बेरसेनेव ने सिर हिलाया।

"तुम्हें तो मुझसे अधिक इस सबमें तन्मय हो जाना चाहिए था। यह तुम्हारा ही क्षेत्र है: तुम कलाकर हो।"

"नहीं जनाब, यह मेरा क्षेत्र नहीं है," शूबिन ने इंकार किया और सिर पर पीछे को हैट लगा लिया। "मैं, जनाब, मांसप्रेमी हूं। मांस से वास्ता रखता हूं। मैं मांस गढ़ता हूं – कंधे, पैर, हाथ और यहां कोई आकृति ही नहीं है। समग्रता नहीं है – सब कुछ सब तरफ़ बिखरा हुआ है। ... कौन पकड़ेगा?"

"परंतु इसमें भी सौंदर्य है," बेरसेनेव ने कहा। "अरे हां, तुम्हारा उत्कीर्ण-चित्र पूरा हो गया?"

"कौन सा?"

"'बच्चा और बकरी' वाला।"

"वह भाड़ में जाये! दफ़ा हो जाये!" शूबिन ने एक ही स्वर में कहा। "मैंने पुराने उस्तादों की असली चीज़ें देखीं, प्राचीन कृतियां देखीं और अपना कूड़ा फेंक दिया। तुम मुझे प्रकृति दिखाते हो और कहते हो, 'इसमें भी सौंदर्य है।' सौंदर्य हर चीज़ में है, तुम्हारी नाक में भी है, लेकिन इंसान हर सौंदर्य के पीछे मारा-मारा नहीं फिर सकता। पुराने लोग सौंदर्य के पीछे नहीं दौड़ते थे, वह स्वयं ही उनकी कृतियों में आ जाता था – भगवान जाने कहां से, शायद स्वर्ग से! सारी दुनिया उनकी पहुंच के भीतर थी,

मगर हम उसे पकड़ नहीं सकते, हम तो बौने हैं। हम एक जगह बंसी डाल लेते हैं और इंतज़ार करते हैं। मछली फंस गयी, वाह-वाह! और अगर नहीं फंसी ..."

शूबिन ने ज़बान निकाल दी।

"ठहरो, ठहरो!" बेरसेनेव ने टोका। "इसमें विरोधाभास है। अगर तुम सौंदर्य का अनुभव नहीं करोगे, जहां कहीं वह तुम्हारे सामने आयेगा, तुम उसकी सराहना नहीं करोगे, तो वह तुम्हें तुम्हारी कला में भी प्राप्त नहीं होगा। अगर सुंदर दृश्य देखकर, मधुर संगीत सुनकर तुम्हारे हृदय के तार नहीं बजते, मेरा मतलब है, अगर तुम उन्हें अनुभव नहीं करते ..."

"वाह रे अनुभवकर्त्ता!" शूबिन बीच में बोला और फिर इस नये शब्द की ईजाद पर ख़ुद ही हंस दिया। उधर बेरसेनेव कुछ सोचने लगा। "नहीं भाई," शूबिन ने कहा, "तुमसे बहस कौन कर सकता है, तुम विद्वान हो, दर्शनशास्त्री हो, मास्को यूनीवर्सिटी से एम० ए० कर लिया है (मुझ सा व्यक्ति तो कभी नहीं, जिसने पढ़ाई भी पूरी नहीं की)। लेकिन मैं तुम्हें एक बात बता दूं। अपनी कला के अलावा मैं केवल नारियों के ... युवतियों के सौंदर्य को प्यार करता हूं ... और यह प्यार भी कुछ समय पहले ही मेरे मन में जगा है। ..."

वह पीठ के बल हो गया और हाथों को सिर के नीचे रख लिया।

कुछ क्षण कोई नहीं बोला। धूप में चमकती, ऊंघती सी धरती पर दोपहर की निश्चलता छायी थी।

"औरतों की बात छिड़ी है," शूबिन फिर बोला, "तो स्ताख़ोव पर कोई अंकुश क्यों नहीं रखता? तुम मास्को में उससे मिले थे?"

"नहीं।"

"बूढ़े का सिर एकदम फिर गया है। दिन-दिन भर अपनी अव्गुस्तीना ख़्रिस्तिआनोव्ना के पास बैठा रहता है। बहुत ऊबता है पर बैठा रहता है। बेवकूफ़ों की तरह एक-दूसरे को घूरते हैं। ... देखने से कोफ़्त होती है। कैसा तमाशा है! भगवान ने उसे अच्छा परिवार दिया, लेकिन नहीं, उसे अव्गुस्तीना ख़्रिस्तिआनोव्ना

चाहिए! ऐसी मनहूस सूरत मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देखी। पिछले दिनों मैंने उसकी एक विरूप-मूर्ति बनायी दांतिन* की शैली में। बुरी नहीं है, तुम्हें दिखाऊंगा।"

"और येलेना निकोलायेव्ना की वक्ष-मूर्ति?" बेरसेनेव ने पूछा। "काम कुछ बढ़ा?"

"नहीं भाई, नहीं बढ़ता। वह चेहरा हताश कर देता है। देखो तो चेहरे की रेखाएं स्पष्ट और सीधी हैं। लगता है गढ़ना मुश्किल नहीं होगा। लेकिन बनता नहीं। गढ़े ख़ज़ाने की तरह कुछ हाथ नहीं लगता।... तुमने नोट किया न, वह कैसे सुनती है? चेहरे की किसी भी रेखा में अंतर नहीं आता, बस दृष्टि बदलती रहती है और उससे पूरी आकृति बदल जाती है। ऐसे में मूर्तिकार क्या करे, सो भी अगर अधकचरा हो? आश्चर्यजनक हस्ती है... अनोखी हस्ती है," उससे पल भर चुप रहकर जोड़ दिया।

"हां, आश्चर्यजनक युवती हैं," बेरसेनेव ने दोहराया।

"और बेटी है निकोलाई स्ताख़ोव की! इसके बाद सोचो ख़ून और नस्ल के बारे में। मज़े की बात यह कि वह उसी की बेटी है। उससे नाक-नक़्शा मिलता है और मां आन्ना वसील्येव्ना से भी मिलता है। आन्ना वसील्येव्ना का मैं हृदय से आदर करता हूं। उन्होंने मेरा उपकार किया। लेकिन सच मानो, हैं भोंदू। येलेना को आत्मा कहां से मिल गयी? यह ज्योति किसने जगायी? दार्शनिक महोदय, तुम्हारे लिए यह एक और पहेली है!"

परंतु "दार्शनिक" ने पहले की तरह कोई उत्तर नहीं दिया। बेरसेनेव को बातें करने का रोग नहीं था और जब बोलता था तो अटपटे ढंग से। अटक-अटक कर और फिजूल ही हाथ हिलाते हुए वह अपनी बात कहता था। इस समय विशेष रूप से एक अजीब नीरवता उसकी आत्मा में व्याप रही थी जो शिथिलता और उदासी के समान थी। हर रोज़ कई-कई घंटे के लम्बे, थका देनेवाले काम के बाद उसने हाल ही में शहर के बाहर डेरा डाला था। निष्क्रियता, विश्राम, साफ़ हवा, लक्ष्य प्राप्त होने की अनुभूति, दोस्त के साथ बेफ़िक्री से बेसिरपैर की बातें और यकायक प्रिय पात्र के रूप का

---

* १९वीं सदी के फ़्रांसीसी मूर्तिकार, विरूप-चित्रकार।

स्मरण – इन सभी अलग-अलग, लेकिन फिर भी किसी अनोखे सूत्र से जुड़ी हुई अनुभूतियों ने मिलकर उसके अंतरतम में एक आम भावना पैदा कर दी थी जिससे सकून मिलता था, उत्तेजना बढ़ती थी और जो उसे निढाल भी कर देती थी। ... वह अत्यंत भावुक नौजवान था।

लिंडन के पेड़ के नीचे ठंडक और शांति थी, उसकी छाया में उड़कर आनेवाली मक्खियों और मधु-मक्खियों का गुंजन मानो कोमल हो जाता था। पन्ने जैसे रंग की स्वच्छ घास जिससे पीली झलक कोसों दूर थी, ज़रा भी नहीं हिल रही थी। लम्बे डंठल भी जैसे किसी जादू के ज़ोर से निश्चल खड़े थे। लिंडन की निचली डालों पर पीले फूलों के छोटे-छोटे गुच्छे बेजान लटके थे। हर सांस के साथ प्यारी महक सीधी फेफड़ों में घुस आती थी और फेफड़े उसका स्वागत करने को अधीर थे। नदी के उस पार, दूर क्षितिज तक सब कुछ चमक रहा था, देदीप्यमान हो उठा था। कभी हवा का झोंका आकर चमचमाहट को बिखेरने लगता था, जिससे वह और प्रखर हो जाती थी। किरणें सी बिखेरती धुंध धरती के ऊपर लहरा रही थी। चिड़ियों का चहचहाना सुनायी नहीं पड़ता था – गर्मी में वे कभी नहीं गातीं। हां, अंखफोड़वे हर तरफ़ चूं-चूं कर रहे थे। छाया की ठंडक में शांति से बैठना और जीवन का यह स्पंदन सुनना आनंददायी था, जो आंखों में ख़ुमारी लाता था और कल्पना-जगत में पहुंचा देता था।

"तुमने कभी देखा है," अचानक बेरसेनेव ने बोलने में सहूलियत के लिए हाथ हिलाते हुए कहा, "यह प्रकृति हमारे भीतर कैसी अनोखी भावना जगाती है? वह कितनी सम्पूर्ण, कितनी स्पष्ट, मेरा मतलब है, कितनी आत्म-संतुष्ट है – और हम यह समझते हैं, इसकी सराहना करते हैं। लेकिन दूसरी ओर वह सदा ही, कम से कम मेरे भीतर, एक बेचैनी, एक घबराहट, बल्कि कहना चाहिए , उदासी पैदा कर देती है। इसका अर्थ क्या है? उसके आगे, उसका सामना होने पर क्या हमें ज़ोरों से अहसास नहीं होता कि हम कितने अपूर्ण, कितने अस्पष्ट हैं? या फिर जिससे वह संतुष्ट हो जाती है वह हमारे लिए अपर्याप्त है और दूसरी ओर – मेरा मतलब है, जो हमें चाहिए वह उसके पास नहीं है?"

"हूं," शूबिन बोला, "अंद्रेय पेत्रोविच, मैं तुम्हें बताऊं, इस सबका कारण क्या है। तुम एकाकी प्राणी की अनुभूतियों की बात करते हो जो जीता नहीं है, केवल देखता है और पुलकित हो उठता है। देखो क्यों? जियो और तुम्हारी पौबारह। प्रकृति के द्वार पर चाहे जितनी दस्तक दो, वह समझ में आनेवाली भाषा में कभी उत्तर नहीं देगी क्योंकि वह गूंगी है। तने तार की तरह वह झंकृत हो सकती है, लेकिन तुम यह आशा मत करो कि वह गीत गाने लगेगी। प्रत्युत्तर देती है जीवित आत्मा, सबसे पहले नारी की आत्मा। इसलिए, मेरे अच्छे दोस्त, मेरी तुम्हें सलाह है कि तुम कोई दिल की रानी ढूंढ लो और तुम्हारी सारी मायूसी उसी वक़्त छूमंतर हो जायेगी। जो तुम कहते हो हमें "चाहिए", वह यही है। सारी घबराहट, तमाम उदासी – यह सिर्फ़ एक तरह की भूख है। पेट को असली खाना दो और सब कुछ फ़ौरन ठीक हो जायेगा। भैया मेरे, विशाल जगत में तुम अपना स्थान ग्रहण करो, साकार और ठोस बनो। और तब इस 'प्रकृति' में क्या रखा है, इसकी तुक भी क्या है? तुम्हीं सुनो: प्रेम – कितना शक्तिशाली, कैसा ओजस्वी है यह शब्द। और प्रकृति – एकदम ठंडी, स्कूल की कक्षा की बात! और इसलिए (शूबिन ने गुनगुनाते हुए कहा), 'जय हो मार्या पेत्रोव्ना की! * नहीं, मार्या पेत्रोव्ना नहीं," उसने जोड़ दिया, "लेकिन क्या फ़र्क पड़ता है! कुछ समझे जनाब?"

बेरसेनेव ने सिर उठाकर ठुड्डी हथेलियों पर टिका ली।

"ठिठोली क्यों करते हो?" उसने अपने साथी की तरफ़ देखे बिना कहा। "चिढ़ाते क्यों हो? हां, तुम्हारी बात ठीक है: प्रेम एक महान शब्द है, महान भावना है... परंतु तुम बात किस प्रेम की कर रहे हो?"

शूबिन भी उठ बैठा।

"किस प्रेम की? किसी की भी, बशर्ते कि वह प्रेम हो। ईमानदारी की बात कहूं तो मेरे ख़्याल में अलग-अलग नमूने के प्रेम होते ही नहीं। अगर तुम प्रेम करते हो..."

"पूरे दिल से," बेरसेनेव ने जोड़ दिया।

---

* उस काल में विद्यार्थियों के एक लोकप्रिय गीत की पंक्ति।

"यह भी कोई कहने की बात है। दिल सेब तो है नहीं कि उसके टुकड़े कर दो। तुम प्रेम करते हो तो ठीक है। मैं चिढ़ा नहीं रहा था। मेरे हृदय में अब बड़ा स्नेह है, वह अत्यंत कोमल है।... मैं केवल समझाना चाहता था कि जो तुमने कहा, वैसा प्रभाव प्रकृति हम पर क्यों डालती है। इसलिए कि वह हमारे अंदर प्रेम की आवश्यकता पैदा करती है और स्वयं उसे पूरा करने की शक्ति नहीं रखती। वह हमें चुपचाप दूसरे आलिंगन – जीवित व्यक्ति के आलिंगन – की ओर धकेलती है और हम उसे समझते नहीं, उसी से कोई आशा करते हैं। ओह अंद्रेय, यह सूरज, यह आसमान, हमारे इर्द-गिर्द जो कुछ है, यह सब लाजवाब है और तुम ग़मगीन हो रहे हो। अगर इसी क्षण तुम्हारी प्रेयसी का हाथ तुम्हारे हाथ में होता, अगर वह हाथ और वह समूची नारी तुम्हारी होती, अगर तुम सब कुछ उसकी आंखों से देखते, अपनी एकाकी की नहीं, बल्कि उसकी भावना से महसूस करते, तो अंद्रेय, प्रकृति ने तुम्हारे अंदर उदासी और घबराहट पैदा न की होती। तब तुमने प्रकृति का सौंदर्य न देखा होता; उल्टे वही खुशी से नाचती होती, तुम्हारा तराना गाती होती क्योंकि तब तुमने उसे, गूंगी को ज़बान दे दी होती!"

शूबिन उचककर खड़ा हो गया और एक-दो बार आगे-पीछे चहलक़दमी की। उधर बेरसेनेव ने सिर झुका लिया और उसके चेहरे पर हल्की सी लाली दौड़ गयी।

"मैं तुमसे पूरी तरह सहमत नहीं हूं," वह बोला। "प्रकृति हमेशा उसकी ओर... (उसने कुछ हिचकिचाते हुए कहा) प्रेम की ओर संकेत नहीं करती। वह आतंकित भी करती है। वह भयंकर, दुर्बोध रहस्यों की याद भी दिलाती है। क्या हमें आत्मसात करना ही प्रकृति का काम नहीं है? क्या वह हमें निरंतर आत्मसात नहीं करती रहती? प्रकृति में जीवन और मृत्यु दोनों हैं। और मृत्यु भी उसमें जीवन जितनी ही मुखर है।"

"जीवन और मृत्यु प्रेम में भी हैं," शूबिन ने बीच में टोका।

"मिसाल के लिए," बेरसेनेव ने कहना जारी रखा। "अगर मैं वसंत में वन में – हरे कुंज में खड़ा हूं और मुझे लगता है कि

ओबेरोन की सींगी* की रोमानी ध्वनि मेरे कानों में आ रही हैं (ये शब्द कहते हुए बेरसेनेव कुछ झेंप गया), तो क्या यह भी ..."

"प्रेम की आकांक्षा है, सुख की आकांक्षा है, और कुछ नहीं!" शूबिन ने जोड़ दिया। "इस ध्वनि से और उस कोमल भावना, उस आशा से मैं भी परिचित हूं जो वन के एकांत में, उसके भीतर या फिर शाम के समय जब सूरज डूब जाता है, जब झाड़ियों के आगे नदी पर धुंध छा जाती है, उस समय खुले मैदान में मन के भीतर जाग जाती है। मैं तो वन से, नदी से, धरती से, आकाश से, बादल के हर टुकड़े और हर घास-पात से प्रेम की प्रतीक्षा करता हूं, सुख की कामना करता हूं। हर वस्तु में मैं उसके आने की आहट और उसका आवाहन सुनता हूं! 'रंगीन और रसिया है भगवान मेरा।' अपनी एक कविता मैंने इसी प्रकार आरंभ की थी। तुम मानोगे, पहली पंक्ति लाजवाब है। लेकिन दूसरी पंक्ति मैं रच न पाया। हमें सुख चाहिए! सुख! जब तक हम जवान हैं, जब तक हमारी सभी इन्द्रियां हमारे वश में हैं और जब तक हम पतन की ओर नहीं, उत्थान की ओर बढ़ रहे हैं!" फिर यकायक आवेग के साथ शूबिन ने कहा, "छोड़ो इस सबको! हम जवान हैं, कोई बदसूरत नहीं और गधे भी नहीं। सुख हम हासिल करके रहेंगे!"

उसने अपने घुंघराले बालों को झटका और विश्वास के साथ, बल्कि चुनौती सी देते हुए ऊपर आसमान की ओर ताका। बेरसेनेव ने अपनी आंखें उसकी तरफ़ उठायीं।

"सुख से बढ़कर क्या कुछ है ही नहीं?" उसने धीमे से कहा।

"है क्या?" शूबिन ने पूछा।

"अच्छा देखो, तुम और मैं, जैसा तुम कहते हो, जवान हैं और मान लो कि बुरे भी नहीं हैं। हममें से हरेक सुखी होना चाहता है। मगर यह 'सुख' शब्द क्या हम लोगों को एकजुट कर सकता है, हम दोनों में ऐसी लौ जगा सकता है कि हम कंधे से कंधा मिलाकर

---

* स्कैंडेनेवियाई दंत-कथा पर आधारित एक जर्मन कविता में जादूगर ओबेरोन प्रेमी जोड़े को एक सींगी भेंट करता है, जिसकी ध्वनि विपदाओं को दूर कर देती हैं।

आगे बढ़ें? इस शब्द में क्या स्वार्थ नहीं भरा है, मेरे कहने का मतलब है, क्या यह अलग-अलग नहीं कर देता?"

"और तुम ऐसे शब्द जानते हो जो एकजुट करते हैं?"

"हां, बहुत से हैं। तुम्हें भी मालूम हैं।"

"वाक़ई? बताओ तो।"

"कला ही ले लो क्योंकि तुम चित्रकार हो। फिर मातृभूमि, विज्ञान, स्वतंत्रता और न्याय हैं।"

"और प्रेम?" शूबिन ने पूछा।

"प्रेम भी मिलानेवाला शब्द है, लेकिन वह प्रेम नहीं जिसके लिए तुम बेताब हो। उपभोग का नहीं, बलिदानवाला प्रेम होना चाहिए।"

शूबिन की भौहों पर बल पड़ गये।

"वह जर्मनों के लिए ठीक है। मैं तो स्वयं अपने लिए प्रेम करना चाहता हूं। मैं पहला होना चाहता हूं।"

"पहला," बेरसेनेव ने दोहराया। "मुझे तो लगता है कि अपने को बाद में रखना हमारे जीवन का सारा उद्देश्य है।"

"अगर हर कोई वैसा करे जैसी तुम्हारी सलाह है," शूबिन ने मुंह बिचकाते हुए उलाहना दिया, "तो दुनिया में कोई अनन्नास नहीं खायेगा और हरेक 'पहले आप' करता रहेगा।"

"मतलब यह हुआ कि अनन्नास की ज़रूरत नहीं है। बहरहाल, तुम फ़िक्र मत करो, दूसरे के मुंह का क़ौर छीननेवाले हमेशा मिल जायेंगे।"

कुछ क्षण दोनों दोस्त चुप रहे।

"पिछले दिनों इनसारोव से फिर मुठभेड़ हो गयी।" बेरसेनेव ने कहा। "मैंने उसे अपने यहां बुलाया है। तुमसे ज़रूर मिलाना चाहता हूं... और स्ताख़ोव परिवार से भी।"

"यह इनसारोव कौन है? अरे, वही सेर्ब या बलगार जिसके बारे में तुमने मुझसे कहा था? देशभक्त है? कहीं उसीने तो ये दार्शनिक विचार तुम्हारे अंदर नहीं ठूंसे हैं?"

"हो सकता है।"

"असाधारण जीव है वह, है न?"

"हां।"

"बुद्धिमान है? प्रतिभाशाली है?"

"बुद्धिमान? हां, है। और प्रतिभाशाली? मालूम नहीं। शायद नहीं है।"

"नहीं? तो फिर उसमें ख़ास बात क्या है?"

"देख लोगे। ख़ैर, मेरी समझ में चलने का वक़्त हो गया। आन्ना वसील्येव्ना हमारा इंतज़ार करती होंगी। कै बजे हैं?"

"दो बज गये। चलो चलें। कितनी गर्मी है! इस बातचीत ने मेरे अंदर आग लगा दी हैं। वो दिन भी थे जब तुम... आख़िर को मैं कलाकार ठहरा: सब कुछ भांप सकता हूं। साफ़-साफ़ बताओ, तुम्हें किसी नारी में दिलचस्पी है?"

शूबिन ने बेरसेनेव का चेहरा देखना चाहा, लेकिन उसने मुंह फेर लिया और लिंडन की छाया से बाहर निकल गया। शूबिन भी बेपरवाही से अपने छोटे-छोटे क़दम रखता हुआ उसके पीछे चल पड़ा। बेरसेनेव कंधे ऊंचे उठाये, गर्दन उचकाये बेढंगे तरीक़े से लपका जा रहा था, लेकिन तो भी वह शूबिन से ज़्यादा 'शरीफ़' जान पड़ता था। हम तो उसे 'जेन्टिलमेन' ही कह देते, मगर यह शब्द हमारे यहां एकदम बाज़ारू बन गया है।"

२

दोनों नौजवान मास्को नदी की तरफ़ उतरकर उसके किनारे-किनारे चलने लगे। पानी ताज़गी दे रहा था, मामूली लहरों की छप-छप मन को गुदगुदा रही थी।

"मैं फिर से नहा लेता, लेकिन डरता हूं, देर हो जायेगी।" शूबिन ने कहा। "नदी को देखो। लगता है हमें बुला रही है। प्राचीन यूनानियों को उसमें परी नज़र आती। मगर ओ परी हम नहीं यूनानी, हम हैं ख़रदिमाग़ स्किफ़ियानी*।"

"हमारे यहां जलपरियां हैं," बेरसेनेव ने टोका।

"तुम्हारी जलपरियों की भली चलायी! वे सहमी ठिठुरी कल्पना की उपज हैं, देहाती कोठरियों की घुटी हवा और जाड़ों

---

* शकों की एक शाखा जो भारत भी पहुंचे थे।

की अंधेरी रातों में जन्मी आकृतियां हैं – मुझ मूर्तिकार को उनसे क्या लेना? मुझे चाहिए प्रकाश और असीम विस्तार ... हे भगवान, आखिर मैं इटली कब जाऊंगा? कब ..."

"यानी तुम कहना चाहते हो, उक्रेन कब जाओगे?"

"अंद्रेय पेत्रोविच, उस बेवकूफ़ी, उस उतावलेपन के लिए मुझे कोंचते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती! यों ही मुझे उसके लिए बड़ा पछतावा है। हां, मैंने मूर्खता की थी, नेकदिल आन्ना वसील्येव्ना ने मुझे इटली जाने के लिए धन दिया और मैं ख़ोख़ोलों* के यहां पहुंच गया। गुलगुले पकौड़े खाने के लिए और ..."

"बात पूरी करने की ज़रूरत नहीं," बेरसेनेव ने रोक दिया।

"फिर भी मैं बता दूं कि वह पैसा बेकार नहीं फूंका। वहां मैंने कैसी-कैसी सूरतें देखीं – विशेष रूप से नारियों की ... हां यह मुझे मालूम है कि इटली जाये बिना मेरा निस्तार नहीं!"

"इटली तुम जाओगे," बेरसेनेव ने उसकी ओर देखे बग़ैर कहा, "और कुछ भी नहीं करोगे। सिर्फ़ पंख फड़फड़ाओगे, उड़ोगे नहीं। ... तुम जैसों की हम नस-नस पहचानते हैं!"

'स्तावास्सेर** तो उड़ने लगा था। और केवल वही नहीं। अगर मैं नहीं उड़ पाया तो समझ लो, मैं सागर का बेपर पेंगविन हूं। यहां मेरा दम घुटता है, इटली जाना चाहता हूं," शूबिन ने कहना जारी रखा। "वहां सूरज है, ख़ूबसूरती है ..."

इसी क्षण पगडंडी पर, जिससे दोस्त जा रहे थे, तीलियों का चौड़ा टोप लगाये और कंधे पर गुलाबी छतरी उठाये एक युवती आती दिखायी दी।

"देख क्या रहा हूं? ख़ूबसूरती यहां भी हमसे मिलने आ रही है।" शूबिन यकायक ज़ोर से बोला और नाटकीय अंदाज़ में अपना टोप लहराते हुए उसने कहा, "सुंदरी ज़ोया को एक अदना कलाकर का सलाम!"

युवती जिसके बारे में यह उद्गार था, ठिठक गयी। तर्जनी हिलाकर उसने ख़बरदार किया और जब दोस्त उसके पास आ गये

---

* उक्रेनियों को चिढ़ानेवाला नाम।

** १९वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के रूसी मूर्तिकार।

तो खनकती हुई, परंतु कुछ कंठगत आवाज़ में बोली:

"सज्जनो, आप लंच के लिए क्यों नहीं आते? खाना लग गया है।"

"सुन क्या रहा हूं?" शूबिन ने हाथ उचकाते हुए कहा। "क्या यह सच है कि आप, आराध्य-देवी ज़ोया इतनी गर्मी में हमें ढूंढने निकल पड़ीं?! आपके शब्दों का क्या मैं यही अर्थ समझूं? कहिए, क्या सचमुच ऐसी बात है? लेकिन नहीं, मत कहिए, वरना मेरे डूबने के लिए चुल्लू भर पानी काफ़ी होगा!"

"चुप भी रहिए, पावेल याकोव्लेविच।" युवती ने कुछ खीजते हुए मना किया। "मेरे साथ आप कभी भी गंभीरता से बात क्यों नहीं करते?" फिर नखरे के साथ होंठ फुलाते हुए उसने कहा, "मैं नाराज़ हो जाऊंगी।"

"बेजोड़ ज़ोया निकीतिश्ना, आप मुझसे नाराज़ मत होइये। आप मुझे घोर निराशा के अंधे कुएं में तो नहीं ढकेलना चाहतीं। गंभीरतापूर्वक बात करना मुझे नहीं आता क्योंकि मैं गंभीर आदमी नहीं हूं।"

युवती कंधे बिचकाकर बेरसेनेव की ओर मुखातिब हुई।

"यह मेरे साथ हमेशा ऐसा बर्ताव करते हैं, मानो मैं बच्ची होऊं। मैं अठारह पार कर चुकी हूं। बड़ी हो गयी हूं।"

"हे भगवान!" शूबिन ने आसमान की ओर आंखें उठाते हुए आह भरी। उधर बेरसेनेव चुपचाप मुस्करा दिया।

युवती ने पैर पटका।

"पावेल याकोव्लेविच! मैं बिगड़ जाऊंगी! हेलेन मेरे साथ आ रही थी," उसने कहा, "लेकिन बाग़ में ठहर गयी। वह धूप से डर गयी, लेकिन मैं नहीं डरती। चलिए।"

पगडंडी पर वह आगे-आगे चलने लगी। हर क़दम के साथ उसका छरहरा बदन बल खाता था और काले दस्ताने में छिपे हाथ से वह रेशमी लटें माथे से हटा देती थी।

दोनों दोस्त उसके पीछे चले। (शूबिन बिना कुछ कहे या तो हाथों से अपने दिल को थामता था या फिर उन्हें सिर के ऊपर उठा देता था।) कुछ ही मिनटों में वे कुन्त्सोवो के पास बने बहुत से बंगलों में से एक के सामने पहुंच गये। बाग़ के बीचोंबीच खड़ा





लकड़ी का एक छोटा सा घर जिसके ऊपर अटारी थी और जो गुलाबी रंग में पुता था, पेड़ों की हरियाली के पीछे से झांकता जान पड़ता था। ज़ोया ने आगे बढ़कर बाड़े का द्वार खोला, दौड़ती हुई बाग़ में पहुंची और चिल्लायी, 'घुमक्कड़ों को पकड़ लायी!' कुछ पीले, परंतु भावपूर्ण चेहरेवाली एक युवती रास्ते की बेंच से उठ खड़ी हुई। उधर सिल्क की कासनी ड्रेस पहने एक महिला घर की दहलीज़ पर आयीं और धूप से अपने को बचाने के लिए किमरिक का कढ़ा हुआ रूमाल सिर के ऊपर उठाकर शिथिल भाव से मुस्करा दीं।

३

आन्ना वसील्येव्ना स्ताख़ोवा, जो शूबिन परिवार में जन्मी थीं, सात वर्ष की अवस्था में ही अनाथ हो गयी थीं। विरासत में उन्हें काफ़ी बड़ी जायदाद मिली। उनके रिश्तेदार बहुत अमीर थे और बहुत ग़रीब भी। पितृकुल के लोग ग़रीब थे और ममाने के अमीर, जैसे कि सीनेट-सदस्य वोल्गिन और राजकुमार चिकुरासोव। उनके धर्मपिता राजकुमार अर्दालिओन चिकुरासोव ने उन्हें मास्को के सर्वोत्तम बोर्डिंग स्कूल में पढ़ाया और शिक्षा के बाद अपने घर ले आये। वह शान से रहते थे, सर्दियों में नृत्यों का आयोजन करते थे। ऐसे ही एक नृत्य के समय जब आन्ना वसील्येव्ना आकर्षक गुलाबी फ़ॉक पहने थीं और छोटे-छोटे गुलाब टंकी टुपिया केशों पर अटकी थी, उनके भावी पति निकोलाई अर्तेम्येविच स्ताख़ोव ने उनका दिल जीत लिया। वह टुपिया उन्होंने संजोकर रख ली।... निकोलाई स्ताख़ोव एक रिटायर्ड कप्तान के बेटे थे जो १८१२ में* घायल हो गये थे और इनाम के रूप में जिन्हें पीटर्सबर्ग में एक आमदनीवाली जगह मिल गयी थी। सोलह वर्ष की अवस्था में निकोलाई फ़ौजी स्कूल में भरती हुए और ट्रेनिंग के बाद गार्ड दस्ते में नियुक्त हो गये। वह एक ख़ूबसूरत, सुडौल नौजवान थे। औसत दर्जे की नृत्य-पार्टियों में, जहां वह, अभिजात जगत के द्वार उनके लिए बंद होने

---

* नेपोलियन के ख़िलाफ़ लड़ाई का समय।

के कारण आम तौर पर जाया करते थे, उन्हें अत्यंत आकर्षक माना जाता था। किशोरावस्था से ही उनके दो सपने थे – एक तो सम्राट का 'एडी-डी-कैम्प' बनना और दूसरे पैसेवाली युवती से शादी करना। पहला सपना जल्दी ही भंग हो गया, इसलिए दूसरे से वह और ज़्यादा चिपट गये। उसकी ख़ातिर वह हर साल सर्दियों में मास्को जाते थे। निकोलाई अर्तेम्येविच फ़ांसीसी अच्छी-ख़ासी बोल लेते थे और चूंकि ऐयाश-तबियत नहीं थे, इसलिए दार्शनिक कहे जाते थे। जब वह झंडाबरदार थे तभी उन्हें डटकर बहस करने का शौक़ पैदा हो गया था। मिसाल के लिए वह बहस करते थे कि क्या आदमी अपनी ज़िंदगी के दौरान पूरी पृथ्वी की परिक्रमा कर सकता है या क्या वह जान सकता है कि समुद्र की तली में क्या हो रहा है। और हमेशा उन्होंने इन्हें नामुमकिन बताया।

स्ताख़ोव ने आन्ना वसील्येव्ना को "फंसाया" तब तक वह पच्चीस बरस के हो गये थे। वह फ़ौज से रिटायर हो गये और जायदाद सम्हालने के लिए गांव चले गये। गांव की ज़िंदगी से वह जल्दी ही ऊब गये और चूंकि किसान मालगुज़ारी दिया करते थे, इसलिए वह मास्को आकर पत्नी के घर में रहने लगे। जवानी के दिनों में उन्होंने कोई खेल नहीं खेला था लेकिन अब लोट्टो का चस्का लग गया। लोट्टो की मनाही हुई तो ताश उठा लिए। घर से ऊबकर उन्होंने जर्मन वंश की एक विधवा से नाता जोड़ लिया और लगभग सारा समय उसके यहां बिताने लगे। १८५३ की गर्मियों में वह कुन्त्सोवो नहीं आये, मास्को में ही बने रहे – कहने के लिए 'सोडा वाटर' से इलाज के ख़्याल से लेकिन असल में वह उस विधवा से बिछुड़ना नहीं चाहते थे। यों तो उसके साथ भी वह बातें कम करते थे। ज़्यादा करते थे बहस कि क्या मौसम की भविष्यवाणी की जा सकती है या इसी तरह की कोई और बात। एक बार किसी ने उन्हें "नुक़्ताचीं" कह दिया। यह विशेषण उन्हें बहुत पसंद आया। आत्म-संतोष से बाछें खिलाकर आराम-कुर्सी पर झूलते हुए उन्होंने सोचा, "वाक़ई, मुझे पटाना आसान नहीं है, मुझे उल्लू नहीं बनाया जा सकता।" नुक़्ताचीनी भी उनकी ऐसी होती थी कि मान लीजिए उन्होंने सुना शब्द "शिरा" और बोल उठे, "यह शिरा बला क्या है?" या फिर किसी ने उनकी

उपस्थिति में नक्षत्रशास्त्र में उपलब्धि की बात की और उन्होंने टोक दिया, "क्या आप नक्षत्रशास्त्र में विश्वास करते हैं?" विरोधी को जब वह पूरी तरह धराशायी करने पर आमादा होते थे तो कहते थे, "ये सब बातें हैं—कोरी बातें।" मानना पड़ेगा कि बहुत से लोगों ने ऐसे तर्क को अकाट्य समझा—और आज भी समझते हैं। मगर स्ताखोव को कभी संदेह तक नहीं हुआ कि विधवा अव्गुस्तीना ख्रिस्तिआनोव्ना अपने चचेरी बहन को खत लिखते हुए उन्हें "मेरा बुद्धू" बताया करती थीं।

स्ताखोव की पत्नी आन्ना वसील्येव्ना नाटी, दुबली-पतली महिला थीं। नाक-नक़्शा नाज़ुक था और वह अकसर उत्तेजित और उदास हो जाती थीं। बोर्डिंग स्कूल में वह संगीत का अभ्यास करती थीं और उपन्यास पढ़ती थीं। बाद में यह सब छोड़ दिया और साज-सिंगार की धुन सवार हुई। फिर वह भी उतर गयी। बेटी की शिक्षा-दीक्षा में मन लगाया तो शक्ति ने साथ नहीं दिया और उसे गवर्नेस के हवाले कर दिया। तब उनका एक ही काम रह गया—उदास होना और परेशान रहना। येलेना निकोलायेव्ना के जन्म के समय उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था और कोई दूसरा बच्चा नहीं हो सकता था। स्ताखोव विधवा से अपनी घनिष्ठता की सफ़ाई देने के लिए इस बात की ओर इशारा कर देते थे। पति की बेवफ़ाई से आन्ना वसील्येव्ना को बड़ा क्लेश हुआ। विशेष पीड़ा की बात उनके लिए यह थी कि एक बार स्ताखोव ने उन्हें धोखा देकर उनके ही तबेले के दो भूरे घोड़े अपनी जर्मनिया को भेंट कर दिये थे। आन्ना वसील्येव्ना ने उनके मुंह पर कभी आक्षेप नहीं किया लेकिन पीठ-पीछे घर में बारी-बारी से हरेक के आगे, बेटी के आगे भी उनकी शिकायत की। कहीं आने-जाने का उन्हें शौक़ नहीं था लेकिन अगर कोई आकर उनके पास बैठ जाता था, उनसे बातें करता था तो उन्हें अच्छा लगता था। अकेली होते ही वह मुरझा जाती थीं। उनका हृदय अत्यंत कोमल व प्यारभरा था और ज़िंदगी को उन्हें कुचलने में समय नहीं लगा।

पावेल याकोव्लेविच शूबिन उनका दूर का भतीजा था। उसके पिता मास्को में सरकारी नौकरी करते थे। भाई फ़ौजी स्कूल में भरती हो गये थे। सबसे छोटा वही था, मां का लाड़ला था, सेहत

कमज़ोर थी। वह घर पर ही रहा। माता-पिता उसे यूनीवर्सिटी में भेजना चाहते थे। हाई स्कूल में पढ़ाया, जो आर्थिक स्थिति के कारण उनके लिए आसान नहीं था। छुटपन से ही उसमें मूर्तिकला की ओर रुझान नज़र आने लगा। एक बार भारी-भरकम सीनेट-सदस्य वोल्गिन ने उसकी चाची के यहां उसकी बनायी एक मूर्ति देखी (तब वह सोलह वर्ष का था) और ऐलान कर दिया कि प्रतिभासम्पन्न किशोर को वह अपनी सरपरस्ती में ले लेने का इरादा रखते हैं। शूबिन के पिता की अकस्मात मृत्यु ने नौजवान के कैरियर को चौपट ही कर दिया होता। प्रतिभाओं के सरपरस्त, सीनेट-सदस्य ने उसे होमर की प्लास्टर की वक्ष-मूर्ति उपहार में दे दी और बस, छुट्टी। परंतु आन्ना वसील्येव्ना ने उसे माली सहायता दी और उन्नीस वर्ष की अवस्था में वह राम-राम करके यूनीवर्सिटी में, उसके मेडिकल विभाग में भरती हो गया। चिकित्सा में पावेल को कोई रुचि नहीं थी परंतु उस समय वास्तव में जो स्थिति थी, उसमें किसी और विभाग में प्रवेश पाना असंभव था। इसके अलावा उसे शरीर-रचना की जानकारी पाने की उम्मीद थी। लेकिन उसने शरीर-रचना शास्त्र का अध्ययन नहीं किया और दूसरे वर्ष में पहुंचने के लिए परीक्षा का इंतज़ार किये बिना यूनीवर्सिटी छोड़ दी ताकि पूरी तरह मनपसंद काम में लग सके। मेहनत उसने डटकर की लेकिन छोड़-छोड़कर। वह मास्को के छोरवर्ती इलाक़ों की ख़ाक छानता था, किसान औरतों के चित्र बनाता था या मूर्तियां गढ़ता था। जवानों और बूढ़ों, अमीरों और ग़रीबों, इतालवी सांचेकारों और रूसी चित्रकारों – तरह-तरह के लोगों से वह मिला। अकादमी में भरती होने की बात उसे गवारा नहीं थी और किसी भी प्रोफ़ेसर को उसने अपना गुरू नहीं माना। प्रतिभा उसमें अवश्य थी और मास्को में उसका नाम होने लगा। उसकी मां ने, जो पेरिस में एक अच्छे घराने में पैदा हुईं दयालु और बुद्धिमती महिला थीं, उसे फ़्रांसीसी भाषा सिखायी और दिन-रात उसकी चिंता और देखभाल की। अपने बेटे पर उन्हें गर्व था और युवावस्था में ही तपेदिक़ से मरते वक़्त उन्होंने आन्ना वसील्येव्ना से पावेल की ज़िम्मेदारी ले लेने की विनती की। तब उसके जीवन का इक्कीसवां वर्ष शुरू हुआ था। आन्ना वसील्येव्ना ने अपनी भाभी की आख़िरी

इच्छा पूरी की और पावेल बंगले के एक बाजू में मामूली से कमरे में रहने लगा।

४

"चलिए, खाना लग गया।" घर मालकिन दीन स्वर में बोलीं और वे सब खाने के कमरे की ओर बढ़ गये। "ज़ोया, तुम मेरे पास बैठो।" उन्होंने कहा। "और हेलेन, तुम हमारे मेहमान का ख़्याल रखो। पॉल, तुम मेहरबानी करके तमीज़ से पेश आओ और ज़ोया को तंग मत करो। आज मेरे सिर में दर्द है।"

शूबिन ने आंखें फिर से आसमान की ओर उठायीं और ज़ोया ने दबी मुस्कराहट से जवाब दिया। यह ज़ोया या अगर पूरा नाम लिया जाये तो ज़ोया निकीतिश्ना म्यूल्लेर रूस में बस गये जर्मन घराने की प्यारी सी कुछ-कुछ ऐंची आंखोंवाली लड़की थी। छोटे-छोटे लाल होंठ, टोनी पर बीच में ज़रा दबी नाक, बाल सुनहरे और बदन गुदगुदा। रूसी गीत वह बख़ूबी गाती थी और हंसी-ख़ुशी के व दर्द भरे–तरह-तरह के संगीत के अंश वह प्यानो पर अच्छी तरह पेश करती थी। कपड़े उसकी सुरुचि का परिचय देते थे लेकिन वे ज़रा बच्चों जैसे, बहुत क़ायदे के होते थे। आन्ना वसील्येव्ना ने उसे बेटी के लिए सहेली के रूप में घर में लिया था लेकिन रखतीं आम तौर पर अपने साथ थीं। येलेना को कोई शिकायत नहीं थी क्योंकि जब भी वह ज़ोया के साथ अकेली रह जाती थी, उसकी बिल्कुल समझ में नहीं आता था कि बात क्या करे।

खाना काफ़ी देर चला। बेरसेनेव ने येलेना के साथ यूनीवर्सिटी की ज़िंदगी और अपने इरादों व उम्मीदों की बातें कीं। शूबिन भूखे की तरह खाने पर टूटा और चुपचाप बातें सुनीं। बीच-बीच में वह मुंह बनाकर दर्द भरी नज़र से ज़ोया की तरफ़ देखता था और वह उसी मंद मुस्कान से जवाब दे देती थी। खाने के बाद येलेना, बेरसेनेव और शूबिन बाग़ में निकल गये। ज़ोया की दृष्टि ने उनका पीछा किया फिर वह कंधे झटककर प्यानो के पास बैठ गयी। आन्ना वसील्येव्ना ने कहा:

"तुम भी घूमने क्यों नहीं जातीं?" और जवाब का इंतज़ार

किये बिना उन्होंने फ़ौरन जोड़ दिया, "कोई दर्द भरा संगीत बजाओ..."

"वेबेर का 'आखिरी ख़्याल'?" ज़ोया ने पूछा।

"ओह, हां, वेबेर का।" आन्ना वसील्येव्ना ने जवाब दिया। वह आरामकुर्सी पर पसर गयीं और उनकी पलकों पर आंसू की बूंदें झलकने लगीं।

उधर येलेना दोनों दोस्तों को लेकर ऐकेशिया के कुंज में गयी जहां लकड़ी की मेज़ के इर्द-गिर्द बेंचें लगी थीं। शूबिन ने इधर-उधर देखा, कई बार ऊपर-नीचे कूदा और इसके बाद फुसफुसाते हुए कहा, "ज़रा ठहरिये!" वह अपने कमरे की ओर दौड़ा, मिट्टी का बड़ा सा लौंदा उठा लाया और ज़ोया की आकृति गढ़ने लगा। वह बड़बड़ाता था, मुस्कराता था और सिर हिलाता जाता था।

"फिर वही खेल," येलेना ने उसके काम को देखते हुए कहा और बेरसेनेव की ओर मुड़कर खाने के वक़्त शुरू हुई बातचीत का सिलसिला जारी रखा।

"वही खेल," शूबिन ने दोहराया। "परंतु विषय भी अक्षय है। आज वह एकदम बर्दाश्त के बाहर हो रही है।"

"क्या हुआ?" येलेना ने पूछा। "कोई सोचेगा, आप किसी खबीस बुढ़िया की बात कर रहे हैं। वह तो अच्छी, प्यारी सी लड़की है।...

"हां, हां," शूबिन ने बीच में बात काटी। "वह प्यारी है, बहुत प्यारी। मुझे यक़ीन है कि हर राह-चलता उसकी तरफ़ देखकर ज़रूर सोचेगा, 'यही है जिसके साथ... पोल्का नाचने में मज़ा आयेगा।' मुझे इसका भी यक़ीन है कि वह यह जानती है और उसे यह अच्छा लगता है।... तो फिर इस शर्माने-लजाने, इस सारे दिखावे की क्या ज़रूरत है? आप जानती ही हैं, मैं क्या कहना चाहता हूं," उसने आहिस्ते से कहा। "बहरहाल, अभी आप दूसरी बातों में व्यस्त हैं।"

उसने ज़ोया की आकृति तोड़ दी और फिर जल्दी-जल्दी, मानो खीज के साथ मिट्टी को गढ़ने और मीसने लगा।

"तो आप प्रोफ़ेसर बनना चाहते हैं?" येलेना ने बेरसेनेव से पूछा।

"जी हां," उसने अपने हाथ घुटनों के बीच घुसेड़ते हुए कहा।

"यह मेरे मन की साध है। यों मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मुझमें क्या-क्या कमियां हैं ऐसे ऊंचे स्थान का अधिकारी होने के लिए... मेरा मतलब है, मैं ठीक तरह से तैयार नहीं हुआ हूं। लेकिन मुझे विदेश जाने की इजाज़त मिलने की उम्मीद है। ज़रूरत हुई तो वहां तीन-चार साल रहूंगा और फिर..."

वह रुक गया, आंखें नीचे झुकायीं, फिर जल्दी से ऊपर देखा, कुछ झेंपते हुए मुस्कराया और बालों पर हाथ फेरा। बेरसेनेव नारियों से बात करता था, तो और ज़्यादा अटकने लगता था और तुतलाहट बढ़ जाती थी।

"आप इतिहास के प्रोफ़ेसर बनना चाहते हैं?" येलेना ने पूछा।

"जी हां," उसने कहा। "या फिर दर्शनशास्त्र का, अगर यह मुमकिन हुआ।" उसकी आवाज़ धीमी हो गयी थी।

"दर्शनशास्त्र में यह अभी ही अफ़लातूं है।" शूबिन ने मिट्टी में नाखून से गहरी रेखाएं बनाते हुए कहा। "विदेश जाकर क्या करेगा?"

"और अपनी स्थिति से आपको पूरा संतोष होगा?" येलेना ने कोहनी का सहारा लेकर सीधे उसके चेहरे को देखते हुए पूछा।

"पूरा, येलेना निकोलायेव्ना, पूरा। इससे अच्छा काम क्या हो सकता है? ग्रानोव्स्की* के पदचिन्हों पर चलना... ऐसे कार्य का विचार ही मुझे आनंदित कर देता है और कुछ घबराहट पैदा करता है... हां, घबराहट क्योंकि अपनी क्षमता में कमी मुझे मालूम है। स्वर्गीय पिता जी ने मुझे इसके लिए आशीर्वाद दिया था।... उनके अंतिम शब्द मैं कभी भूल नहीं सकता।"

"आपके पिता जी की पिछली सर्दियों में मृत्यु हो गयी?"

"जी हां, फ़रवरी में।"

"सुना है वह एक अनोखी पांडु-लिपि छोड़ गये हैं।" येलेना ने बात जारी रखी। "क्या यह सही है?"

"जी हां, छोड़ गये हैं। वह लाजवाब इंसान थे। येलेना निकोलायेव्ना, आपको वह ज़रूर अच्छे लगते।"

---

* १९वीं सदी के पूर्वार्ध में मास्को यूनीवर्सिटी के इतिहास के प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर।



"सचमुच अच्छे लगते। अच्छा, उस पांडु-लिपि का सार क्या है?"

"उसका सार कुछ शब्दों में बताना, येलेना निकोलायेवना, ज़रा मुश्किल है। मेरे पिता बड़े विद्वान, शैलिंगवादी थे। उनकी शब्दावली हमेशा स्पष्ट नहीं है..."

"अंद्रेय पेत्रोविच," येलेना ने उन्हें टोक दिया, "आप मेरी अज्ञानता को क्षमा कीजिए: यह शैलिंगवादी कौन होता है?"

बेरसेनेव हल्के से मुस्करा दिया।

"शैलिंगवादी यानी जर्मन दार्शनिक शैलिंग का अनुयायी। जहां तक शैलिंग के सिद्धांतों की बात है..."

"अंद्रेय पेत्रोविच!" शूबिन यकायक चीख उठा, "खुदा के लिए रहम करो! तुम येलेना निकोलायेवना के आगे शैलिंग पर व्याख्यान देने की तो नहीं सोचते?"

"नहीं-नहीं," बेरसेनेव बुदबुदाया और उसका चेहरा लाल हो गया। "मैं तो..."

"परंतु व्याख्यान क्यों नहीं," येलेना बोली, "पावेल याकोव्लेविच, आपको और मुझे व्याख्यानों की बड़ी ज़रूरत है।"

शूबिन ने उसे घूरकर देखा और अचानक ज़ोर से हंस पड़ा।

"आप हंस क्यों रहे हैं?" उसने ठंडे स्वर में, लगभग रुखाई से पूछा।

शूबिन की हंसी बंद हो गयी।

"आप नाराज़ मत होइए," उसने कुछ ठहरकर कहा। "ग़लती हो गयी। लेकिन ज़रा सोचिए, ऐसे मौसम में, इन पेड़ों के नीचे दर्शनशास्त्र की बातें करने में रखा क्या है। बेहतर होगा कि हम कोयल, गुलाब, सुंदरी के नयनों और मुस्कान की बातें करें।"

"हां, और फ़्रांसीसी उपन्यासों की, औरतों के कपड़ों की," येलेना ने जोड़ दिया।

"कपड़ों की क्यों नहीं, बशर्ते कि वे ख़ूबसूरत हों," शूबिन ने जवाब दिया।

"ठीक है! लेकिन अगर हम कपड़ों की बातें करना न चाहें? आप अपने को आज़ाद कलाकार कहते हैं तो दूसरों की आज़ादी में दख़ल क्यों देते हैं? और क्या मैं पूछ सकती हूं कि अगर आप इन्हीं

बातों के बारे में सोचते हैं तो फिर ज़ोया की निंदा क्यों करते हैं। कपड़ों और गुलाबों की बात करने के लिए उससे बेहतर कौन मिलेगा ?"

शूबिन को तिलंगे लग गये और वह बेंच से उठ खड़ा हुआ।

"ऐसी बात है ! " वह कंपकंपाती आवाज़ में बोला। "आपका इशारा समझ गया, येलेना निकोलायेवना। आप मुझे उसके पास भेज रही हैं। दूसरे शब्दों में, मैं यहां कबाब में हड्डी हूं।"

"मैंने आपको यहां से हटाने की बात नहीं सोची।"

"आपके कहने का मतलब है," शूबिन ने गर्माहट के साथ सिलसिला जारी रखा, "मैं किसी और की सोहबत के क़ाबिल नहीं हूं, मैं उसी का जोड़ीदार हूं, मैं उस जर्मन फुलझड़ी जैसा ही खोखला, कमअक्ल और तुच्छ हूं। है न यहीं बात ?"

येलेना के माथे पर बल पड़ गये।

"पावेल याकोव्लेविच, पहले तो आप उसके बारे में ऐसा नहीं सोचते थे।" उसने कहा।

"ओह, ताना! अब आप ताना मार रही हैं!" शूबिन फट पड़ा। "हां, मैं इन्कार नहीं करता कि एक क्षण आया था, केवल एक क्षण जब उसके गुलाबी, बेकार के गालों ने... लेकिन अगर मैं आपके ताने का वैसा ही जवाब देना चाहूं और आपको याद दिला दूं... अच्छा, मैं चला," उसने यकायक कहा, "मैं भी क्या ऊल-जलूल बके जा रहा हूं।"

और मिट्टी से उसने जो सिर सा बनाया था, उस पर घूंसा मारते हुए वह झपटकर कुंज से निकला और अपने कमरे की तरफ़ चला गया।

"बच्चा है, " येलेना ने उसे जाते देखकर कहा।

"कलाकार है," हल्के से मुस्कराते हुए बेरसेनेव बोला। "सब कलाकार ऐसे ही होते हैं। इनकी मनमौज को तरह देनी पड़ती है। इनका हक़ है।"

"हां," येलेना ने कहा। "मगर यह हक़ पाने के लिए पावेल ने अभी तक किया कुछ नहीं है। उसने क्या हासिल किया है ? आइये, मैं आपके हाथ का सहारा ले लूं और हम पथ पर थोड़ा घूमें। उसने

हमारी बातचीत भंग कर दी। आपके पिता की पांडु-लिपि की चर्चा हो रही थी।"

बेरसेनेव ने येलेना की बांह थामी और वे बाग़ में टहलने लगे। लेकिन शुरू में ही कट गयीं उनकी बातों का सिलसिला फिर न जुड़ सका। बेरसेनेव नये सिरे से प्रोफ़ेसर के पद और भावी कार्य के बारे में अपने विचार बताने लगा। अटपटे ढंग से उसने येलेना की बांह थाम रखी थी; उसके बराबर में वह बेढंगे तरीक़े से धीरे-धीरे चल रहा था। बीच-बीच में उसका कंधा येलेना से छू जाता था, लेकिन उसने एक बार भी उसकी तरफ़ नहीं देखा। पर वह स्वछंदता से न सही, फिर भी सहज ढंग से बातें कर रहा था। अपने विचार वह साफ़-साफ़, ठीक तरह से व्यक्त कर रहा था और पेड़ के तनों, पथ की रेत और घास के ऊपर भटकती उसकी निगाहों में उच्च कल्पनाओं की शांत भावना व्याप रही थी। उसके स्थिर हो गये कंठस्वर में ऐसे इंसान के आनंद की गूंज थी जो समझ रहा था कि उसे परमप्रिय व्यक्ति के आगे अपने मन की बातें कहने का अवसर मिला है। येलेना ध्यान से सुन रही थी, उसका चेहरा थोड़ा सा उसकी ओर मुड़ा हुआ था और उसकी दृष्टि कुछ-कुछ पीले पड़ गये उसके मुख पर और उसकी आंखों पर टिकी हुई थी, जो स्नेहपूर्ण और नम्र होते हुए भी उसके अपने नेत्रों से मिलने से कतराती थीं। उसके हृदय का द्वार खुल रहा था और कोई कोमल, मधुर और उच्च अनुभूति उसमें प्रवेश कर रही थी अथवा उसके भीतर पनप रही थी।

५

शूबिन शाम हो जाने पर भी अपने कमरे में घुसा रहा। बेरसेनेव ने आन्ना वसील्येव्ना, येलेना और ज़ोया से विदा ली तब तक ख़ूब अंधेरा हो गया था। अर्ध-चंद्र आकाश में ऊपर चढ़ गया था, आकाश गंगा में प्रकाश झलक रहा था और चारों तरफ़ तारे जगमगा रहे थे। वह अपने मित्र के द्वार पर आया। देखा तो वह बंद था। उसने दस्तक दी।

"कौन है?" शूबिन की आवाज़ आयी।

"मैं हूं," बेरसेनेव ने जवाब दिया।

"क्या चाहिए?"

"पावेल, अंदर आने दो और सनक छोड़ो। तुम्हें शर्म नहीं आती?"

"कोई सनक-वनक नहीं है। मैं सो रहा हूं और सपने में ज़ोया को देख रहा हूं।"

"छोड़ो भी! तुम बच्चे नहीं हो। आने दो। मुझे तुमसे बात करनी है।"

"येलेना से बातें करके पेट नहीं भरा?"

"हो गया, बहुत हो गया। अंदर आने दो!"

जवाब में शूबिन ने जानबूझकर खर्राटे भरे। बेरसेनेव ने कंधे बिचकाये और घर की ओर चल पड़ा।

रात गरम और इतनी शांत थी मानो आसपास के घर और मैदान सुन और देख रहे थे। अंधेरे में डूबा बेरसेनेव भी बरबस ठहरकर सुनने और देखने लगता था। बीच-बीच में पास के पेड़ों की चोटियों से नारी की पोशाक जैसी हल्की सरसराहट सुनायी पड़ती थी जिससे बेरसेनेव को अजब मीठी सी, पर कुछ-कुछ भयभीत करनेवाली अनुभूति होती थी। उसके गालों में फुरहरी दौड़ी और आंसू की बूंद यकायक आंख में उतरकर अटक गयी। बस चलता तो वह छिप जाता, चुपचाप दबे-पांव आगे बढ़ता। एक तरफ़ से हवा का तेज़ झोंका आया, वह चौंका और वहीं ठिठककर खड़ा हो गया। सो रहा झींगुर टहनी से फिसला और आवाज़ के साथ रास्ते पर आ गिरा। बेरसेनेव ने हल्के से "ओह!" कहा और फिर ठहर गया। परंतु वह येलेना के बारे में सोचने लगा और वे तमाम क्षणिक अनुभूतियां पल भर में लोप हो गयीं। रह गयी सिर्फ़ रात की ताज़गी और रात में घूमने की उछाह पैदा करनेवाली भावना। युवती की स्मृति से उसका हृदय आप्लावित हो उठा। बेरसेनेव सिर झुकाये जा रहा था और याद करता जाता था कि उसने क्या कहा और क्या पूछा। ... उसे पीछे से किसी के तेज़ क़दमों की आहट आती जान पड़ी। कान खड़े किये। ... उसे पकड़ने के लिए कोई दौड़ा आ रहा था। उसने सुना, कोई हांफ रहा है। और यकायक बड़े पेड़ की काली छाया के बीच से शूबिन नमूदार हो गया। सिर

पर टोप नहीं था, बाल बिखरे थे और चांदनी में वह प्रेत जैसा लगता था।

"बड़ा अच्छा हुआ जो तुमने यह रास्ता लिया," हांफते हुए वह बोला। "अगर तुम्हें न पकड़ पाता तो मुझे पल भर नींद न आती। लाओ, अपना हाथ दो। तुम घर जा रहे हो?"

"हां।"

"चलो, पहुंचा दूं।"

"टोप के बिना..."

"कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैंने टाई भी उतार दी है। मौसम गर्म है।"

दो दोस्त कुछ क़दम चले।

"आज मैंने गधेपन की हद कर दी, है न?" अचानक शूबिन ने पूछा।

"ईमानदारी से कहूं तो हां। मैं तुम्हें समझ नहीं पाया। ऐसा तो मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा। आखिर तुम आपे से बाहर क्यों हो गये? मामूली सी बात थी।"

"हूं," शूबिन गुर्राया। "तुम्हारे लिए होगी, मेरी बर्दाश्त के बाहर है। जानते हो," उसने कहा, "मैं तुम्हें बता दूं... मेरे बारे में जो तुम्हारा जी चाहे, सोचो... मैं... हां, मैं येलेना को प्यार करता हूं।"

"तुम येलेना को प्यार करते हो!" बेरसेनेव ने दोहराया और रुक गया।

"हां," जानबूझकर लापरवाही दिखाते हुए शूबिन ने कहा। "तुम्हें ताज्जुब हुआ? मैं कुछ और बता दूं। आज शाम तक मैं उम्मीद करता था कि किसी दिन वह भी मुझे प्यार की नज़र से देखेगी।... लेकिन आज मैंने समझ लिया कि कोई उम्मीद नहीं है। वह किसी और को प्यार करने लगी है।"

"किसी और को? किसे?"

"किसे? अरे, तुम्हें!" शूबिन ने बेरसेनेव के कंधे पर धौल जमाते हुए कहा।

"मुझे!"

"तुम्हें," शूबिन ने दोहराया।

बेरसेनेव एक क़दम पीछे हटकर स्थिर खड़ा रह गया। शूबिन ने उसके चेहरे पर निगाह गड़ायी।

"इससे तुम्हें ताज्जुब हुआ? तुम संकोची नौजवान हो। लेकिन वह तुम्हें प्यार करती है। इस मामले में निश्चिंत हो जाओ।"

"बक क्या रहे हो!" आखिर बेरसेनेव ने झल्लाकर कहा।

"नहीं, बकवास नहीं है। मगर हम खड़े क्यों हैं... चलो आगे चलें, चलते-चलते सहूलियत होती है। मैं उसे एक ज़माने से जानता हूं, अच्छी तरह जानता हूं। ग़लती नहीं कर सकता। तुमने उसका दिल जीत लिया। एक वक़्त था जब मैं उसे पसंद था। लेकिन एक तो मैं उसकी नज़रों में बहुत बेपरवाह नौजवान हूं जब कि तुम गंभीर जीव हो, नैतिक और शारीरिक दृष्टि से साफ़-सुथरी हस्ती, तुम... ठहरो-ठहरो, अभी मैंने बात ख़त्म नहीं की, तुम विवेकवान, संतुलित, उत्साही व्यक्ति हो, उन मनीषियों के सच्चे उत्तराधिकारी हो जिनको – नहीं-नहीं, जिनपर मंझोले रूसी कुलीन वर्ग को ठीक ही इतना गर्व है। और दूसरी बात यह है कि पिछले दिनों येलेना ने मुझे ज़ोया के... हाथ चूमते हुए देख लिया!"

"ज़ोया के?"

"हां, ज़ोया के। किया क्या जाये – उसके कंधे हैं ही बहुत सुंदर।"

"कंधे?"

"ठीक है, कंधे या हाथ, अंतर क्या है? खाने के बाद ऐसे ही मनोरंजन के समय येलेना ने मुझे देख लिया और खाने से पहले उसी की मौजूदगी में मैंने ज़ोया को बुरा-भला कहा था। अफ़सोस है येलेना नहीं समझती कि ये अंतर्विरोध कितने स्वाभाविक हैं। तभी तुम आ गये। तुम विश्वास करते हो... पर तुम काहे में विश्वास करते हो?... तुम शर्माते हो, घबराते हो, शिल्लेर* की, शैलिंग की बातें करते हो, (और वह हमेशा विलक्षण लोगों की खोज में रहती है), सो तुम जीत गये। मैं अभागा मज़ाक की कोशिश कर रहा हूं... लेकिन... लेकिन..."

---

* १८वीं शताब्दी के प्रसिद्ध जर्मन साहित्यकार।

अचानक शूबिन रो पड़ा। एक तरफ़ हटकर वह ज़मीन पर बैठ गया और अपने बाल नोचने लगा।

बेरसेनेव उसके पास गया।

"पावेल, यह क्या बचपना है?" उसने कहा। "आज तुम पर कौन सा भूत सवार है? ईश्वर ही जानता है कौन सी खुराफ़ात तुम्हारे दिमाग़ में घुस गयी है और तुम रो रहे हो। सच कहूं तो मेरी समझ में यह सब नाटक है।"

शूबिन ने सिर उठाया। चांदनी में उसके गालों पर आंसू चमक रहे थे परंतु उसका चेहरा हंस रहा था।

"अंद्रेय पेत्रोविच, मेरे बारे में तुम जो चाहो, सोचो," उसने कहा। "मैं यह भी मानने को तैयार हूं कि मुझे इस समय उन्माद हो गया है। लेकिन ख़ुदा की क़सम मैं येलेना को प्यार करता हूं और वह तुम्हें प्यार करती है। ख़ैर, मैंने तुम्हें घर तक पहुंचाने का वचन दिया था और मैं अपना वचन पूरा करूंगा।"

वह उठ खड़ा हुआ।

"कैसी रात है! रुपहली, अंधेरी और जवान! प्यार पानेवालों को कितना अच्छा लगता होगा। न सोने में कितना रस मिलता होगा! अंद्रेय पेत्रोविच, क्या तुम सो जाओगे?"

बेरसेनेव ने कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ़ क़दम तेज़ कर दिये।

"कहां दौड़े जा रहे हो?" शूबिन फिर बोला। "मेरी बात का विश्वास करो, ऐसी रात तुम्हारी ज़िंदगी में फिर कभी नहीं आयेगी। घर पर सिर्फ़ शैलिंग तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। ठीक है, आज वह तुम्हारे काम आया। लेकिन जल्दी मत करो। गाओ, अगर गा सकते हो तो ज़्यादा ज़ोर से गाओ। और अगर नहीं गा सकते तो टोप उतार दो, ऊपर आकाश को देखो और तारों से मुस्कराकर बातें करो। वे तुम्हें, केवल तुम्हें देख रहे हैं। तारों का काम ही यह है कि प्रेमियों को ताकते रहें। इसीलिए वे इतने सुंदर हैं।... और अंद्रेय पेत्रोविच, तुम प्रेमी हो?... तुम मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देते?... जवाब क्यों नहीं देते?" शूबिन ने फिर कहा। "अच्छा, यदि तुम अपने को भाग्यवान अनुभव कर रहे हो

तो चुप ही रहो! मैं चबर-चबर किये जा रहा हूं क्योंकि मेरी क़िस्मत फूटी है, मुझे कोई प्यार नहीं करता। मैं बाज़ीगर हूं, एकटर हूं, जोकर हूं। काश मैं समझता कि कोई मुझे प्यार करता है, तो इन तारों, इन माणिक-मुक्ताओं के नीचे, रात की इस बयार से मैंने कैसे मधुर अमृत का पान किया होता!... बेरसेनेव, क्या तुम सुखी हो?"

पहले की तरह एक भी शब्द कहे बिना बेरसेनेव समतल रास्ते पर तेज़ी से क़दम बढ़ाता गया। जिस गांव में वह रहता था, उसकी रोशनियां आगे, पेड़ों के बीच झिलमिला रही थीं। वहां मुश्किल से एक दर्जन छोटे-छोटे बंगले थे। शुरू में ही रास्ते के दायीं ओर बर्च के दो विशाल पेड़ों के नीचे एक छोटी सी दूकान थी। उसकी सभी खिड़कियां बंद की जा चुकी थीं, किन्तु रोशनी की चौड़ी पट्टी खुले दरवाज़े से निकलकर कुचली हुई घास और पेड़ों पर पड़ रही थी जिससे घनी पत्तियों के उल्टे पहलू की सफ़ेदी उजागर हो जाती थी। एक लड़की, जो देखने में मेहरी लगती थी, दहलीज़ की ओर पीठ किये दूकान में खड़ी थी और मालिक से मोल-भाव कर रही थी। उसके भरे गालों और नाज़ुक गर्दन का आभास ही मिल पाता था क्योंकि सिर को ढंकनेवाले लाल स्कार्फ़ के छोरों को उसने ठोड़ी के नीचे नंगे हाथ से पकड़ रखा था। दोनों नौजवान रोशनी की पट्टी में आये, शूबिन ने दूकान के अंदर झांका, ठहर गया और आवाज़ दी, "आन्नुश्का!" लड़की तेज़ी से घूमी और उसका कुछ चौड़ा सा लेकिन ताज़ा, प्यारा चेहरा दिखायी दे गया। भवें काली थीं और कत्थई आंखों में चमक थी। "आन्नुश्का!" शूबिन ने फिर कहा। लड़की ने उसे घूरा, कुछ घबरायी, कुछ शर्मायी और ख़रीद पूरी किये बिना ही ड्योढ़ी से नीचे उतर गयी। वह फुर्ती के साथ पास से निकली और नाम मात्र को मुड़कर देखते हुए सड़क के पार बायीं तरफ़ चली गयी। दूकानदार ने, जो गोल-मटोल था और शहर के बाहर के सभी छोटे दूकानदारों की तरह जिसे किसी बात में दिलचस्पी नहीं थी, लड़की को जाते देख सिर्फ़ खखारकर गला साफ़ किया और जंभाई ली। उधर शूबिन ने बेरसेनेव की ओर मुड़कर कहा, "यह... यह लड़की... यहां मेरी जान-पहचान का एक परिवार रहता है... यह लड़की वहीं... तुम कुछ

सोचना नहीं ..." और वाक्य पूरा किये बिना ही वह लड़की के पीछे दौड़ गया।

"कम से कम आंसू तो पोंछ लो," बेरसेनेव पीछे से चिल्लाया और हंसी रोक नहीं पाया। लेकिन जब वह घर में दाखिल हुआ, उसके चेहरे पर हंसी का चिन्ह तक नहीं था। और हंसने की उसकी तबियत नहीं हुई। शूबिन ने उससे जो कहा था, उसका उसने क्षण भर को भी विश्वास नहीं किया, परंतु कहे गये शब्द उसके हृदय में गहरे उतर गये थे। "पावेल मेरी खिल्ली उड़ा रहा था," उसने सोचा। "लेकिन वह कभी तो प्यार करेगी... आखिर किसे प्यार करेगी?"

बेरसेनेव के कमरे में प्यानो रखा था। बड़ा नहीं था, पुराना था, मगर उसकी ध्वनि कुछ बेसुरी होते हुए भी कोमल और प्यारी थी। कुलीन वर्ग के सभी रूसियों की तरह उसने छुटपन में संगीत की शिक्षा ली थी और लगभग सभी कुलीन रूसियों की तरह उसे बजाना नहीं आता था। हां, उसे संगीत का वास्तव में शौक़ था। सच कहा जाये तो उसे संगीत की कला प्यारी नहीं थी, उसकी अभिव्यक्ति के रूप भी प्यारे नहीं थे: सिमफ़ौनी, सोनाटा, यहां तक कि ओपेरा से भी उसे कोफ़्त होती थी। वह प्यार करता था संगीत की नैसर्गिक शक्ति को, उन मधुर और अस्पष्ट, अर्थहीन और सर्वसमावेशी अनुभूतियों को जो ध्वनियों के मेल और परिवर्तनों से मन में जाग उठती हैं। घंटेभर से अधिक वह प्यानो बजाता रहा। बार-बार वह उन्हीं स्वर-संघातों को छूता था, नयों को टटोलता था, ठिठकता था और निचले स्वरों से विलंबित ध्वनि निकालता था। उसके हृदय में कसक उठ रही थी। आंखों में कई बार आंसू झलक आये। उसे कोई शर्म नहीं थी, वह अंधेरे में आंसू बहाता रहा। "पावेल की बात ठीक है," उसने अपने से कहा, "मैं महसूस कर रहा हूं, ऐसी रात लौटकर नहीं आयेगी।" आखिर वह स्टूल से उठा, मोमबत्ती जलायी, गाऊन पहना और रौमेर* द्वारा लिखित 'होहेनस्टॉफ़ेन्स का इतिहास' का दूसरा खंड अलमारी से निकाल लिया। फिर एक-दो बार गहरी सांस लेकर वह लगन से पढ़ने लगा।

---

* १९वीं सदी के प्रसिद्ध जर्मन इतिहासवेत्ता।

६

उधर येलेना अपने कमरे में लौटी। वह खुली खिड़की के पास बैठ गयी और सिर हाथों पर टेक लिया। हर रोज़ शाम को खिड़की के पास पन्द्रहेक मिनट बिताने की उसे आदत हो गयी थी। ऐसे समय वह स्वयं अपने से बातें करती थी और बीते दिन पर ग़ौर करती थी। हाल ही में उसने बीस वसंत पूरे किये थे। क़द उसका लम्बा था। गंदुमी रंग की धनुषाकार भौंहें और बड़ी-बड़ी भूरी आंखें जिनके इर्द-गिर्द छोटी-छोटी, बहुत हल्की चित्तियां थीं। माथा ऊंचा, नाक सुती हुई, होंठ भिंचे हुए और ठोड़ी नुकीली थी। हल्के कत्थई रंग की उसकी चोटी नाज़ुक गर्दन से नीचे झूलती थी। उसका समूचा व्यक्तित्व, उसके चेहरे का सचेत परंतु कुछ सहमा हुआ भाव, उसकी स्पष्ट परंतु बदलती हुई दृष्टि, उसकी मुस्कराहट जिसमें मानो तनाव था, उसकी आवाज़ जो कोमल परंतु स्थिर नहीं थी – इन सबसे अधीरता भरे और आवेगमय उतावलेपन का परिचय मिलता था। दो शब्दों में, उसमें कुछ ऐसी बात थी जो हरेक को आकर्षित नहीं कर सकती थी, बल्कि कुछ को तो परे ठेल देती थी। हाथ उसके मुलायम और छोटे थे पर उंगलियां लम्बी थीं। पैर भी छोटे थे। वह जल्दी-जल्दी, उतावलेपन के साथ, कुछ आगे को झुकी हुई चलती थी। उसका बचपन अनोखा रहा। शुरू में वह पिता की पूजा करती थी, फिर मां में प्रीति बढ़ी। बाद में दोनों से उकता गयी, विशेष रूप से पिता से। अब तो मां के प्रति उसका व्यवहार वैसा ही था जैसा बीमार दादी के प्रति होता है। जहां तक पिता की बात है तो, जब तक येलेना असाधारण बच्ची जान पड़ती थी, वह उस पर गर्व करते थे और अब बड़ी हो जाने पर उससे भय खाने लगे थे। कहते थे कि वह एक तरह की उग्रवादी लोकतांत्रिक है और भगवान जाने, किस पर गयी है! कमज़ोरी से वह झल्लाती थी, बेवकूफ़ी पर उसे ग़ुस्सा आता था और झूठ को वह सात जनम में माफ़ नहीं कर सकती थी। अपने माप-दंडों को उसने कभी नहीं भुलाया, उसकी तो प्रार्थना तक में उलाहना घुलमिल जाता था। आदमी के उसकी नज़रों में गिरने भर की देर थी, वह जल्दी, अक्सर बहुत जल्दी फ़तवा जारी कर

देती थी – और उसके अपने लिए उस व्यक्ति का अस्तित्व ही ख़तम हो जाता था। हर बात उसके मन में बैठ जाती थी, जीवन उसके लिए आसान नहीं था।

अपनी बेटी की शिक्षा-दीक्षा "पूरी करने के लिए" आन्ना वसील्येव्ना ने जिन्हें गवर्नेस रखा वह एक रूसी महिला थीं। बता दें कि उसकी शिक्षा-दीक्षा को थकी-हारी रईसज़ादी मां ने कभी शुरू ही न किया था। गवर्नेस ज़लील हो गये घूसख़ोर की बेटी, कुलीन किशोरियों की इंसटीट्यूट की ग्रेजुएट और बहुत भावूक, नरम दिल तथा दिखावटी इंसान थीं। वह तो बार-बार प्रेम के चक्कर में पड़ जाती थीं और आख़िर में हुआ यह कि जीवन के पचासवें वर्ष में (जब येलेना सत्रह वर्ष की हुई) उन्होंने किसी अफ़सर से शादी कर ली जिसे उन्हें छोड़ने में समय नहीं लगा। इस गवर्नेस को साहित्य में बड़ी दिलचस्पी थी, ख़ुद भी तुकबंदी करती थीं। उन्होंने येलेना में पढ़ने का शौक़ पैदा किया। परंतु पढ़ने मात्र से उसे संतोष नहीं होता था। बचपन से ही वह कुछ करने, नेक काम करने को आतुर रहती थी। वह भिखारियों, भूखे और बीमार लोगों के बारे में सोचती थी, चिंता करती थी और व्यथित होती थी। सपनों में भी वे ही उसकी आंखों के सामने आ जाते थे। अपने सभी परिचितों से वह उनके बारे में पूछती थी, भीख वह स्वाभाविक गंभीरता के साथ, चिंतातुर होकर बल्कि उद्वेग भरी भावना से देती थी। सताये गये जानवर – अहाते के सींकिया कुत्ते, मरनहाल बिल्लियां, घोंसले से गिर पड़े चिड़ियों के बच्चे, यहां तक कि कीड़े-मकोड़े और रेंगते जीव भी येलेना से सहायता और संरक्षण प्राप्त करते थे। वह उन्हें तुच्छ नहीं समझती थी और अपने हाथ से खिलाती थी। मां दख़ल नहीं देती थी, लेकिन पिता को, उनके शब्दों में बेटी की यह भौंडी भावुकता फूटी आंखों नहीं सुहाती थी। वह कहते थे कि कुत्तों और बिल्लियों के मारे घर में पैर रखने को जगह नहीं है। कभी वह उसे पुकारते थे, "लेना, बिटिया, जल्दी आओ! मकड़ी मक्खी को चूसने लगी। इस बेचारी को बचाओ।" घबराई हुई लेना दौड़ी आती, मक्खी के पैरों को जाले से छुड़ाकर उसे आज़ाद करती। और तभी पिता की तंज भरी आवाज़ सुनायी पड़ती, "बहुत खूब, अब ज़रा इसे काट भी

लेने दो, तुम तो इतनी दरियादिल हो," मगर वह सुना-अनसुना कर देती।

जीवन के दसवें वर्ष में येलेना की एक भिखारिन लड़की, कात्या से दोस्ती हो गयी। छिपकर वह बाग़ में उससे मिलने जाती, उसे खाने की अच्छी-अच्छी चीज़ें, स्कार्फ़ या दस कापेक दे देती। कात्या खिलौने नहीं लेती थी। येलेना कंटीली झाड़ी के पीछे, एकांत में लड़की के बराबर में ज़मीन पर बैठ जाती थी और बिनम्र भाव से ख़ुश होकर उसकी सूखी रोटी खाती थी, उसकी कहानियां सुनती थी। कात्या की एक दुष्ट बूढ़ी चाची थी जो उसे अक्सर पीटा करती थी। कात्या उससे नफ़रत करती थी और हमेशा कहती थी कि एक दिन वह चाची के काले साये से दूर भाग जायेगी और "भगवान की आज़ाद दुनिया में" रहेगी। इन नये, अपरिचित शब्दों को मन ही मन आदर और भय के साथ सुनते हुए येलेना कात्या को एकटक देखती। लड़की की हर बात – उसकी तेज़ काली आंखें, जिनमें जंगली जानवर जैसी चमक थी, उसके धूप में झुलसे हाथ, उसकी बैठी हुई आवाज़, यहां तक कि चिथड़े-चिथड़े हो गयी उसकी फ़्रॉक भी येलेना को असाधारण, लगभग पवित्र और पावन जान पड़ती थी। वह घर लौटती तो देर तक भिखारियों और "भगवान की आज़ाद दुनिया" के बारे में सोचती रहती। वह सोचती थी कि कैसे पेड़ की टहनी काटकर छड़ी बनायेगी, कंधे पर झोला लटकायेगी और कात्या के साथ भाग जायेगी, कैसे वह सिर पर जंगली फूलों की माला पहनकर, जैसी उसने कात्या को पहने देखा था, जगह-जगह विचरती फिरेगी। ऐसे समय में अगर कोई कमरे में आ जाता तो वह दुबकना चाहती और उसके तेवर चढ़ जाते। एक बार मेंह बरसते में वह कात्या से मिलने दौड़ गयी और उसकी फ़्रॉक गंदी हो गयी। पिता ने देखा तो उसे फूहड़ और देहातिन ठहराया। उसके तन-बदन से चिनगारियां निकलने लगीं और दिल में अजीब हड़कम्प मच गया। कात्या फ़ौजियों जैसा एक घटिया गाना अक्सर गुनगुनाती थी। येलेना ने उसे याद कर लिया। आन्ना वसील्येव्ना ने सुना तो बौखला गयीं।

"यह गंदा गाना कहां सीख लिया?" उन्होंने बेटी से पूछा।

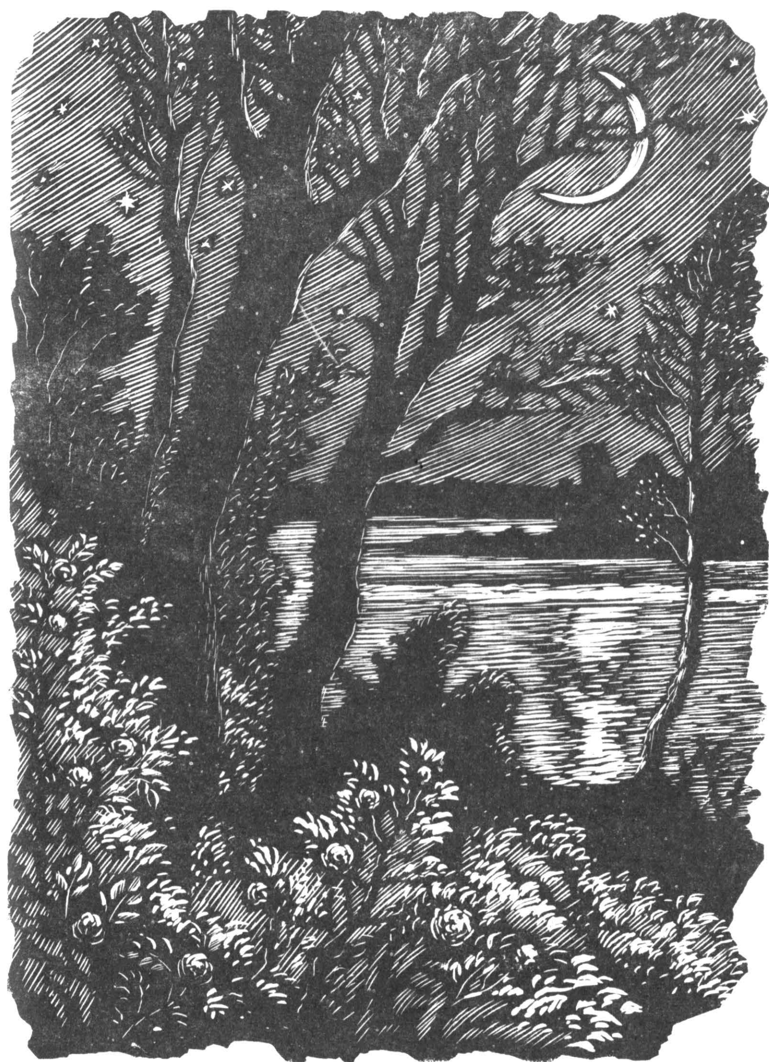
येलेना ने मां की तरफ़ देखा किंतु एक शब्द भी नहीं कहा।

उसे लगा कि उसके जिस्म की बोटी-बोटी काट डाली जाये पर वह अपना रहस्य नहीं बतायेगी। और फिर से उसके हृदय में भयंकर और प्यारा हड़कम्प मच गया। बहरहाल, कात्या से उसका मिलना-जुलना ज़्यादा नहीं चला। बेचारी लड़की को बुख़ार आया और कुछ ही दिनों में वह चल बसी।

येलेना को कात्या की मौत का पता चला तो उसे रातों नींद नहीं आयी। उसकी याद बेहद सताती थी। भिखारिन लड़की के आख़िरी शब्द उसके कानों में बराबर गूंजते रहते थे और उसे लगता था कि कोई उसे बुला रहा है।...

वर्ष बीतने लगे। येलेना में यौवन आया बर्फ़ के नीचे जलधारा की तरह – तेज़ी से परंतु बिना शोर के। ऊपर कोई हरकत नहीं और भीतर संघर्ष व चिंता। उसकी कोई सहेली नहीं थी, स्ताख़ोव परिवार के यहां आनेवाली किसी भी लड़की से उसकी पटरी नहीं बैठी। माता-पिता के शासन का जुआ उसने कभी महसूस नहीं किया। सोलह वर्ष की अवस्था से ही वह लगभग स्वाधीन हो गयी। उसका जीवन अपना निजी था मगर था वह एकाकी का जीवन। अकेलेपन में उसकी आत्मा की लौ भड़कती और बुझ जाती थी। वह पिंजरे में बंद पक्षी की तरह फड़फड़ाती थी हालांकि पिंजरा कहीं नहीं था। कोई उसे दबाता नहीं था, कोई उसे रोकता नहीं था, फिर भी वह तड़पती थी और बंधनमुक्त होना चाहती थी। कभी-कभी वह स्वयं अपने को समझ नहीं पाती थी, अपने से ही डरती थी। अपने आसपास की हर वस्तु उसे या तो अर्थहीन या अनबूझ जान पड़ती थी। "प्रेम के बिना कैसे जिया जाये? और प्रेम करने के लिए कोई है नहीं!" वह सोचती और इस विचार, इस ख़्याल से उसका दिल दहल जाता। अठारह साल की उम्र में वह ख़तरनाक बुख़ार से मरते-मरते बची। जन्म से ही स्वस्थ और सबल उसके शरीर ने जो धक्का खाया, उससे उबरने में काफ़ी समय लग गया। आख़िर बीमारी का कोई चिन्ह शेष न रहा परंतु येलेना के पिता कहीं छिपी नाख़ुशी के कारण उसकी नसों की कमज़ोरी की बात करते रहते थे। कभी-कभी उसके मन में विचार कौंधता कि वह ऐसा कुछ चाहती है जो कोई दूसरा नहीं चाहता, जिसके बारे में सारे रूस में कोई नहीं सोचता। फिर वह शांत हो जाती, अपने ऊपर





ही हंसने लगती। वह बेफ़िक्री से दिन बिताने लगती और तभी कोई अनाम परंतु शक्तिशाली, उसके लिए अदम्य तत्व भीतर ही भीतर उबलने लगता, बाहर निकलने को बेताब हो जाता। तूफ़ान गुज़र जाता और उड़ान भरे बग़ैर ही शिथिल उसके पंख नीचे झुक जाते। ऐसे प्रबल मनोवेग उसे अछूता नहीं छोड़ते थे। अपने अंतर की प्रक्रियाओं को छिपाने की वह लाख कोशिश करती, परंतु उसकी उत्तेजित आत्मा की हुड़क ऊपर के शांत रूप में भी झलकने लगती थी। उसकी "अजीबोग़रीब हरकतों पर" ताज्जुब करनेवाले, उन्हें समझने की कोशिश न करनेवाले नाते-रिश्तेदार अगर कंधे बिचका देते थे, तो यह एक तरह से स्वाभाविक ही था।

उस दिन, जब हमारी कहानी शुरू हुई, येलेना आम तौर से भी ज़्यादा खिड़की से लगी बैठी रही। बेरसेनेव के बारे में, उसके साथ अपनी बातों के बारे में उसने बहुत सोचा। वह उसे पसंद था, उसकी भावनाओं की सचाई और आकांक्षाओं की निर्मलता का उसे विश्वास था। इस शाम की तरह उसने पहले कभी उससे बातें नहीं की थीं। उसकी शर्माती आंखों की दृष्टि, उसकी मुस्कराहट उसे याद हो आयीं। अपनी याद पर वह स्वयं मुस्करायी और फिर से सोचने लगी – लेकिन अब उसके बारे में नहीं। खुली खिड़की से उसने "रात के भीतर" झांकने का प्रयत्न किया। काले, नीचे उतर आये आकाश को वह देर तक देखती रही। वह उठी, सिर झटककर माथे पर आयी लटों को पीछे फेंका और इसके बाद, वह ख़ुद भी नहीं समझी क्यों, उसने अपनी नंगी, ठंडी हो गयीं बाहें आकाश की ओर उठा दीं। फिर उसने हाथ नीचे गिराये, पलंग के पास घुटनों के बल बैठी, तकिये में सिर गड़ाया और हावी हो रहीं भावनाओं में न बहने की हरचंद कोशिश के बावजूद उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गयी, जिनमें कोई अनोखी पहेली छिपी थी, परंतु जो जला भी रहे थे।

७

अगले दिन, ग्यारह बजे के बाद बेरसेनेव मास्को जा रही फ़िटन में बैठ गया। उसे डाकख़ाने से रक़म लेनी थी, कुछ किताबें

ख़रीदनी थीं और वह इनसारोव से मिलना और बातें करना चाहता था। शूबिन से पिछली बातचीत के समय बेरसेनेव ने सोचा कि वह इनसारोव को अपने बंगले में बुलायेगा। लेकिन उसे ढूंढ़ने में समय लग गया, क्योंकि वह पिछले फ़्लैट को छोड़कर नये में चला गया था और वहां पहुंचने में दिक्कत हुई: फ़्लैट अर्बात और पोवार्सकाया मार्ग * के बीच पीतर्सबर्ग के नमूने पर बने एक बदशकल पक्के मकान के पिछवाड़े में था। बेरसेनेव ने बेफ़ायदे एक गंदी ड्योढ़ी के बाद दूसरी की ख़ाक छानी, बेफ़ायदे दरबान या "किसी और" को पुकारा। जब पीतर्सबर्ग में ही दरबान आगंतुकों की नज़रों से ओझल रहने की कोशिश करते हैं, तो मास्को की गिनती क्या! बेरसेनेव की पुकार का किसी ने जवाब नहीं दिया। सिर्फ़ वासकट पहने और कंधे पर भूरे डोरे का लच्छा डाले एक दर्ज़ी ने दाढ़ी बढ़ा अपना भौंदू चेहरा जिस में एक आंख चोटिल थी, कौतूहल से चुपचाप खिड़की के बाहर निकाला। बिना सींग की एक काली बकरी भी, जो कूड़े के ढेर पर खड़ी थी, मुड़कर शिकायत में मिमियाई और फिर से जुगाली करने लगी। आख़िर पुराना कोट और फटे हुए लम्बे जूते पहने एक औरत को बेरसेनेव पर दया आयी और उसने इनसारोव के फ़्लैट का रास्ता बता दिया। वह घर में ही था। इनसारोव ने कमरा उसी दर्ज़ी से किराये पर ले रखा था जिसने भटकते आदमी की परेशानी बेपरवाही के साथ खिड़की से देखी थी। कमरा बड़ा, लगभग ख़ाली था। दीवारें गहरे हरे रंग की, एक कोने में छोटा सा पलंग, दूसरे में चमड़े का सोफ़ा और छत के ठीक नीचे एक बड़ा पिंजरा लटका था, जिसमें कभी बुलबुल रहा करती थी। बेरसेनेव के चौखट पार करते ही इनसारोव उससे मिलने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन "अरे, आप हैं!", या "ख़ुदा का शुक्र है, आपके क़दम इधर पड़े!" ऐसा कुछ नहीं कहा। वह तो "नमस्ते" भी नहीं बोला, केवल हाथ मिलाया और कमरे में मौजूद एकमात्र कुर्सी की ओर उसे ले चला।

"बैठिए," उसने कहा, और स्वयं मेज़ के एक कोने पर टिक गया। "देख रहे हैं, मेरे यहां अभी सब कुछ उलटा-पलटा

---

* आजकल नाम है वोरोव्स्की मार्ग।

पड़ा है," इनसारोव ने फ़र्श पर किताबों और कागज़ों के ढेर की ओर इशारा करते हुए कहा। "ठीक तरह से जम नहीं पाया। वक़्त नहीं मिला।"

इनसारोव एकदम सही रूसी बोलता था और हर शब्द का ज़ोर देकर स्पष्ट उच्चारण करता था। मगर उसकी गले से उठती आवाज़ कानों के लिए मधुर होने पर भी कुछ-कुछ ग़ैर रूसी लगती थी (वह बलगारिया का था)। उसका विदेशीपन रूप-रंग में और साफ़ झलकता था। पच्चीस बरस के इस नौजवान का बदन छरहरा और कसा हुआ था ; सीना दबा हुआ और हाथ गठीले थे। उसकी आकृति तीखी थी। नाक तोते जैसी, बाल एकदम काले और सीधे, छोटा माथा, अंदर बैठी हुई छोटी परंतु पैनी आंखें और घनी भौहें। जब वह मुस्कराता था तो पतले, खिंचे हुए, अत्यंत स्पष्ट होंठों के बीच सुंदर सफ़ेद दांत चमक जाते थे। वह एक पुराना मगर साफ़-सुथरा कोट पहने था, जिसके बटन गले तक बंद थे।

"पिछला फ़्लैट क्यों छोड़ दिया?" बेरसेनेव ने उससे पूछा।

"इसका किराया कम है। और यूनीवर्सिटी पास है।"

"आजकल तो छुट्टियां हैं। ... गर्मी में शहर में क्यों रहते हैं? फ़्लैट बदलना था, तो छोटा बंगला ले लेते।"

इनसारोव ने कोई जवाब नहीं दिया और बेरसेनेव को पीने के लिए पाइप देते हुए कह, "माफ़ कीजिये, मेरे पास न तो सिगार हैं, न सिगरेट।"

बेरसेनेव ने पाइप सुलगा लिया।

"मैंने कुन्त्सोवो के पास एक घर किराये पर ले रखा है।" उसने कहा। "बहुत सस्ता है और बहुत आरामदेह। मेरे पास एक खाली कमरा भी है – ऊपरी मंज़िल पर।"

इनसारोव ने फिर कोई जवाब नहीं दिया।

बेरसेनेव ने कश खींचा।

"मैंने सोचा," उसने हल्के से धुआं छोड़ते हुए कहा, "अगर कोई मिल जाये ... मिसाल के लिए आप ... अगर मेरे साथ वहां, ऊपरी मंज़िल पर रहने को राज़ी हो जायें ... तो कितना अच्छा हो! द्मीत्री निकानोरोविच, आप क्या कहते हैं?"

इनसारोव ने आंखें उठाकर उसे देखा।

"आपका प्रस्ताव है कि मैं आपके यहां, बंगले में आकर रहूं।"

"हां। मेरे यहां ऊपरी मंज़िल पर कमरा खाली पड़ा है।"

"अंद्रेय पेत्रोविच, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। लेकिन मेरे ख़्याल में उसका ख़र्च मेरे लिए ज़्यादा होगा।"

"काहे का ख़र्च ज़्यादा होगा?"

"बंगले में रहने का। दो फ़्लैट लेना मेरे लिए नामुमकिन है।"

"असल में मैं," बेरसेनेव ने शुरू किया और रुक गया। "उसके लिए आपको अतिरिक्त रक़म ख़र्च नहीं करनी पड़ेगी।" उसने आगे कहा। "आपका यह फ़्लैट बना रहेगा। वहां सब कुछ बहुत सस्ता है। ऐसा बंदोबस्त भी किया जा सकता है कि हम लोग खाना साथ-साथ खायें।"

इनसारोव चुप रहा। बेरसेनेव को अनकुस लगने लगा।

"कम से कम मिलने के लिए ही कभी मेरे यहां आ जाइये," उसने कुछ ठहरकर कहा। "मेरे घर से दो क़दम पर एक परिवार रहता है, जिससे आपको मिलाने की मेरी बड़ी इच्छा है। इनसारोव, काश आप जानते कि उनकी बेटी कितनी लाजवाब है। वहां मेरा एक घनिष्ठ मित्र भी रहता है। उसमें बड़ी प्रतिभा है। मुझे विश्वास है, आप दोनों की अच्छी छनेगी। (रूसी को सत्कार करने का शौक़ होता है – और कुछ नहीं तो अपने दोस्तों से ही मिला देगा।) वाक़ई, आ जाइये। यों बेहतर होगा कि आप मेरे यहां रहने लगें। हम लोग साथ-साथ काम कर सकते हैं, पढ़ सकते हैं।... आप जानते ही हैं कि मैं इतिहास और दर्शनशास्त्र का अध्ययन करता हूं। इनमें आपको भी दिलचस्पी है। मेरे पास बहुत सी पुस्तकें हैं।"

इनसारोव खड़ा हो गया और कमरे में इधर से उधर और उधर से इधर टहला।

"क्या मैं जान सकता हूं," उसने आख़िर पूछा। "बंगले का आप किराया कितना देते हैं?"

"सौ चांदी के रूबल।"

"कमरे कितने हैं?"

"पांच।"

"यानी हिसाब के अनुसार एक कमरे के हुए बीस रूबल।"

"हां।... लेकिन मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। कमरा खाली पड़ा है।"

"हो सकता है, फिर भी मेरी बात सुनिए," इनसारोव ने हठ भरे स्वर में किन्तु निष्कपटता के साथ सिर हिलाते हुए कहा। "आपका प्रस्ताव मैं केवल इस स्थिति में स्वीकार कर सकता हूं कि आप मुझसे हिसाब के अनुसार रक़म लेने को राज़ी हो जायें। बीस रूबल देना मेरे लिए संभव है और फिर जैसा आपने कहा, दूसरी चीज़ों में मैं वहां किफ़ायत कर सकूंगा।"

"ठीक है, लेकिन मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता।"

"दूसरी हालत में मुमकिन नहीं है, अंद्रेय पेत्रोविच।"

"जैसा आप कहें। मगर हैं आप बड़े ज़िद्दी।"

इनसारोव ने फिर कोई जवाब नहीं दिया।

दो नौजवानों ने तै किया कि इनसारोव किस दिन बंगले में आ जायेगा। उन्होंने मकान-मालिक को बुलाया। परन्तु उसने पहले अपनी बेटी को, सात बरस की लड़की को भेजा, जिसके सिर पर छींट का खूब बड़ा स्कार्फ़ बंधा था। बहुत ध्यान के साथ, लगभग डरते हुए उसने इनसारोव की तमाम बातें सुनीं, और चुपचाप लौट गयी। उसके बाद मां आयी जो गर्भावस्था के आख़िरी महीने में थी। उसके सिर पर भी स्कार्फ़ था, लेकिन बहुत छोटा। इनसारोव ने उसे बताया कि वह कुन्त्सोवो के पास बंगले में रहने जा रहा है, लेकिन, फ़्लैट वह छोड़ नहीं रहा और उसका तमाम सामान उन लोगों की निगरानी में रहेगा। दर्ज़िन भी डर सी गयी और वापस चली गयी। आख़िर मकान-मालिक आया। शुरू में जान पड़ा कि वह सब कुछ समझ गया, सिर्फ सोचते हुए बोला, "कुन्त्सोवो के पास?"। बाहर निकलते ही उसने यकायक फिर से दरवाज़ा खोला और चिल्लाया, "फ़्लैट का आपई कै पास रहैगो?" इनसारोव ने उसे समझाया-बुझाया। "हमें जानना चाहिए," दर्ज़ी ने रुखाई से दोहराया और चला गया।

बेरसेनेव अपनी सफलता से बहुत प्रसन्न होकर घर लौटने लगा। इनसारोव उसे शराफ़त के साथ दरवाज़े तक छोड़ने आया जो रूस में बहुत कम देखने में आता है। अकेले रह जाने पर इनसारोव ने सम्हालकर कोट उतारा और काग़ज़-पत्र ठीक करने लगा।

८

उसी दिन शाम को आन्ना वसील्येव्ना बैठकख़ाने में बैठकर रोने की तैयारी करने लगीं। कमरे में उनके अलावा उनके पति और एक उवार इवानोविच स्ताख़ोव थे जो निकोलाई अर्तेम्येविच के दूर के चाचा होते थे। फ़ौज के रिटायर्ड कोरनेट थे, उम्र कोई साठ वर्ष। स्थूलकाय इतने कि चलना दूभर था। फूला हुआ पीला चेहरा, उसमें ऊंघती सी पीली आंखें और बेरंग मोटे होंठ। रिटायर होने के समय से ही वह मास्को में रह रहे थे और पत्नी द्वारा छोड़ी गयी, जो व्यापारी घराने की थी, छोटी सी सम्पत्ति का सूद खाते थे। वह कुछ नहीं करते थे और शायद सोचते भी नहीं थे। अगर सोचते होंगे तो अपने विचार उन्होंने अपने तक ही सीमित रखे। ज़िंदगी में सिर्फ़ एक बार वह उत्सुक हुए थे और कुछ सरगर्मी दिखायी थी। अख़बारों में जब उन्होंने पढ़ा कि लंदन की विश्व प्रदर्शनी में "कौंट्रोबोम्बारडोन" नामक नया यंत्र दिखाया गया तो उन्होंने उसे मंगाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। यह तक पूछा कि कहां और किस दफ़्तर के ज़रिये उन्हें रक़म भेजनी होगी। उवार इवानोविच तम्बाकू के रंग का ढीला-ढाला कोट पहनते थे और सफ़ेद रंग का गुलूबंद बांधते थे। वह बार-बार और बहुत काफ़ी खाना खाते थे और जब भी किसी मुश्किल में फंसते थे यानी जब भी उन्हें कोई-न-कोई राय ज़ाहिर करनी होती थी तब वह दायें हाथ की उंगलियां ऐंठते हुए हवा में नचाते थे – पहले अंगूठे से छिनगुनिया तक, फिर छिनगुनिया से अंगूठे तक और बड़ी दिक्कत से उनके मुंह से बोल फूटता, "हमें... हां, किसी न किसी तरह..."

उवार इवानोविच खिड़की के पास आरामकुर्सी पर बैठे थे और ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहे थे। निकोलाई अर्तेम्येविच अपने हाथ जेबों में घुसेड़े बड़े-बड़े डग रखते हुए कमरे में टहल रहे थे। उनके चेहरे पर नाख़ुशी की छाप थी।

आख़िर वह रुके और उन्होंने सिर हिलाया।

"हूं, हमारे ज़माने के नौजवान दूसरे ढंग के थे," उन्होंने बात शुरू की। "बड़ों की मंशा नज़रंदाज़ करने की बात वे सोच भी नहीं सकते थे। आज के नौजवानों को देखता हूं तो ताज्जुब

होता है। हो सकता है, मैं गलती पर होऊं और वे ठीक हों। हो सकता है। लेकिन मामलों के प्रति मेरा अपना दृष्टिकोण है। अक़्ल मैंने बेच नहीं खायी। उवार इवानोविच, आप क्या सोचते हैं?"

उवार इवानोविच ने उनकी तरफ़ देखा और सिर्फ़ उंगलियां नचा दीं।

"येलेना निकोलायेव्ना को लीजिये," निकोलाई अर्तेम्येविच ने बात जारी रखी। "सही है कि मैं उसे नहीं समझ पाता। उसके लिए मैं काफ़ी उन्नत नहीं हूं। उसका हृदय इतना विशाल है कि सारी सृष्टि के लिए, छोटे से छोटे तिलचट्टे या मेंढक के लिए भी यानी हरेक के लिए उसमें स्थान है, नहीं है तो केवल सगे बाप के लिए। चलो ठीक है–मैं यह जानता हूं और अपनी टांग नहीं अड़ाता। वे सब कमज़ोर नसों की, शिक्षा की, बादलों के बीच उड़ने की बातें हैं, जिनसे मेरा कोई वास्ता नहीं। लेकिन यह शूबिन साहब? मान लिया कि वह लाजवाब कलाकार हैं, बेजोड़ हैं–मुझे इससे कोई शिकायत नहीं। मगर अपने से बड़े की, ऐसे इंसान की इज़्ज़त न करना, जिसका, असल में, उसे बहुत शुक्रगुज़ार होना चाहिए, यह तो, अपने नीरक्षीर विवेक के रहते भी मैं गंवारा नहीं कर सकता। मेरा स्वभाव कड़ा नहीं है, ज़रा भी नहीं, परंतु हर बात की एक हद होती है।"

आन्ना वसील्येव्ना ने उत्तेजित भाव से घंटी बजायी। नौकर लड़का दौड़ा आया।

"पावेल याकोव्लेविच कहां हैं?" उन्होंने पूछा। "मैंने बुलवाया है तो आ क्यों नहीं रहे?"

निकोलाई अर्तेम्येविच ने कंधे बिचका दिये।

"आखिर किसलिए आप उसे बुलाना चाहती हैं? मैंने बुलाने को नहीं कहा; मैं यह चाहता भी नहीं।"

"क्या मतलब, किसलिए? उसने आपको परेशान किया। हो सकता है, आपके इलाज में खलल डाला। मैं उससे पूछना चाहती हूं। मैं जानना चाहती हूं कि उसने आपको कैसे नाराज़ किया।"

"मैं फिर कहता हूं कि मैं उसे बुलवाना नहीं चाहता। आखिर क्यों और सो भी भृत्ये समक्षे..."

आन्ना वसील्येव्ना का चेहरा कुछ लाल हो गया।

"ऐसा मत कहिए, निकोलाई अर्तेम्येविच। भृत्ये समक्षे... मैं कभी नहीं... जा फ़ेद्या। और सुन, पावेल याकोव्लेविच को फ़ौरन यहां बुला।"

छोकरा चला गया।

"इस सबकी क़तई कोई ज़रूरत नहीं," निकोलाई अर्तेम्येविच ने दांत भींचे-भींचे कहा और फिर कमरे में टहलने लगे। "यह मेरा इरादा था ही नहीं।"

"लेकिन पॉल को आपसे माफ़ी मांगनी चाहिए।"

"उसके माफ़ी मांगने का मैं क्या करूंगा? और माफ़ी मांगने में धरा क्या है? कोरी बात, और कुछ नहीं।"

"क्या करूंगा का क्या मतलब? उसे तमीज़ सिखानी चाहिए।"

"आप ख़ुद सिखाइये। शायद आपकी बात गले से उतर जाये। मुझे उससे कोई कीना नहीं है।"

"नहीं निकोलाई अर्तेम्येविच, आज जबसे आप आये हैं, आप बहुत व्याकुल हैं। इतनी देर में मेरे देखते-देखते आप दुबला गये हैं। मुझे लगता है, इलाज से आपको फ़ायदा नहीं हो रहा।"

"इलाज मेरे लिए एकदम आवश्यक है," उन्होंने कहा। "मेरा जिगर ख़राब हो गया है।"

इसी घड़ी शूबिन अंदर आ गया। वह थका हुआ जान पड़ता था। उसके होंठों पर हल्की सी, कुछ-कुछ उपहास भरी मुस्कान खेल रही थी।

"आन्ना वसील्येव्ना, आपने मुझे बुलाया है?" उसने पूछा।

"हां, ज़रूर बुलाया है। सुनो पॉल, यह बहुत बुरी बात है। मैं तुमसे बहुत नाराज़ हूं। निकोलाई अर्तेम्येविच से तुमने ऐसी गुस्ताख़ी क्यों की?"

"निकोलाई अर्तेम्येविच ने आपसे मेरी शिकायत की है?" शूबिन ने पूछा। और होंठों पर वही उपहास भरी मुस्कान लिए स्ताख़ोव की ओर देखा।

उन्होंने मुंह फेरकर आंखें नीची कर लीं।

"हां, शिकायत की है। मुझे नहीं मालूम, तुमने उनसे क्या गुस्ताख़ी की है, लेकिन तुमको उनसे अभी, इसी वक़्त माफ़ी मांगनी

चाहिए, क्योंकि उनकी सेहत अब बहुत खराब हो गयी है। फिर नौजवानों को उपकार करनेवालों की इज़्ज़त करनी चाहिए।"

"तर्क भी खूब है!" शूबिन ने सोचा और स्ताखोव की ओर मुड़ गया।

"निकोलाई अर्तेम्येविच," उसने विनय से कुछ झुकते हुए कहा, "अगर मैंने आपका किसी भी तरह अपमान किया है तो मैं आपसे माफ़ी मांगने को तैयार हूं।"

"बात... यह नहीं थी," स्ताखोव ने अभी भी शूबिन से आंखें बचाते हुए जवाब दिया। "बहरहाल, मैं खुशी से तुम्हें माफ़ करता हूं, क्योंकि, जैसा तुम जानते हो, मैं कड़ा आदमी नहीं हूं।"

"इसमें किसी को शक नहीं है!" शूबिन ने कहा। "लेकिन मुझे पूछने की इजाज़त दीजिये: क्या आन्ना वसील्येव्ना को मालूम है कि मेरा क़सूर क्या है?"

"नहीं, मुझे कुछ मालूम नहीं," आन्ना वसील्येव्ना ने जवाब दिया और गर्दन आगे बढ़ा दी।

"हे भगवान!" स्ताखोव के मुंह से फ़ौरन निकला, "कितनी बार मैंने अनुरोध किया है, विनती की है... कितनी बार मैंने कहा है कि ऐसी सफ़ाइयों, ऐसे नाटकों से मुझे सख्त नफ़रत है! कभी-कभा आदमी घर आता है, आराम करना चाहता है, – घर के लोग, घरेलू वातावरण की बात होती है, कहते हैं, कुटुम्बी बनना चाहिए, और यहां होते हैं तमाशे, होती है मुसीबत। क्षण भर को चैन नहीं। चाहे-न-चाहे, आदमी को क्लबघर जाना पड़ता है, या... फिर कहीं और। आदमी तो आदमी ही है, उसके शरीर की भी कुछ आवश्यकताएं होती हैं। और यहां..."

अपना कथन समाप्त किये बिना ही वह झपटकर बाहर निकले और भड़ाक से दरवाज़ा बंद कर दिया। आन्ना वसील्येव्ना पीछे से देखती रहीं।

"क्लबघर! हुं," कटुता के साथ वह बुड़बुड़ायीं। "आनंदी जीव, आप क्लबघर नहीं जा रहे। वहां मेरे तबेले के घोड़ों की भेंट – सो भी भूरे घोड़ों की भेंट – लेने को कौन बैठा है? वह तो मेरा प्यारा रंग है!" फिर आवाज़ तेज़ करते हुए उन्होंने कहा,

"हां, रंगीले महाशय, आप क्लबघर नहीं जा रहे। और पॉल, तुम्हें शर्म नहीं आती?" उन्होंने उठते हुए कहा। "मैंने सोचा था, बड़े हो गये! अब मेरा सिर दर्द करने लगा है। ज़ोया कहां है, कुछ मालूम है?"

"शायद ऊपर अपने कमरे में है। यह समझदार लोमड़ी बिगड़े मौसम में हमेशा अपने कोटर में छिप जाती है।"

"बस, बस!" आन्ना वसील्येव्ना ने इर्द-गिर्द खोजती हुई नज़र दौड़ायी। "पिसी कंद की मेरी गिलसिया तुमने नहीं देखी? पॉल, एक मेहरबानी करो! आगे से मुझे नाराज़ मत करना।"

"ऐसा भी कभी हो सकता है, चाची! लाइये, आपका हाथ चूम लूं। और वह कंद मैंने कमरे में आपकी मेज़ पर रखी देखी थी।"

"दार्या हमेशा इधर-उधर रख देती है," आन्ना वसील्येव्ना ने कहा और अपनी रेशमी फ़ॉक सरसराती हुई कमरे से निकल गयीं।

शूबिन ने उनके पीछे-पीछे जाना चाहा, परंतु उवार इवानोविच का मंद स्वर सुनकर रुक गया।

"तुम जैसे फुस्सू के साथ... दूसरी तरह... बर्ताव करना था," रिटायर्ड कोरनेट ने ठहर-ठहरकर कहा।

शूबिन उनके पास पहुंचा।

"आखिर किसलिए, आदरणीय उवार इवानोविच?"

"किसलिए? तुम छोटे हो, तमीज़ से पेश आओ।"

"किस के साथ?"

"तुम जानते हो, किसके साथ। बत्तीसी मत निकालो।"

शूबिन ने हाथ सीने पर बांध लिए।

"आप समष्टि के प्रतिनिधि हैं," उसने कहा, "आप प्रकृति की संतान हैं, सामाजिक इमारत की नींव हैं।"

उवार इवानोविच ने उंगलियां नचायीं।

"बहुत हो गया, नौजवान, गुस्सा मत दिलाओ।"

"कुलीन देवता, देखिये न," शूबिन ने कहा। "अब जवान नहीं रहे, लेकिन कितना भोलाभाला, बालक जैसा विश्वास बना हुआ है! आदर करने की बात! मगर शक्ति पुरुष, क्या आप

जानते हैं, कि निकोलाई अर्तेम्येविच मुझ पर आग-बबूला क्यों हो उठे? आज सारी सुबह मैंने उनके साथ उनकी जरमनिया के यहां बितायी। हम तीनों ने मिलकर गाना गाया: 'छोड़के न जाना ...'* आपको सुनना चाहिए था। मेरे ख़्याल में आपको मज़ा आता। श्रीमान जी, हमने इतना गाया, इतना गाया, कि मैं उकता गया। मुझे लगा, मामला कुछ गड़बड़ है—स्नेह बहुत पिघल रहा है। सो मैंने दोनों को चिढ़ाना शुरू कर दिया। बड़े ढंग से किया। पहले वह मुझसे भड़की, फिर उनसे। इसके बाद वह उस पर ख़फ़ा हुए और बोले कि उन्हें केवल घर में सुख मिलता है, वहां उनके लिए स्वर्ग है। उसने कहा कि उनमें कोई चरित्र नहीं है। तब जर्मन में मैंने जड़ दिया, "वल्लाह!" वह उठ गये और मैं रुक गया। वह यहां आये, मतलब है कि स्वर्ग में, लेकिन स्वर्ग में भी मरन। और वह बुड़बुड़ाने लगे, तो आप ही बताइये, दोषी कौन है?"

"ज़ाहिर है, तुम," उवार इवानोविच ने जवाब दिया।"

शूबिन उनका मुंह ताकने लगा।

"सम्माननीय महावीर," उसने विनीत स्वर में कहा, "क्या मैं पूछ सकता हूं, कि इन रहस्यमय शब्दों को आपने अपनी चिंतन क्षमता के किसी उपयोग के पश्चात उच्चारित किया अथवा, जिसे ध्वनि कहते हैं, वह वायु-स्फुरण उत्पन्न करने की क्षणिक आकांक्षा के वशीभूत होकर?"

"कह रहा हूं, गुस्सा मत दिलाओ," उवार इवानोविच कराह उठे।

शूबिन हंसता हुआ बाहर चला गया।

"कोई है!" पंद्रह मिनट बाद उवार इवानोविच ने पुकारा, "ज़रा वोद्का ... गिलास भर लाना।"

नौकर लड़का ट्रे में वोद्का और नमकीन मछली ले आया। उवार इवानोविच ने सम्हालकर गिलास उठाया और देर तक बड़े ध्यान से उसे देखते रहे मानो ठीक-ठीक समझ नहीं पा रहे, कि

---

* १९वीं सदी के प्रसिद्ध रूसी कवि अफ़नासी फ़ेत की कविता के आधार पर रचित गीत।

उनके हाथ में है क्या। फिर उन्होंने छोकरे की तरफ़ देखा और पूछा, कि क्या उसका नाम वास्का है। इसके बाद दुखिया सूरत बनायी, वोद्का पी, मछली का टुकड़ा मुंह में डाला और जेब में रूमाल ढूंढ़ने लगे। काफ़ी समय गुज़रने पर जब छोकरा ट्रे और जग हटा चुका था, मछली का बाक़ी टुकड़ा खा चुका था और मालिक के ओवरकोट से लगकर झपकी ले चुका था – तब भी उवार इवानोविच फैली हुई उंगलियों पर रूमाल लिये बैठे थे और पहले जैसे ही ध्यान के साथ कभी खिड़की को देखते थे तो कभी फ़र्श और दीवारों को।



शूबिन ने अपने कमरे में लौटकर पुस्तक खोली ही थी, कि निकोलाई अर्तेम्येविच का नौकर सावधानी से अंदर आया और एक छोटा सा तिकोना ख़त उसे दे दिया, जो बाक़ायदे बड़े चिन्हवाली मुहर से सीलबंद था। उसमें लिखा था, "मुझे उम्मीद हैं, कि एक शरीफ़ आदमी होने के नाते आप उस प्रोमिसरी नोट की ओर इशारा तक नहीं करेंगे, जिसकी आज सुबह चर्चा हुई थी। मेरे सम्बंध, मेरे नियम, रक़म की नगण्यता और दूसरी परिस्थितियां आप जानते हैं। फिर परिवारिक रहस्यों का आदर करना चाहिए। परिवार की शांति एक पवित्र वस्तु है जिसे निर्दयी को छोड़ कोई और भंग नहीं करता और आपको वैसा मानने का मेरे पास कोई कारण नहीं है। (यह ख़त लौटा दीजिए) – नि० स्ता०।"

शूबिन ने ख़त के नीचे पेंसिल से लिख दिया, "चिन्ता मत कीजिए। दूसरों की जेबों से अभी मैं रूमाल नहीं उड़ाता।" ख़त नौकर को लौटाकर उसने फिर से पुस्तक उठायी। लेकिन कुछ ही समय बाद वह उसके हाथों से खिसक गयी। उसने सूर्यास्त के समय लोहित हो गये आकाश और चीड़ के दो नये, किन्तु सबल पेड़ों की ओर देखा, जो दूसरों से अलग खड़े थे। वह सोचने लगा, कि चीड़ के पेड़, जो दिन के समय नीले से होते हैं, शाम के वक़्त सुंदर हरी आभा कैसे बिखेरने लगते हैं। और वह बाग़ में निकल गया। हृदय में कहीं आशा छिपी थी, कि वहां येलेना से भेंट हो जायेगी। उसे निराशा नहीं

हुई। सामने ही, झाड़ियों के बीच पथ पर उसकी फ़्रॉक झलक गयी। उसने क़दम बढ़ाये और येलेना के बराबर में पहुंचते ही कहा:

"मेरी तरफ़ मत देखिये, मैं इसके लायक़ नहीं।"

उसने उड़ती नज़र से देखा, उड़ती मुस्कान होंठों पर खेली और वह बाग़ के भीतर आगे बढ़ गयी। शूबिन पीछे-पीछे चला।

"मैंने कहा, मेरी तरफ़ मत देखिये," उसने बात शुरू की, "और मैं आपसे बातें कर रहा हूं। अंतर्विरोध साफ़ है। मगर कोई बात नहीं। मैं ऐसा पहली बार नहीं कर रहा। मैं सोच रहा था, कि कल की अपनी बेवकूफ़ी के लिए मैंने अभी तक आपसे ठीक तरह से क्षमा भी नहीं मांगी। येलेना निकोलायेव्ना, आप मुझसे नाराज़ तो नहीं हैं?"

वह रुक गयी, लेकिन फ़ौरन जवाब नहीं दिया – इसलिए नहीं कि वह नाराज़ थी, बल्कि इसलिए कि उसके दिमाग़ में दूसरी बातें थीं।

"नहीं," आखिर उसने कहा, "मैं ज़रा भी नाराज़ नहीं हूं।"

शूबिन ने होंठ काट लिया।

"कितनी ध्यानमग्न हैं, चेहरे पर कैसा बेपरवाही का भाव है!" वह बड़बड़ाया। फिर आवाज़ ऊंची करते हुए बोला, "येलेना निकोलायेव्ना, क्या मैं आपको एक छोटी सी कहानी सुना सकता हूं? मेरा एक दोस्त था, उस दोस्त का भी एक दोस्त था, जो शुरू में शरीफ़ आदमी की तरह बर्ताव करता था, लेकिन बाद में जिसे पीने की लत पड़ गयी थी। एक दिन सुबह मेरे दोस्त की सड़क पर उससे मुठभेड़ हो गयी – मैं बता दूं कि तब तक उनकी दोस्ती दफ़न हो चुकी थी। हां, तो मेरे दोस्त की मुठभेड़ हुई और उसने देखा कि वह नशे में है। मेरे दोस्त ने मुंह फेर लिया। तब वह बढ़ आया और बोला, 'अगर आपने सलाम-दुआ न की होती तो मैं बुरा न मानता, मगर आपने मुंह क्यों फेरा? हो सकता है, मैं ग़म ग़लत करता होऊं। मेरी आत्मा को शांति मिले!'"

शूबिन चुप हो गया।

"कहानी खतम?" येलेना ने पूछा।

"खतम।"

"मैं समझी नहीं, आपका इशारा क्या है? अभी आप कह रहे थे कि मैं आपकी तरफ़ देखूं नहीं।"

"हां, और अब मैंने कहा कि मुंह फेर लेना अच्छा नहीं होता।"

"क्या मैं..." येलेना कहने लगी।

"क्या नहीं?"

येलेना के चेहरे पर हल्की सी लाली दौड़ी और उसने शूबिन की ओर हाथ बढ़ाया। उसने उसे अपने दोनों हाथों में थाम लिया।

"सोचा जा सकता है, आपने मेरी बदनीयती पकड़ ली," येलेना ने कहा, "लेकिन आपकी शंका निर्मूल है। आपको दुतकारने का मुझे कभी ख़्याल नहीं आया।"

"यही सही। परंतु स्वीकार कीजिए कि इसी समय आपके दिमाग़ में हज़ारों विचार आ-जा रहे हैं, जिनमें से एक भी आप मुझे नहीं बतायेंगी। क्यों? मैंने ग़लत तो नहीं कहा?"

"हो सकता है।"

"लेकिन क्यों? आख़िर क्यों?"

"मेरे विचार मेरी अपनी ही समझ में नहीं आते," येलेना ने कहा।

"इसीलिए तो किसी दूसरे से उनकी बात करनी चाहिए," शूबिन फ़ौरन बोला। "लेकिन मैं बताऊं, आप क्यों नहीं कहतीं। क्योंकि आप मुझे घटिया आदमी मानती हैं।"

"मैं?"

"हां, आप। आपका ख़्याल है, कि चूंकि मैं चित्रकार हूं, इसलिए जो कुछ कहता-करता हूं, उसमें आधा दिखावा होता है। और मैं कोई भी काम करने के नाकाबिल हूं। हो सकता है आपकी यह बात ठीक हो। मगर आप यह भी सोचती हैं, कि मेरी भावनाएं सच्ची और गहरी नहीं हो सकतीं, कि मैं ईमानदारी से रो भी नहीं सकता, कि मैं बड़बड़िया बातूनी हूं, सिर्फ़ गप्पें हांकता हूं—और यह सब इसलिए, कि मैं चित्रकार हूं। कितने अभागे, कैसे भगवान के भुलाये हैं हम चित्रकार लोग! उदाहरण के लिए मैं शर्त बद सकता हूं, कि मेरे पश्चात्ताप का आपको विश्वास नहीं है।"

"नहीं पावेल याकोव्लेविच, आपके पश्चात्ताप का मुझे विश्वास है, आपके आंसुओं को भी मैं सच्चे समझती हूं। लेकिन मुझे लगता

है, कि अपने पश्चात्ताप में आपको आनंद मिलता है और अपने आंसुओं में भी।"

शूबिन चौंक गया।

"हूं, डाक्टर के शब्दों में कहा जाये तो मर्ज़ लाइलाज है। सिर झुकाकर मंजूर करने के अलावा कोई और चारा नहीं है। हे भगवान, क्या यह सही है, क्या सचमुच मैं अपने को लेकर खिलवाड़ करता रहता हूं, जबकि बराबर में ऐसी अनोखी आत्मा मौजूद है? और ऊपर से यह भी मालूम हो जाये कि इस आत्मा में मैं कभी झांक नहीं पाऊंगा, कभी समझ नहीं पाऊंगा कि यह आत्मा उदास अथवा प्रसन्न क्यों है, इसमें कौन सा मंथन हो रहा है, यह क्या चाहती है, किस ओर उन्मुख है।..." फिर कुछ ठहरकर उसने कहा, "अच्छा यह तो बताइये कि क्या आप कभी भी, किसी भी हालत में एक चित्रकार को प्यार नहीं कर सकती?"

येलेना ने उससे आंखें मिलायीं।

"नहीं, पावेल याकोव्लेविच, मुझे नहीं लगता।"

"यह साफ़ ही था," शूबिन ने रोनी सूरत बनाकर कहा। "तो मेरी समझ में ठीक यही होगा, कि आपके अकेले घूमने में मैं कोई विघ्न न डालूं। किसी प्रोफ़ेसर ने पूछ लिया होता: आपकी इंकारी के कारण क्या हैं? लेकिन मैं प्रोफ़ेसर नहीं हूं। आपकी नज़रों में मैं एक बच्चा हूं। लेकिन याद रखिए, कि बच्चों से मुंह नहीं मोड़ा जाता। अलविदा। मेरी आत्मा को शांति मिले।"

येलेना ने उसे रोकना चाहा परंतु कुछ सोचा और कह दिया, "अलविदा।"

शूबिन अहाते से बाहर निकल गया। स्ताख़ोव परिवार के बंगले से कुछ दूर उसे बेरसेनेव दिखायी पड़ा, जो सिर झुकाये और टोप पीछे खिसकाये तेज़ चाल से बढ़ा आ रहा था।

"अंद्रेय पेत्रोविच!" शूबिन ने आवाज़ दी।

बेरसेनेव रुक गया।

"बढ़े जाओ, बढ़े जाओ," शूबिन ने कहा। "मैंने यों ही पुकार लिया। मैं तुम्हें रोक नहीं रहा। सीधे बाग़ में चले जाओ, वहां तुम्हें येलेना मिल जायेगी। शायद वह तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।... बहरहाल, उसे किसी का इंतज़ार है।... अर्थ समझते हो इन

शब्दों का: वह प्रतीक्षा कर रही है। और मेरे भाई, जानते हो, कैसा अजीब तमाशा है? ज़रा सोचो, दो बरस से मैं एक ही घर में उसके साथ रह रहा हूं, मैं उसे प्यार करता हूं – लेकिन अभी, इसी वक़्त मैंने उसे वास्तव में देखा। मैं नहीं कहता, कि समझ लिया। मैंने देखा और हाथ के तोते उड़ गये। मेहरबानी करके ऐसी तंज़िया मुस्कान के साथ मुझे मत देखो, तुम्हारे शालीन चेहरे पर यह शोभा नहीं देती। हां, जानता हूं, तुम मुझे आन्नुश्का की याद दिलाना चाहते हो। तो क्या हुआ? मैं इंकार नहीं करता। आन्नुश्काएं ही हम जैसों के लायक़ हैं। आन्नुश्काएं और ज़ोयाएं ज़िन्दाबाद! और अव्गुस्तीना ख़्रिस्तिआनोव्ना भी! अब तुम येलेना के पास जाओ, और मैं जाता हूं... तुम सोचते होगे, आन्नुश्का के पास? नहीं, भाई, उससे भी ग़लत जगह। मैं राजकुमार चिकुरासोव के यहां जा रहा हूं। इस नाम का एक कलाप्रेमी है, कज़ान का तातार है – वोल्गिन जैसा। यह निमंत्रण-पत्र देखते हो? और ये अक्षर R. S. V. P.* यहां देहात में भी लोग मुझे चैन से रहने नहीं देंगे! सलाम!"

शूबिन की तक़रीर बेरसैनेव ने चुपचाप सुनी मानो उसकी ख़ातिर कुछ परेशान हो गया हो। फिर वह स्ताख़ोव के अहाते में दाख़िल हुआ। शूबिन वाक़ई राजकुमार चिकुरासोव के यहां गया और उससे बड़ी सौजन्यता दिखाते हुए ढिठाई भरी, चुभती बातें कीं। कज़ान के कलाप्रेमी तातार ने अट्टहास किया, उसके मेहमान भी हंसे, लेकिन मज़ा किसी को नहीं आया और जुदा हुए तो ख़ार खाये थे। एक-दूसरे से नाम मात्र को परिचित दो महानुभाव नेव्स्की प्रॉस्पेकट ** पर मिलने पर इसी तरह दांत दिखाकर ज़बरदस्ती मुस्कराते हैं, अपनी आंखों, नाक और गालों को सिकोड़ते-फैलाते हैं और एक-दूसरे को काटकर आगे निकल जाने पर उसी क्षण चेहरे पर पहलेवाला उदासीन या चिड़चिड़ा भाव ले आते हैं, लेकिन आम तौर भाव होता है बवासीर से बेहाल आदमी जैसा।

---

*Répondez s'il vous plaît (फ़्रांसीसी) – कृपया उत्तर दीजिये।

** पीटर्सबर्ग (आज के लेनिनग्राद) का प्रसिद्ध मार्ग।

१०

येलेना ने मैत्रीभाव से बेरसेनेव का स्वागत किया। तब तक वह बैठक में लौट आयी थी। उसने फ़ौरन, लगभग अधीरता से पिछले दिन की बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाया। वह अकेली थी, निकोलाई अर्तेम्येविच चुपचाप कहीं खिसक गये थे और आन्ना वसील्येव्ना माथे पर गीली पट्टी रखे ऊपर लेटी थीं। ज़ोया उनके पास बैठी थी, स्कर्ट क़ायदे से पहन रखा था और हाथ गोदी में थे। उवार इवानोविच अटारी में चौड़े, आरामदेह सोफ़े पर सो रहे थे, जिसका नाम ही पड़ गया था "सुलानेवाला"। बेरसेनेव ने फिर से अपना पिता की चर्चा की जो उसके लिए श्रद्धा के पात्र थे। उनके बारे में यहां कुछ शब्द कह देना उचित होगा।

वह बयासी अर्ध-दासों के स्वाभी थे, लेकिन अपनी मृत्यु से कुछ पहले उन्होंने सबको मुक्ति दे दी थी। इलूमिनेटों* के संगठन में वह शामिल थे, गैटिनजेन में शिक्षा पायी थी और 'संसार में आत्मा की अभिव्यक्तियां अथवा रूपांतर' नामक पांडु-लिपि के रचयिता थे, जिसमें शैलिंग और स्वेडेनबोर्ग** के विचारों और प्रजातंत्रवाद का बड़े अनोखे ढंग से मिश्रण किया गया था। बेरसेनेव के पिता बालक को छुटपन में ही, मां की मृत्यु के फ़ौरन बाद मास्को ले आये थे और उसकी शिक्षा का भार स्वयं उठा लिया था। वह हर पाठ तैयार करते थे, असाधारण निष्ठा से और बिना किसी सफलता के काम करते थे। वह विचारों में खोये किताबी कीड़े और रहस्यवादी थे। गूढ़, अलंकारिक भाषा का उपयोग करते हुए, अधिकतर तुलना के माध्यम से बेसुरी आवाज़ में अटक-अटककर वह अपनी बात कहते थे। बेटे तक से, जो उनकी आंखों का तारा था, वह सहमे रहते थे। फिर क्या आश्चर्य कि पाठों के समय बेटा मुंह बाये बैठा देखता रहता था और उसने रंच मात्र भी प्रगति नहीं की। आखिर को अधेड़ व्यक्ति की (वह उस समय लगभग पचास वर्ष के थे, विवाह उन्होंने काफ़ी देरी से किया था)

---

* १६वीं शताब्दी में यूरोप के एक गुप्त से संगठन से अभिप्राय है।

** १८वीं सदी में स्वीडेन के रहस्यवादी विद्वान।

समझ में आ गया, कि इस तरह काम नहीं चलेगा और उन्होंने अपने अंद्रेय को बोर्डिंग स्कूल में भरती करा दिया। अंद्रेय ठीक तरह से पढ़ने लगा परंतु पिता की निगरानी से उसे मुक्ति नहीं मिली। उसके पिता बराबर आते रहते थे और अपनी हिदायतों व सलाहों से उन्होंने प्रिंसिपल की नाक में दम कर दिया। कक्षा के मास्टर भी बिन-बुलाये मेहमान को एक आफ़त समझते थे जो बीच-बीच में उनके लिए, मास्टरों के ही शब्दों में, शिक्षण की अनोखी गूढ़ पुस्तकें लाते रहते थे। स्कूल के लड़के भी कुछ-कुछ सांवले, दाग़ भरे चेहरेवाले बूढ़े की दुबली-पतली आकृति देखकर, जो हमेशा नुकीले छोरों वाला अजीब सा भूरा कोट पहने रहते थे, परेशान हो उठते थे। उन्हें कभी ख्याल तक नहीं आया कि लम्बी नाक और सारस जैसी चालवाले इन गुमसुम, न हंसनेवाले महाशय का हृदय उनमें से हरेक के लिए – लगभग वैसे ही जैसे कि स्वयं अपने बेटे के लिए, चिंता और पीड़ा से भर जाता था। एक बार उन्होंने लड़कों को वाशिंगटन* के बारे में बताने की सोची और व्याख्यान आरंभ किया, "मेरे किशोर शिष्यो!" लेकिन उनकी अजीबो-ग़रीब आवाज़ के पहले स्वर कान में पड़ने की देर थी कि किशोर शिष्य तितर-बितर हो गये। गैटिनजेन के सच्चे ग्रेजुएट की ज़िंदगी फूलों की सेज नहीं थी। इतिहास के चक्र और तरह-तरह की समस्याओं तथा विचारों ने उन्हें बराबर दबाये रखा। युवा बेरसेनेव यूनीवर्सिटी में भरती हो गया तो वह बेटे के साथ लेक्चरों में जाते थे। मगर सेहत दग़ा देने लगी थी। सन १८४८ की घटनाओं ने** उनकी नींद ही छीन ली (पूरी पुस्तक फिर से लिखने का सवाल था)। १८५३ की सर्दियों में, बेटे के यूनीवर्सिटी पास करने से पहले उनकी मृत्यु हो गयी। किन्तु एम० ए० के डिप्लोमा के लिए बधाई और विद्या की सेवा करने के लिए आशीर्वाद उन्होंने पहले ही दे दिया था। अपनी मृत्यु से दो घंटे पहले उन्होंने अंद्रेय से कहा था, "यह मशाल, जो मैं शरीर में शक्ति रहने तक बराबर उठाये रहा, अब तुम्हारे हाथों में थमा रहा हूं। तुम भी आख़िरी दम तक इसे ऊंचा उठाये रखना।"

बेरसेनेव ने येलेना को अपने पिता के बारे में बहुत कुछ बता-

* अमरीका के स्वाधीनता सेनानी और पहले राष्ट्रपति।

** उस वर्ष योरप के कई देशों में क्रांतियां हुई थीं।

या। उसकी उपस्थिति में अनुभव होनेवाली व्याकुलता तिरोहित हो गयी थी और तुतलाहट भी कम थी। धीरे-धीरे यूनिवर्सिटी की बात चल पड़ी।

"अच्छा यह तो बताइये," येलेना ने पूछा, "क्या आपके साथियों में कोई विलक्षण व्यक्ति था?"

बेरसेनेव को शूबिन का कथन याद हो आया।

"नहीं, येलेना निकोलायेव्ना, सच कहूं तो हमारे बीच एक भी विलक्षण व्यक्ति नहीं था। होता भी कहां से! कहते हैं, एक वक़्त मास्को यूनिवर्सिटी की शान थी! लेकिन अब नहीं। अब यह यूनिवर्सिटी नहीं, केवल विद्यालय है।" फिर अपना स्वर धीमा करके वह बोला, "साथियों से मेरी कुछ ख़ास नहीं पटती थी।"

"पटती नहीं थी?" येलेना ने दबी ज़बान में कहा।

"बहरहाल, एक अपवाद है," बेरसेनेव ने बात जारी रखी। "मैं एक छात्र को जानता हूं। यों वह मेरे 'कोर्स' में नहीं था, वह वास्तव में विलक्षण है।"

"नाम क्या है?" येलेना ने दिलचस्पी दिखायी।

"इनसारोव, द्मीत्री निकानोरोविच। वह बलगार है।"

"रूसी नहीं?"

"नहीं।"

"तो वह मास्को में क्यों रहते हैं?"

"वह यहां शिक्षा के लिए आया। और जानती हैं, वह अध्ययन क्यों कर रहा है? उसका बस एक लक्ष्य है: अपनी मातृभूमि की आज़ादी। उसकी ज़िंदगी अनोखी रही। उसके पिता तीरनोव के अच्छे-ख़ासे, ख़ुशहाल व्यापारी थे। तीरनोव आज एक मामूली कस्बा है, लेकिन कभी वह बलगारिया की राजधानी हुआ करता था। तब बलगारिया एक स्वाधीन राज्य था। इनसारोव के पिता सोफ़िया में बिज़नेस करते थे, रूस के साथ उनके सम्बंध थे। उनकी बहन, द्मीत्री इनसारोव की बुआ अभी भी किएव में रहती हैं, स्थानीय हाई स्कूल में इतिहास के प्रधान शिक्षक की पत्नी हैं। सन् १८३५ में, यानी अठारह वर्ष पहले एक भयंकर अपराध हुआ था। इनसारोव की मां अचानक ग़ायब हो गयीं—एक हफ़्ते बाद उनकी लाश मिली, गला कटा हुआ था।"

येलेना थरथरा उठी। बेरसेनेव रुक गया।

"कहे जाइये," येलेना बोली।

"अफ़वाह फैली कि तुर्क आग़ा ने उनका अपहरण कराया था और मार डाला। उनके पति, इनसारोव के पिता मामले की तह तक पहुंचे और उन्होंने बदला लेने की कोशिश की, लेकिन वह आग़ा को खंजर से सिर्फ़ घायल कर पाये।... उन्हें गोली मार दी गयी।"

"गोली मार दी गयी? बिना मुक़दमे के?"

"जी हां। इनसारोव तब आठ साल का भी नहीं हुआ था। पड़ोसियों ने उसकी देखभाल की। बुआ को भाई के घर पर हुए वज्रपात की खबर मिली तो उन्होंने भतीजे को अपने पास बुलवाया। उसे ओदेस्सा, फिर वहां से किएव पहुंचाया गया। पूरे बारह वर्ष वह किएव में रहा। इसीलिए तो वह रूसी धड़ल्ले से बोलता है।"

"वह रूसी बोलते हैं?"

"वैसे ही जैसे आप और मैं बोल रहे हैं। जब वह बीस वर्ष का हुआ, यह १८४८ के आरंभ की बात है, तो उसने वतन लौटने की सोची। वह सोफ़िया और तीरनोव गया, एक छोर से दूसरे छोर तक सारे बलगारिया को छान डाला। वह वहां दो बरस रहा और अपनी मातृभाषा फिर से सीख ली। तुर्क हुकूमत उसका पीछा करती रही और मुझे लगता है कि इन दो वर्षों में उसे बड़े ख़तरों का सामना करना पड़ा। एक बार मैंने उसकी गर्दन पर बड़ा-सा निशान देखा। ज़ख़्म का ही होना चाहिए। मगर इस सब की बात करना उसे पसंद नहीं है। वह अपने ढंग का चुप्पा है। मैंने पूछने की कोशिश की, लेकिन बेकार। गोलमोल जवाब देता है। बेहद हठीला है। १८५० में वह फिर से रूस आ गया, मास्को आ गया ताकि शिक्षा पूरी कर ले और रूसियों से जान-पहचान बढ़ा ले।... फिर, जब वह यूनिवर्सिटी पास कर लेगा..."

"फिर क्या?" येलेना ने बीच में पूछ लिया।

"देखा जायेगा। पहले से क्या कहा जा सकता है।"

येलेना काफ़ी देर तक बेरसेनेव को एकटक देखती रही।

"आपने कहानी से मेरे मन में कौतूहल पैदा कर दिया है," उसने कहा। "कैसे हैं वह आपके, क्या नाम बताया... इनसारोव?"

"क्या बताऊं... मुझे अच्छा-भला लगता है। आप खुद ही देख लेंगी।"

"वह कैसे?"

"मैं उसे आपके यहां लिवा लाऊंगा। परसों वह हमारे गांव आ रहा है और मेरे ही फ़्लैट में रहेगा।"

"वाक़ई? लेकिन क्या वह हमारे यहां आना चाहेंगे?"

"क्या बात कही! वह खुशी से आयेगा।"

"वह घमंडी हैं?"

"वह? ज़रा भी नहीं। हां, अभिमान उसमें है, लेकिन वैसा नहीं जिस की ओर आपका इशारा है। मिसाल के लिए वह कर्ज़ किसी से नहीं लेगा।"

"वह ग़रीब हैं?

"अमीर नहीं है। जब वह बलगारिया में था, पिता की सम्पत्ति से बचा-खुचा कुछ पैसा जमा किया। बुआ उसकी सहायता करती हैं। लेकिन यह सब मामूली है।..."

"चरित्र में दृढ़ता होनी चाहिए," येलेना ने टीका की।

"हां, फ़ौलादी इंसान है। लेकिन आप देखेंगी कि एकाग्रता, यहां तक कि अपने मौन भाव के बावजूद उसमें बालक जैसी निष्कपटता भी मौजूद है। यों उसकी निष्कपटता हम लोगों जैसी छिछली नहीं है जिनके पास छिपाने को कुछ है ही नहीं।... बहरहाल, मैं उसे आपके यहां ला रहा हूं। थोड़ा ठहर जाइये।"

"वह शर्मीले तो नहीं हैं?" येलेना ने फिर पूछा।

"नहीं, शर्मीला नहीं है। शर्माते वे हैं, जो आवश्यकता से अधिक आत्मगत होते हैं।"

"क्या आप आवश्यकता से अधिक आत्मगत हैं?"

बेरसेनेव अचकचा गया और हथेलियां ऊपर कर दीं।

"आपने मेरा कौतूहल जगा दिया," येलेना ने बात जारी रखी। "अच्छा यह तो बताइये, क्या उन्होंने उस तुर्क आग़ा से बदला ले लिया?"

बेरसेनेव हंस पड़ा।

"यह तो केवल उपन्यासों में होता है, येलेना निकोलायेव्ना। और कौन जाने, बारह वर्षों में वह आग़ा मर ही गया हो।"

"परंतु इनसारोव साहिब ने इसके बारे में आपसे कुछ नहीं कहा?"

"कुछ भी नहीं।"

"वह सोफ़िया क्यों गये थे?"

"वहां उसके पिता रहते थे।"

येलेना सोचने लगी।

"मातृभूमि को आज़ाद करना!" उसने कहा। "इन शब्दों की ध्वनि ही प्रबल है। कितनी महानता है इनमें!..."

इसी समय आन्ना वसील्येव्ना कमरे में आ गयीं और बातचीत भंग हो गयी।

उस शाम घर लौटते हुए बेरसेनेव को अजीब अनुभूति हो रही थी। इनसारोव को येलेना से मिलाने के अपने इरादे पर उसे अफ़सोस नहीं था। युवा बलगार के बारे में उसकी कहानी का येलेना पर जो गहरा प्रभाव पड़ा, वह उसकी दृष्टि में एकदम स्वाभाविक था। यह प्रभाव बढ़ाने का प्रयत्न क्या उसने स्वयं नहीं किया था? परंतु कोई गुप्त और अप्रिय भावना उसके हृदय में कलक रही थी। जलन भरे ग़म ने उसे ग़मगीन बना दिया। मगर इस ग़म के बावजूद उसने "होहेनस्टॉफ़ेन्स का इतिहास" उठा लिया और उसी पृष्ठ से आगे पढ़ना शुरू कर दिया, जहां पिछले दिन छोड़ा था।

११

दो दिन बाद इनसारोव, वायदे के अनुसार, अपना सामान लेकर बेरसेनेव के यहां आ गया। उसके पास कोई नौकर नहीं था, परंतु बिना किसी की सहायता के उसने अपने कमरे को ठीक किया, फ़र्नीचर क़ायदे से रखा, धूल पोंछी और फ़र्श धो डाला। लिखने की मेज़ से वह काफ़ी देर तक जूझता रहा, क्योंकि वह, उसके लिए नियत खिड़कियों के बीच की जगह में अटना ही नहीं चाहती थी। लेकिन स्वाभाविक मौन दृढ़तावाले इनसारोव ने सफलता पाकर ही चैन किया। कमरे में जम जाने के बाद उसने बेरसेनेव से किराये की पेशगी के रूप में दस रूबल लेने को कहा और फिर मोटी सी लठिया उठाकर अपने नये घर के पास-पड़ोस को देखने के लिए

निकल गया। कोई तीन घंटे बाद वह वापस लौटा। बेरसेनेव ने साथ खाना खाने की दावत दी, तो उसने उत्तर दिया, कि आज उसके साथ खाने से वह इंकार नहीं करता, लेकिन वह घर-मालकिन से बात कर चुका है और आयंदा अपना खाना उसी से लिया करेगा।

"पर सुनिए तो," बेरसेनेव ने विरोध करते हुए कहा, "आपको बहुत खराब खाना मिलेगा, क्योंकि उस औरत को पकाना आता ही नहीं। आप मेरे साथ क्यों नहीं खाना चाहते? खर्च हम आधा-आधा बांट लेंगे।"

"अपने साधनों को देखते हुए मैं आप जैसा खाना नहीं खा सकता," इनसारोव ने शांत भाव से मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

इस मुस्कान में कुछ ऐसी बात थी, जो इसरार की इजाज़त नहीं देती थी और बेरसेनेव ने कुछ नहीं कहा। खाने के बाद उसने स्ताखोव परिवार के यहां चलने का प्रस्ताव रखा, परंतु इनसारोव बोला, कि वह सारी शाम अपने देशवासियों को पत्र लिखने की सोचता है, इसलिए अनुरोध है, कि स्ताखोव के यहां जाना अगले दिन के लिए स्थगित कर दिया जाये। बेरसेनेव को पहले ही मालूम था, कि इनसारोव इरादे का पक्का है, लेकिन अब, एक ही मकान में साथ-साथ रहने पर वह पूरी तरह समझ गया, कि इनसारोव अपना कोई भी फ़ैसला कभी नहीं बदलता और इसी तरह दिये गये वचन की पूर्ति वह कभी नहीं टालता। एक जर्मन से भी ज़्यादा यह पाबंदी बेरसेनेव को, ठेठ रूसी आदमी होने के नाते शुरू में कुछ भौंडी बल्कि हास्यजनक लगी। लेकिन जल्दी ही उसे इसकी आदत पड़ गयी और उसने देखा, कि यह पाबंदी तारीफ़ के क़ाबिल भले न हो, पर इससे सुविधा बड़ी रहती है।

आने के अगले दिन इनसारोव सुबह चार बजे उठा, तेज़ी से लगभग सारे कुन्त्सोवो का चक्कर लगाया, नदी में नहाया, गिलास भर ठंडा दूध पिया और काम करने बैठ गया। काम उसके पास बहुत था। वह रूसी इतिहास, न्यायशास्त्र और राजनीतिक अर्थशास्त्र का अध्ययन करता था, बलगारी गीतों और वृत्तांतों का अनुवाद करता था, निकट पूर्व की समस्या पर सामग्री जमा करता था और बलगारों के लिए रूसी व्याकरण तथा रूसियों के लिए बलगारी व्याकरण तैयार कर रहा था। बेरसेनेव

कमरे में आकर उसके साथ फ़ेयरबाख़* के बारे में बातें करने लगा। इनसारोव ने उसे ध्यान से सुना, कभी-कभी, पर समझ-बूझ कर टोका। उसकी आपत्तियों से स्पष्ट था, कि वह तै करना चाहता है, कि उसे फ़ेयरबाख़ का अध्ययन करना चाहिए या उसके बिना काम चल जायेगा। फिर बेरसेनेव ने इनसारोव के काम की चर्चा छेड़ दी और पूछा, कि क्या वह कुछ दिखाना पसंद करेगा? इनसारोव ने दो-तीन बलगार गीतों के अपने अनुवाद पढ़कर सुनाये और उसकी राय जाननी चाही। बेरसेनेव के विचार में अनुवाद ठीक था, परंतु सरसता की कुछ कमी थी। आलोचना को इनसारोव ने स्वीकार किया। गीतों के बाद बेरसेनेव ने बलगारिया की वर्तमान स्थिति का सवाल उठाया और तभी उसने पहली बार देखा, कि मातृ-भूमि का नाम सुनते ही इनसारोव में कैसा परिवर्तन हो गया। यह बात नहीं कि उसका चेहरा उत्तेजित हो उठा या आवाज़ ऊंची हो गयी – नहीं। असल में जान पड़ा, कि समूचा व्यक्ति ही कस गया, आगे को उन्मुख हो गया। उसके होंठों की रेखाएं अधिक स्पष्ट व कड़ी हो गयीं और आंखों की गहराई में कोई छिपी हुई अशमनीय ज्वाला भभक उठी। इनसारोव को अपनी स्वदेश यात्रा की तफ़सीलें बताना पसंद नहीं था, लेकिन बलगारिया के बारे में वह हरेक के साथ खुशी से बातें करता था। बिना किसी हड़बडी के वह तुर्कों, उनके दमन-अत्याचारों, अपने देशवासियों के दुख व मुसीबतों और उनकी आशाओं की चर्चा करता था। उसके हर शब्द में बरसों से केन्द्रीभूत एक अकेली ललक की गूंज भरी थी।

बेरसेनेव को ख़्याल हुआ, कि इसके माता-पिता का तुर्क आग़ा द्वारा किया गया खून शायद रंग ले आया है।

इनसारोव अपनी बात समाप्त भी न कर पाया था, कि द्वार खुला और चौखट पर शूबिन नज़र आया।

वह बहुत अधिक आत्म-विश्वास और प्रसन्नभाव दिखाता हुआ कमरे में दाख़िल हुआ। उसकी रग-रग से वाकिफ़ बेरसेनेव फ़ौरन समझ गया, कि कोई बात उसे खाये जा रही है।

"किसी आडंबर के बिना क्या मैं अपना परिचय दे सकता हूं,"

---

* १९वीं शताब्दी के भौतिकवादी जर्मन दार्शनिक।

उसने खुले दिल से कहा, "मेरा वंशनाम शूबिन है। मैं इस नवयुवक का दोस्त हूं।" (यह कहते हुए उसने बेरसेनेव की ओर इशारा किया)। "आप शायद जनाब इनसारोव हैं। हैं न?"

"हां, मैं इनसारोव हूं।"

"तो बढ़ाइये अपना हाथ, जान-पहचान हो जाये। मालूम नहीं, बेरसेनेव ने आपसे मेरे बारे में कुछ कहा है या नहीं, परंतु आपके बारे में मुझे बहुत कुछ बताया है। आप शहर से यहां आ गये? बढ़िया बात रही! बुरा न मानिए कि मैं आपको इतने ग़ौर से देख रहा हूं। धंधे के नाते मैं मूर्तिकार हूं और लगता है, कि आपके सिर की आकृति गढ़ने के लिए मैं जल्दी ही आपकी अनुमति लूंगा।"

"मेरा सिर आपकी सेवा में हाज़िर है," इनसारोव ने कहा।

"अच्छा, आज हम क्या करने की सोचते हैं?" शूबिन ने यकायक छोटी सी कुर्सी पर बैठकर और फैले घुटनों पर दोनों हाथ टेकते हुए पूछा। "अंद्रेय पेत्रोविच, महानुभाव, आपने आज के लिए कुछ विचारा है? मौसम प्यारा है। सूखी घास और सूखी स्ट्रॉबरी की ऐसी खुशबू आ रही है... मानो जड़ी-बूटी की चाय पी रहे हैं। कुछ मौज करनी चाहिए। कुन्त्सोवो के नये निवासी को यहां की बहुत-सी सुन्दरियां दिखानी चाहिए।" ("इसे कुछ खाये जा रहा है," बेरसेनेव ने मन में सोचा।) "मेरे मित्र होरेशियो*, तुम चुप क्यों हो? अपने श्रीमुख से कुछ शब्द कहो। हम मौज करें या नहीं?"

"मालूम नहीं, इनसारोव का विचार क्या है," बेरसेनेव बोला। "शायद वह काम करना चाहते हैं।"

शूबिन कुर्सी पर घूम गया।

"आप काम करने की सोचते हैं?" उसने कुछ नकसुरी आवाज़ में पूछा।

"नहीं," उसने जवाब दिया, "आज मैं मटरगश्ती कर सकता हूं।"

"वाह!" शूबिन बोला, "बहुत खूब! मेरे दोस्त अंद्रेय पेत्रोविच, जाओ, अपने उन्नत भाल को टोप से ढंक लो और हम लोग

---

* शेक्सपीयर के नाटक 'हैमलेट' का एक पात्र।

नाक की सीध निकल पड़ें। नाकें हमारी जवान हैं, दूर तक सूंघ सकती हैं। मैं एक गंदा सा छोटा ढाबा जानता हूं, जहां खाना नहीं, कचरा दिया जाता है। लेकिन हम मौज करेंगे। चला जाये।"

आधे घंटे बाद वे तीनों मास्को नदी के किनारे-किनारे जा रहे थे। इनसारोव ने एक अनोखा कनटोपा लगा रखा था, जिसे देखकर शूबिन उछल पड़ा हालांकि उसमें बनावट थी। इनसारोव सहज ढंग से चल रहा था। बड़े आराम के साथ वह देखता था, सांस लेता था, बोलता था और मुस्कराता था। उसने यह दिन फ़ुरसत के हवाले कर दिया था और उसका पूरा मज़ा ले रहा था। "समझ-दार लड़के इतवार के दिन इसी तरह घूमते हैं," शूबिन ने बेरसेनेव के कान में फुसफुसाते हुए कहा। शूबिन खुद बड़ी मसखरी दिखा रहा था। वह आगे दौड़ जाता था, प्रसिद्ध मूर्तियों की मुद्रा में खड़ा हो जाता था और घास पर कुलाटें भरता था। इनसारोव की सौम्यता उसे व्याकुल तो नहीं करती थी, लेकिन हां, जोकर की तरह पेश आने पर मजबूर ज़रूर कर रही थी। "फ़ांसीसी हज़रत, आप इतने कुलबुला क्यों रहे हैं?" बेरसेनेव ने एक-दो बार कहा। "हां, मैं फ़ांसीसी हूं, अर्ध-फ़्रांसीसी हूं," शूबिन ने जवाब दिया। "और तुम मज़ाक और गंभीरता के बीच में बने रहो, जैसा कि एक वेटर ने मुझसे कहा था।" नौजवान लोग नदी से मुड़कर सुनहरी फ़सल की ऊंची बाड़ों के बीच तंग, गहरी लीक की ओर बढ़े। एक तरफ़ की फ़सल उन पर नीली सी छाया डाल रही थी। किरणें बिखेरता सूरज बालियों की फुनगियों पर मानो तैर रहा था। चकवा-चकवी गा रहे थे तो बटेरों ने कैं-कैं मचा रखी थी। हवा क़ालीन की तरह बिछी हरी घास को सहलाती थी, ऊपर उठाती थी और जंगली फूलों को नचा देती थी। काफ़ी घूमने-फिरने, रुक-रुक जाने और बातें करने के बाद ये नौजवान गंदे ढाबे पहुंच गये। (रास्ते में शूबिन ने बिना दांत के एक राह-चलते किसान के साथ कूद-कूदकर चलने की भी कोशिश की, जो शरीफ़ज़ादे के बंदरपने पर बराबर हंसता रहा।) ढाबे के नौकर ने उन्हें गिरा ही दिया होता और वास्तव में उनको खाना नहीं, कचरा दिया। शराब किसी बालकन इलाक़े की थी। फिर भी, जैसी कि शूबिन ने भविष्यवाणी की थी, इस सबसे उनके दिल खोलकर मौज करने में कोई बाधा नहीं पड़ी।

सबसे ज़्यादा शोर उसी ने मचाया, लेकिन सबसे कम आनंद भी उसी ने प्राप्त किया। उसने अज्ञेय, परंतु महान वेनेलिन और बलगारिया के क्रूम, ख़्रूम या ख़्रोम राजा की सेहत की ख़ातिर जाम उठाये, जो शायद "बाबा आदम के ज़माने में" हुए थे।

"नवीं शताब्दी में," इनसारोव ने उसकी ग़लती सुधारी।

"नवीं शताब्दी में?" शूबिन चीख़ा, "वाह, क्या कहने!"

बेरसेनेव ने ध्यान दिया, कि अपनी सारी मसख़री, खिलवाड़ और मजाक़ के दौरान शूबिन इनसारोव को परख रहा था। मानो वह इनसारोव को छूता था और अंदर ही अंदर बेचैन हो उठता था, जबकि इनसारोव पहले की तरह शांत और सौम्य बना रहा।

आख़िर वे घर लौटे, कपड़े बदले और सुबह से जो सिलसिला शुरू किया था वह पूरा हो, इस ख़्याल से शाम के वक़्त स्ताख़ोव परिवार के यहां जाने का फ़ैसला कर लिया। और आने की ख़बर देने के लिए शूबिन जल्दी-जल्दी उधर चला गया।

१२

"हीरो इनसारोव अभी यहां आनेवाले हैं," उसने स्ताख़ोव परिवार के बैठकख़ाने में घुसते ही घोषणा की। वहां केवल येलेना और ज़ोया थीं।

"कौन?" ज़ोया ने जर्मन में पूछा। औचक में वह हमेशा मातृभाषा में बोल पड़ती थी। येलेना सीधी हो गयी। शूबिन ने अर्थ भरी मुस्कराहट के साथ उसकी ओर देखा। येलेना को झुंझलाहट हुई लेकिन कहा कुछ नहीं।

"सुना आपने," उसने दोहराया, "इनसारोव साहब इधर आ रहे हैं।"

"सुन लिया," उसने जवाब दिया। "और यह भी सुन लिया कि आपने उन्हें क्या नाम दिया। आपकी बातों से सचमुच अचरज होता है। इनसारोव साहब यहां कभी आये नहीं और आपको चुहल सूझने लगी।"

शूबिन पर घड़ों पानी पड़ गया।

"आपका कहना ठीक है, येलेना निकोलायेव्ना। आप हमेशा

ठीक कहती हैं," वह बुड़बुड़ाया। "लेकिन सच मानिए, मैंने यों ही कह दिया था। आज दिन भर हम लोग साथ-साथ घूमे, मैं विश्वास दिलाता हूं, वह लाजवाब आदमी हैं।"

"यह मैंने आपसे नहीं पूछा," येलेना ने कहा और उठ खड़ी हुई।

"इनसारोव साहब जवान हैं?" ज़ोया ने सवाल किया।

"होंगे एक सौ चवालीस साल के," शूबिन चिढ़कर बोला।

नौकर ने दो दोस्तों के आने की सूचना दी। वे अंदर आये। बेरसेनेव ने इनसारोव का परिचय कराया। येलेना ने उनसे कहा, तशरीफ़ रखिये और खुद बैठ गयी। बेमतलबकी छोटी-मोटी बातें शुरू हुईं जैसा नये परिचितों में होता है। शूबिन कोने में बैठकर चुपचाप देखने लगा हालांकि देखने को कुछ था नहीं। हां, उसे यह ज़रूर लगा कि येलेना के मुंह पर उसके प्रति खीज की दबी हुई झलक है। बेरसेनेव और इनसारोव को देखते हुए उसने एक मूर्तिकार की नज़र से उनके चेहरों की तुलना की। "कोई भी सुंदर नहीं है," उसने सोचा। "बलगार का चेहरा मूर्ति बनाने के लायक़ है। अब उस पर रोशनी भी ठीक पड़ रही है। रूसी का चेहरा चित्र के अधिक अनुकूल होगा; उसमें रेखाएं नहीं हैं, आकार है। लेकिन प्यार दोनों से किया जा सकता है। वह अभी प्रेम नहीं करती," उसने अपने से कहा, "पर बेरसेनेव से प्रेम करने लगेगी।" आन्ना वसील्येव्ना बैठक में आ गयीं और बातें बंगले की – देहात की नहीं, ठेठ बंगले की होने लगीं। विषय बहुत से लिये गये परंतु हर दो-तीन मिनट में क्षण भर के लिए बात टूट जाने से अप्रिय सा ठहराव आ जाता था। ऐसे ही एक ठहराव के समय आन्ना वसील्येव्ना ने ज़ोया की ओर निगाह घुमायी। शूबिन ने इशारा समझकर मुंह बिगाड़ा, और ज़ोया प्यानो के पास बैठकर अपने छोटे-छोटे गीत-संगीत गाने और बजाने लगी। उवार इवानोविच ने द्वार पर आकर केवल उंगलियां नचायीं और लौट गये। चाय पेश हुई और उसके बाद सब बग़ीचे में निकल गये। अंधेरा घिर आया तो मेहमानों ने विदा ली।

येलेना पर इनसारोव का उतना प्रभाव नहीं पड़ा जितनी कि उसे उम्मीद थी, बल्कि यह कहना ज़्यादा सही होगा कि प्रभाव वैसा नहीं पड़ा जैसा वह सोचती थी। उसकी साफ़गोई, उसका

बेहिचक तरीक़ा उसे पसंद आया। उसका चेहरा भी अच्छा लगा। परंतु इनसारोव का पूरा व्यक्तित्व, उसका शांत, दृढ़ और एकदम सीधा-सादा व्यवहार उस रूप से मेल नहीं खाता था जो बेरसेनेव की बातों के बाद उसके मन में बन गया था। स्वयं न जानते हुए वह किसी "दैवी-चुम्बक" की आशा कर रही थी। "लेकिन आज वह बहुत कम बोले," उसने सोचा। "दोष मेरा ही है, मैंने उनसे पूछताछ नहीं की। अगली बार देखा जायेगा।... उनकी आंखें वास्तव में बहुत कुछ कहती हैं, सच्चे इनसान की आंखें हैं!" उनके आगे झुकने की नहीं, बल्कि उनकी ओर मैत्री का हाथ बढ़ाने की उसकी तबियत हुई। इससे उसे आश्चर्य हुआ क्योंकि इनसारोव जैसे लोगों – "नायकों" की उसने कुछ और ही कल्पना कर रखी थी। नायक की बात से उसे शूबिन का हीरो कहना याद हो आया और पलंग पर लेटे-लेटे भी उसका चेहरा क्षोभ से लाल हो गया।

"नये परिचितों के बारे में आपका क्या ख़्याल है?" बेरसेनेव ने घर लौटते हुए इनसारोव से पूछा।

"मेरी समझ में वे बड़े अच्छे लोग हैं," इनसारोव ने जवाब दिया। "विशेष रूप से बेटी। युवती बढ़िया होनी चाहिए। वह व्याकुल हो उठती है लेकिन उसकी व्याकुलता सच्ची है।"

"बीच-बीच में उनके यहां जाते रहना चाहिए," बेरसेनेव ने कहा।

"हां, जाना चाहिए," इनसारोव ने जवाब दिया और इसके बाद घर पहुंचने तक एक शब्द नहीं कहा। फ़ौरन ही वह अपने कमरे में बंद हो गया और आधी रात के बाद तक वहां मोमबत्ती जलती रही।

बेरसेनेव रौमेर के इतिहास का एक पृष्ठ भी नहीं पढ़ पाया था कि मुट्ठी भर रेत उसकी खिड़की के कांच पर आ गिरी। वह चौंक गया। खिड़की खोली तो देखा कि सफ़ेद फक चेहरा लिए शूबिन खड़ा है।

"तुम कितने अधीर हो! रात के पतिंगे जैसे!" बेरसेनेव ने बात शुरू की।

"श-श!" शूबिन ने उसे बीच में काटा। "मैं चोरी-चोरी

तुम्हारे पास आया हूं, जैसे मैक्स अगाथा के पास गया था।* तुमसे मुझे एकांत में दो बातें फ़ौरन करनी हैं।"

"कमरे में आ जाओ।"

"कोई ज़रूरत नहीं," शूबिन ने इनकार किया और खिड़की के दासे पर कोहनियां टेक दीं। "इस तरह ज़्यादा मज़ा है – स्पेन जैसा। पहले तो मेरी मुबारकबादी लो: तुम्हारा पलड़ा भारी है। तुम्हारे तारीफ़ किये असाधारण जीव फेल हो गये। इसकी तसदीक़ मैं करता हूं। और मैं कितना निष्पक्ष हूं, इसके सबूत में मेरी बात सुनो। जनाब इनसारोव की तफ़सीलें ये हैं: प्रतिभा कोई नहीं, रोमानीपन के नाम पर शून्य। काम करने की भारी क्षमता, बढ़िया स्मरण-शक्ति। बुद्धि न तो बहुमुखी न कुशाग्र लेकिन फिर भी स्वस्थ व चैतन्य। वह रूखा तथा सबल है और अगर उसके बलगारिया की चर्चा छिड़ जाये – जो मैं तुम्हें बता दूं बहुत ही नीरस देश है – तो वह तक़रीर भी झाड़ सकता है। अब बोलो, क्या मैं अन्याय कर रहा हूं? और सुन लो, तुम उसके साथ कभी घुल-मिल नहीं सकते, कोई भी उससे घनिष्ठ नहीं हुआ। मुझे वह हिकारत की नज़र से देखता है क्योंकि मैं कलाकार हूं और मुझे इस पर गर्व है। वह शुष्क है, एकदम शुष्क लेकिन हम सबका चूरा बना सकता है। वह अपने देश से जुड़ा है और इस माने में हमारे रूस के ख़ाली कुप्पों से भिन्न है जो जनता के आगे गिड़गिड़ाते हुए मानो कहते हैं: ओ जीवन के स्रोत, कुछ हमारे भीतर ढाल दो! लेकिन उसका काम भी आसान है। समझना मुश्किल नहीं। बस तुर्कों को निकाल दो – जैसे बड़ा तीर मार लेंगे! भगवान की दया है कि ये तमाम गुण स्त्रियों को तनिक नहीं भाते। उसमें आकर्षण – चार्म – नहीं है जो तुममें और हम में है।"

"मुझे क्यों शामिल करते हो?" बेरसेनेव भुनभुनाया। "तुम्हारी दूसरी बातों में भी सचाई नहीं है। वह तुम्हें हिकारत की नज़र से नहीं देखता और अपने देशवासियों से वह ख़ूब घुला-मिला है। यह मुझे मालूम है।"

"अलग बात है! उनके लिए वह नायक है। जहां तक मेरा

---

* जर्मन स्वरकार वेबेर के ओपेरा 'जादुई निशानेबाज़' के पात्र।

सवाल है तो मानता हूं कि मेरे विचार में नायक कुछ और होता है। नायक के लिए बोलना आवश्यक नहीं, उसे तो बैल की तरह धड़धड़ाना चाहिए। उसे सींगों से प्रहार करना चाहिए और दीवार भहराकर ढह जायेगी। उसे जानने की ज़रूरत नहीं कि सींग क्यों मारता है, सिर्फ़ मारने चाहिए। लेकिन हो सकता है, हमारे आज के ज़माने में नायक में कोई और चरित्र-बल आवश्यक हो।"

"तुम इनसारोव की रट क्यों लगाये हो?" बेरसेनेव ने पूछा। "क्या तुम उसके चरित्र का वर्णन करने के लिए ही मेरे पास दौड़ आये?"

"यहां मैं इसलिए आया कि घर मुझे खाये जा रहा था," शूबिन ने कहा।

"ऐसी बात है! लेकिन तुम फिर से रोने की तो नहीं सोच रहे?"

"हंस लो, हंस लो! मैं यहां इसलिए आया हूं कि मैं अपने बाल नोच सकता हूं। मैं हताश हो गया हूं। मैं परेशान हूं! मुझे ईर्ष्या होती है।"

"ईर्ष्या? किससे?"

"तुमसे, उससे और हरेक से। सोच-सोचकर कलेजा मुंह को आता है कि काश मैंने उसे पहले समझ लिया होता। काश मैंने सब कुछ ढंग से किया होता।... मगर अब फ़ायदा क्या! होगा आख़िर में यही कि, जैसा वह कहती है, मैं हंसूंगा, मज़ाक करूंगा, मसख़री करूंगा और जाकर अपने को फांसी लगा लूंगा।"

"फांसी तो ख़ैर तुम लगा नहीं सकते," बेरसेनेव ने कहा।

"ऐसी रात में ज़ाहिर है नहीं; लेकिन पतझड़ तक ठहर जाओ। ऐसी रात में भी लोग मर जाते हैं, मगर वे सुख के कारण मरते हैं। ओह, सुख! पेड़ों की रास्ते पर पड़नेवाली हर छाया मानो फुसफुसा कर कहती है, 'मुझे मालूम है सुख कहां है... चाहो तो बता दूं।' मैं तुमसे कहता, चलो थोड़ा घूम आयें, मगर तुम पर नीरस गद्य हावी है। जाओ, सोओ और सपने में तुम्हें गणित के सूत्र दिखायी दें! मेरा दिल टूक-टूक हो रहा है। आप महानु-भाव देखते हैं कोई हंस रहा है तो आप सोचते हैं, वह मगन है। आप तो साबित कर देंगे कि वह अपना ही विरोध करता है, इस-

लिए उसे कोई क्लेश नहीं।... आप खुश रहिए!"

शूबिन झटपट खिड़की से हट गया। बेरसेनेव की तबियत हुई कि पीछे से चिल्लाकर कहे, "अन्नुश्का!" परंतु उसने अपने को रोक लिया। शूबिन सचमुच तड़प रहा था। कुछ क्षण बाद बेरसेनेव को यह तक लगा कि कोई सिसक रहा है। उठकर खिड़की खोली। नीरवता छायी थी। हां, दूर कहीं कोई आदमी, शायद राहचलता देहाती 'स्तेपी इलाक़ा... मज़दोक का' गीत गा रहा था।

१३

कुन्त्सोवो के पड़ोस में आ जाने के बाद पहले पखवारे में इनसारोव स्ताखोव परिवार के यहां चार-पांच बार से ज़्यादा नहीं गया। बेरसेनेव हर दूसरे दिन उससे मिलता था। येलेना उसके आने पर हमेशा खुश होती थी। उनके बीच हमेशा उत्साह के साथ दिलचस्प बातें होने लगती थीं, लेकिन घर लौटते वक़्त वह अक्सर उदास हो जाता था। शूबिन भूले-भटके दिखायी पड़ता था। उस पर कला की धुन सवार थी। या तो वह अपने कमरे में बंद रहता और वहां से अधबंहिया पहने, सिर से पैर तक मिट्टी से पुता बाहर निकलता, या फिर अपने दिन मास्को में, स्टूडियो में बिताता, जहां मॉडेल, सांचे बनानेवाले इतालवी और दोस्त व शिक्षक उसके पास आते थे। येलेना एक बार भी इनसारोव से दिल खोलकर बात नहीं कर पायी। उसकी अनुपस्थिति में वह उससे बहुत से सवाल पूछने की सोचती थी, लेकिन वह आता तो उसे अपनी तैयारी पर शर्म आने लगती, इनसारोव के शांत भाव से ही वह सकुचा जाती थी। उसे लगता था कि इनसारोव को अपनी बातें बताने पर बाध्य करने का उसे कोई अधिकार नहीं है। उसने इंतज़ार करने का फ़ैसला किया। इसके साथ ही वह महसूस कर रही थी कि उसके हर आगमन के बाद, भले ही उनके बीच इधर-उधर की मामूली बातें हुई हों, वह उसकी ओर अधिकाधिक आकर्षित होती जाती है। परंतु अकेले उसके साथ होने का कभी अवसर नहीं आया और किसी भी व्यक्ति को ज़्यादा अच्छी तरह जानने के लिए ज़रूरी है कि कम से कम एक बार तो उसके साथ एकांत

में बात हो। उसने बेरसेनेव से उसके बारे में बहुत बातें कीं। वह समझ गया कि इनसारोव येलेना की दृष्टि में चढ़ गया है और उसे संतोष हुआ कि शूबिन के दावे के बावजूद उसका मित्र फेल नहीं हुआ। उसके बारे में वह जो कुछ जानता था, सब – छोटी से छोटी तफ़सील भी न भुलाते हुए उसने उत्साह के साथ बताया। (जब हम चाहते हैं कि किसी व्यक्ति को हम अच्छे लगें, तो अक्सर उसके साथ बातचीत में हम अपने दोस्तों की बड़ाई करते हैं और आम तौर पर हमें ख़्याल भी नहीं आता कि इस तरह स्वयं अपनी बड़ाई कर रहे हैं।) येलेना के पीले चेहरे पर हल्की सी लाली दौड़ती, उसकी आंखों में चमक आती और वे पूरी तरह खुल जातीं, तब, कभी-कभा वही जलन भरा दुख, जिसका बेरसेनेव को पहले अनुभव हो चुका था, उसके हृदय को मसोसने लगता।

एक दिन बेरसेनेव सुबह दस बजे के बाद ही स्ताख़ोव परिवार के यहां जा पहुंचा जो आम तौर पर उसका समय नहीं था। येलेना मिलने के लिए बैठक़खाने में आ गयी।

"सोचिए तो," उसने ज़बरदस्ती मुस्कराते हुए कहा, "हमारे इनसारोव ग़ायब हो गये।"

"क्या? ग़ायब हो गये?" येलेना के मुंह से निकला।

"हां। परसों शाम को वह कहीं निकल गया और तबसे पता नहीं है।"

"उन्होंने आपको बताया नहीं कि कहां जा रहे हैं?"

"नहीं।"

येलेना ने कुर्सी की टेक ले ली।

"हो सकता है मास्को चले गये हों," उसने बेपरवाही दिखाने की कोशिश करते हुए कहा और साथ ही उसे ताज्जुब हुआ कि वह ऐसी कोशिश कर रही है।

"शायद नहीं," बेरसेनेव बोला, "वह अकेला नहीं गया।"

"साथ कौन था?"

"परसों लंच से पहले दो आदमी आये थे। उसके देशवासी रहे होंगे।"

"बल्गार? आप ऐसा क्यों सोचते हैं?"

"इसलिए कि जितना मुझे सुनायी पड़ा, वे मेरे लिए अपरि-

चित भाषा में बातें कर रहे थे। पर भाषा स्लाव थी।... येलेना निकोलायेव्ना, आपका विचार है कि इनसारोव का कोई ख़ास रहस्य नहीं है, लेकिन उन लोगों के आने से ज़्यादा रहस्य की बात क्या होगी? ज़रा सोचिए: वे कमरे में घुसे और चिल्लाने और बहस करने लगे। ज़ोर-ज़ोर से झगड़ रहे थे। वह भी चीख़ा।"

"वह भी?"

"हां, वह भी। उन पर चीख़ा। शायद वे एक-दूसरे की शिकायत कर रहे थे। वे लोग देखने लायक़ थे! सांवला रंग, तोते जैसी नाकें और गालों की उभरी हुई चौड़ी हड्डियां। दोनों चालीस-चालीस बरस से ज़्यादा उम्र के थे। कपड़े बहुत मामूली थे। वे धूल से भरे और पसीने से तर थे। देखने में वे कारीगर लगते थे और नहीं भी। कुलीन नहीं थे। ईश्वर जाने, कौन थे वे लोग!"

"और वह उनके साथ चले गये?"

"उन्हीं के साथ। उन्हें खाना खिलाया और उनके साथ चला गया। मालकिन बता रही थी कि वे दोनों पतीला भर दलिया हड़प गये। भूखे भेड़ियों की तरह आपस में होड़ करते हुए वे सब चट कर गये।"

येलेना हल्के से मुस्करायी।

"देखिएगा," उसने कहा, "इस सारे मामले का बड़े ही अरोचक ढंग से समाधान हो जायेगा।"

"भगवान करे, ऐसा ही हो। लेकिन अरोचक शब्द आपने बेकार इस्तेमाल किया। इनसारोव में तनिक भी अरोचकता नहीं है, हालांकि शूबिन दावा करता है..."

"शूबिन!" येलेना बीच में बोली और कंधे झटक दिये। "लेकिन आपको मानना पड़ेगा कि वे दो महाशय जो दलिया हड़प गये..."

"थेमिस्टोक्लीस * ने भी सलामिन की लड़ाई से पहले खाना खाया था," बेरसेनेव ने मुस्कराते हुए कहा।

"सही है, लेकिन अगले दिन लड़ाई हुई थी। ख़ैर, जब वह लौटें, मुझे ख़बर कर दीजिएगा," येलेना ने कहा और विषय

---

* ईसापूर्व ५वीं सदी के यूनानी नेता जिनकी रहनुमाई में फ़ारस को हराया गया था।

बदलने का प्रयत्न किया। परंतु बातचीत जमी नहीं।

ज़ोया कमरे मे आयी और हौले-हौले इधर-उधर टहलने लगी। इस तरह वह बता रही थी कि आन्ना वसील्येव्ना अभी उठी नहीं हैं।

बेरसेनेव चला गया।

उसी दिन शाम को येलेना को उसका पर्चा मिला।

"लौट आया," उसने लिखा था, "धूप से सांवला और सिर से पैर तक धूल से भरा हुआ। नहीं मालूम कहां गया था और क्यों। क्या आप पता चला सकती हैं?"

"मैं पता चला सकती हूं!" येलेना ने अपने से कहा। "जैसे वह मुझे यह सब बताते हैं!"

१४

अगले दिन दोपहर बाद येलेना बग़ीचे में छोटे से कुत्ताघर के सामने खड़ी थी जहां दो पिल्ले पाले जा रहे थे। (माली को वे बाड़े के पास पड़े मिले थे और वह उन्हें मालकिन की बेटी के पास ले आया था क्योंकि धोबिनों ने बताया था कि इस युवती को सभी जानवरों पर दया आती है। उसका अंदाज़ ग़लत नहीं निकला; उसे पच्चीस कोपेक मिल गये थे।) येलेना ने कुत्ताघर में झांका और देख लिया कि पिल्ले ठीक हैं और नीचे साफ़ पुआल बिछी है। वह मुड़ी तो उसके मुंह से कीक सी निकल गयी क्यों-कि उसने देखा कि इनसारोव सीधा उसकी ओर बढ़ा आ रहा है और अकेला है।

पास आ जाने पर उसने टोपी उतारते हुए नमस्ते की। येलेना ने देखा कि पिछले तीन दिनों में उसका चेहरा वाक़ई झुलस गया है। बोला "मैं अंद्रेय पेत्रोविच के साथ आना चाहता था, लेकिन वह अभी तैयार नहीं हुए इसलिए अकेला निकल पड़ा। आपके घर में कोई नहीं है। सब सो रहे हैं या घूमने चले गये। सो मैं इधर आ गया।"

"आप माफ़ी क्यों मांग रहे हैं?" येलेना ने कहा। "इसकी क़तई ज़रूरत नहीं है। आपसे मिलकर हम सबको बड़ी खुशी होती है। आइये, यहां छांह में बेंच पर बैठ जायें।"

वह बैठी और इनसारोव उसके बराबर में बैठ गया।

"पिछले दिनों आप घर से कहीं बाहर चले गये थे?" उसने बात शुरू की।

"जी हां," वह बोला, "मैं गया हुआ था।... अंद्रेय पेत्रोविच ने आपको बताया था?"

इनसारोव ने उसकी ओर देखा, मुस्कराया और हाथ में टोपी घुमाने लगा। मुस्कराते हुए उसने जल्दी-जल्दी पलकें झपकायीं और होंठ खोले जिससे उसकी नेकदिली उजागर हो गयी।

"अंद्रेय पेत्रोविच ने शायद आपको बताया हो कि मैं कुछ लोगों के साथ... गंवार लोगों के साथ चला गया था," उसी तरह मुस्कराते हुए उसने कहा।

येलेना पलभर को सकुचायी, किन्तु तुरंत उसके मन में विचार कौंधा कि इनसारोव के साथ सदा सच बोलना चाहिए।

"जी हां," उसने स्पष्टता से कहा।

"मेरे बारे में आपने क्या सोचा?" वह यकायक पूछ बैठा।

येलेना ने उसकी ओर आंखें उठायीं।

"मैंने सोचा ..." वह बोली, "मैंने सोचा कि आप हमेशा जानते हैं, क्या करना चाहिए और आप कोई भी ग़लत काम नहीं कर सकते।"

"इसके लिए आपको धन्यवाद! बात यह है, येलेना निकोलायेव्ना," विश्वस्त भाव से उसकी ओर खिसकते हुए उसने कहा, "यहां हम लोगों का परिवार बड़ा नहीं है। हमारे बीच कम पढ़े-लिखे लोग भी हैं, परंतु समान ध्येय के लिए सभी ने अपने को पूरी तरह अर्पित कर दिया है। खेद की बात है लेकिन विवाद के बिना कुछ हो नहीं पाता। मुझे सब जानते हैं, मेरा विश्वास करते हैं। सो एक झगड़े को सुलझाने के लिए मुझे बुलाया गया था। मुझे जाना पड़ा।"

"यहां से काफ़ी दूर?"

"कोई पैंतालीस मील, त्रोइत्सक बस्ती तक गया था। वहां मठ में भी हमारे कुछ लोग हैं। बहरहाल, बेकार नहीं दौड़ा। झगड़ा निबटा दिया।"

"आपको मुश्किल हुई?"

"जी हां। एक अड़ गया था। रक़म नहीं देना चाहता था।"

"क्या! धन को लेकर झगड़ा हुआ?"

"जी हां। और धन ज़्यादा भी नहीं था। आपने कुछ और सोचा था?"

"ज़रा सी बात के लिए आपने पैंतालीस मील का चक्कर लगाया? तीन दिन गंवा दिये?"

"नहीं, येलेना निकोलायेव्ना, देशवासियों का मामला हो तो बात ज़रा सी नहीं होती। मुंह मोड़ लेना गुनाह होगा। मैं देख रहा हूं कि आप पिल्लों तक की मदद करने से इनकार नहीं करतीं। इसके लिए मैं आपकी तारीफ़ करता हूं। मेरा समय गया तो कोई नुक़सान नहीं हुआ। कसर पूरी कर लूंगा। और फिर हमारा समय हमारा नहीं है।"

"तो किसका है?"

"उन सबका जिन्हें हमारी ज़रूरत है। इधर-उधर की ये सब बातें मैंने आपको बतायीं क्योंकि मैं आपकी राय की क़द्र करता हूं। सोच सकता हूं, अंद्रेय पेत्रोविच ने आपको कैसे अचरज में डाल दिया होगा!"

"आप मेरी राय की क़द्र करते हैं," येलेना ने अस्फुट स्वर में कहा। "लेकिन क्यों"

"इसलिए कि आप अच्छी-भली युवती हैं, कोई नवाबज़ादी नहीं। बस इसलिए..."

कुछ देर दोनों चुप रहे।

"द्मीत्री निकानोरोविच," येलेना ने कहा, "जानते हैं, आज पहली बार आप मुझसे इतने खुलकर बातें कर रहे हैं?"

"क्या, आज? मेरा तो ख़्याल है कि जो मैंने सोचा, वही हमेशा आपसे कहा है।"

"नहीं, यह पहला मौक़ा है। और इससे मैं बहुत खुश हूं। मैं भी आपके साथ साफ़गोई से बातें करना चाहती हूं। इजाज़त है?"

इनसारोव हंस पड़ा और बोला:

"कहिए।"

"पहले से सावधान कर रही हूं, मैं बड़ी कुतूहली हूं।"

"कोई बात नहीं। पूछिए।"

"आपके बारे में, आपके किशोर जीवन के बारे में अंद्रेय पेत्रोविच ने मुझे बहुत कुछ बताया है। एक घटना, एक भयंकर घटना की मुझे जानकारी है। ... मुझे मालूम है कि बाद में आप स्वदेश गये थे। ... मेरा सवाल अगर आपको अनधिकार-चेष्टा जान पड़े तो, भगवान के लिए उत्तर मत दीजिए। एक विचार मुझे बराबर बेचैन करता रहता है। ... बताइये, क्या आप कभी मिले उस आदमी से? ..."

येलेना की सांस अटक गयी। अपनी जुर्रत पर उसे शर्म आयी और भय भी लगा। इनसारोव उसे एकटक देख रहा था। आंखें थोड़ी सिकोड़ रखी थीं और ठोड़ी पर उंगली फेर रहा था।

"येलेना निकोलायेव्ना," आखिर उसके मुंह से बोल फूटा। आवाज़ आम तौर से धीमी थी जिससे येलेना लगभग घबरा गयी। "मैं समझता हूं, आपका इशारा किस आदमी की तरफ़ है। नहीं, मैं उससे नहीं मिला और यह भगवान की कृपा रही! मैंने उसे तलाश नहीं किया। इसलिए नहीं कि मैं अपने को उसे मार डालने का हक़दार नहीं समझता था। बिना किसी मलाल के मैंने उसे जहन्नुम रसीद कर दिया होता। तलाश मैंने उसे इसलिए नहीं किया कि सवाल जब राष्ट्र के, अवाम के बदले का हो ... नहीं, नहीं, ये शब्द ठीक नहीं हैं। कहना चाहिए कि सवाल जब राष्ट्र को आज़ाद करने का हो, तो उसमें व्यक्तिगत प्रतिशोध के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। एक से दूसरे में बाधा पड़ेगी। उसका भी दिन आयेगा। ... उसका भी," उसने दोहराते हुए सिर हिलाया।

येलेना ने उसे कनखी से देखा।

"वतन को आप बहुत प्यार करते हैं?" उसने दबी आवाज़ में पूछा।

"पहले से कौन कह सकता है?" उसने जवाब दिया। "जब हममें से कोई उसके लिए प्राण निछावर कर देगा तो कहा जा सकेगा कि वह उसे प्यार करता था।"

"यानी अगर आपके बल्गारिया लौटने की संभावना न रहे," येलेना बोली, "तो रूस में आपकी ज़िंदगी दूभर हो जायेगी।"

इनसारोव ने सिर झुका लिया।

"शायद मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा।" उसने कहा।

"अच्छा यह तो बताइये," येलेना ने पूछा, "क्या बल्गार भाषा सीखना कठिन है?"

"ज़रा भी नहीं। एक रूसी के लिए बल्गार भाषा न जानना शर्म की बात है। रूसी को तो सभी स्लाव बोलियां जाननी चाहिए। अगर आपकी तबियत हो तो मैं कुछ बल्गार पुस्तकें ला सकता हूं। आप देखेंगी कि भाषा कितनी आसान है। हमारे गीतों के क्या कहने! सेर्ब गीतों से किसी मायने में उन्नीस नहीं हैं। एक गीत मैं आपको अनुवाद करके सुना दूं। विषय है... अच्छा, क्या आपको हमारे इतिहास की थोड़ी-बहुत जानकारी है?"

"नहीं, मैं कुछ नहीं जानती," येलेना ने जवाब दिया।

"अच्छा, मैं आपके लिए पुस्तक ले आऊंगा। उससे आपको कम से कम खास बातें मालूम हो जायेंगी। अच्छा अब गीत सुनिये।... मेरे ख़्याल में बेहतर होगा कि मैं आपको लिखित अनुवाद दे दूं। मुझे विश्वास है कि आप हम लोगों को पसंद करेंगी। आपके मन में सभी दबे-कुचलों के लिए दर्द है। काश आप जानतीं कि हमारी धरती कैसा सोना उगलती है! फिर भी उसे पैरों तले रौंदा जाता है और जनता को सताया जाता है," उसने बरबस ही हाथ झटकते हुए कहा और उसका चेहरा क्षोभ से गंभीर हो गया। "हमसे सब कुछ छीन लिया गया: हमारे गिरजे, हमारे अधिकार, हमारी ज़मीनें, सब कुछ। बर्बर तुर्क हमें जानवरों की तरह हांकते हैं, ज़िबह करते हैं..."

"द्मीत्री निकानोरोविच!" येलेना चीख उठी।

वह रुक गया।

"मुझे क्षमा कीजिए। ये बातें मैं ठंडे दिल से नहीं कह सकता। अभी आपने पूछा था कि क्या मैं अपनी मातृभूमि को प्यार करता हूं। प्यार करने के लिए और है क्या? एक यही तो है जो अटल है, निर्विवाद है और ईश्वर के बाद इसमें विश्वास किये बिना रहा नहीं जा सकता। और जब इस मातृभूमि को तुम्हारी आवश्यकता हो... देखिए, बलगारिया के छोटे से छोटे किसान, फटेहाल से फटेहाल भिखमंगे की और मेरी – हम सब की तमन्ना एक ही है। हम सबका एक ही लक्ष्य है। ज़रा सोचिए, इससे हमें कैसा विश्वास और कितनी शक्ति मिलती है।"

इनसारोव पलभर के लिए चुप हुआ और फिर बल्गारिया की बातें करने लगा। येलेना उपासिका की तरह दत्तचित्त होकर, परंतु उदासी भरे भाव से सुन रही थी। कहना समाप्त हुआ तो उसने एक बार फिर पूछा :

"तो रूस में आप किसी भी कारण से रह नहीं सकते?"

वह जाने लगा तो येलेना काफ़ी समय तक उसे पीछे से देखती रही। इस दिन वह उसके कुछ और बन गया। उसने जिसे विदा किया, वह वही व्यक्ति नहीं था, जिसका उसने दो घंटे पहले स्वागत किया था।

इस दिन के बाद वह अक्सर आने लगा और बेरसेनेव का आना कम होता गया। दो मित्रों के बीच एक अजीब बात पैदा हो गयी जिसे दोनों भली भांति अनुभव करते थे, परंतु उस पर उंगली नहीं रख सकते थे और उसकी चर्चा करने में उन्हें डर लगता था। इसी तरह एक महीना बीत गया।

१५

पाठक जानते हैं कि आन्ना वसील्येव्ना को घर में बैठे रहना पसंद था। लेकिन कभी-कभी, अचानक उनके मन में किसी असाधारण, अनोखी, मनोरंजक पिकनिक पर जाने की अदम्य इच्छा भड़क उठती थी। और ऐसी मनोरंजक पिकनिक का बंदोबस्त करना जितना ज़्यादा मुश्किल होता था, उसकी तैयारी और सामान जुटाने में जितनी ज़्यादा तवालत होती थी, उससे स्वयं आन्ना वसील्येव्ना को जितनी ज़्यादा बेचैनी होती थी, उतना ही ज़्यादा उनको आनंद मिलता था। इस तरह की सनक अगर सर्दियों में सवार होती थी तो वह पिकनिक के बजाय थियेटर में पास-पास दो-तीन "बौक्स" रिज़र्व करा लेती थीं और अपने सभी मित्रों व परिचितों को जमा करके वहां जा पहुंचती थीं, या इसी तरह कार्नीवाल में चली जाती थीं। गर्मियों में वह शहर के बाहर कहीं दूर जाया करती थीं। अगले दिन वह सिर दुखने की शिकायत करतीं, कराहतीं और बिस्तर से चिपकी रहतीं। पर दो-एक महीने बाद उन्हें फिर से "असामान्य" की भूख सताने लगती। इस बार भी

यही हुआ। किसी ने उनके सामने ज़ारीतसिन के सौंदर्य का बखान किया और आन्ना वसील्येव्ना ने यकायक घोषणा कर दी कि परसों वह ज़ारीतसिन जायेंगी। घर में हड़कम्प मच गया। एक हरकारा स्ताख़ोव को बुलाने मास्को दौड़ गया। उसके साथ एक और नौकर शराब, पाई और तरह-तरह की दूसरी खाने-पीने की चीज़ें ख़रीदने के लिए गया। शूबिन को भाड़े की गाड़ी लेने की हिदायत दी गयी (एक बग्घी नाकाफ़ी थी)। फालतू घोड़े लेने को भी कहा गया। नौकर लड़के को ज़ोया के लिखे निमंत्रण-पत्र देकर दो बार बेरसेनेव और इनसारोव के यहां दौड़ाया गया। पहली बार निमंत्रण-पत्र रूसी में थे और दूसरी बार फ़्रांसीसी में। युवतियों की सफ़री पोशाकों का ज़िम्मा ख़ुद आन्ना वसील्येव्ना ने लिया। फिर भी यह मनोरंजक पिकनिक फिस्स होते-होते रह गयी। निकोलाई अर्तेम्येविच स्ताख़ोव मास्को से चिड़चिड़े, नुक्ताचीं के अंदाज़ में भड़के हुए आये (अव्गु-स्तीना ख़्रिस्तिआनोव्ना से वह अभी भी मुंह फुलाये थे)। मामला क्या है, यह जानने पर उन्होंने दो टूक ऐलान कर दिया कि वह नहीं जायेंगे। उन्होंने कहा कि कुन्त्सोवो से मास्को, मास्को से ज़ारीतसिन और बाद में ज़ारीतसिन से फिर मास्को और मास्को से फिर कुन्त्सोवो की दौड़-धूप सरासर बेवकूफ़ी है। आख़िर में उन्होंने यह भी जोड़ दिया कि पहले कोई उनके आगे साबित कर दे कि पृथ्वी की एक जगह पर दूसरी जगह से ज़्यादा मज़ा आ सकता है, तब वह जायेंगे। ज़ाहिर है, कोई यह साबित नहीं कर सकता था और शानदार साथी की कमी होने के कारण आन्ना वसील्येव्ना मनोरंजक पिकनिक का इरादा छोड़नेवाली थीं कि उन्हें उवार इवानोविच याद आ गये। "डूबते को तिनके का सहारा" कहते हुए उन्होंने मुश्किल में उन्हें कमरे से बुलवाया। उन्हें जगाया गया, वह नीचे आये, आन्ना वसील्येव्ना का प्रस्ताव चुपचाप सुना, उंग-लियां नचायीं और सबको आश्चर्यचकित करते हुए राज़ी हो गये। आन्ना वसील्येव्ना ने उनका गाल चूमा और उन्हें सहृदय माना। निकोलाई अर्तेम्येविच तिरस्कार के भाव से मुस्कराये और फ़्रांसीसी में बोले: क्या तमाशा है! (मौक़ा मिलते ही वह चटपटे फ़्रांसीसी शब्द इस्तेमाल करने से नहीं चूकते थे।) अगले दिन सुबह सात बजे ठसाठस भरी बग्घी और भाड़े की गाड़ी स्ताख़ोव परिवार के

बंगले से बाहर निकलीं। बग्घी में महिलाएं, नौकरानी और बेर-सेनेव बैठे थे। इनसारोव कोचबक्स पर डटा था। गाड़ी में उवार इवानोविच और शूबिन थे। उवार इवानोविच ने खुद ही उंगली हिलाकर शूबिन को अपने पास बुलाया था। उन्हें मालूम था कि वह सारे रास्ते उन्हें चिढ़ाएगा लेकिन "प्रकृति की संतान" और नौजवान चित्रकार के बीच एक अनोखा सम्बन्ध और तकरार भरी साफ़गोई थी। बहरहाल इस बार शूबिन ने अपने मोटे साथी को परेशान नहीं किया। वह चुप, खोया हुआ और नरमदिल था।

गाड़ियां जब ज़ारीतसिन क़िले* के खंडहरों के पास पहुंचीं, सूरज नीले, निर्मल आकाश में ऊंचा चढ़ गया था। भरी दोपहरी में भी खंडहर कलौहें और ख़ौफ़नाक लगते थे। सब लोग घास पर उतरे और तुरंत बाग़ की तरफ़ बढ़ गये। आगे-आगे येलेना, ज़ोया और इनसारोव थे। उनके पीछे उवार इवानोविच की बांह का सहारा लिए आन्ना वसील्येव्ना चल रही थी जिनके मुख पर परम सुख का भाव था। उवार इवानोविच हांफते थे, लड़खड़ाते थे, तीलियों का नया टोप उनके माथे में गड़ रहा था, पैर लम्बे बूटों में गरम हो गये थे, लेकिन वह भी आनंदमग्न थे। शूबिन और बेरसेनेव सबसे पीछे थे। "भाई मेरे, हम वरिष्ठ लोगों की तरह रिज़र्व में रहेंगे," शूबिन ने धीमी आवाज़ में बेरसेनेव से कहा। फिर भौंहों से येलेना की ओर इशारा करते हुए बोला, "वह अब बल्गा-रिया में है।"

मौसम लाजवाब था। आसपास बहार छायी थी, हर वस्तु गुनगुना रही थी, गा रही थी। कुछ दूरी पर तालाब चमचमा रहे थे। देखकर मन नाच उठता था। आन्ना वसील्येव्ना बारम्बार कहे जा रही थीं, "कितना सुंदर है! ओह, कितना सुंदर है!" उनके उद्गारों के समर्थन में उवार इवानोविच सिर हिला देते थे, एक बार तो बोल भी पड़े, "इसमें कहना क्या!" येलेना और इनसारोव कभी-कभा टीका करते हुए एक-दूसरे से कुछ कह देते

---

* मास्को से १८ किलोमीटर दूर यह क़िला ज़ारीना येकातेरीना द्वितीया ने १८वीं सदी में बनवाना शुरू किया था, पर वह अधूरा रह गया।

थे। उधर ज़ोया टोप की चौड़ी अगाड़ी दो उंगलियों से थामे, गुलाबी फ़्रॉक के नीचे से पैर बढ़ाते हुए मटक-मटककर चल रही थी। छोटे-छोटे पैरों में हल्के भूरे रंग के चौड़े जूते थे। वह कभी बग़ल में देखती थी, तो कभी पीछे। "ओह," यकायक शूबिन अस्फुट स्वर में बोला "ज़ोया निकीतिश्ना मुड़-मुड़कर देख रही है। मैं उसके पास जाता हूं। येलेना निकोलायेव्ना अब मुझे नीची नज़र से देखती हैं और तुम्हारी, अंद्रेय पेत्रोविच, वह इज़्ज़त करती हैं। पर बात एक ही है। मैं चला – और कितना मन मारूंगा। दोस्त मेरे, तुम्हें मेरी सलाह है कि बाग़बानी शुरू कर दो। तुम्हारी स्थिति में यही सबसे अच्छा होगा, विज्ञान की दृष्टि से भी यह लाभदायक है। टा-टा!" शूबिन तेज़ी से ज़ोया की ओर बढ़ा और अपनी बांह उसकी ओर करते हुए जर्मन में बोला: मदाम, हाथ का सहारा ले लीजिए, और उसे साथ लेकर वह आगे बढ़ गया। येलेना ने रुककर बेरसेनेव को पुकारा और उसके हाथ का सहारा ले लिया। परंतु वह बात इनसारोव से करती रही। उसने पूछा कि लिली, मेपिल, बलूत, लिंडन को उसकी भाषा में क्या कहते हैं।... (बेचारे बेरसेनेव ने अपने से कहा, "बल्गारिया!")

अचानक आगे से चिल्लाहट सुनायी पड़ी। सबने सिर उठाये और देखा कि ज़ोया द्वारा फेंका गया शूबिन का सिगारकेस झाड़ी में जा गिरा है। "ठहरो ज़रा, इसका बदला लूंगा!" कहता हुआ शूबिन झाड़ी में घुसा, अपना सिगारकेस उठाया और फिर ज़ोया की ओर बढ़ गया। लेकिन वह पास पहुंच भी नहीं पाया था कि सिगारकेस फिर से रास्ते के ऊपर उछला। चार-पांच बार यही खेल हुआ। शूबिन बराबर हंसता रहा, धमकियां देता रहा और ज़ोया लचकती, बल खाती रही, शरारत से मुस्कराती रही। आख़िर को शूबिन ने उसकी उंगलियां पकड़ लीं और इस तरह मरोड़ीं कि वह चीख़ उठी। दिखावटी ग़ुस्से के साथ वह काफ़ी समय तक उंगलियों पर फूंक मारती रही जब कि वह उसके कान में कुछ गुनगुनाने लगा।

"नौजवान दिल्लगी कर रहे हैं," आन्ना वसील्येव्ना ने ख़ुश-ख़ुश उवार इवानोविच से कहा।

उन्होंने अपनी उंगलियां नचा दीं।

"ज़ोया निकीतिश्ना को देखिए," बेरसेनेव ने येलेना से कहा।

"शूबिन को नहीं?" उसने जवाब दिया।

पूरी पार्टी 'मनोरम-दृश्य' नाम से प्रसिद्ध लता-गृह पहुंच गयी और रुककर ज़ारीतसिनो के जलाशयों को निहारने लगी। एक के बाद दूसरा, वे मीलों तक चले गये थे और उनके पीछे घने जंगलों की काली छाया थी। पहाड़ी को आमूल ढंकनेवाली हरी घास प्रधान जलाशय तक फैली थी और उसने पानी को अनोखी, पन्ने जैसी हरी, चमकदार रंगत दे दी थी। कहीं भी, यहां तक कि किनारे पर भी लहर नहीं लोटती थी, सफ़ेद झाग नहीं बनता था। चिकनी, हमवार सतह को लहरियां तक भंग नहीं कर रही थीं। जान पड़ता था मानो पिघले हुए कांच ने महा विशाल घंडाल में ठंडे होकर भारी, स्वच्छ रूप धारण कर लिया है, आकाश उसकी तली में जा बैठा है और ऐंठे हुए पेड़ निस्तब्ध होकर उसकी पारदर्शी गहराइयों में झांक रहे हैं। सभी लोग देर तक मौन रहकर दृश्य को सराहते रहे। शूबिन भी चुप था; ज़ोया ख़्यालों में डूब गयी थी। आखिर सब लोग नौका-विहार के लिए लालायित हो उठे। शूबिन, इनसारोव और बेरसेनेव घास भरे ढलवान से नीचे दौड़े। उन्हें बेल-बूटों से सजी एक बड़ी नाव और दो खिवैय्ये मिल गये और उन्होंने महिलाओं को पुकारा। वे नीचे आयीं और महिलाओं के पीछे सावधानी से उवार इवानोविच उतरे। नाव पर चढ़ने और बढ़कर अपनी जगह पर बैठने में उन्हें जितना समय लगा, बराबर बड़ा हंसी-मज़ाक होता रहा। उठी नाकवाला एक नौजवान खिवैय्या भी, जो इसकंदरी कमीज़ पहने था, बोल उठा, "सम्हाल कर हुज़ूर, हमें डुबो न दीजिएगा!" "चुप रह, बदतमीज़!" उवार इवानोविच ने फुंकार मारी। नाव चल पड़ी। नौजवानों ने पतवारें सम्हालीं, लेकिन खेना सिर्फ़ इनसारोव को आता था। शूबिन ने मिलकर कोई रूसी गाना गाने का सुझाव दिया और ख़ुद गुनगुनाने लगा: "वोल्गा मैय्या के किनारे..." बेरसेनेव, ज़ोया, यहां तक कि आन्ना वसील्येव्ना ने भी धुन पकड़ी (इनसारोव को गाना नहीं आता था), परंतु स्वर मिल नहीं पाये। तीसरी लाइन तक पहुंचते-पहुंचते गायक उलझ गये। अकेले बेरसेनेव ने

बास स्वर में गाना बढ़ाने की कोशिश की : "लहरों में न दीखे कुछ ..." मगर जल्दी ही वह भी अटक गया। खिवैय्यों ने एक-दूसरे को कनखियों से देखा और खीसें निकाल दीं। "क्यों?" शूबिन ने उनकी तरफ़ मुड़कर कहा, "साहब लोगों को गाना नहीं आता?" इसकंदरी कमीज़ पहने नौजवान ने सिर्फ़ सिर झटक दिया। "उठी नाक, ज़रा ठहर! अभी दिखाते हैं," शूबिन बोला। "ज़ोया निकीतिश्ना, नीडेरमेयर का वह झीलवाला गीत 'ले लाक' सुना दीजिए। और तुम लोग खेना बंद करो!" गीली पतवारें पंखों की तरह ऊपर हवा में उठीं और वहीं रुककर टप-टप पानी की बूंदें टपकाने लगीं। नाव थोड़ी और चलकर ठहर गयी, हां, पानी पर हल्के-हल्के, हंस की तरह डोलती रही। ज़ोया ने अनिच्छा का दिखावा किया। ... आन्ना वसील्येव्ना ने मृदुल स्वर में कहा, "हो जाये ..." और ज़ोया टोप उतारकर गाने लगी : "झील री झील, महीनों का तुम देखो खेल ..."

उसका कंठ-स्वर, जो साधारण होते हुए भी निर्मल था, सरोवर के आयने पर तैरने लगा। हर शब्द दूर, वन में भी गूंज रहा था। लगता था कि वहां भी कोई स्पष्ट रूप से, पर रहस्यमय ढंग से और अमानवीय, पार-लौकिक स्वर में गीत गा रहा है। ज़ोया ने गाना समाप्त किया तो तट के एक कुंज से "बहुत खूब" की ज़ोरदार आवाज़ें उठीं और लाल-लाल मुंहवाले कुछ जर्मन खुले में निकल आये जो जी भरकर शराब पीने के लिए ज़ारीतसिनो पहुंचे थे। उनमें से कुछ ने अपने कोट, टाइयां और वेस्ट कोट तक उतार फेंके थे और "एक और!", "एक और!" इतने भयंकर ढंग से चिल्ला रहे थे कि आन्ना वसील्येव्ना ने जल्दी से तालाब के दूसरे छोर की तरफ़ बढ़ने का आदेश दिया। नाव किनारे पर पहुंचे, इससे पहले ही उवार इवानोविच ने एक बार फिर मंडली को अंचभे में डाल दिया। यह समझकर कि वन में एक स्थान पर हर आवाज़ की विशेष रूप से स्पष्ट प्रतिध्वनि होती है, वह यकायक बटेर के कर्कश स्वर की नक़ल करने लगे। शुरू में सब चौंके लेकिन फिर उन्हें वाक़ई मज़ा आने लगा। खास तौर से इसलिए कि उवार इवानोविच बढ़िया नक़ल कर रहे थे। इससे उन्हें बढ़ावा मिला, उन्होंने "म्यों-म्यों" करने की कोशिश की। लेकिन उनकी म्याऊं

कोई ख़ास अच्छी नहीं थी। तब उन्होंने फिर से बटेर की नक़ल की, लेकिन मंडली पर नज़र पड़ी तो मुंह में ताला लग गया। शूबिन लपककर उन्हें चूमने लगा पर उन्होंने उसे परे हटा दिया। तब तक नाव घाट पर लग गयी थी और सब लोग किनारे पर उतर गये।

कोचवान, नौकर और मेहरी बग्घी से टोकरियां उठा लाये और लिंडन के पुराने पेड़ों के नीचे घास पर दस्तरख़ान बिछा दिया गया। सब लोग उसके इर्द-गिर्द बैठे और पाई व दूसरे खाने खाने लगे। सभी को भूख अच्छी लगी थी। इसके अलावा बीच-बीच में आन्ना वसील्येव्ना मेहमानों की ओर खाना बढ़ाकर भरपेट खाने का इसरार कर रही थी। वह विश्वास दिलाती थी कि खुली हवा में ज़्यादा खाना सेहत के लिए फ़ायदेमंद होता है। उवार इवानोविच को भी उन्होंने यही लेक्चर दिया और वह भरे मुंह से किसी तरह बोले, "फ़िक्र मत कीजिए!" आन्ना वसील्येव्ना रह-रहकर कह उठती थी, "वाह! कैसा लाजवाब दिन है!" उन्हें पहचानना मुश्किल था, लगता था कि उनकी उम्र बीस साल कम हो गयी है। बेरसेनेव ने उनसे यह कहा तो उन्होंने जवाब दिया, "हां, मेरा भी ज़माना था। इनी-गिनी युवतियों में मेरी गिनती होती थी।" शूबिन ज़ोया के पास बैठा था और उसके गिलास में बराबर शराब ढाले जाता था। वह इनकार करती थी, वह ज़ोर देता था और आख़िर में ख़ुद ही गिलास ख़ाली कर देता था। इसके बाद वह फिर से ज़ोर देने लगता। वह यह भी कह रहा था कि उसकी गोद में सिर रखकर लेटना चाहता है, लेकिन ज़ोया उसे "इतनी ज़्यादा छूट" देने के लिए किसी तरह राज़ी नहीं हो रही थी। येलेना सबसे अधिक गंभीर जान पड़ती थी, परंतु उसके हृदय में अद्‌भुत शांति थी, जैसी उसने वर्षों से अनुभव नहीं की थी। उसकी स्नेह भावना की कोई सीमा नहीं थी। वह चाहती थी कि बराबर में अकेला इनसारोव नहीं, बेरसेनेव भी हो।...अंद्रेय पेत्रोविच को अस्पष्ट रूप में इसका अर्थ समझ में आ रहा था और वह नज़र बचाकर ठंडी सांस ले लेता था।

घंटे बीतते जान न पड़े और शाम होने लगी। यकायक आन्ना वसील्येव्ना घबरा उठीं। "मैय्या मेरी, कितनी देर हो गयी,"





उन्होंने कहा। "सज्जनो, खाना हुआ, पीना भी हुआ। अब सभा-विसर्जन का समय आ गया।" वह व्यग्र हुईं, दूसरे लोग भी व्यग्र हुए। उठकर वे क़िले की ओर चल पड़े जहां गाड़ियां खड़ी थीं। तालाबों के पास से गुज़रते हुए वे ज़ारीतसिनो को आख़िरी बार आंखें भरकर देखने के लिए रुक गये। हर तरफ़ सूर्यास्त के समय के रंग बिखरे थे। आसमान लाल हो उठा था, अभी-अभी चली हल्की हवा में हिलती पत्तियों पर इन्द्रधनुषी चमक फैली थी, जल-राशि में थोड़ा आगे सोना घुल गया था और पार्क में यहां-वहां खड़ी छोटी ललौहीं मीनारों और मंडपों का निरालापन पेड़ों के गहरे हरे रंग की पृष्ठभूमि में और ज़्यादा निखर आया था। "विदा ज़ारीतसिनो," आन्ना वसील्येव्ना ने कहा "आज की यह पिकनिक हम कभी भूल नहीं सकते।" ...और इसी घड़ी, मानो उनके अंतिम शब्दों की सचाई प्रमाणित करने के लिए एक ऐसी अजीब घटना घटी जिसे जल्दी से भुला देना वास्तव में संभव नहीं था।

हुआ यह: आन्ना वसील्येव्ना ज़ारीतसिनो से विदा ले भी नहीं पायी थीं कि अचानक उनसे कुछ ही क़दम दूर बकाइन की ऊंची झाड़ी के पीछे से भांति-भांति की आवाज़ें, अट्टहास का कर्कश स्वर और चीख़-पुकारें आती सुनायी पड़ीं, और बाल बिखेरे आदमियों का झुंड का झुंड रास्ते पर फट पड़ा। ये गानों के वे ही शैदाई थे जिन्होंने ज़ोया की ज़ोरों से तारीफ़ की थी। इन हज़रतों ने काफ़ी चढ़ा ली थी। महिलाओं को देखते ही वे ठिठक गये, लेकिन उनमें से एक भीमकाय आदमी, जिसकी गर्दन भैंसे जैसी थी और आंखें ख़ूब लाल थीं, हमजोलियों से आगे बढ़ आया। लड़खड़ाता और झूमता हुआ वह आन्ना वसील्येव्ना के पास आ गया जो भय के मारे काठ हो गयी थीं।

"सलाम, मदाम," उसने भर्राती आवाज़ में कहा, "आप कैसी हैं?"

आन्ना वसील्येव्ना पीछे हट गयीं।

"हमारी कम्पनी ने तारीफ़ की, 'एक और', 'एक और' की आवाज़ें दीं," वह टूटी-फूटी रूसी में बोला, "तो आपने एक और गाना क्यों नहीं गाया?"

"हां, क्यों नहीं गाया?" कम्पनी के लोग चिल्लाये।

इनसारोव ने क़दम बढ़ाया, लेकिन शूबिन उसे रोककर ख़ुद आन्ना वसील्येव्ना के आगे आ गया।

"अपरिचित महोदय," वह बोला, "मुझे कहने की इजाज़त दीजिए कि आपके बर्ताव से हम सब सकते में आ गये हैं। जहां तक मैं समझता हूं, आप को हकाफ़ी क़बीले की सैक्सन शाखा के लोग हैं। इसलिए हमारे ख़्याल में आप जानते होंगे कि क़ायदे से कैसे पेश आया जाता है। फिर भी आप परिचित हुए बिना महिला से बात करने लगे। विश्वास मानिए, किसी दूसरे समय आपसे मिलकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई होती क्योंकि मैं देख रहा हूं कि आपके पुट्ठे, भुजदंड और कंधों की मांसपेशियां ख़ूब विकसित हैं और इसलिए एक मूर्तिकार के नाते आपको अपना मॉडेल बनाने में मुझे सच्चा सुख मिला होता। लेकिन इस समय मेहरबानी करके अपने रास्ते चले जाइये।"

"अपरिचित महोदय" ने कूल्हे पर हाथ रखकर और तिरस्कार में सिर को एक तरफ़ मोड़कर शूबिन की बातें सुनीं।

"मैं कुछ नहीं समझा, तुम क्या बोलता है," आख़िर में उसने कहा। "शायद आप सोचता है मैं मोची है या घड़ीसाज़ है? हा-हा! मैं अफ़सर है, हां अफ़सर।"

"मुझे कोई शक नहीं है," शूबिन बोला।

"मैं कहता है," अपरिचित ने अपने ताक़तवर हाथ से शूबिन को सामने आयी टहनी की तरह एक तरफ़ ठेलते हुए कहा, "मैं कहता है, हम चिल्लाया 'एक और' तो आप 'एक और' गाना क्यों नहीं गाया? अब मैं अभी, इसी मिनट चला जायेगा, बस एक बात होना चाहिए। सुंदरी – नहीं यह मदाम नहीं, यह नहीं चाहिए – वह सुंदरी या वह सुंदरी (उसने येलेना और ज़ोया की तरफ़ इशारा करते हुए कहा) मुझे एक कुस्स दे जैसा हम जर्मन में कहता है, यानी बोस्सा दे, हां; हर्ज़ नहीं इसमें।"

"हर्ज़ नहीं। एक बोस्सा, हर्ज़ नहीं," कम्पनी के लोग फिर बोले।

एक जर्मन ने जो अपने में मगन था, हंसी के मारे फंसे गले से कहा, "ओह, मरदूद!"

ज़ोया ने इनसारोव का हाथ पकड़ा लेकिन उसने छुड़ा लिया और बढ़कर भीमकाय गंवार के सामने डट गया।

7–651

"मेहरबानी करके चले जाइये," उसने ज़ोर से तो नहीं, मगर तीखे स्वर में कहा।

जर्मन गला फाड़कर हंसा।

"क्या मतलब, जाइये? बहुत खूब! मैं क्यों नहीं घूम सकता? क्या मतलब, जाइये? क्यों जाइये?"

"इसलिए कि आपने महिला को परेशान करने की जुरअत की," इनसारोव ने कहा और यकायक उसका चेहरा सफ़ेद हो गया। "इसलिए कि आप नशे में हैं।"

"क्या? मैं नशे में हूं? सूना? हेर अन्नदाता, आप सुनता है? मैं अफ़सर और इसकी हिम्मत... अब मैं हरजाना मांगता हूं! एक बोस्सा चाहिए।"

"अगर एक क़दम भी बढ़ाया..." इनसारोव बोला।

"तो? तो क्या?"

"पानी में फेंक दूंगा।"

"पानी में? ओ क्राइस्ट! पानी में, बस? बहुत दिलचस्प है, पानी में... ज़रा हम भी देखें।"

हज़रत अफ़सर हाथ उठाकर आगे बढ़े, लेकिन उसी वक़्त ग़ैरमामूली बात हो गयी। वह कराहा, उसका विशाल शरीर डगमगाया, ज़मीन से ऊपर उठा, पैर अधर में छटपटाये और इससे पहले कि महिलाएं चीख पायें, इससे पहले कि कोई समझ पाये, यह कैसे हुआ, भारी-भरकम हज़रत अफ़सर अपने तमाम वज़न के साथ छपाके की ज़ोरदार आवाज़ करते हुए तालाब में जा गिरे और उसी वक़्त उछलते पानी में ग़ायब हो गये।

"अरे!" महिलाओं ने एकसाथ चीख मारी।

और दूसरी तरफ़ से सुनायी पड़ा, "माईन गोट्ट!"*

एक मिनट गुज़रा... गीले बालों से ढंका गोल सिर पानी के ऊपर उभरा। उससे – इस सिर से बबूले उठ रहे थे और मुंह के पास दो हाथ छपाछप कर रहे थे।

"वह डूब रहा है, बचाओ उसे। बचाओ!" आन्ना वसील्येव्ना

* हे मेरे भगवान। (जर्मन में)

ने चिल्लाकर इनसारोव से कहा जो किनारे पर हांफता हुआ, पैर फैलाये खड़ा था।

"वह निकल आयेगा," उसने नफ़रत और निर्मम बेपरवाही के साथ कहा। फिर आन्ना वसील्येव्ना को हाथ का सहारा देते हुए बोला, "चलिए, हम लोग चलें। चलिए उवार इवानोविच, येलेना निकोलायेव्ना।"

"आह ... आह ..." मुसीबत के मारे जर्मन के मुंह से इसी क्षण ज़ोर की आवाज़ निकली। वह तट पर उग रहे कुछ सरकंडों को पकड़ने में सफल हो गया था।

लोग इनसारोव के पीछे-पीछे चले और सबको उस "कम्पनी" की बग़ल से गुज़रना पड़ा। मगर लीडर ही न रहने के कारण उपद्रवियों की सिट्टी गुम हो गयी थी और उनके मुंह से एक शब्द न निकला। उनमें से सिर्फ़ एक, जो सबसे दिलेर था सिर को झटकते हुए बुड़बुड़ाया, "यह क्या ... भगवान ही जानता है, यह क्या ..." दूसरे ने तो अपना टोप तक उतार लिया। इनसारोव उन्हें ख़ौफ़नाक लग रहा था और वजह भी थी क्योंकि उसके चेहरे पर कोई ख़तरनाक, भयंकर भाव आ गया था। जर्मन अपने साथी को खींच निकालने के लिए बढ़े। उसने ज्यों ही अपने को सख़्त ज़मीन पर पाया, वह आंसू बहाते हुए इन "रूसी बदमाशों" को गालियां देने लगा। वह चिल्लाने लगा कि उनके ख़िलाफ़ शिकायत भेजेगा और ख़ुद हिज़ एकसीलेंसी काउंट फॉन किज़ेरित्स के पास फ़रियाद लेकर जायेगा।

परंतु "रूसी बदमाशों ने" उसके प्रलाप की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और यथासंभव तेज़ी से क़िले की ओर बढ़ गये। पार्क को पार करते समय सभी चुप थे, एक अकेली आन्ना वसील्येव्ना को छोड़कर जो आहें भरती जाती थीं। लेकिन जब वे गाड़ियों के पास पहुंचकर रुके, हंसी के बेसाख़्ता फौव्वारे छूटने लगे और वे उसी तरह लोट-पोट हो गये जैसे शायद होमर* के देवता हुए होंगे। सबसे पहले, एकदम पागल की तरह, शूबिन ने अट्टहास किया,

---

* प्राचीन काल के अमर यूनानी कवि जो 'इलियड', 'ओडेसी' के रचयिता माने जाते हैं।

उसके बाद बेरसेनेव खिलखिलाया। फिर ज़ोया ने अपनी हंसी की फुलझड़ियां छोड़ीं। यकायक आन्ना वसील्येव्ना कूक उठीं। येलेना के लिए मुस्कराहट रोकना कठिन था और आखिर में इनसारोव भी गंभीर न रह सका। मगर जो सबसे ज़ोर से, सबसे देर तक और सबसे ज़्यादा बेक़ाबू होकर हंसे, वह थे उवार इवानोविच। वह तब तक हंसते रहे जब तक पेट में बल नहीं पड़ गये, वह छींकने नहीं लगे, उनके लिए सांस लेना मुश्किल नहीं हो गया। वह कुछ सैकिंड के लिए शांत होते, आंसुओं के बीच कहते, "मैंने ... सोचा ... यह छपाका काहे से हुआ ... यह तो ... वह चारों खाने चित्त ..." और इस आखिरी, फंसे हुए शब्द के साथ हंसी का नया दौरा पड़ता था जो उनके तन-बदन को झकझोर डालता था। ज़ोया उन्हें और ज़्यादा उकसा रही थी। बोली, "हवा में मैंने दो पैर उछलते देखे ..." और उवार इवानोविच कहने लगे, "हां, हां ... पैर ... पैर ... फिर छपाक! वह था चारों खाने चित्त ...।" "मगर उन्होंने किया कैसे, जर्मन तो उनसे आकार में तिगुना था?" ज़ोया ने पूछा। "मैं बता सकता हूं," उवार इवानोविच ने आंसू पोंछते हुए उत्तर दिया। "मैंने देखा था। एक हाथ से कमर पकड़कर टंगड़ी मारी, और फिर छपाक! मैं कहूं, यह क्या सुना?... वह पड़ा था चारों खाने ..."

गाड़ियों को रवाना हुए काफ़ी वक़्त हो गया था। ज़ारीतसिनो का क़िला आंखों से ओझल हो गया था पर उवार इवानोविच शांत नहीं हो पा रहे थे। आखिरकर शूबिन ने, जो फिर से उनके साथ गाड़ी में बैठा था, उन्हें लज्जित करके चुप करा दिया।

इनसारोव को अपने पर शर्म आ रही थी। बग्घी में वह येलेना के सामने बैठा था और चुप था। (इस बार बेरसेनेव कोचबक्स पर था।) येलेना भी चुप थी। इनसारोव का ख्याल था कि वह उसकी निंदा कर रही है, हालांकि बात ऐसी नहीं थी। शुरू में वह बहुत डर गयी थी; फिर उसके रूप से दंग रह गयी; और बाद में सोचने लगी। लेकिन उसके लिए स्पष्ट नहीं था कि क्या सोच रही है। दिन में जो अनुभूति हुई थी, वह छूमंतर हो गयी है इतना वह समझ गयी थी। परंतु उसका स्थान किसी दूसरी अनुभूति ने ले लिया था जो अभी उसकी समझ के बाहर थी। मनोरंजक पिक-

निक लम्बी खिंच गयी थी, शाम के बाद कब रात हो गयी पता तक न चला। बग्घी पक गये अनाज के खेतों के बराबर में दौड़ रही थी जिनकी हवा में गेहूं की महक भरी थी। फिर वह खुले मैदानों के पास आ गयी और उनकी ताज़गी चेहरों का स्पर्श करने लगी। उधर क्षितिज में आसमान से मानो धुआं निकल रहा था। आखिर कुछ-कुछ ललौहां चांद निकल आया। आन्ना वसील्येव्ना ऊंघ रही थीं, ज़ोया खिड़की के बाहर मुंह किये रास्ते को देख रही थी। येलेना को आखिरकार अहसास हुआ कि एक घंटे से ज़्यादा उसने इनसारोव से कोई बात नहीं की। उसने बेमतलब का कोई सवाल पूछा और इनसारोव ने फ़ौरन खुश होकर उत्तर दे दिया। हवा के साथ कुछ अस्पष्ट ध्वनियां आ रही थीं मानो कहीं दूर हज़ारों लोग बातें कर रहे हैं। वह मास्को था जो उनसे मिलने के लिए बढ़ा आ रहा था। आगे रोशनियां जगमगाने लगीं और वे ज़्यादा से ज़्यादा होती गयीं। अंत में पहियों के नीचे सड़क के पत्थर खड़खड़ाने लगे। आन्ना वसील्येव्ना की नींद टूट गयी। बग्घी में लोग बातें करने लगे, लेकिन बात काहे की हो रही है, कोई नहीं समझ पाता था क्योंकि दो गाड़ियों के पहिये और घोड़ों के नाल जड़े बत्तीस खुर सड़क पर नगाड़े पीट रहे थे। मास्को से कुन्त्सोवो तक का रास्ता नीरस और बहुत लम्बा जान पड़ा। सभी लोग सिरों को दायें-बायें किसी कोने में मोड़े या तो झपकियां ले रहे थे या चुप थे। अकेली येलेना की आंखें खुली थीं और नज़र इनसारोव की काली आकृति पर गड़ी थी। शूबिन पर उदासी हावी हो गयी थी; चेहरे पर हल्की हवा का स्पर्श होने से भी वह झुंझला रहा था। उसने सिर ओवरकोट के कॉलर में छिपा लिया और बिसूरने ही वाला था कि रुक गया। उवार इवानोविच अपनी सीट पर दायें-बायें झूलते हुए मज़े से खर्राटे ले रहे थे। आखिर गाड़ियां रुक गयीं। दो नौकरों ने आन्ना वसील्येव्ना को बग्घी से उतारा। वह पूरी तरह निढाल थीं और अपने साथियों से "गुड नाइट" कहते हुए उन्होंने ऐलान कर दिया कि वह अधमरी हो गयी हैं। लोग उनका शुक्रिया अदा करने लगे तो उन्होंने दुहरा दिया कि वह अधमरी हैं। येलेना ने इनसारोव से हाथ मिलाया (जो पहले कभी नहीं किया था) और फिर उसी पोशाक में बड़ी देर तक

खिड़की के पास बैठी रही। शूबिन ने जाते हुए बेरसेनेव के कान में फुसफुसाने का मौक़ा ढूंढ ही लिया:

"है न हीरो? नशे में धुत्त जर्मनों को पानी में फेंक देता है।"

"मगर तुम यह भी न कर सके।" बेरसेनेव ने जवाब दिया और इनसारोव के साथ घर की ओर रवाना हो गया।

दो दोस्त बंगले पहुंचे तब तक आकाश में उषा का प्रकाश फैलने लगा था। सूरज ने अभी दर्शन नहीं दिये थे और हवा में खुनकी थी। घास पर ओस बिछी थी और कहीं बहुत ऊपर, झुटपुटे की अनंत ऊंचाई में, जहां से आखिरी बड़ा नक्षत्र एक अकेली आंख की तरह ताक रहा था, पहले चकवों ने चहचहाना शुरू कर दिया था।

१६

इनसारोव से परिचय होने के कुछ समय बाद येलेना ने डायरी लिखना शुरू कर दिया था – यों पांच-छह बार पहले भी वह ऐसी शुरुआतें कर चुकी थी। उसकी डायरी के कुछ अंश इस प्रकार हैं:

जून... अंद्रेय पेत्रोविच मेरे लिए पुस्तकें लाते हैं लेकिन मैं उन्हें पढ़ नहीं सकती। उनके आगे यह स्वीकार करने में हिचक होती है, लेकिन मैं यह भी नहीं चाहती कि झूठ बोलकर कि मैंने पुस्तकें पढ़ लीं, उन्हें लौटा दूं। मुझे लगता है, इससे उन्हें दुख होगा। मेरी हर बात की तरफ़ वह ध्यान देते हैं। शायद उन्हें मुझसे बड़ा लगाव है। अंद्रेय पेत्रोविच बहुत अच्छे आदमी हैं।

...आखिर मैं चाहती क्या हूं? मेरे दिल पर बोझ क्यों है? मैं पस्त क्यों हूं? उड़ रहे पक्षियों से मुझे ईर्ष्या क्यों होती है? मैं भी उनके साथ उड़ना चाहती हूं – नहीं जानती किधर, लेकिन दूर, यहां से बहुत दूर। ऐसी इच्छा क्या पाप नहीं है? यहां मेरी मां हैं, पिता हैं, परिवार है। क्या मैं उन्हें प्यार नहीं करती? नहीं, मैं उन्हें उतना प्यार नहीं करती जितना करना चाहती हूं। यह कहना बुरी बात है, पर है यह सच। शायद मैं एक बड़ी पापिन हूं, शायद इसीलिए मैं इतनी उदास, इतनी बेचैन हूं। कोई भारी हाथ जैसे मुझे दबाता है। लगता है कि मैं जेल में हूं और अभी-

अभी दीवारें भहराकर मेरे ऊपर गिर पड़ेंगी। दूसरे लोग ऐसा महसूस क्यों नहीं करते? जब मैं अपने ही लोगों के प्रति बेपरवाह हूं तो किसी और को प्यार कैसे कर सकती हूं? कौन जाने, पिता जी की ही बात ठीक हो कि मैं सिर्फ़ कुत्तों-बिल्लियों को प्यार करती हूं। इसके बारे में सोचना चाहिए। मैं प्रार्थना कम करती हूं, और अधिक प्रार्थना करनी चाहिए।... फिर भी मुझे लगता है कि मैं प्यार कर सकती हूं!

...जनाब इनसारोव के आगे मुझे अभी भी झिझक होती है। मालूम नहीं क्यों, शायद इसलिए कि मैं अब किशोरी नहीं हूं और वह इतने सीधे-सादे और नेक हैं। कभी-कभी वह बहुत गंभीर हो जाते हैं। सोचने के लिए हम लोगों से ज़्यादा महत्वपूर्ण बहुत सी बातें होंगी। मैं यह अनुभव करती हूं और सोचती हूं कि उनका समय लेने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। अंद्रेय पेत्रोविच की बात दूसरी है। उनके साथ मैं दिन भर बतियाने को तैयार हूं। लेकिन वह भी मेरे साथ इनसारोव की बातें करते रहते हैं। और कैसी-कैसी भयंकर बातें बताते हैं! कल रात सपने में मैंने उन्हें खंजर लिए देखा। वह कह रहे थे, "तुम्हें मार डालूंगा और खुदकुशी कर लूंगा।" कैसी बकवास है!

...काश कोई मुझे बता सकता: तुम्हें यह करना चाहिए! नेक होना काफ़ी नहीं होता, नेकी करनी चाहिए ...हां, ज़िंदगी में यही प्रधान बात है। लेकिन नेकी की कैसे जाये! काश मैं अपने पर क़ाबू पा सकती! समझ में नहीं आता, इनसारोव साहब के बारे में मैं अक्सर क्यों सोचने लगती हूं। वह आते हैं, तो बैठकर ध्यानपूर्वक बातें सुनते हैं, खुद बढ़-बढ़कर बोलने की कोशिश नहीं करते, मैं उनको देखती हूं और मुझे अच्छा लगता है–बस! पर उनके चले जाने पर मैं उनकी कही बातों के बारे में सोचती हूं और अपने पर क्रोध आता है। घबराहट भी होती है... पर मालूम नहीं क्यों। (फ़्रांसीसी भाषा वह ठीक से नहीं बोल पाते लेकिन वह शर्माते नहीं और यह मुझे अच्छा लगता है।) यों नये लोगों के बारे में मैं हमेशा बहुत सोचती हूं। उनके साथ बातें करते हुए मुझे यकायक अपने बावर्ची वसीली की याद हो आयी जिसने अपंग बूढ़े को जलती कोठरी से बाहर निकाला था और खुद मरने से बाल-

बाल बचा था। पिता जी ने उसकी तारीफ़ की थी। मां ने उसे पांच रूबल दिये थे और मैं आदर में उसके आगे झुकने को तैयार थी। वैसे उसका चेहरा भोला, भौंदू सा था और बाद में उसे पीने की लत पड़ गयी थी।

...आज मैंने एक भिखारिन को सिक्का दिया और वह पूछने लगी कि मैं इतनी उदास क्यों रहती हूं? मैंने सोचा तक नहीं था कि मैं उदास दिखती हूं। मेरे ख़्याल में कारण यह है कि अपनी तमाम अच्छाइयों और तमाम बुराइयों के साथ मैं अकेली हूं, हमेशा अकेली। ऐसा कोई नहीं है जिसकी तरफ़ हाथ बढ़ा सकूं। जो पास आते हैं, वे मुझे नहीं चाहिए और जिसको मैं चाहती हूं... बराबर से गुज़र जाता है।

...पता नहीं आज मुझे क्या हो गया है! मेरा सिर चकरा रहा है और मैं घुटनों पर गिरकर दया की भीख मांगने को तैयार हूं। नहीं जानती कौन और क्यों, लेकिन लगता है कि कोई मुझे क़त्ल कर रहा है। अंदर ही अंदर मैं चीख़ती हूं और मुझे ग़ुस्सा आता है। मैं रोती हूं और अपने को सम्हाल नहीं पाती।... ओ मेरे ईश्वर, हे भगवान! मेरे इन उद्वेगों को शांत कर दो! केवल तुम्हीं यह कर सकते हो, किसी और में इतनी शक्ति नहीं है। न मेरे तुच्छ दान, न मेरे काम, कुछ भी – कुछ भी मुझे उबार नहीं सकते। कहीं नौकरानी बनकर ही चली जाती। सच, मन को कुछ शांति तो मिलती।

मेरे यौवन से क्या लाभ, मैं क्यों जीवित हूं, मेरी आत्मा और सब कुछ आख़िर किसलिए है?

...इनसारोव... जनाब इनसारोव, – समझ में नहीं आता मैं उन्हें कैसे पुकारूं, लेकिन वह मेरे दिमाग़ पर बराबर छाये रहते हैं। मैं जानना चाहती हूं कि उनके दिल में क्या है? लगता है, वह इतने खुले-खुले हैं, उन्हें समझना इतना आसान है, परंतु मैं कुछ नहीं देख पाती। कभी-कभी वह मुझे गहरी, खोजी नज़र से देखते हैं – या यह मेरी कल्पना मात्र है? पॉल मुझे बराबर कोंचता रहता है। मैं उससे नाराज़ हूं। आख़िर वह चाहता क्या है? वह मुझसे प्रेम करता है लेकिन मुझे उसका प्रेम नहीं चाहिए। वह ज़ोया से भी प्रेम करता है। मैं उसके साथ अन्याय कर रही हूं।

कल उसने कहा था कि आधा अन्याय करना मुझे नहीं आता।... उसका कहना ठीक है। यह बुरी बात है।

ओह, मुझे लगता है कि आदमी को मुसीबत, ग़रीबी या बीमारी का मुंह देखना चाहिए, वरना उसे गरूर हो जाता है।

...अंद्रेय पेत्रोविच ने आज मुझे उन दो बलगारों के बारे में क्यों बताया! शायद उन्होंने जान-बूझकर यह सब कहा। इनसारोव साहब से मेरा क्या वास्ता? मैं अंद्रेय पेत्रोविच से नाराज़ हूं।

...क़लम उठा लिया है, पर समझ में नहीं आता, शुरू कैसे करूं। आज बग़ीचे में वह अचानक मुझसे बातें करने लगे! सहृदय थे और विश्वास भी किया। कितनी जल्दी यह सब हो गया। मानो हम पुराने, बहुत पुराने मित्र रहे हों और बस अभी-अभी एक-दूसरे को पहचाना हो। अभी तक मैं उन्हें समझ क्यों नहीं पायी थी! अब वह मेरे लिए कितने आत्मीय हो गये हैं! और कमाल की बात यह है कि अब मैं बहुत शांत हूं। हंसी आती है: कल मैं अंद्रेय पेत्रोविच से और उनसे नाराज़ थी – उन्हें इनसारोव साहब भी बताया और आज... आख़िर सच्चा इन्सान मिल गया, ऐसा आदमी जिसका भरोसा किया जा सकता है। यह झूठे नहीं हैं। मुझे यह पहले ऐसे व्यक्ति मिले जो झूठ नहीं बोलते! दूसरे सभी झूठे हैं, झूठ बोलते हैं। ओह अंद्रेय पेत्रोविच, नेकदिल, प्यारे मित्र, मैं आपके साथ अन्याय क्यों कर रही हूं? नहीं-नहीं! अंद्रेय पेत्रोविच उनसे अधिक पढ़े-लिखे हो सकते हैं, संभव है अधिक बुद्धिमान भी हों... मगर मालूम नहीं क्यों, उनके बराबर में बहुत छोटे जान पड़ते हैं। जब वह अपनी मातृभूमि की बात करते हैं, वह मानो और बढ़ते जाते हैं, उनका चेहरा अधिक आकर्षक हो जाता है, उनकी आवाज़ में टंकार सुनायी पड़ती है और तब ख़्याल होता है कि पृथ्वी पर ऐसा व्यक्ति है ही नहीं जिसके आगे उनकी आंखें नीची हो जायें। वह केवल बातें नहीं करते; उन्होंने काम किये हैं और आगे भी करेंगे। मैं उनसे बहुत सी बातें पूछूंगी।... यकायक कैसे वह मेरी ओर मुड़े थे और मुझे देखकर मुस्कराये थे! सिर्फ़ भाई इस तरह मुस्कराता है। ओह, मैं कितनी ख़ुश हूं! पहली बार जब वह हमारे यहां आये थे, मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम इतनी जल्दी आत्मीय बन जायेंगे। अब तो मुझे यह भी अच्छा

लगता है कि पहली बार मैं बेपरवाह रही... बेपरवाह? तो क्या अब मैं बेपरवाह नहीं हूं?

...मन की ऐसी शांति मैं बहुत समय बाद अनुभव कर रही हूं। मेरे भीतर सकून है, बड़ा सकून। लिखने को कुछ नहीं है। मैं उनसे अक्सर मिलती हूं, और बस। और क्या लिखा जाये?

...पॉल छिप गया है। अंद्रेय पेत्रोविच का आना कम हो गया है। बेचारे! मुझे लगता है, वह... नहीं, यह नहीं हो सकता। अंद्रेय पेत्रोविच से बातें करना मुझे अच्छा लगता है। वह अपनी बात कभी नहीं करते, कोई-न-कोई काम की बात, लाभदायक चर्चा छेड़ देते हैं। वह शूबिन जैसे नहीं हैं। शूबिन तो बनता-ठनता है, तितली की तरह। लेकिन वह अपने पर ही रीझता है जो तितली नहीं करती। यों शूबिन और अंद्रेय पेत्रोविच, दोनों... बहरहाल, बात मेरे लिए स्पष्ट है।

...उन्हें यहां आना अच्छा लगता है, यह साफ़ है। लेकिन क्यों? मुझमें उन्होंने क्या देखा? संदेह नहीं कि हमारी रुचियां एक जैसी हैं। कविताओं का न उन्हें शौक़ है, न मुझे। कला के मामले में हम दोनों कोरे हैं। लेकिन उनसे मेरी क्या तुलना! वह धीर-गंभीर हैं और मैं हमेशा बेचैन रहती हूं। उनका अपना जीवन-मार्ग है, अपना लक्ष्य है। और मैं—आखिर कहां जा रही हूं? मेरा घोंसला कहां है? वह शांत है परंतु कहीं दूर विचारों में खोये रहते हैं। समय आयेगा और वह हमें हमेशा के लिए छोड़कर चले जायेंगे। वह अपने देश, सागर पार चले जायेंगे। ठीक है, भगवान उनकी सहायता करे! कुछ भी हो, मैं खुश होऊंगी कि जब वह यहां थे, मेरा उनसे मिलना हुआ था।

लेकिन वह रूसी क्यों नहीं है? नहीं, वह रूसी नहीं हो सकते थे।

मां को वह पसंद हैं। कहती हैं: विनम्र जीव हैं। मेरी अच्छी मां! वह उन्हें नहीं समझतीं। पॉल को सांप सूंघ गया है। वह समझ गया है कि उसके इशारों से मुझे चिढ़ होती है। मगर वह उनसे जलता है। दुष्ट लड़का है! उसे अधिकार क्या है? क्या मैंने कभी...

ये सब बेकार की बातें हैं। मेरे दिमाग़ में आती ही क्यों हैं?

...बहरहाल, बात अजीब है कि बीस बरस की हो जाने पर भी मैंने अभी तक किसी से प्रेम नहीं किया? मेरी समझ में द० के मन में (अब से मैं उन्हें द० ही कहा करूंगी क्योंकि यह नाम – द्मीत्री मुझे भाता है), हां, द० के मन में शांति इसलिए है कि उन्होंने अपने ध्येय, अपने सपने के लिए सर्वस्व अर्पित कर दिया है। वह बेचैन क्यों हों? जिसने अपना तन, मन, धन – अपना सब कुछ... सब कुछ अर्पित कर दिया है, वह चिंता क्यों करे? वह किसी के आगे उत्तरदायी नहीं हैं। अहम् के लिए कुछ नहीं, सब कुछ ध्येय के लिए। यों उन्हें भी वे ही फूल अच्छे लगते हैं जो मुझे। आज मैंने गुलाब तोड़ा। एक पंखुड़ी ज़मीन पर गिरी तो उन्होंने उठा ली। ... मैंने फूल ही उनको दे दिया।

द० हमारे यहां अक्सर आते हैं। कल वह सारी शाम बैठे रहे। वह मुझे बलगार भाषा सिखाना चाहते हैं। उनके साथ मुझे ऐसा लगता है मानो घर के आदमी के साथ होऊं। नहीं, उससे भी ज़्यादा अच्छा।

...दिन बीतते मालूम नहीं होते। ... मैं खुश हूं लेकिन पता नहीं क्यों। भय भी लगता है। भगवान की कृपा मानती हूं, लेकिन रो भी सकती हूं। ये स्नेह के, गर्माहट के दिन हैं!

...मुझे पहले की तरह सकून है, परंतु कभी-कभी कुछ उदास भी हो जाती हूं। मैं सुखी हूं। क्या मैं सुखी हूं?

...कल की पिकनिक बहुत दिनों याद रहेगी। कैसे अनोखे, नये और भयंकर अनुभव रहे! जब उन्होंने यकायक उस भीमकाय दैत्य को उठाकर गेंद की तरह पानी में फेंक दिया तो मुझे डर नहीं लगा... मगर उनसे मुझे डर लगा। और बाद में चेहरे पर कितनी कुटिलता, लगभग क्रूरता थी! कैसे कहा था उन्होंने: निकल आयेगा! अंदर ही अंदर मैं कांप उठी। लगा कि मैं उन्हें बिलकुल नहीं समझी। बाद में जब सब हंसने लगे, मैं भी हंसी तो उनके लिए मुझे बड़ा दर्द हुआ! मैंने महसूस किया कि उन्हें शर्म आ रही है, मुझसे शर्म आ रही है। यह उन्होंने बाद में बग्घी में मुझसे कहा जब मैंने अंधेरे में उन्हें देखने की कोशिश की और मुझे उनके लिए डर लगा। ज़ाहिर है, उनके साथ खिलवाड़ नहीं किया जा सकता और दूसरे को बचाना उन्हें आता है। लेकिन वह गुस्सा,

होंठों की वह थरथराहट और आंखों का वह ज़हर किसलिए? शायद कोई दूसरा चारा नहीं है? शायद मर्द के लिए, योद्धा के लिए विनम्र और शरीफ़ बने रहना मुमकिन नहीं है? हाल ही में उन्होंने मुझसे कहा था कि ज़िंदगी कांटों की सेज है। ये शब्द जब मैंने अंद्रेय पेत्रोविच के आगे दुहराये तो वह द० की बात से सहमत नहीं हुए। दो में कौन सही है? और यह दिन शुरू कैसे हुआ था! उनके साथ चलते हुए – भले ही कुछ न कहते हुए मैं कितनी प्रसन्न थी। फिर भी मैं खुश हूं कि ऐसा हुआ। शायद यही होना था।

... चिंता ने फिर से आ घेरा है। ... मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है।

... कई दिनों से मैंने इस डायरी में कुछ नहीं लिखा। लिखने की इच्छा ही नहीं हुई। मुझे अहसास हुआ कि जो कुछ मैं लिखूंगी, उससे भिन्न होगा जो मेरे मन में है। ... परंतु मेरे मन में है क्या? मैंने उनसे लम्बी बात की जिससे बहुत सी चीज़ें मेरे आगे साफ़ हो गयीं। अपने इरादे उन्होंने मुझे बता दिये। (अब मैं यह भी जानती हूं कि उनकी गर्दन पर ज़ख़्म कैसे हुआ था। हे भगवान, उनको मौत की सज़ा दे दी गयी थी। संयोग से बच गये – वह घायल हो गये थे ...) उन्हें यक़ीन है कि लड़ाई होगी और इसकी उन्हें ख़ुशी है। लेकिन इस सब के बावजूद मैंने द० को इतना ग़मगीन पहले कभी नहीं देखा। उन्हें! उन्हें काहे का ग़म हो सकता है? पिता जी शहर से लौटे और हम दोनों को एकसाथ देखा तो नज़र में अजीब सा भाव आ गया। अंद्रेय पेत्रोविच आये। मुझे वह बहुत दुबले और पीले-पीले लगे। उन्होंने शिकायत की कि शूबिन के साथ मेरा व्यवहार बेहद ठंडा और लापरवाही का है। मैं तो पॉल के बारे में भूल ही गयी थी। मिलूंगी तो अपनी ग़लती सुधारने की कोशिश करूंगी। उसके लिए ... या दुनिया में किसी और के लिए मेरे पास समय नहीं है। अंद्रेय पेत्रोविच ने मुझसे बातें करते हुए अफ़सोस सा ज़ाहिर किया। इस सबका मतलब क्या है? मेरे इर्द-गिर्द और मेरे भीतर यह अंधकार कैसा है? जान पड़ता है कि मेरे इर्द-गिर्द और मेरे भीतर कोई रहस्यमय बात हो रही है। यह है क्या – शब्द सोचना चाहिए ...

... रात को मैं सो नहीं पायी। सिर दुख रहा है। लिखने की

ज़रूरत क्या है? आज वह बड़ी जल्दी चले गये और मैं उनसे बातें करना चाहती थी। ... लगता है मुझसे भाग रहे हैं। हां, वह मुझसे भाग रहे हैं।

... शब्द मिल गया! सचाई कौंध गयी। हे भगवान! मुझ पर दया करो ... मैं प्रेम करने लगी हूं!

१७

उसी दिन जब येलेना ने अपनी डायरी में वह अंतिम, दैवाधीन शब्द लिखा, इनसारोव बेरसेनेव के कमरे में बैठा था और बेरसेनेव चेहरे पर आश्चर्य का भाव लिए उसके सामने खड़ा था। इनसारोव ने अभी-अभी उसे अपना इरादा बताया था कि अगले ही दिन वह मास्को चला जायेगा।

"मगर मेरे भाई," बेरसेनेव ने कहा "सबसे बढ़िया मौसम अब शुरू हो रहा है। मास्को में आप क्या करेंगे? अचानक यह फ़ैसला! आप को कोई सूचना वग़ैरा तो नहीं मिली?"

"नहीं, कोई सूचना नहीं मिली," इनसारोव ने जवाब दिया। "परंतु कुछ कारणों से अब मैं यहां रह नहीं सकता।"

"ऐसी क्या बात है ..."

"अंद्रेय पेत्रोविच," इनसारोव ने कहा। "आपसे प्रार्थना है, इसरार मत कीजिए। आपको छोड़कर जाने से मुझे भी कष्ट है, लेकिन कुछ किया नहीं जा सकता।"

बेरसेनेव ने उसे घूरकर देखा।

"जानता हूं," आख़िर वह बोला, "आपको क़ायल करना मुमकिन नहीं। तो आपने फ़ैसला कर लिया?"

"पक्का फ़ैसला," इनसारोव ने जवाब दिया और उठकर बाहर निकल गया।

बेरसेनेव कुछ समय तक कमरे में इधर-उधर टहला, फिर टोप उठाया और स्ताख़ोव परिवार की ओर चल पड़ा।

"आप मुझे कोई ख़बर देना चाहते हैं?" येलेना ने दूसरों के हटते ही बेरसेनेव से पूछा।

"जी हां ... आपने कैसे जाना?"

"छोड़िए भी। बताइये, बात क्या है?"

बेरसेनेव ने उसे इनसारोव का फ़ैसला सुनाया।

येलेना का चेहरा फक हो गया।

"मतलब क्या है?" मुश्किल से उसके मुंह से आवाज़ निकली।

"आप जानती हैं," बेरसेनेव ने कहा, "द्मीत्री निकानोरोविच अपने कामों की क़ैफियत देना पसंद नहीं करते। फिर भी मुझे लगता है... आइये, बैठ जायें, येलेना निकोलायेव्ना। आपकी तबियत कुछ ठीक नहीं दिखती... हां, मुझे लगता है, मैं अनुमान लगा सकता हूं कि अचानक इस रवानगी का कारण क्या होगा।"

"कैसा, कैसा कारण?" येलेना ने अपने ठंडे हो गये हाथ से बेरसेनेव के हाथ को कसकर पकड़ते हुए और स्वयं इसकी ओर ध्यान न देते हुए पूछा।

"आपको किस तरह स्पष्ट करूं?" बेरसेनेव ने विषाद भरी मुस्कराहट के साथ कहा, "मुझे बीते वसंत की बात बतानी पड़ेगी जब इनसारोव को मैंने निकट से जाना था। मैं एक रिश्तेदार के घर में उससे मिला था। रिश्तेदार की एक बेटी थी—बहुत ही सुंदर। मुझे ख़्याल हुआ कि इनसारोव उसकी ओर आकर्षित है और यह मैंने उससे कह दिया। वह हंस पड़ा और जवाब दिया कि मेरा अंदाज़ ग़लत है। उसका दिल सही-सलामत है और अगर कुछ हुआ होता तो वह फ़ौरन चला जाता। कारण—उसके अपने शब्दों में—यह होता कि व्यक्तिगत आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए वह अपने ध्येय, अपने कर्त्तव्य का परित्याग करना नहीं चाहता। उसने कहा था, 'मैं बल्गार हूं और मुझे रूसी का प्यार नहीं चाहिए।'"

"तो... अब क्या... आप सोचते हैं?" येलेना ने चोट लगने की आशंका से त्रस्त व्यक्ति की तरह बरबस मुंह मोड़ते हुए, लेकिन फिर भी बेरसेनेव का हाथ न छोड़ते हुए अस्फुट स्वर में कहा।

"मैं सोचता हूं," वह बोला, फिर आवाज़ ख़ुद ही धीमी कर दी, "मैं सोचता हूं कि अब वही हो गया है जिसका उस समय मैंने ग़लत अनुमान लगाया था।"

"यानी... आप सोचते हैं... मुझे तड़पाइये नहीं!" येलेना अचानक फट पड़ी।

"मैं सोचता हूं," बेरसेनेव ने जल्दी से उत्तर दिया, "इनसारोव एक रूसी लड़की से प्यार करने लगा है और अपनी प्रतिज्ञा पर अडिग रहते हुए उसने भाग जाने का फ़ैसला किया है।"

येलेना ने उसका हाथ और ज़ोर से पकड़ किया तथा सिर और ज़्यादा झुका लिया मानो वह अपने चेहरे और गर्दन पर लपट की तरह दौड़ गयी लज्जा की लाली को परायी नज़रों से छिपाना चाहती थी।

"अंद्रेय पेत्रोविच, आप देवता के समान दयालु हैं," उसने कहा। "वह विदा लेने तो आयेंगे?"

"हां, मैं समझता हूं आयेगा क्योंकि वह नहीं चाहेगा..."

"उनसे कह दीजिए, कह दीजिए..."

बेचारी युवती और संयम न रख सकी। आंखों से आंसू बह चले और वह कमरे से निकल भागी।

"इतना प्यार करती हैं उसे," बेरसेनेव ने धीरे-धीरे घर लौटते हुए सोचा। "ऐसा मुझे अंदेशा नहीं था। मैंने कल्पना नहीं की थी कि मामला अभी ही इतना बढ़ गया होगा," वह सोचता जा रहा था। "उन्होंने कहा: मैं दयालु हूं। कौन जाने किन भावनाओं के वश में होकर, किस मंशा से मैंने येलेना को यह सब बताया। नहीं, दया का विचार नहीं था, सचमुच नहीं था। यह तो पता चलाने की मेरी शैतानी ख़्वाहिश ही थी कि छुरा कितना गहरा घुसा है। मुझे तो ख़ुश होना चाहिए—वे एक-दूसरे को प्यार करते हैं और मैंने उनको सहायता दी।... शूबिन मुझे 'विज्ञान और रूसी पब्लिक का भावी बिचवई' कहता है। शायद बिचवई होना ही मेरी क़िस्मत में बदा है। लेकिन कहीं मैं ग़लती तो नहीं कर रहा? नहीं, ग़लती नहीं कर रहा..."

बेरसेनेव के हृदय पर सिल रखी थी और वह रौमेर की पुस्तक पर ध्यान केन्द्रित न कर सका।

अगले दिन इनसारोव एक बजे के बाद स्ताखोव परिवार के यहां पहुंचा। संयोग की बात कि उस समय बैठकखाने में आन्ना वसील्येव्ना अपनी पड़ोसिन—पादरी की पत्नी के साथ बैठी थीं। वह बड़ी अच्छी, आदरणीय महिला थीं, लेकिन पुलिसवाले उन्हें कुछ तंग कर रहे थे क्योंकि सख़्त गर्मी के वक़्त उन्हें उसी रास्ते

के पास तालाब में नहाने की सूझी जिससे किसी बड़े जनरल का परिवार अक्सर आया-जाया करता था। येलेना को, जिसके चेहरे पर इनसारोव की पदचाप सुनते ही खून की बूंद तक न रही थी, शुरू में बाहरी आदमी की मौजूदगी से तसकीन हुई। लेकिन जब विचार आया कि अकेले में उससे बात किये बिना वह विदा ले सकता है, तो दिल जाम हो गया। आखिर वह सकुचाता जान पड़ता था और उसकी नज़र बचा रहा था। "कहीं वह अभी ही विदा न लेने लगें?" येलेना ने सोचा। और सचमुच इनसारोव आन्ना वसील्येव्ना की ओर मुख़ातिब हो गया। येलेना हड़बड़ाकर उठी और उसे एक तरफ़, खिड़की के पास बुलाया। आश्चर्यचकित होकर पादरी की पत्नी ने मुड़ने की कोशिश की, लेकिन अंगिया के फ़ीते इतने कसकर बंधे थे कि हर हरकत से वह चरमराने लगती थी। मजबूर थी, इसलिए स्थिर हो गयी।

"मुझे मालूम है, आप यहां क्यों आये हैं," उसने जल्दी से कहा। "अंद्रेय पेत्रोविच ने मुझे आपका इरादा बता दिया है। परंतु मेरा अनुरोध है, मैं विनती करती हूं कि हम लोगों से आज विदा न लीजिए। आप कल, कुछ जल्दी, ग्यारह बजे के क़रीब आइये। मुझे आपसे दो बातें करनी हैं।"

इनसारोव ने चुपचाप सिर झुका लिया।

"मैं आपको रोकूंगी नहीं... आप वचन देते हैं?"

इनसारोव ने फिर से सिर झुकाया और कहा कुछ नहीं।

"येलेना, इधर आना," आन्ना वसील्येव्ना ने पुकारा। "देखो तो, मौसी का हैंडबैग कितना खूबसूरत है।"

"मैंने खुद काढ़ा है," पादरी की पत्नी बोली।

येलेना खिड़की से चली आयी।

उनके यहां इनसारोव पन्द्रह मिनट से ज़्यादा नहीं ठहरा। येलेना छिपाकर उसे देखती रही। वह आसन बदलता था, पहले की तरह समझ नहीं पाता था कि देखे किधर और बड़े ही अजीब ढंग से अचानक उठकर चल दिया। कहना चाहिए, ग़ायब हो गया।

येलेना के लिए यह दिन समाप्त नहीं हो रहा था और रात की गति दिन से भी धीमी हो गयी। लम्बी, बहुत लम्बी रात कट नहीं रही थी। येलेना कभी पलंग पर बैठ, घुटनों को

हाथों से घेर लेती, उन पर सिर रख देती, तो कभी खिड़की के पास चली जाती और तपता माथा ठंडे कांच पर टेक देती। वह बस एक ही बात सोचे जा रही थी, सोचे जा रही थी। वह एकदम निढाल हो गयी। उसके दिल की धड़कन रुक गयी थी या वह पहलू में नहीं था, उसे कुछ पता नहीं था, मगर उसके सिर की नसें चटखी जा रही थीं। बाल उसे झुलसा रहे थे और होंठ सूख गये थे। "वह आयेंगे।... उन्होंने मां से विदा नहीं ली।... वह धोखा नहीं देंगे।... अंद्रेय पेत्रोविच ने क्या सच कहा था? नहीं, असंभव है।... उन्होंने शब्दों में आने का वायदा नहीं किया।... कहीं मैं उनसे हमेशा के लिए जुदा तो नहीं हो गयी?" ऐसे ही विचार उसका पिंड नहीं छोड़ रहे थे। सचमुच पिंड नहीं छोड़ रहे थे। वे न आते थे न जाते; बस धुंध की तरह उसके दिमाग़ में बराबर घुमड़ रहे थे। "वह मुझे प्यार करते हैं!" इसका बोध मात्र उसके अंग-अंग को आलोड़ित कर देता और वह अंधेरे में आंखें गड़ाकर देखने लगती। सबके लिए अदृश्य गुप्त मुस्कान उसके होंठों पर खेलती, किन्तु उसी क्षण वह सिर को झटकती, उंगलियों से सिर की पिछाड़ी थामती और पहलेवाले विचार फिर से धुंध की तरह उसके दिमाग़ में घुमड़ने लगते। सवेरा होने से कुछ ही पहले उसने कपड़े बदले और बिस्तर पर लेट गयी। लेकिन नींद नहीं आयी। सूरज की पहली दहकती हुई किरणें उसके कमरे में घुस आयीं।... "ओह! अगर वह मुझे प्यार करते हैं!" उसने अचानक कहा और ऊपर पड़नेवाले प्रकाश से ज़रा भी न शर्माते हुए अपनी बांहें फैला दीं।

वह उठी, कपड़े पहने और नीचे उतर गयी। घर में अभी कोई नहीं जगा था। वह बग़ीचे में गयी। मगर वहां ऐसी शांति, इतनी हरियाली और ताज़गी थी, चिड़ियां इतने प्रेम से चहचहा रही थीं, फूल इतने प्रसन्न भाव से निहार रहे थे कि वह भयभीत हो उठी। "ओह!" उसने सोचा, "अगर यह सच है तो कोई भी पत्नी मुझसे अधिक सुखी नहीं हो सकती! परंतु क्या यह सच है?" वह अपने कमरे में लौट आयी और किसी न किसी तरह समय काटने के विचार से ड्रेस बदलने लगी। लेकिन हर चीज़ उसके हाथ से फिसल रही थी, गिर रही थी और जब उसे चाय के लिए पुकारा

गया तब भी वह अपने बड़े आयने के आगे अर्धवसना बैठी थी। वह नीचे गयी। मां ने उसके चेहरे का उड़ा हुआ रंग देखा किन्तु कहा यही कि "आज तुम कितनी प्यारी लग रही हो।" फिर उसे ऊपर से नीचे तक देखकर जोड़ दिया, "यह ड्रेस तुम पर फबती है। जब भी चाहो कि कोई तुम्हें देखता रह जाये, तो हमेशा यही ड्रेस पहनना।" येलेना ने कोई उत्तर नहीं दिया और कोने में बैठ गयी। घड़ी ने नौ बजाये। ग्यारह को अभी दो घंटे बाक़ी थे! येलेना ने किताब उठायी, फिर क़सीदा काढ़ने लगी, फिर नये सिरे से किताब उठा ली। इसके बाद उसने एक ही पथ पर सौ बार आने-जाने का प्रण किया और ऐसा ही किया। फिर वह काफ़ी समय तक आन्ना वसील्येव्ना को पेशेंस खेलते देखती रही। घड़ी की ओर नज़र घुमायी ... अभी तो दस भी नहीं बजे। शूबिन बैठकखाने में आया। येलेना ने उससे बात करने की कोशिश की। फिर क्षमा भी मांग ली हालांकि स्वयं नहीं जानती थी कि काहे के लिए। ... यह नहीं कि बोलना कठिन था, पर जो भी शब्द वह कहती थी, वही उसमें अजब व्याकुलता पैदा कर देता था। शूबिन उसकी ओर झुका। उसे लगा कि चिढ़ाएगा, लेकिन आंखें उठायीं तो सामने उदास सा सहृदय चेहरा था। ... देखकर वह मुस्करायी। जवाब में शूबिन भी मुस्कराया और चुपचाप, धीमे से बाहर चला गया। वह उसे रोकना चाहती थी, परंतु उस क्षण समझ में नहीं आया कि कैसे बुलाये। आखिर ग्यारह बज गये। वह प्रतीक्षा करने लगी। कान लगाये रही, बाट जोहती रही, जोहती रही। अब वह कुछ भी करने की स्थिति में नहीं थी। सोचना तक बंद कर दिया। उसके हृदय में जीवन लौटा और धड़कन ज़्यादा से ज़्यादा तेज़ होती गयी। और अजीब बात यह कि समय के मानो पंख लग गये थे। पन्द्रह मिनट बीते, आधा घंटा बीता, फिर कुछ मिनट बीते – या ऐसा उसने अनुमान किया। यकायक वह चौंक पड़ी: घड़ी ने बारह का नहीं, एक का घंटा बजाया था। "वह नहीं आयेंगे, विदा लिए बिना ही चले जायेंगे ..." इस विचार के साथ-साथ खून भी उसके दिमाग़ मे दौड़ा। उसे महसूस हुआ कि सांस लेना मुश्किल है और आंखों में आंसू उमड़े आ रहे हैं। वह अपने कमरे की ओर भागी और बिस्तर पर जा गिरी। चेहरा दोनों हाथों के ऊपर टिका था।

कोई आधे घंटे वह स्पंदनहीन पड़ी रही। उंगलियों के बीच से बहते आंसू तकिये को भिगो रहे थे। अचानक वह उठ बैठी। उसके भीतर कोई अनोखी बात हो गयी थी। उसका चेहरा बदल गया, गीले नेत्र अपने आप सूख गये और चमक उठे। उसकी भौहें गुथ गयी थीं और होंठ भिंच गये थे। आधा घंटा और बीता। येलेना ने आखिरी बार कान खड़े किये: क्या वह परिचित आवाज़ उस तक नहीं आयेगी? वह उठ खड़ी हुई। टोपी लगायी, दस्ताने पहने, कोटी कंधों पर डाली, चुपके से घर के बाहर निकली और तेज़ क़दमों से उस रास्ते पर चल दी जो बेरसेनेव के घर की ओर जाता था।

१८

येलेना सिर झुकाये, एकटक आगे देखते हुए बढ़ी जा रही थी। उसे किसी बात का डर नहीं था और वह कुछ भी सोचने की स्थिति में नहीं थी। वह बस इनसारोव को एक बार फिर देखना चाहती थी। उसे ध्यान तक नहीं था कि सूरज घने काले बादलों के पीछे कभी का छिप गया है, हवा तेज़ होकर पेड़ों के बीच सनसना रही है, उसकी फ़ॉक को उड़ा रही है और अचानक धूल के बगूले उठ-उठकर सड़क पर दौड़ने लगे हैं।... आसमान से मोटी-मोटी बूंदें गिरीं, पर उसने कोई ख़्याल नहीं किया। बूंदों की झड़ी लग गयी, बारिश तेज़ हो गयी। बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी और कड़कड़ा रही थी। येलेना ने ठिठककर इधर-उधर देखा।... खुशकिस्मती से, जहां वह ज़ोरदार बारिश में घिर गयी थी, उससे कुछ दूर, कुएं के पास एक टूटा-फूटा, बिसारा हुआ छोटा सा गिरजाघर खड़ा था। वह उधर दौड़कर ओसारे में जा खड़ी हुई जो ज़्यादा ऊंचा नहीं था। मूसलाधार बारिश हो रही थी, सारा आकाश मेघों से घिरा था। पटापट तेज़ी से गिर रहीं जलधारा-ओं के घने ताने-बाने को देखते हुए येलेना मूक निराशा में डूब गयी। इनसारोव से मिल पाने की अख़िरी उम्मीद पर पानी फिर गया। इतने में एक बूढ़ी भिखारिन गिरजे में आयी। उसने भींगे सिर व हाथों को झटका और झुकते हुए कहा, "बारिश के मारे

यहां आ गयीं, रानी बिटिया!" फिर कराहते, आह भरते हुए वह कुएं से कुछ ही दूर पटिया पर बैठ गयी। येलेना ने जेब में हाथ डाला। बुढ़िया ने यह देखा और उसके चेहरे पर, जो कभी सुंदर कहा होगा लेकिन अब झुर्रियों से भरा और पीला था, जान दौड़ गयी। "तुम देवी हो, भगवान तुम्हें सुखी रखे," वह कहने लगी। येलेना को जेब में बटुआ नहीं मिला और उधर बुढ़िया का हाथ फैल गया था।...

"दादी, मेरे पास पैसे नहीं हैं," येलेना ने कहा, "मगर यह ले लो, किसी काम आयेगा।"

उसने अपना रूमाल दे दिया।

"ओह प्यारी बेटी!" भिखारिन बोली। "लेकिन तुम्हारे रूमाल का मैं क्या करूंगी? हां, नातिन को शादी के दिन भेंट कर सकती हूं! तुम्हारे दिल में दया है, भगवान तुम्हारा कल्यान करेगा!"

बिजली ज़ोर से कड़की।

"ईसा मसीह रक्षा करें!" बुढ़िया फुसफुसायी और उसने क्रास का निशान बनाया। "लगता है मैंने तुम्हें पहले देखा है," कुछ ठहरकर उसने कहा, "शायद तुमने मुझे पहले भी दान दिया है।"

येलेना ने बुढ़िया को ध्यान से देखा और याद आ गयी।

"हां, दादी," उसने जवाब दिया। "तुमने पूछा था कि मैं इतनी उदास क्यों हूं।"

"हां, बिटिया रानी, हां। तभी तो मैं तुम्हें पहचान गयी। लगता है तुम अभी भी दुखी हो। तुम्हारा यह रूमाल भी गीला है। मतलब यह कि रोयी थीं। तुम युवतियों के दर्द और दुख एक ही होते हैं।"

"कैसा दर्द, दादी?"

"कैसा? अरी भलीमानस, तुम मुझ बुढ़िया से चतुराई दिखाने की कोशिश मत करो। तुम्हें क्या खाये जा रहा है, मुझे मालूम है। अनाथ तुम हो नहीं। प्यारी बेटी, कभी मैं भी जवान थी। मैंने भी ये सारे पापड़ बेले थे। समझीं। लेकिन तुम्हारी नेकी देखकर मैं तुम्हें एक बात बता दूं। आदमी तुम्हें बढ़िया मिला है।

ज़रा भी चंचल नहीं है। तुम उसका साथ मत छोड़ना; मौत भी तुम्हें जुदा न करने पाये! होना है तो होकर रहेगा, और नहीं होना है तो भगवान की वैसी इच्छा। यही बात है। मुझे कौतुक से क्या देख रही हो? मैं तो नजूमी हूं। बोलो, तुम्हारे रूमाल के साथ तुम्हारे सारे दुख भी उड़ा ले जाऊं? उड़ा ले जाऊंगी – एकदम दूर हो जायेंगे। देखो, बारिश हल्की पड़ रही है। तुम अभी ठहरो लेकिन मैं जा रही हूं। मैं कोई पहली बार थोड़े ही भींगूंगी। समझ लो बेटी: तुम्हें दुख था, दुख दूर हो गया। वह ख़तम हो गया। भगवान की कृपा है!"

भिखारिन पटिया से उठी, गिरजे के बाहर निकली और अपने रास्ते चल दी। येलेना भौंचक्की हो कर उसे जाते देखती रही। "इस सबका मतलब क्या है?" उसने बरबस ही बुदबुदाकर कहा।

बारिश कम से कम होती गयी और सूरज क्षण भर के लिए झलक दिखा गया। येलेना अपने पनाहघर से बाहर निकलने को हुई... और अचानक गिरजे से दस क़दम की दूरी पर उसे इनसारोव नज़र आया। बरसाती पहने वह उसी रास्ते से चला आ रहा था जो येलेना ने पकड़ा था। लगता था कि वह जल्दी-जल्दी घर जा रहा है।

येलेना ने हाथ से ड्योढ़ी की जर्जर रेलिंग का सहारा लिया और उसे पुकारना चाहा, परंतु गले से आवाज़ नहीं निकली।... इनसारोव आंखें उठाये बिना उसके बराबर से गुज़रा जा रहा था।

"द्मीत्री निकानोरोविच!" आख़िर उसका स्वर फूटा।

इनसारोव यकायक रुक गया और उसने पीछे मुड़कर देखा।... शुरू में वह येलेना को पहचान नहीं पाया लेकिन अगले ही क्षण वह उसकी ओर बढ़ आया।

"आप! आप यहां!" उसने ताज्जुब से कहा।

वह चुपचाप गिरजे में पीछे हट गयी। इनसारोव भी अंदर आ गया।

"आप यहां?" उसने दोहराया।

येलेना ने मुंह नहीं खोला, केवल अपलक, कोमल दृष्टि से उसे देर तक देखती रही। इनसारोव ने आंखें झुका लीं।

"क्या आप हमारे यहां से आ रहे हैं?" उसने पूछा।

"नहीं... आपके यहां से नहीं।"

"नहीं?" येलेना ने दोहराया और मुस्कराने की कोशिश की। "अपना वचन आप इसी तरह निभाते हैं? मैं सुबह से आप की बाट जोहती रही।"

"येलेना निकोलायेव्ना, याद कीजिए कि कल मैंने कोई वचन नहीं दिया था।"

येलेना ने फिर से मुस्कराना चाहा और चेहरे पर हाथ फेरा। हाथ और चेहरा – दोनों ही जैसे रक्तहीन हो गये थे।

"यानी आप हमसे अलविदा कहे बिना चले जाना चाहते थे?"

"जी हां," इनसारोव ने गंभीरता से भर्रायी हुई आवाज़ में उत्तर दिया।

"क्यों भला? हमारी जान-पहचान के बाद, तमाम बातों के बाद, इस तरह... यानी अगर मैंने यहां आपको संयोग से न देख लिया होता (कहते-कहते येलेना की आवाज़ थरथरा गयी और वह क्षण भर को चुप हो गयी)... तो आप मुझसे हाथ तक मिलाये बिना यों ही चले गये होते और आपको कोई अफ़सोस न हुआ होता?"

इनसारोव ने मुंह फेर लिया।

"येलेना निकोलायेव्ना, आप इस तरह की बातें न करिए। वैसे ही मैं दुखी हूं। विश्वास मानिए, यह फ़ैसला मैं बहुत जब्र करके ले पाया हूं। अगर आप जानतीं..."

"मैं नहीं जानना चाहती कि आप क्यों जा रहे हैं..." येलेना ने घबराकर उसकी बात काटी। "शायद यह ज़रूरी है। शायद हमें जुदा होना है। बिना किसी कारण के आप अपने दोस्तों के दिल भला क्यों दुखाते। लेकिन क्या दोस्त लोग इसी तरह जुदा होते हैं? आप और हम दोस्त हैं, हैं न?"

"नहीं," इनसारोव बोला।

"क्या?..." येलेना ने धीमे से कहा और उसके गाल कुछ लाल हो गये।

"मैं ठीक इसी कारण से जा रहा हूं कि हम दोस्त नहीं हैं। मुझे वह बात कहने के लिए मजबूर न करिये जो मैं नहीं कहना चाहता, जो मैं नहीं कहूंगा।"

"पहले तो आप मुझसे खुलकर बातें करते थे," येलेना ने हल्का सा ताना मारा। "याद है?"

"तब मैं खुलकर बात कर सकता था। तब मुझे छिपाने को कुछ नहीं था। और अब..."

"और अब?" येलेना ने पूछा।

"अब... अब मुझे जाना चाहिए। अलविदा।"

इस समय अगर इनसारोव ने आंखें ऊपर उठायी होतीं तो उसने देखा होता कि येलेना का चेहरा उतना ही ज़्यादा चमकता जा रहा है जितना कि उसका अपना चेहरा धूमिल और सियाह हो रहा है। मगर वह तो फ़र्श पर नज़र गड़ाये था।

"अच्छा, तो अलविदा, द्मीत्री निकानोरोविच," उसने कहा। "अब जब हम मिल ही गये तो आइये, कम से कम हाथ मिला लें।"

इनसारोव हाथ बढ़ाने को हुआ।

"नहीं, मैं यह भी नहीं कर सकता," उसने अस्फुट स्वर में कहा और फिर से मुंह फेर लिया।

"हाथ नहीं मिला सकते?"

"नहीं मिला सकता। अलविदा।"

और वह गिरजे के बाहर जाने लगा।

"एक मिनट और ठहरिए," येलेना ने कहा। "लगता है, आप मुझसे डरते हैं। लेकिन मुझमें आपसे अधिक साहस है," यह कहते हुए उसके सारे शरीर में हल्की सी फुरहरी दौड़ गयी। "मैं बता सकती हूं... सुनेंगे? ... आपने मुझे यहां क्यों पाया? जानते हैं, मैं कहां जा रही थी?"

इनसारोव अचरज से येलेना को देखने लगा।

"मैं आपके यहां जा रही थी।"

"मेरे यहां?"

येलेना ने मुंह ढांप लिया।

"आप चाहते थे कि मैं कह दूं: मैं आपसे प्रेम करती हूं।" वह फुसफुसायी। "लीजिए... मैंने कह दिया।"

"येलेना!" इनसारोव के मुंह से निकल गया।

उसने चेहरे से हाथ हटाये, उसकी ओर देखा और उसके सीने से जा लगी।

इनसारोव ने एक शब्द भी बोले बिना उसे आलिंगन में कस लिया। उसे कहने की आवश्यकता नहीं थी कि वह भी उसे प्यार करता है। उसके उद्गार मात्र से, पलक झपकते व्यक्ति में हो गये आमूल परिवर्तन से, उसकी छाती के उठने-गिरने से जिससे वह पूरे भरोसे के साथ टिकी हुई थी, और जिस तरह उसकी उंगलियां उसके बालों को सहला रही थीं उससे येलेना समझ सकती थी कि उसे प्यार मिला है। वह चुप था और उसे शब्दों की कोई ज़रूरत नहीं थी। "वह यहां है, वह मुझे प्यार करता है... और क्या चाहिए?" परम आनंद की शांति, निश्चल घाट पर, मंज़िल पर पहुंचने की शांति, मृत्यु तक को अर्थ व सौंदर्य से आप्लावित कर देनेवाली अलौकिक शांति ने अपनी दैवी लहर से उसके अंग-अंग को नहला दिया। वह कुछ भी नहीं चाहती थी क्योंकि उसे सब कुछ मिल गया था। उसके होंठ फुसफुसा रहे थे: "मेरे बंधु, मेरे साथी, मेरे प्रियतम!..." और उसकी समझ में नहीं आता था कि यह उसका हृदय है अथवा उसका अपना जो उसके सीने में इतनी मिठास के साथ धड़क रहा है और घुला जा रहा है।

वह स्थिर खड़ा था। उसने इस युवती को, जिसने उसे अपना जीवन अर्पित कर दिया था, अपनी सबल बांहों में बांध रखा था। और अपने सीने से टिके इस नये, अत्यंत प्रिय भार का वह सुखद अनुभव कर रहा था। कोमल स्नेह की भावना, अकथनीय आभार की भावना ने उसके वज्रसम संकल्प को चूर-चूर कर दिया और उसके लिए अभी तक सर्वथा अपरिचित आंसू उसकी आंखों में डबडबाने लगे।

परंतु वह नहीं रोयी। वह तो बारम्बार बस यही कह रही थी, "ओ मेरे साथी, ओ मेरे बंधु!"

"तो तुम मेरे साथ कहीं भी जाने को तैयार हो?" कोई पन्द्रह मिनट बाद उसने कहा। पहले की तरह अभी भी वह उसे अपनी बांहों में लिए हुए था।

"कहीं भी, धरती के छोर तक! जहां तुम होगे, वहीं मैं भी होऊंगी।"



"तुम अपने को धोखा तो नहीं दे रहीं? तुम जानती हो कि तुम्हारे माता-पिता हमारी शादी के लिए कभी राज़ी नहीं होंगे?"

"मैं अपने को धोखा नहीं दे रही। मैं यह जानती हूं।"

"तुम्हें मालूम है कि मैं ग़रीब हूं, लगभग कंगाल?"

"मालूम है।"

"यह भी जानती हो कि मैं रूसी नहीं हूं, मैं रूस में रहूंगा नहीं और तुम्हें अपने देश से, अपने सगे-सम्बंधियों से सभी नाते तोड़ने पड़ेंगे?"

"जानती हूं, जानती हूं।"

"तुम यह भी जानती हो कि मेरा जीवन दुष्कर ध्येय को समर्पित है जिसमें देना ही देना है, लेना कुछ नहीं और मुझे... हमें ख़तरों का सामना करना पड़ेगा, तंगी का मुंह देखना पड़ेगा और हो सकता है अपमान भी सहना पड़े!"

"जानती हूं, मैं सब जानती हूं।... मैं तुम्हें प्यार करती हूं।"

"यह भी जानती हो कि वहां तुम्हें अपनी तमाम आदतें छोड़ देनी पड़ेंगी, वहां पराये लोगों के बीच तुम अकेली होगी और तुम्हें काम भी करना पड़ सकता है..."

उसके होंठों पर उसने अपना हाथ रख दिया।

"मेरे प्राण, मैं तो तुम्हें प्यार करती हूं।"

आतुरता से वह उसके कोमल गुलाबी हाथ को चूमने लगा। येलेना ने अपना हाथ नहीं खींचा और बच्चे जैसी, ख़ुशी, आह्लाद-कारी कौतूहल के साथ उसे उंगलियों और हथेली को चुम्बनों से भरते देखती रही।...

यकायक उसका चेहरा लाल हो गया और उसने उसे उसके सीने में छुपा लिया।

बड़े स्नेह से उसने उसका मुंह उठाया और आंखों में झांकने लगा।

फिर उसने कहा:

"अहोभाग्य! समाज और भगवान के आगे अब तुम मेरी पत्नी हो!"

१६

घंटे भर बाद येलेना एक हाथ में टोपी और दूसरे हाथ में कोटी लिए आहिस्ते से बैठकखाने में दाखिल हुई। उसके बाल कुछ-कुछ विशृंखल थे, हर गाल पर हल्का-सा गुलाबीपन देखा जा सकता था, मुस्कराहट उसके होंठों को छोड़ना नहीं चाहती थी और उसकी आंखें मुंद रही थीं, परंतु अधमुंदी आंखें भी मानो मुस्करा रही थीं। थकान के कारण वह मुश्किल से चल पा रही थी, परंतु इस थकान में भी वह मगन थी – सच तो यह है कि हर बात में उसे आनंद मिल रहा था। सब कुछ उसे सुंदर और स्नेहपूर्ण जान पड़ता था। उवार इवानोविच खिड़की के पास बैठे थे। वह उनके निकट गयी, हाथ उनके कंधे पर रखा, कुछ तनी और अनायास ही खिलखिला पड़ी।

"क्या बात है?" उन्होंने आश्चर्य से पूछा।

उसकी समझ में नहीं आया, क्या कहे। वह उवार इवानोविच को चूमना चाहती थी।

"चारों खाने चित्त..." आखिर उसने कहा।

मगर उवार इवानोविच की भौं तक नहीं हिली और वह ताज्जुब से येलेना को देखते रहे। उसने अपनी कोटी और टोपी उनके ऊपर डाल दी।

"प्रिय उवार इवानोविच," वह बोली। "मैं सोना चाहती हूं। बहुत थक गयी हूं।" वह फिर से मुस्करायी और उनके बराबर में आरामकुर्सी पर पसर गयी।

"हूं!" उवार इवानोविच के मुंह से निकला और वह उंगलियां नचाने लगे। "हां... ठीक है..."

येलेना ने अपने इर्द-गिर्द देखा और सोचने लगी, "जल्दी ही मैं इस सबसे नाता तोड़ लूंगी... लेकिन अजीब बात है – मेरे मन में न डर है, न दुविधा और न अफ़सोस... नहीं-नहीं, अम्मी के लिए मुझे दुख होगा!" फिर वह छोटा सा गिरजा उसकी आंखों के सामने आ गया, उसका कंठ-स्वर फिर सुनायी पड़ा और उसकी बाहें उसने अपने इर्द-गिर्द महसूस कीं। उसके हृदय की धड़कन आनंद भरी किन्तु धीमी थी क्योंकि सुख ने उसे भी शिथिल कर

दिया था। बूढ़ी भिखारिन की उसे याद हो आयी। "सचमुच वह मेरा दुख हर ले गयी," उसने सोचा। "कितनी सुखी हूं मैं हालांकि इसके योग्य नहीं! और कितनी जल्दी यह हो गया!" भावनाओं को थोड़ी ही छूट देने का सवाल था और उसके नेत्रों से सुखद आंसुओं की झड़ी लग जाती। हंस-हंसकर वह उन्हें रोक रही थी। कोई भी पहलू वह क्यों न बदले, उसे लगता था कि इससे बेहतर और आरामदेह दूसरा हो नहीं सकता। मानो लोरी गाकर उसे सुलाया जा रहा था। उसकी सभी चेष्टाएं धीमी और कोमल थीं। कहां चला गया था उसका उतावलापन, उसका अटपटापन? ज़ोया ने प्रवेश किया तो येलेना को जान पड़ा कि इससे प्यारा चेहरा उसने कभी देखा नहीं। फिर आन्ना वसील्येव्ना आयीं और येलेना को अजब पीड़ा हुई। अपनी अच्छी मां को उसने बड़ी कोमलता से गले लगाया और कुछ-कुछ सफ़ेद हो चले बालों के पास उनके माथे को चूमा। फिर वह अपने कमरे में चली गयी। वहां हर चीज़ मानो उसे देखकर खुश हो रही थी! लज्जा भरे हुलास और विनम्रता की भावना के साथ वह अपने पलंग पर बैठी – उसी पलंग पर जहां तीन घंटे पहले असह्य वेदना की घड़ियां काटी थीं! "यों तो मुझे उस समय ही मालूम था कि वह मुझे प्यार करते हैं," उसने सोचा, "और उससे पहले भी... ओह! नहीं, नहीं! ऐसा सोचना पाप है।" "तुम मेरी पत्नी हो..." वह फुसफुसायी और हाथों से मुंह ढंककर घुटनों पर गिर गयी।

शाम होने को आयी तो उसे चिंता ने आ घेरा। यह सोचकर उसका दिल भारी हो गया कि वह इनसारोव को जल्दी न देख पायेगी। संदेह जगाये बिना वह बेरसेनेव के यहां नहीं ठहर सकता था, इसलिए उसने और येलेना ने तै किया कि वह मास्को लौट जायेगा और गर्मियां ख़तम होने तक उनके यहां एक-दो बार आयेगा। अपनी तरफ़ से येलेना ने उसे ख़त लिखने का वायदा किया और कहा कि संभव हुआ तो बता देगी कि कुन्त्सोवो के पास वे कहां मिल सकते हैं। चाय के समय वह बैठक में गयी और देखा कि घर के सभी लोग और शूबिन भी वहां मौजूद हैं। येलेना के प्रवेश करते ही उसने घूरकर उसे देखा। वह पहले की तरह मैत्री-भाव से उसके साथ बात करना चाहती थी, मगर शूबिन की पैनी दृष्टि से उसे

डर लगा और अपना भी उसे भरोसा नहीं था। उसका अंदाज़ था कि ज़रूर किसी वजह से उसने दो हफ़्ते से ज़्यादा उसे परेशान नहीं किया। कुछ समय बाद बेरसेनेव आ गया। उसने आन्ना वसील्येव्ना को इनसारोव का अभिवादन दिया और कहा कि उनके यहां आकर सम्मान प्रदर्शित किये बिना वह मास्को लौट गया, इसके लिए क्षमा मांगी है। दिन के दौरान इनसारोव का नाम पहली बार येलेना के सामने लिया गया। उसे लगा कि उसका चेहरा लाल हो उठा है। और उसी समय उसे ख़्याल आया कि इतने अच्छे दोस्त के इस तरह अचानक चले जाने पर उसे खेद प्रगट करना चाहिए, लेकिन दिखावा करना उसके बस में नहीं था, इसलिए चुपचाप अचल बैठी रही। उधर आन्ना वसील्येव्ना ने आह भरी और दुख व्यक्त किया। येलेना ने बेरसेनेव के निकट रहने की कोशिश की। उससे उसे डर नहीं था हालांकि उसके रहस्य का एक अंश उसको मालूम था। उसकी शरण में वह शूबिन से रक्षा पा रही थी, जो उसे बराबर ताके जा रहा था। वह उसे उपहास भरी दृष्टि से नहीं, बल्कि ध्यानपूर्वक देख रहा था। शाम के दौरान बेरसेनेव को भी ताज्जुब हुआ। येलेना को कहीं ज़्यादा ग़मगीन देखने की उसे आशंका थी। येलेना के सौभाग्य से बेरसेनेव और शूबिन के बीच कला को लेकर बहस होने लगी। वह हट गयी। उनकी आवाज़ें उसके कानों में सपने की तरह आ रही थीं। धीरे-धीरे न केवल वे, बल्कि सारा कमरा, उसके इर्द-गिर्द जो कुछ था, सब उसे सपने जैसा जान पड़ने लगा। मेज़ पर रखा समोवार, उवार इवानोविच की छोटी वास्कट, ज़ोया के रंगे हुए नाखून, दीवार पर टंगा ग्रांड ड्यूक कोंस्तांतिन पाव्लोविच का तैल-चित्र – सब कुछ। सभी चीज़ें धुंध में छिप गयीं और उनका अस्तित्व नहीं रहा। परंतु उसे सबके लिए खेद था। सोचने लगी, "आख़िर वे जीवित किसलिए हैं?"

"येलेना, नींद आ रही है?" उसकी मां ने पूछा।

सवाल उसने नहीं सुना।

"तुम कहते हो, इशारे में आधी सचाई है?..." ये शब्द शूबिन ने कुछ तीव्र स्वर में कहे जिससे येलेना यकायक चैतन्य हो गयी। "मगर मेरे भाई, मज़ा भी इसी में है!" उसने बात जारी रखी। "सच्चा इशारा आदमी को पस्त कर देता है जो ईसाई धर्म

के प्रतिकूल है। झूठे इशारे की व्यक्ति चिंता नहीं करता – वह बेकार है। यह आधा सच्चा इशारा ही है जिससे आदमी को खीज होती है और वह अधीर हो जाता है। उदाहरण के लिए अगर मैं कहूं कि येलेना निकोलायेव्ना हममें से एक को चाहती हैं तो यह कैसा इशारा होगा? ऐं?"

"ओह, मिस्टर पॉल," येलेना बोली, "अपनी खीज दिखाने की मेरी तबियत तो है, पर दिखा नहीं सकती। मैं बहुत थकी हूं।"

"जाकर लेट क्यों नहीं जाती?" आन्ना वसील्येव्ना ने कहा। वह खुद शाम को हमेशा ऊंघने लगती थीं और इसलिए दूसरे को सोने के लिए भेजकर उन्हें बड़ी खुशी होती थी। "मुझे गुड नाइट कहो और जाओ। अंद्रेय पेत्रोविच बुरा नहीं मानेंगे।"

येलेना ने मां का चुम्बन लिया, सरसरे ढंग से सबके आगे झुकी और चल दी। शूबिन ने उसे दरवाज़े तक पहुंचाया।

"येलेना निकोलायेव्ना," दहलीज़ पर उसने दबे स्वर में कहा, "आप मिस्टर पॉल को रौंदती हैं, बेरहमी से पैरों तले कुचलती हैं लेकिन मिस्टर पॉल आपकी पूजा करता है। वह आपके छोटे-छोटे पैरों, आपके छोटे पैरों की जूतियों और आपकी जूतियों के तलों की पूजा करता है।"

येलेना ने कंधे बिचकाये और आधे मन से उसकी तरफ़ हाथ बढ़ा दिया – परंतु वह हाथ नहीं जो इनसारोव ने चूमा था। अपने कमरे में लौटकर उसने फ़ौरन कपड़े बदले, बिस्तर पर लेटी और सो गयी। यह गहरी, उद्वेग-मुक्त नींद थी।... बच्चे भी इस तरह नहीं सोते। इस तरह सिर्फ़ बीमारी के बाद ठीक हो रहा बालक ही सोता है जब उसकी मां पालने के पास बैठी हुई उसे देख रही हो, उसे सांस लेते सुन रही हो।

२०

"एक मिनट के लिए मेरे कमरे में आओ," शूबिन ने बेरसेनेव से कहा जो आन्ना वसील्येव्ना से विदा ले चुका था, "मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूं।"

बेरसेनेव मकान के उस बाजू में गया जहां शूबिन रहता था। गीले लत्तों में लिपटी आकृतियां, मूर्तियां और वक्ष-मूर्तियां इतनी

अधिक थीं कि वह आश्चर्यचकित रह गया। कमरे के हर कोने में वे रखी थीं।

"देखता हूं तुम वाक़ई मन लगाकर काम करते हो," उसने शूबिन से कहा।

"कुछ-न-कुछ करना चाहिए," उसने जवाब दिया। "एक में फेल होते हो, तो दूसरे काम में हाथ लगाना चाहिए। बहरहाल, एक कौर्सिकावासी की तरह मैं शुद्ध कला के बजाय बदले की फ़िक्र करता हूं। विजांतीन* थर-थर कांपो!"

"समझा नहीं," बेरसेनेव ने कहा।

"ज़रा ठहरो! मेरे अच्छे दोस्त और मेहरबान, बदला नम्बर एक पर नज़र डालो।"

शूबिन ने एक मूर्ति का कपड़ा हटाया और बेरसेनेव ने देखा कि वह इनसारोव से बेहद मिलती, उसकी लाजवाब वक्ष-मूर्ति है। चेहरे की आकृति बनाते हुए शूबिन ने हर रेखा, हर बारीकी को ठीक-ठीक पकड़ा था और भाव भी श्रेष्ठ था – निष्कपट, नेक और साहस भरा।

बेरसेनेव ने दांतों तले उंगली दबा ली।

"जितनी तारीफ़ की जाये, थोड़ी होगी!" उसने कहा। "मेरी बधाई लो। प्रदर्शनी के लायक़ है! इतनी सुंदर कलाकृति को तुम बदले का नाम क्यों देते हो?"

"इसलिए, श्रीमान जी, कि जिसे आपने मेहरबानी करके सुंदर कलाकृति बताया है, वह मैं येलेना निकोलायेव्ना के जन्म-दिन पर उन्हें देने का इरादा रखता हूं। आशय आपकी समझ में आया? हम अंधे नहीं हैं, हमारे आसपास जो कुछ हो रहा है, हम देखते हैं। मगर, जनाब, हम शरीफ़ आदमी हैं और अपना बदला हम शरीफ़ाने तरीक़े से लेते हैं।"

"और यह देखो," शूबिन ने एक और मूर्ति से कपड़ा हटाते हुए कहा। "चूंकि आधुनिक सौंदर्यशास्त्र एक कलाकार को घिनौनी से घिनौनी बातों का पिटारा बनने का ईर्ष्यायोग्य अधिकार देता है और वह उन्हें रचना जगत के रत्नों के स्तर पर उठा सकता है,

---

* पूर्वी रोम साम्राज्य जिस पर बार-बार हमले किये गये और जिसे तुर्कों ने १५वीं शताब्दी में तहस-नहस कर डाला।

इसलिए यह रत्न प्रस्तुत करते हुए, जो नम्बर दो है, हमने अपना बदला एक शरीफ़ की तरह नहीं, एक बदमाश की तरह लिया है।"

उसने होशियारी से कपड़ा हटाया और इनसारोव की ही एक और मूर्ति बेरसेनेव की आंखों के सामने खुल गयी, जो दांतिन की शैली में बनायी गयी थी। द्वेषपूर्ण किंतु चतुराई भरी कल्पना की यह मानो पराकाष्ठा थी। नौजवान बलगार को एक मेढ़े के रूप में पेश किया गया था जो अपने पिछले पैरों पर खड़ा था और सिर सींग मारने के लिए झुकाए था। "बढ़िया भेड़ों के पति" के अंग-अंग पर थोथी अकड़, पगले जोश, अक्खड़पन, अटपटेपन और तंगदिली की ऐसी छाप थी और साथ ही सदृशता इतनी आश्चर्यजनक और निर्विवाद थी कि बेरसेनेव बरबस अट्टहास कर उठा।

"क्यों, है न दिलचस्प?" शूबिन ने कहा। "हीरो को पहचान लिया? क्या इसे भी प्रदर्शनी में भेजने की सलाह देते हो? भैय्या मेरे, इसे तो मैं अपने जन्म-दिन पर खुद को ही भेंट करूंगा!... माननीय महोदय, इजाज़त दो तो मैं कुछ उछल-कूद लूं?"

शूबिन तीन बार कूदा और साथ ही घुटने मोड़कर एड़ियों से पीछे चोट की।

बेरसेनेव ने फ़र्श से कपड़ा उठाकर मूर्ति के ऊपर डाल दिया।

"वाह रे दयानिधान!" शूबिन ने कहा। "अच्छा, इतिहास में दया-करुणा का सबसे बड़ा अवतार किसे माना जाता है? खैर छोड़ो! अब तुम जो चीज़ देखोगे," उसने गंभीर भाव से, उदासी के साथ मिट्टी का तीसरा, काफ़ी बड़ा पिंड अनावृत करते हुए कहा, "वह तुम्हें तुम्हारे दोस्त की विनम्रता और सूक्ष्म दृष्टि का विश्वास दिला देगी। तुम देखोगें कि वह – फिर से एक सच्चे कलाकार के नाते – समझता है कि स्वयं को धिक्कारना कितना आवश्यक और लाभकारी होता है। तो देखो!"

पर्दा हटा और बेरसेनेव ने पास-पास रखे, एक-दूसरे से इस तरह लगे दो सिर देखे मानो वे एक साथ बढ़े हों।... फ़ौरन वह समझ नहीं पाया कि मामला क्या है, लेकिन ध्यान से देखने पर उसने पहचान लिया कि उनमें से एक चेहरा आन्नुश्का का है और दूसरा स्वयं शूबिन का। यों उन्हें मूर्तियों के बजाय विरूप-मूर्तियां कहना ही ज्यादा सही होता। आन्नुश्का को छोटे माथे, फूली आंखों



और उठी नाकवाली मांसल छबीली बनाया गया था। उसके मोटे होंठ ढिठाई से मुस्करा रहे थे। पूरे चेहरे पर इंद्रिय-सुख, बेफ़िक्री और हिम्मत की झलक थी परंतु मन में मैल नहीं था। ख़ुद अपने को शूबिन ने दुबले-पतले, बदहवास विषय-भोगी का रूप दिया था जिसके गाल पिचके थे, गीले बाल बेजान लटके थे, बुझी हुई आंखों की दृष्टि खोयी-खोयी थी और नाक लाश जैसी नुकीली दिखती थी।

अरुचि से बेरसेनेव ने मुंह फेर लिया।

"क्यों भाई, जोड़ा कैसा है?" शूबिन ने पूछा। "क्या तुम इसका कोई उपयुक्त शीर्षक सोच सकते हो? पहली दो मूर्तियों के शीर्षक मैंने तय कर लिये हैं। वक्ष-मूर्ति के ऊपर लिखा जायेगा: 'वतन को बचाने पर आमादा हीरो'। और दूसरी मूर्ति के ऊपर: 'क़साइयो, ख़बरदार!' और इसके ऊपर–तुम्हारा क्या ख़्याल है?... 'कलाकार पावेल शूबिन का भविष्य'... क्यों, कैसा रहेगा?"

"चुप रहो," बेरसेनेव ने प्रतिवाद किया। "अपना वक़्त तुमने बरबाद किया इस पर..." उपयुक्त शब्द फ़ौरन उसके दिमाग़ में नहीं आया।

"तुम कहना चाहते हो: गंदगी? नहीं भाई। माफ़ करना, लेकिन अगर कोई चीज़ प्रदर्शनी में जा सकती है तो वह यही जोड़ी है।"

"हां, गंदगी," बेरसेनेव ने कहा। "और यह सारा तमाशा क्या है? ऐसे विकास के लिए तुम्हारे अंदर रुझान ही नहीं है जो बदक़िस्मती से हमारे कलाकारों में अभी तक भरा पड़ा है। तुमने सिर्फ़ अपने को कोसा है।"

"तुम्हारा यह ख़्याल है?" विषाद के साथ शूबिन ने कहा। "अगर मेरे अंदर रुझान नहीं है और अगर वह पैदा हो गया, तो इसके लिए ज़िम्मेदार होगा केवल... एक व्यक्ति। तुम जानते हो," उसने दुख के साथ भौंहों में गांठें डालते हुए कहा, "मैंने शराब पीने की कोशिश की है?"

"झूठ बोलते हो!"

"ख़ुदा क़सम, कोशिश की है," शूबिन ने जवाब दिया और यकायक खीसें निकाल दीं। उसके चेहरे पर चमक आयी और वह बोला, "कुछ मज़ा नहीं आया। गले के नीचे नहीं उतरती और

फिर खोपड़ी में ढोलक बजने लगती है। महान लुशीखिन ने–मेरा मतलब है खरलाम्पी लुशीखिन ने–जो शराब गटकने के मामले में मास्को के और कुछ लोगों के विचार में सारे रूस के सबसे बड़े ड्रम हैं, ऐलान कर दिया है कि मैं किसी गिनती में नहीं हूं। उसके शब्दों में बोतल मेरे लिए नहीं बनी।"

बेरसेनेव जोड़े पर घूंसा मारनेवाला था कि शूबिन ने उसे रोक लिया।

"नहीं, भाई, ऐसा मत करो। यह मेरे लिए चेतावनी का, हौवे का काम दे सकता है।"

बेरसेनेव हंस पड़ा।

"तो मैं तुम्हारे हौवे की जान बख़्शता हूं," उसने कहा, "और अमर कला, शुद्ध कला की जय हो!"

"जय हो!" शूबिन भी बोल उठा। "कला हो तो अच्छा ज़्यादा अच्छा हो जाता है और बुरे से कोई नुक़सान नहीं!"

दोस्तों ने खुशी-खुशी हाथ मिलाये और जुदा हो गये।

२१

नींद खुलने पर येलेना को पहली अनुभूति आनंद भरे भय की हुई। "क्या सचमुच? सचमुच?" उसने अपने से पूछा और सुख के कारण उसका हृदय स्तब्ध हो गया। यादों की लहरें उठीं... और वह उनमें डूबने-उतराने लगी। फिर परम आनंद और हर्ष की शांति उस पर हो गयी। लेकिन सुबह के दौरान धीरे-धीरे चिंता व्यापने लगी और अगले दिनों में वह उदासीन और शिथिल हो गयी। अब वह जानती थी कि उसे क्या चाहिए, यह ठीक है, परंतु, इससे उसे चैन तो नहीं मिला। उस अविस्मरणीय मुलाक़ात ने उसे पुरानी लीक से हमेशा के लिए बाहर निकाल लिया था। अब वह लीक पर नहीं, बल्कि उससे बहुत दूर थी; फिर भी उसके आसपास सब कुछ आम गति-चाल से हो रहा था। हर बात में पहले का ढर्रा चल रहा था मानो कुछ नहीं बदला है। पहले की ज़िंदगी पहले की तरह जारी थी और पहले की ही तरह उसमें येलेना की शिरकत और सहयोग की आशा की जाती थी। वह

इनसारोव को पत्र लिखने बैठी, किन्तु सफलता नहीं मिली। काग़ज़ पर उतरे शब्द या तो निर्जीव या बनावटी जान पड़े। डायरी लिखना उसने छोड़ दिया था; आख़िरी पंक्ति के नीचे एक मोटी लाइन खींच दी थी। वह सब भूतकाल था जब उसके तमाम विचार और उसका अस्तित्व ही भविष्य की ओर उन्मुख था। उसके मन पर बोझ था। येलेना सोचती थी कि कुछ भी संदेह न करनेवाली मां के पास बैठना, उसकी बातें सुनना, सवालों के जवाब देना, उसके साथ बातें करना – यह सब एक प्रकार का अपराध है। अपने अस्तित्व में वह कोई आडंबर महसूस करती थी। उसे क्षोभ होता था हालांकि कोई ऐसी बात नहीं हुई जिस पर उसे शर्म आये। कई बार उसके मन में लगभग अदम्य इच्छा उठी कि बिना लाग-लपेट के सब कुछ बता दे, फिर बाद में जो होना होगा, देखा जायेगा। वह सोचती थी, "द्मीत्री मुझे उसी समय, उसी गिरजे से वहां क्यों नहीं ले गया जहां ले जाना चाहता था? क्या उसने मुझसे नहीं कहा था कि भगवान के आगे मैं उसकी पत्नी हूं? फिर मैं यहां क्यों हूं?" यकायक उसने सबसे, उवार इवानोविच से भी अपने को काटना शुरू कर दिया जो बहुत परेशान हुए और जिन्होंने हमेशा से ज़्यादा उंगलियां नचायीं। आसपास की सब चीज़ें अब उसे न तो आनंददायी, न प्यारी और न ही सपने जैसी जान पड़ती थीं। वे तो एक दुःस्वप्न थीं जिसका अचल, मृत भार पत्थर की तरह उसके सीने पर रखा था। सभी चीज़ें मानो उसे कोंचती थीं, उसको सहन नहीं कर पाती थीं, उसके बारे में जानना तक नहीं चाहती थीं। ...वे जैसे कहती थीं, "यों तुम हमारी ही हो!" और तो और, उसके पालतू जीव, बेचारे असहाय परिंदे तथा जानवर भी उसे अविश्वास और शत्रुता की दृष्टि से देखते थे – कम से कम उसे ऐसा लगता था। अपनी भावनाओं पर उसे शर्म आयी। "आख़िर को यह मेरा घर है," उसने सोचा, "मेरा परिवार है और यह मेरा देश है..." परंतु दूसरी आवाज़ ने दृढ़ता के साथ कहा, "नहीं, अब यह तुम्हारा देश नहीं है, तुम्हारा परिवार भी नहीं है।" उसके हृदय में डर समा गया और अपनी भीरुता से वह घबरा उठी।... मुश्किलें शुरू ही हो रही हैं और वह अभी से धैर्य खोने लगी।... क्या उसने यही वचन दिया था?

अपने पर वह जल्दी ही क़ाबू न पा सकी। एक सप्ताह बीता, फिर दूसरा। येलेना कुछ-कुछ स्थिर हुई और अपनी नई स्थिति की उसे आदत पड़ने लगी। उसने इनसारोव को दो छोटे-छोटे ख़त लिखे और ख़ुद जाकर डाकख़ाने में डाल आयी। लज्जा और अभिमान, दोनों के कारण वह नौकरानी से ऐसा करने को कभी न कहती। अब वह उसकी ही प्रतीक्षा करने लगी। ... मगर उसके स्थान पर एक दिन सुबह सवेरे आ धमके निकोलाई अर्तेम्येविच स्ताख़ोव।

२२

पेंशनयाफ़्ता लेफ़टीनेंट स्ताख़ोव के घर में किसी ने भी उन्हें कभी इतना चिड़चिड़ा और साथ ही इतने आत्मविश्वास और अहंभाव से भरा नहीं देखा था, जितने कि वह उस दिन थे। ओवरकोट पहने, टोप लगाये, लम्बे डग भरते, एड़ियों से आवाज़ करते वह धीरे-धीरे बैठकख़ाने में दाख़िल हुए। आयने के सामने पहुंचकर उन्होंने सिर हिलाते और होंठ काटते हुए कड़े, गंभीर भाव से अपने को देर तक जांचा। आन्ना वसील्येव्ना ने बाहरी उत्तेजना और गुप्त आनंद के साथ उनका स्वागत किया (हमेशा वह ऐसा ही करती थीं)। स्ताख़ोव ने टोप नहीं उतारा, उनसे सलाम-दुआ नहीं की और स्वेड के दस्ताने में छिपा अपना हाथ चुपचाप येलेना के आगे चूमने के लिए बढ़ा दिया। आन्ना वसील्येव्ना ने इलाज में प्रगति के बारे में पूछा – उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उवार इवानोविच आ गये और उनकी तरफ़ देखकर बोले, "हो!" उवार इवानोविच के साथ वह आम तौर पर रुखाई से, बड़प्पन दिखाते हुए पेश आते थे हालांकि उनमें "असली स्ताख़ोव ख़ून के कुछ लक्षण" स्वीकार करते थे। कहने की आवश्यकता नहीं कि लगभग सभी कुलीन रूसी परिवार बिरली वंशगत विशेषताओं का डंका पीटते हैं जो केवल उनमें मौजूद हैं। 'पोदसलासकिनीं' नासिकाओं और 'पेरेप्रेयेवी' ग्रीवाओं की 'प्राइवेट' बातें कई बार हमारे कानों में पड़ी हैं। ज़ोया अंदर आयी और झुककर स्ताख़ोव को अभिवादन किया। उन्होंने खखारकर गला साफ़ किया, आरामकुर्सी पर फैले, कॉफ़ी की मांग की और तब जाकर टोप उतारा। कॉफ़ी लायी गयी। एक प्याला पीने के बाद उन्होंने बारी-बारी से सबको देखा और मुंह

लगभग बंद किये बोले, "तख़लिया!" फिर पत्नी की ओर मुड़कर कहा, "मदाम, आप ठहर जाइसे!"

आन्ना वसील्येव्ना के अलावा सब चले गये। व्याकुलता से उनका सिर थरथरा रहा था। स्ताख़ोव के गंभीर अंदाज़ से वह भौंचक्की रह गयी थीं। किसी असाधारण बात का उन्हें इंतज़ार था।

"माजरा क्या है?" द्वार बंद होते ही उन्होंने पूछा।

स्ताख़ोव ने आन्ना वसील्येव्ना पर बेपरवांही की नज़र डाली।

"कोई ख़ास बात नहीं! फ़ौरन ऐसी शक्ल बना लेने का आपका तरीक़ा क्या है मानो अभी गर्दन पर छुरी फेर दी जायेगी," उन्होंने बिना किसी कारण के हर शब्द के बाद होंठों के कोने गिराते हुए कहा। "मैं आपको केवल सावधान करना चाहता था कि आज हमारे यहां लंच पर एक नये मेहमान आयेंगे।"

"कौन हैं वह?"

"कुरनातोव्स्की, ईगोर अंद्रेयेविच। आप उन्हें नहीं जानतीं। सीनेट के चीफ़ सेक्रेटरी हैं।"

"वह आज लंच के लिए आ रहे हैं?"

"जी हां।"

"मुझे सिर्फ़ यही बताने के लिए आपने सब लोगों से निकल जाने को कहा?"

स्ताख़ोव ने एक बार फिर आन्ना वसील्येव्ना पर नज़र फेंकी लेकिन अब वह व्यंग भरी थी।

"आपको ताज्जुब हुआ? ज़रा ठहरिये, ताज्जुब तो अभी होगा।"

वह चुप हो गये। आन्ना वसील्येव्ना ने भी थोड़ी देर कुछ नहीं कहा। फिर वह बोली:

"मैं चाहती हूं..."

"मुझे मालूम है कि आपने मुझे हमेशा 'चरित्रहीन' व्यक्ति समझा है," स्ताख़ोव ने यकायक बात शुरू की।

"मैंने!" आन्ना वसील्येव्ना ने चकित होकर कहा।

"हो सकता है आपका विचार ठीक हो। मैं इनकार नहीं करूंगा कि कभी-कभा मेरे किसी काम की वजह से आपकी नाराज़गी वाजिब रही है। ('भूरे घोड़े!' आन्ना वसील्येव्ना को

फ़ौरन ख़्याल आया)। लेकिन आपको मानना पड़ेगा कि आपके स्वास्थ्य की जो स्थिति है..."

"परंतु निकोलाई अर्तेम्येविच, मैं आप पर कोई इलज़ाम नहीं लगा रही।"

"मुमकिन है। बहरहाल, मैं अपनी सफ़ाई नहीं देना चाहता। समय मुझे निर्दोष साबित कर देगा। मगर आपको यह आश्वासन देना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूं कि मैं अपनी ज़िम्मेदारियां समझता हूं और मेरे ज़िम्मे... मेरे ज़िम्मे परिवार के हित में... उनको पूरा करने की सामर्थ्य रखता हूं।"

"इस सबका मतलब क्या है?" आन्ना वसील्येव्ना ने सोचा। (वह कैसे जान सकती थीं कि एक दिन पहले इंगलिश क्लब के सोफ़ा रूम में रूसियों की "स्पीच" देने में नाक़ाबलियत पर बहस छिड़ गयी थी। एक ने कहा था, "हम लोगों में कौन भाषण दे सकता है? एक ही नाम बताइये!" और तब दूसरे ने "क्यों, स्ताख़ोव को ले लीजिए" कहते हुए निकोलाई अर्तेम्येविच की ओर इशारा किया था जो वहीं खड़े हुए थे और ख़ुशी से कीकते-कीकते रह गये थे)।

"मिसाल के लिए मेरी बेटी येलेना का सवाल है," स्ताख़ोव ने कहा। "क्या आप नहीं समझतीं कि समय आ गया है जब वह अपना पक्का क़दम रास्ते पर... मैं कहना चाहता हूं, शादी के रास्ते पर बढ़ाये। तमाम दिमाग़ी कसरत, परोपकार – यह सब एक हद तक, एक उम्र तक ठीक है। समय आ गया है कि वह हवाई दुनिया से नाता तोड़े, तरह-तरह के कलाकारों, विद्यार्थियों और ऐसे-वैसे दक्खिनी स्लावों के चक्कर से बाहर निकले और दूसरों जैसी ज़िंदगी बिताये।"

"आपके शब्दों का मैं क्या अर्थ निकालूं?" आन्ना वसील्येव्ना ने पूछा।

"मेहरबानी करके पूरी बात सुन लीजिए," स्ताख़ोव ने पहले की तरह होंठों के कोने गिराते हुए जवाब दिया। "सीधे शब्दों में साफ़-साफ़ मैं आपको बताना चाहता हूं: इस नौजवान, जनाब कुरनातोव्स्की का मैंने परिचय प्राप्त किया, उनसे निकट के सम्बंध स्थापित किये, क्योंकि मैं उन्हें अपना दामाद बनाने की आशा

करता हूं। मेरा निश्चित विचार है कि उनको देखने के बाद आप मुझ पर पक्षपात अथवा जल्दबाज़ी का आरोप नहीं लगायेंगी। (यह कहते हुए स्ताख़ोव अपनी वक्तृत्व-शक्ति पर स्वयं मुग्ध हो गये।) वह उच्च शिक्षाप्राप्त हैं, वकील हैं, उनका व्यवहार शिष्ट है, अवस्था तैंतीस वर्ष है, चीफ़ सेक्रेटरी हैं, काउंसलर हैं और आर्डर आफ़ सेंट स्तानिस्लाव से सम्मानित हो चुके हैं। आशा है, आप मेरे प्रति न्याय करते हुए स्वीकार करेंगी कि मैं कॉमेडियों के वैस बापों में नहीं हूं जो ओहदों के पीछे पागल रहते हैं। परंतु स्वयं आपने मुझसे कहा है कि येलेना निकोलायेव्ना को कामकाजी, कर्मनिष्ठ लोग अच्छे लगते हैं। ईगोर अंद्रेयेविच अपने क्षेत्र में अव्वल दर्जे के कर्मठ व्यक्ति हैं। अब दूसरा पहलू लें। मेरी पुत्री की प्रवृत्ति परोपकारी कार्यों की ओर है। तो मैं आपको बता दूं कि ईगोर अंद्रेयेविच ज्यों ही स्थिति में पहुंचे – मेरी बात समझीं न? – ज्यों ही वह इस स्थिति में पहुंचे कि अपने वेतन पर आराम से रह सकें, त्यों ही उन्होंने वह वार्षिक रक़म अपने भाइयों के हक़ में छोड़ दी जो पिता ने उनके लिए नियत की थी।"

"उनके पिता कौन हैं?" अन्ना वसील्येव्ना ने पूछा।

"पिता उनके? वह भी अपने ढंग के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। सर्वोच्च नैतिक गुणों के आगार – स्टोइक जैसे सच्चे वैरागी हैं। संभवतः रिटायर्ड मेजर हैं। वह काउंट बी... की तमाम जागीर के मैनेजर हैं।"

"ओह!" आन्ना वसील्येव्ना के मुंह से निकला।

"ओह? इस ओह का क्या मतलब है?" स्ताख़ोव ने फ़ौरन टोका। "आप भी कहीं संस्कारों की क़ैदी तो नहीं हैं?"

"मैंने कुछ नहीं कहा," आन्ना वसील्येव्ना बोलीं।

"नहीं, आपने कहा: ओह!... बहरहाल, अपने इरादे से आपको पहले से आगाह कर देना मैंने ठीक समझा। मेरा ख़्याल है... मैं उम्मीद करता हूं कि जनाब कुरनातोव्स्की का दिल खोलकर स्वागत किया जायेगा। वह कोई मामूली दक्खिनी स्लाव नहीं हैं।"

"ठीक है। सिर्फ़ बावर्ची, वानका को बुलाकर कह देना होगा कि साथ में कोई और चीज़ पका ले।"

"आप समझ सकती हैं कि मैं इसमें दख़ल नहीं देता," कहकर

स्ताख़ोव उठ खड़े हुए, टोप लगाया और सीटी बजाते हुए बग़ीचे में घूमने निकल गये (उन्होंने किसी के मुंह से सुना था कि सीटी या तो शहर के बाहर अपने बंगले में बजायी जा सकती है या फिर घुड़सवारी के क्षेत्र में)। शूबिन ने अपने कमरे की खिड़की से उन्हें झांककर देखा और चुपचाप ज़बान निकाल दी।

चार बजने में दस मिनट पर एक बग्घी ने स्ताख़ोव परिवार के बंगले में प्रवेश किया और देखने में आकर्षक, क़ायदे की पोशाक पहने, अभी भी युवा एक महोदय उसके बाहर निकले। उन्होंने अपने आने की सूचना देने को कहा। वह ईगोर अंद्रेयेविच कुरनातोव्स्की थे।

...अगले दिन येलेना ने इनसारोव को ख़त लिखा। उसका एक अंश यह है:

"प्रिय द्मीत्री, मंगेतर मिल जाने पर तुम मुझे बधाई दे सकते हो। कल उसने हमारे साथ लंच लिया। पिता जी का उससे परिचय शायद इंगलिश क्लब में हुआ था और उन्होंने उसे आमंत्रित किया था। ज़ाहिर है, कल वह मंगेतर की तरह नहीं आया। मगर मेरी नेक मां ने, जिन्हें पिता जी अपनी उम्मीद बता चुके हैं, चुपके से मेरे कान में कहा कि यह मेहमान कौन है। नाम है ईगोर अंद्रेयेविच कुरनातोव्स्की। वह सीनेट में चीफ़ सेक्रेटरी का काम करता है। पहले मैं तुम्हें उसका रूप बता दूं। क़द औसत है – तुमसे छोटा। बदन सुडौल है, चेहरा-मोहरा ठीक है। महीन कटे बाल और बड़े-बड़े गलमुच्छे हैं। आंखें छोटी हैं (तुम्हारी तरह)। वे चपल हैं, रंग कत्थई है। होंठ बड़े और मोटे हैं। आंखों में और होंठों पर मुस्कान बराबर बनी रहती है। औपचारिक सी लगती है, मानो ड्यूटी बजा रही हो। व्यवहार सहज है और बोलने का सलीक़ा है। उसकी हर बात सलीक़ेदार है। चलना, हंसना, खाना – सब कुछ काम की तरह करता है। इस क्षण शायद तुम सोचोगे, 'कितनी बारीकी से जांचा है!' हां, जांचा है ताकि तुम्हारे आगे वर्णन कर सकूं। और फिर अपने मंगेतर को जांचूंगी क्यों नहीं! उसमें लोहे जैसा कुछ है... मगर साथ ही कुंद और पोला भी है। ईमानदारी है; कहते हैं वह बहुत ईमानदार है। तुम्हारे भीतर भी लौह

है, परंतु वह कुछ और है। खाने के समय वह मेरे पास बैठा था और सामने था शूबिन। शुरू में किसी कारोबार की बात चली। सुना है उसे इन धंधों की बड़ी जानकारी है और एक बड़ी फ़ैक्टरी हाथ में लेने की खातिर सरकारी नौकरी को लात मारनेवाला था। क्यों नहीं मारी, मैं समझ नहीं पायी। फिर शूबिन ने थियेटर की चर्चा छेड़ दी। जनाब कुरनातोव्स्की ने ऐलान किया – और मेरे ख्याल में झूठी विनम्रता के बिना – कि उन्हें कला का क-ख-ग भी नहीं आता। इससे मुझे तुम्हारी याद आ गयी... किन्तु मैंने सोचा कि अगर द्मीत्री और मैं कला के मामले में अज्ञानी हैं तो वह बात दूसरी है। यह आदमी मानो कहना चाहता था, 'मैं कला को नहीं समझता, उसकी आवश्यकता ही नहीं है यद्यपि सुव्यवस्थित राज्य में उसको सहन किया जाता है। यों पीटर्सबर्ग और हाई सोसायटी के नज़रिये को वह खास अहमियत नहीं देता। एक बार तो उसने अपने को सर्वहारा भी बताया। उसने कहा हम मेहनत-मजूरी करनेवाले लोग हैं! मैंने सोचा: अगर द्मीत्री ने यह कहा होता तो मुझे अच्छा न लगता, पर यह कहे, जो इसका जी चाहे, बने अपने मुंह मियां-मिट्ठू! – मुझे क्या! मेरे साथ उसने बड़ी शिष्टता का व्यवहार किया फिर भी मुझे बराबर जान पड़ा कि कोई अधिकारी बेहद मेहरबानी करके मुझसे बातें कर रहा है। अगर वह किसी की प्रशंसा करना चाहता है तो कहता है कि उसके नियम हैं – यह उसका तकिया-कलाम है। उसे आत्म-विश्वासी, कर्मठ और बलिदान देने में समर्थ होना चाहिए (देख लो, मैं निष्पक्ष हूं), मतलब यह कि वह अपने लाभ को तिलांजलि दे सकता है। मगर है बड़ा ज़ालिम। उसके चंगुल में फंसने पर खैर नहीं! खाना खाते-खाते रिश्वत की बात चल पड़ी...

"'मैं समझता हूं,' उसने कहा, 'बहुत से मामलों में रिश्वत लेनेवाला गुनहगार नहीं होता। उसके लिए कोई दूसरा चारा ही नहीं। फिर भी अगर वह पकड़ा जाये तो उसे कुचल देना चाहिए।'

"मेरी चीख निकल गयी।

"'निर्दोष को कुचल दिया जाये!'

"'जी हां। सिद्धांत की खातिर!'

"'कौन सा सिद्धांत?' शूबिन ने पूछा।

"कुरनातोव्स्की या तो उलझन में फंस गया या फिर उसे ताज्जुब हुआ। बोला:

"'समझाने की कोई ज़रूरत नहीं है।'

"पिता जी, जो शायद उसका बड़ा सम्मान करते हैं, सहमत हो गये कि कोई ज़रूरत नहीं है और बात ख़तम हो गयी जिसका मुझे अफ़सोस हुआ। शाम को बेरसेनेव आये और उनके साथ ज़बरदस्त वाद-विवाद होने लगा। सहृदय अंद्रेय पेत्रोविच को इतना उत्तेजित मैंने कभी नहीं देखा। जनाब कुरनातोव्स्की ने विज्ञान, यूनीवर्सिटी वग़ैरा के फ़ायदे से आम तौर पर इनकार तो नहीं किया, पर मैं समझ गयी कि अंद्रेय पेत्रोविच को ग़ुस्सा क्यों आया। वह आदमी इस सबको एक तरह की कसरतबाज़ी मानता है। लंच के बाद शूबिन मेरे पास आकर बोला, 'यह व्यक्ति और वह दूसरा व्यक्ति (उसे तुम्हारा नाम लेना तक गवारा नहीं है) – दोनों ही क्रियाशील आदमी हैं, लेकिन देखिए: दो में कितना अंतर है। उसका आदर्श सच्चा, जीवित और जीवन द्वारा ही प्रस्तुत किया गया है जबकि यहां कर्त्तव्य की भावना तक दिखायी नहीं देती। है केवल अधिकारी की ईमानदारी और साररहित कार्यक्षमता।' शूबिन चतुर है और तुम्हें बताने के लिए मैंने उसके शब्दों को याद कर लिया। वाक़ई, मेरी समझ में तुम दोनों में कोई समानता नहीं है। तुम्हारा एक विश्वास है, उसका नहीं है। केवल अपने में विश्वास करने का कोई अर्थ नहीं हो सकता।

"जब वह गया, काफ़ी देर हो चुकी थी, मगर मां ने मौक़ा पाकर मुझे बता दिया कि उसने मुझे पसंद किया है और पिता जी की ख़ुशी का ठिकाना नहीं।... कहीं उसने मेरे बारे में यह तो नहीं कहा कि मेरे भी नियम हैं? मैं मां से कहते-कहते रुक गयी कि मुझे क्षमा करो, मुझे पति मिल गया है। पिता जी, न जाने क्यों तुमसे बिगड़े रहते हैं! मां को तो किसी न किसी तरह से...

"मेरे प्रियतम! तुम्हें मैंने इन जनाब के बारे में इतने विस्तार से लिखा ताकि अपनी चिंता भूल जाऊं। तुम्हारे बिना मेरी कोई ज़िंदगी नहीं है, मैं हरदम तुम्हें देखती और सुनती रहती हूं।... मुझे तुम्हारा इंतज़ार है, लेकिन हमारे यहां नहीं जैसी तुम्हारी तबियत थी। सोचो तो, हमारे लिए कितना कठिन और कष्टदायी

होगा! वहां – उस कुंज में मिलेंगे जिसके बारे में मैंने तुम्हें लिखा था।... ओह मेरे सर्वस्व! मैं तुम्हें तन-मन से प्यार करती हूं!"

२३

कुरनातोव्स्की के प्रथम आगमन के कोई तीन सप्ताह बाद आन्ना वसील्येव्ना मास्को लौट आयी जिससे येलेना को बड़ी प्रसन्नता हुई। प्रेचिस्तेंका मार्ग* के पास उनकी लकड़ी की स्तम्भवाली बड़ी हवेली है, हर खिड़की के ऊपर श्वेत लीर वाद्य-यंत्रों और पुष्पमालाओं की सजावट है और ऊपर अटारी है। बाहर की कोठरियों, आगे के बग़ीचे, विशाल हरे-भरे अहाते के अलावा अहाते में कुआं और कुएं के बराबर में कुत्ताघर भी है। आन्ना वसील्येव्ना बंगले से इतनी जल्दी कभी वापस नहीं आयी थी परंतु इस वर्ष शरद काल की पहली ठंड शुरू होते ही मसूड़े दुखने से उनके गाल में सूजन आ गयी। उधर स्ताख़ोव को, इलाज पूरा हो जाने पर पत्नी की हुड़क उठी थी – और फिर अव्गुस्तीना ख़्रिस्तिआनोव्ना भी अपनी चचेरी बहिन से मिलने रेवेल चली गयी थी। एक विदेशी परिवार मास्को आया हुआ था और तरह-तरह के **लचीले पोज़** दिखा रहा था जिनका 'मोस्कोव्स्की वेदोमोस्ती' अख़बार में वर्णन पढ़कर आन्ना वसील्येव्ना का कौतूहल अत्यंत जागृत हो गया था। संक्षेप में, बंगले में और ज़्यादा रहना न केवल असुविधाजनक था बल्कि स्ताख़ोव के शब्दों में, उनकी "योजनाओं" पर अमल के अनुकूल भी नहीं था। पिछला पखवारा येलेना के लिए बहुत लम्बा खिंचा था। कुरनातोव्स्की दो बार आये ; अन्य दिनों में व्यस्त रहने के कारण वह रविवारों को आये। आये तो वह येलेना से मिलने, परंतु बातें अधिकतर ज़ोया से कीं जिसे वह बहुत अच्छे लगे थे। उनके सांवले, मर्दाने चेहरे को देखते हुए आत्म-विश्वास और अनुग्रह से भरी उनकी बातें सुनते हुए उसने अपने मन में सोचा, "हां, यह है आदमी!" उसके विचार में ऐसा अद्भुत कंठ-स्वर किसी और का नहीं था और कोई भी उनकी तरह लाजवाब ढंग से नहीं

---

* आजकल नाम है क्रोपोतकिंस्काया मार्ग।

कह सकता था, "यह मेरा सौभाग्य है" अथवा "मुझे पूर्ण संतोष हुआ"। इनसारोव स्ताख़ोव परिवार के यहां नहीं आया लेकिन येलेना एक बार छिपकर उससे मास्को नदी के किनारे कुंज में मिली। मुलाक़ात उसी ने तय की थी। वे मुश्किल से दो-चार बातें कर पाये। शूबिन आन्ना वसील्येव्ना के साथ ही मास्को लौट आया। बेरसेनेव कुछ बाद में पहुंचा।

इनसारोव अपने कमरे में बैठा था। मौक़े से मिल गये आदमी द्वारा बलगारिया से लाये गये ख़त वह तीसरी बार पढ़ रहा था – डाक से उन्हें भेजने में अंदेशा था। ख़तों ने उसे बेहद बेचैन कर दिया था। पूरब में घटनाएं तेज़ी से घट रही थीं। डैन्यूब की तटवर्ती दो रियासतों पर रूसी फ़ौज के कब्ज़े से* आम चिंता पैदा हो गयी थी। घटाएं घिर रही थीं, युद्ध निकट और अवश्यंभावी जान पड़ता था। हर तरफ़ लपटें उठ रही थीं और कोई नहीं कह सकता था कि आग कौन सा रुख़ लेगी, कहां जाकर रुकेगी। पुराने घाव हरे हो गये थे, पुरानी उम्मीदें जाग उठी थीं। इनसारोव के दिल की धुकधुकी बढ़ गयी थी, उसकी आशाएं पूरी हो रही थीं। "कहीं जल्दी तो नहीं है? कहीं सब बेकार न हो जाये?" उसने मुट्ठियां भींचत हुए सोचा, "हम अभी तैयार नहीं हैं। ख़ैर, ठीक है! मुझे जाना चाहिए।"

दरवाज़े के बाहर हल्की सरसराहट हुई, वह झट से खुला और येलेना कमरे में आ गयी।

इनसारोव का सारा शरीर झनझना उठा। तेज़ी से वह उसकी ओर बढ़ा, घुटनों के बल बैठकर उसकी कमर को बाहों में कस लिया और अपना सिर उसके जिस्म से सटा दिया।

"तुम्हें मेरे आने की उम्मीद नहीं थी?" येलेना ने लगभग हांफते हुए कहा (वह जल्दी-जल्दी ज़ीने पर चढ़ी थी)। "ओह, मेरे प्यारे, मेरे प्रियतम!" उसकी कनपटियों पर हाथ रखकर उसने दायें-बायें देखा। "तो तुम यहां रहते हो? ढूंढ़ने में मुझे देर नहीं लगी। तुम्हारे घर-मालिक की बेटी ने मुझे रास्ता दिखाया। हम परसों लौट आये... तुम्हें ख़त लिखना चाहती थी। फिर सोचा,

---

* तुर्की की मनमानी के जवाब में।

ख़ुद ही क्यों न जा पहुंचूं। मैं पन्द्रहेक मिनट के लिए आयी हूं। उठो, दरवाज़ा बंद कर लो।"

उसने उठकर फुर्ती से दरवाज़ा बंद किया और लौटकर उसके हाथों को अपने हाथों में ले लिया। वह बोल नहीं सकता था; आनंद के अतिरेक से कंठ रुद्ध हो गया था। मुस्कराते हुए येलेना ने उसकी आंखों में आंखें डालीं... वहां सुख ही सुख था।... वह शर्मा गयी।

"ज़रा ठहरो," कोमलता से अपने हाथ छुड़ाते हुए उसने कहा। "मुझे टोपी उतार लेने दो।"

फ़ीते खोलकर उसने टोपी एक तरफ़ फेंक दी, कंधों से कोटी उतारी, बालों को ठीक किया और छोटे से, ख़स्ताहाल सोफ़े पर बैठ गयी। इनसारोव हिले-डुले बिना मंत्र-मुग्ध सा उसे देख रहा था।

"बैठ जाओ," उसने आंखें उठाये बग़ैर अपने बराबर में जगह की ओर इशारा करते हुए कहा।

इनसारोव बैठ गया, किन्तु सोफ़े पर नहीं। वह फ़र्श पर उसके पैरों के पास बैठा।

"लो, मेरे दस्ताने उतार दो," वह कम्पित स्वर में बोली, उसे भय लगने लगा था।

बटन खोलकर उसने एक दस्ताना खींचा, लेकिन जब वह आधा ही खिंचा था, उसने खुल गयी सफ़ेद, पतली, कोमल कलाई पर अपने होंठ आतुरता से लगा दिये।

येलेना चौंकी, दूसरे हाथ से हौले से उसे परे ठेलना चाहा तो वह उसी हाथ को चूमने लगा। येलेना के हाथ खींचने पर उसने सिर उठाया। उसने उसके चेहरे को देखा, वह आगे झुकी और उनके होंठ मिल गये।...

एक क्षण बीता।... उसने अपने को अलग किया, उठ खड़ी हुई और फुसफुसाकर बोली, "नहीं, नहीं," फिर तेज़ी से वह लिखने की मेज़ की तरफ़ बढ़ गयी।

"मैं यहां स्वामिनी हूं और तुम्हारी कोई भी बात मुझसे गुप्त नहीं रहनी चाहिए," उसने बेफ़िक्री दिखाने की कोशिश करते हुए और उसकी तरफ़ पीठ करके कहा, "बाप रे, कितने सारे काग़ज़! ये ख़त कैसे हैं?"

इनसारोव ने भौंहें सिकोड़ लीं।

"ये ख़त?" उसने फ़र्श से उठते हुए कहा। "तुम इन्हें पढ़ सकती हो।"

येलेना ने उन्हें हाथ में उलटा-पलटा।

"ये तो बहुत हैं। लिखा छोटे-छोटे अक्षरों में है। और मुझे अब जाना चाहिए!... रहने दो! मेरी सौतिन ने तो नहीं लिखे?... अरे, ये तो रूसी भाषा में भी नहीं हैं," उसने महीन पन्ने पलटते हुए कहा।

इनसारोव ने पास आकर उसकी कमर पर हाथ रखा। येलेना ने मुड़कर उसकी तरफ़ मुंह किया, आनंद से मुस्करायी और उसके कंधे से लग गयी।

"ये ख़त बलगारिया से आये हैं, येलेना। साथियों ने लिखे हैं। वे मुझे बुला रहे हैं।"

"अभी?.. वहां?"

"हां... अभी। जब तक समय है, जब तक रास्ता खुला है।"

यकायक येलेना ने अपनी बांहें उसके गले में डाल दीं।

"मुझे अपने साथ ले जाओगे न?"

उसने उसे दिल से चिपका लिया।

"ओह मेरी प्यारी, मेरे हृदय की रानी! कितनी मिठास है तुम्हारे इन शब्दों में! मगर मुझ जैसे बेघर एकाकी के लिए तुम्हें अपने साथ घसीटना क्या पाप नहीं होगा, सरासर पागलपन नहीं होगा?... और सो भी कहां?"

उसने उसके मुंह पर हाथ रख दिया।

"श-श... वरना मैं नाराज़ हो जाऊंगी और फिर कभी तुम्हारे पास नहीं आऊंगी। हमारे बीच क्या सब कुछ तय नहीं हो गया, पक्का नहीं हो गया? क्या मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूं? क्या पत्नी अपने पति से जुदा हो जाती है?"

"पत्नियां लड़ने के लिए नहीं जातीं," उसने कुछ-कुछ विषाद भरी मुस्कान के साथ कहा।

"हां, जब वे घर में रह सकें तब, लेकिन क्या मैं यहां ठहर सकती हूं?"

"येलेना, तुम साक्षात् देवी हो। लेकिन सोचो ज़रा – मुझे

मास्को से जाना पड़ सकता है... अभी दो हफ़्ते के भीतर। अब मेरे लिए न तो लेक्चरों की ख़ातिर यूनिवर्सिटी जाने का सवाल है और न यहां का काम पूरा करने का।"

"तो क्या हुआ?" येलेना ने उसे टोक दिया। "तुम्हें जल्दी जाना चाहिए? अच्छा, चाहो तो मैं अभी, इसी समय, इसी मिनट तुम्हारे यहां ठहरी जाती हूं। हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगी, घर नहीं लौटूंगी? चाहते हो? चाहो तो हम अभी रवाना हो सकते हैं!"

इनसारोव ने उसे अपने आलिंगन में और अधिक कस लिया।

"अगर मैं ग़लत काम करता होऊं तो भगवान मुझे जो चाहे, सज़ा दे!" उसने कहा। "आज से हम हमेशा के लिए एक हो गये!"

"मैं ठहर जाऊं?" येलेना ने पूछा।

"नहीं, मेरी निर्मला! अभी नहीं, मेरी दौलत! आज तुम घर लौट जाओ, पर तैयारी कर लो। ऐसे काम चुटकी बजाते नहीं किये जा सकते। सब कुछ अच्छी तरह सोच लेना चाहिए। धन का सवाल है, पासपोर्ट ज़रूरी है।..."

"धन मेरे पास है," येलेना बीच में बोल दी। "अस्सी रूबल हैं।"

"रक़म ज़्यादा नहीं हैं," इनसारोव ने कहा, "लेकिन काम आयेंगे।"

"मैं और ले सकती हूं। क़र्ज़ ले सकती हूं, मां से मांग सकती हूं।... नहीं, उनसे नहीं मांगूंगी।... मैं अपनी घड़ी बेच सकती हूं।... मेरे पास कानों के बुंदे हैं, दो कड़े हैं... लैस भी है।"

"सवाल धन का नहीं है, येलेना। पासपोर्ट – तुम्हारे पासपोर्ट का क्या होगा?"

"हां, क्या होगा? पासपोर्ट के बिना काम नहीं चलेगा?"

"नहीं चलेगा।"

येलेना हंस पड़ी।

"अभी मुझे एक ख़्याल आया! मुझे याद है... तब मैं बच्ची थी। हमारी नौकरानी भाग गयी थी। उसे पकड़ा गया, पर माफ़ कर दिया गया। बाद में वह बरसों हमारे यहां रही।... फिर

भी उसका नाम पड़ गया था: भगोड़ी तात्याना। उस समय मैं कहां से सोचती कि मैं भी उसकी तरह भगोड़ी बन सकती हूं।"

"छि... छि, कैसी बातें करती हो!"

"क्यों? हां, पासपोर्ट लेकर जाना बेहतर होगा। लेकिन अगर न मिला..."

"यह हम बाद में देखेंगे। थोड़ा ठहरो," इनसारोव ने कहा। "ज़रा मैं सब देख-सुन लूं, सोच लूं। हम हर बात मिलकर, ठीक तरह से तय करेंगे। धन मेरे पास भी है।"

येलेना ने उसके माथे पर आये बालों को हाथ से पीछे कर दिया।

"ओह द्मीत्री, साथ-साथ सफ़र करने में कितना मज़ा आयेगा!"

"हां," इनसारोव ने कहा। "लेकिन जब हम वहां पहुंचेंगे..."

"तो क्या हुआ?" येलेना ने टोका। "साथ-साथ मरना भी क्या बढ़िया नहीं होगा? मगर नहीं, मरें क्यों? हम ज़िंदा रहेंगे, हम जवान हैं। तुम्हारी कितनी उम्र है? छब्बीस?"

"हां, छब्बीस।"

"मैं बीस की हूं... आगे ज़माना पड़ा है। और तुम मुझसे भागना चाहते थे? ओ बलगार, तुम्हें रूसी प्रेम नहीं चाहिए! मैं भी देखूं, अब मुझसे अलग कैसे होते हो? लेकिन अगर मैं उस दिन तुम्हारी तरफ़ न चल पड़ी होती तो हमारा क्या बना होता?"

"येलेना, तुम जानती हो मैं जाने को क्यों मजबूर था।"

"जानती हूं–तुमने प्यार किया और डर गये। मगर क्या तुम्हें बिल्कुल महसूस नहीं हुआ कि कोई तुम्हें भी प्यार करता है?"

"भगवान की सौगंध, येलेना, नहीं।"

उसने फुर्ती से, अचानक इनसारोव को चूम लिया।

"इसीलिए तो मैं तुम्हें प्यार करती हूं। अच्छा, तो अब विदा!"

"और नहीं रुक सकतीं?" इनसारोव ने पूछा।

"नहीं, प्रियतम! क्या तुम समझते हो, मेरे लिए अकेले निकल आना आसान था? पंद्रह मिनट कभी के बीत गये।" उसने कोटी कंधों पर डाली और टोपी लगायी।

"कल शाम तुम हमारे यहां आ जाना। नहीं-नहीं, परसों। उदासी की सीमा नहीं होगी, किन्तु क्या किया जा सकता है। कम से कम मिल तो लेंगे! तो मैं चली। अब दरवाज़ा खोल दो।" उसने आख़िरी बार उसका आलिंगन किया। "अरे... अरे, देखो, तुमने मेरी चेन तोड़ दी। अटपटे हो न, प्यारे! ख़ैर, कोई बात नहीं। बल्कि अच्छा ही हुआ। मैं कुज़नेतस्की मोस्त सड़क जाकर इसे जुड़ाई के लिए दे दूंगी। मुझसे पूछेंगे तो कह दूंगी, कुज़नेतस्की मोस्त गयी थी।" उसने दरवाज़े का हैंडिल पकड़ा। "मैं तुम्हें बताना भूल गयी: हज़रत कुरनातोव्स्की शायद जल्दी ही शादी का प्रस्ताव करनेवाले हैं। और मैं यह करनेवाली हूं," कहते हुए उसने बायें हाथ का अंगूठा नाक की टोनी पर रखकर बाक़ी उंग-लियां नचा दीं। "फिर मिलेंगे। अब रास्ता मुझे मालूम है। तुम बंदोबस्त कर डालो..."

येलेना ने दरवाज़े को ज़रा सा खोला, सुना कि कोई आहट तो नहीं है, इनसारोव की ओर मुड़कर सिर हिलाया और कमरे से बाहर निकल गयी।

वह भी थोड़ी देर दरवाज़े के पास खड़े रहकर आहट लेने लगा। नीचे अहाते में खुलनेवाला दरवाज़ा फटाक से बंद हुआ। वह सोफ़े की ओर बढ़ा और बैठकर दोनों हाथों से आंखें ढांक लीं। ऐसा तो उसके साथ पहले कभी नहीं हुआ था।" ऐसे प्रेम का अधिकारी मैं क्योंकर हुआ?" उसने सोचा। "कहीं यह सपना तो नहीं है?"

मगर उसके तनहा, छोटे, अंधेरे कमरे में येलेना जो भीनी-भीनी ख़ुशबू छोड़ गयी थी, उसने उसके आने की याद दिला दी। और जान पड़ा कि उसके साथ-साथ उसका युवा कंठ-स्वर, उसके पदचाप की हल्की सी आवाज़ और कुमारी के शरीर की उष्णता व ताज़गी भी हवा में बसी हुई है।

२४

इनसारोव ने अधिक निश्चित सूचना का इंतज़ार करने का फ़ैसला किया लेकिन रवानगी की तैयारियां शुरू कर दीं। काम बहुत

मुश्किल था। उसके अपने लिए कोई दिक्कत नहीं थी, सिर्फ़ पासपोर्ट के वास्ते दरख़ास्त देने का सवाल था – पर येलेना का क्या किया जाये? क़ानूनी तरीक़े से उसका पासपोर्ट प्राप्त करना असंभव था। क्या वह चुपचाप उससे शादी कर ले और फिर उसके माता-पिता के सामने पहुंचे? "तब वे जाने देंगे," उसने सोचा। "लेकिन अगर न जाने दिया? हम फिर भी जायेंगे। और अगर उन्होंने नालिश कर दी... अगर... नहीं, किसी न किसी तरह पासपोर्ट हासिल करने की कोशिश करना बेहतर होगा।"

उसने अपने एक परिचित, अवकाश-प्राप्त या बर्खास्त किये गये पब्लिक प्रोसीक्यूटर की सलाह लेने का फ़ैसला किया (ज़ाहिर है, बिना कोई नाम लिए)। सभी तरह के गुप्त मामलों में वह घिसे हुए पुराने काइयां थे। यह आदरणीय सज्जन काफ़ी दूर रहते थे। इनसारोव को एक चरचराती खटारा गाड़ी में वहां पहुंचने में पूरा एक घंटा लग गया और ऊपर से जनाब घर में थे नहीं। वापस लौटा तो अचानक मूसलाधार बारिश होने लगी और वह तरबतर हो गया। अगले दिन सुबह दर्द के मारे उसका सिर फटा जा रहा था, लेकिन फिर भी, दुबारा प्रोसीक्यूटर के यहां चल दिया। अवकाश-प्राप्त प्रोसीक्यूटर ने उसकी बात ध्यान से सुनी। बीच-बीच में वह विशाल-वक्षा परी की आकृतिवाली डिबिया से सुंघनी लेकर नाक में भरते जाते थे। कनखियों से, सुंघनी जैसे ही रंग की अपनी काइयां आंखों से वह मेहमान को देख रहे थे। सुनने के बाद उन्होंने "तमाम तथ्य ज़्यादा तफ़सील से बताने" की मांग की। यह देखकर कि इनसारोव तफ़सीलें हिचकिचाते हुए बता रहा है (वह तो उनके पास आया ही आधे मन से था), उन्होंने केवल इतनी सलाह दी कि वह सबसे पहले "पिएनिआदज़े"* का बंदोबस्त कर ले। उन्होंने फिर से आने के लिए कहा, "जब वह," खुली डिबिया से तम्बाकू एक बार फिर सूंघते हुए उन्होंने जोड़ा, "विश्वास अधिक करने और अविश्वास कम करने की मनस्थिति में हो। जहां तक पासपोर्ट की बात है," उन्होंने मानो अपने से ही कहा, "तो यह आदमी के बस की बात है। मिसाल के लिए एक नारी

---

* धन (पोल भाषा में)।

जा रही है। अब कौन जानता है कि वह मरीया ब्रेदीखिना है या कैरोलीन फ़ोगेलमेयेर?" इनसारोव को बड़ी घृणा हुई, मगर उसने प्रोसीक्यूटर का शुक्रिया अदा किया और दो-चार दिन में आने का वायदा किया।

उसी दिन शाम को वह स्ताख़ोव परिवार के यहां गया। आन्ना वसील्येव्ना उससे प्रेम से मिलीं, उन लोगों को एकदम भूल जाने के लिए झिड़का और चेहरा पीला देखकर उसकी सेहत के बारे में पूछा। निकोलाई अर्तेम्येविच स्ताख़ोव ने उससे कोई बात नहीं की, सिर्फ़ लापरवाही भरे कौतूहल से उस पर नज़र डाली। शूबिन का बर्ताव काफ़ी सर्द था। परंतु आश्चर्यचकित उसे येलेना ने किया। उसे इंतज़ार था। उसके लिए उसने वही फ़्रॉक पहनी थी जो गिरजे में पहली मुलाक़ात के दिन पहन रखी थी। मगर इतने शांत भाव से उसने उसका स्वागत किया और वह इतनी सहृदय, इतनी निश्चिंत व प्रसन्न थी कि उसे देखकर कोई नहीं सोच सकता था कि इस युवती के भाग्य का निर्णय हो चुका है और यह सुखदायी प्रेम की गुप्त अनुभूति ही है जिसने उसके चेहरे को इतना उत्फुल्ल तथा उसकी हर गति को इतना सहज व आकर्षक बना दिया है। ज़ोया के बजाय उसने चाय ढाली, हंसी-मज़ाक किया, बातें कीं। वह जानती थी कि शूबिन की उस पर नज़र रहेगी। इनसारोव भावनाओं को छिपाकर बेपरवाही दिखा नहीं सकता था – इसलिए वह पहले से तैयार हो गयी थी। उसका अनुमान ठीक निकला। शूबिन की आंखें उस पर गड़ी रहीं और इनसारोव बातें करने के मूड में नहीं था। सारी शाम वह विचारों में खोया रहा। येलेना अपने को इतनी सुखी अनुभव कर रही थी कि उसे चिढ़ाने की उसकी तबियत हुई।

"तो आपकी योजना का क्या हुआ?" उसने यकायक पूछा। "मामला कुछ आगे बढ़ा?"

इनसारोव अचकचा गया।

"कौन सी योजना?" उसने पूछा।

"याद नहीं है?" हंसते हुए येलेना ने जवाब दिया। आनंद भरी इस हंसी का रहस्य केवल वही समझ सकता था। "मेरा मतलब है, रूसियों के लिए बलगार भाषा की वह प्राइमरी।"

"क्या तमाशा है!" दांत भींचे-भींचे स्ताख़ोव बड़बड़ाये।

ज़ोया प्यानो बजाने बैठ गयी। येलेना ने लगभग अदृश्य ढंग से कंधे हिलाकर इनसारोव को आंखों से दरवाज़े की ओर इंगित किया मानो उसे छुट्टी दे रही हो। फिर उसने उंगली से मेज़ पर दो बार टीप देते हुए उसकी ओर देखा। वह समझ गया कि उसने दो दिन बाद मिलने का इशारा किया है। और जब येलेना ने देखा कि वह समझ गया है, तो वह मुस्करा दी। इनसारोव उठकर विदा लेने लगा। उसकी तबियत कुछ ठीक नहीं थी। इतने में कुरनातोव्स्की आ गया। स्ताख़ोव उछलकर खड़े हो गये, दायां हाथ सिर से ऊंचा उठाया और मुलायमियत से चीफ़ सेक्रेटरी की हथेली पर गिरा दिया। इनसारोव अपने प्रतिद्वंदी को ठीक से देखने के लिए कुछ मिनट और ठहरा। येलेना ने छिपाकर अर्थ भरे ढंग से सिर हिलाया। गृह-स्वामी ने दो आदमियों का एक-दूसरे से परिचय कराना आवश्यक नहीं समझा और इनसारोव येलेना से आख़िरी बार नज़रें मिलाकर चला गया। शूबिन थोड़ी देर मगज़-पच्ची करता रहा; फिर किसी क़ानूनी सवाल को लेकर, जिसका वह सिर-पैर भी नहीं जानता था, कुरनातोव्स्की से ज़ोरों से बहस करने लगा।

इनसारोव को सारी रात नींद नहीं आयी और अगले दिन सुबह बदन टूट रहा था। तो भी वह अपने कागज़-पत्र ठीक करने में लग गया। दो-तीन चिट्ठियां लिखीं हालांकि सिर भारी और गड़बड़ाया हुआ था। दोपहर तक बुख़ार चढ़ आया और वह कुछ भी न खा सका। शाम होते-होते टेम्परेचर बहुत बढ़ गया और अंग-अंग चटखने लगा। सिर का दर्द असह्य था। इनसारोव उसी सोफ़े पर लेट गया जिस पर कुछ दिन पहले येलेना बैठी थी। "ठीक सज़ा मिली," उसने सोचा "धूर्त बूढ़े के यहां भागदौड़ क्यों की थी।" उसने सोने की कोशिश की।... पर रोग उस पर हावी हो चुका था। शिराएं बेहद फटफटा रही थीं, ख़ून में जैसे आग लग गयी थी और विचार चौंक उठे पक्षियों की तरह चक्कर काट रहे थे। उसकी चेतना जाती रही। किसी बोझ के नीचे दबे व्यक्ति की तरह वह चित्त पड़ा था। यकायक उसे लगा कि कोई उसके ऊपर धीमे से हंस रहा है, फुसफुसा रहा है। ज़ोर लगाकर आंखें

खोलीं तो गुल न कटी मोमबत्ती की रोशनी ने तलवार की तरह उस पर वार किया।... यह क्या? बूढ़ा प्रोसीक्यूटर सिल्क का गाऊन पहने और कमरबंद बांधे उसी रूप में उसके आगे था जिसमें पिछले दिन उसे देखा था... पोपले मुंह से आवाज़ निकलती है: "कैरोलीन फ़ोगेलमेयेर।" इनसारोव ध्यान से देखता है... बूढ़ा चौड़ा होने लगा, फूलने लगा, बढ़ने लगा। अब वह इंसान नहीं– एक पेड़ था। इनसारोव को उसकी सतर डालों पर चढ़ना है। डाल को वह पकड़ लेता है लेकिन नीचे नुकीली चट्टान पर सीने के बल आ गिरता है। अधर कैरोलीन फ़ोगेलमेयेर दूकानदारिन के रूप में पलथी मारे बैठी है और रट लगाये हैं, "पैटीज़ ले लो, पैटीज़!" वहां ख़ून बह रहा है, धुआंधार तलवारें भांजी जा रही हैं।... येलेना!... वह चीख़ा और सब कुछ लाल-लाल गड़बड़-घुटाले में ग़ायब हो गया।

२५

"आपको कोई पूछ रहा है। लुहार या ऐसा ही कोई है," बेरसेनेव से अगली शाम को उसके नौकर ने कहा जिसका अपने मालिक के प्रति रवैय्या काफ़ी रूखा और संशय भरा था। बोला, "आपसे मिलना चाहता है।"

"बुला लाओ," बेरसेनेव ने कहा।

"लुहार" अंदर आया। बेरसेनेव ने पहचान लिया कि यह वही दर्ज़ी है–उस फ़्लैट का मालिक जिसमें इनसारोव रहता है।

"क्या बात है?" उसने पूछा।

"आपसे दरख़ास्त है," दर्ज़ी ने धीमे से कभी एक तो कभी दूसरे पैर पर वज़न बदलते हुए और बीच-बीच में दायां हाथ हिलाते हुए कहा जिसकी तीन आख़िरी उंगलियों से उसने आस्तीन का कफ़ पकड़ रखा था। "हमारे किरायेदार, कौन जाने, बहुत बीमार हैं।"

"इनसारोव?"

"जी हां, हमारे किरायेदार हैं। कौन जाने, कल सुबह चल-फिर रहे थे। शाम को सिर्फ़ पीने को पानी मांगा। घरवाली ने उन्हें पानी दिया। रात को बेहोशी में बड़बड़ाने लगे। हमारा पार्टीशन

पतला है, हमें सुनायी पड़ता है। आज सुबह से आवाज़ बंद है, लट्ठे की तरह पड़े हैं। और बुख़ार – बाप रे! बहुत तेज़ है, मैंने सोचा, कौन जाने, ऐसे ही मर जायें; थाने में ख़बर करनी चाहिए। आख़िर अकेले हैं। घरवाली ने मुझसे कहा, 'उन साहब के पास जाओ जिनसे हमारे किरायेदार ने शहर के बाहर कमरा लिया था। हो सकता है, वह तुम्हें कुछ बता दें, या ख़ुद आ जायें।' सो मैं आप के पास आया हूं। हम यों तो नहीं... मेरा मतलब है..."

बेरसेनेव ने टोपी उठायी, दर्ज़ी के हाथ में एक रूबल ठूंसा और उसके साथ उसी वक़्त इनसारोव के फ़्लैट की ओर रवाना हो गया।

उसने उसे सोफ़े पर बेहोश पड़ा पाया। कपड़े तक नहीं उतारे थे। चेहरा भयंकर रूप से बदल गया था। बेरसेनेव ने फ़ौरन घर मालिक और घर मालकिन को इनसारोव के कपड़े बदलकर उसे बिस्तर पर लिटाने की हिदायत दी और ख़ुद डाक्टर के यहां चला गया। वह डाक्टर को लिवा लाया। उसने जोंकों, कैंथेरीडीज़ और पारे की दस्तावर दवा का नुस्ख़ा लिखा और कहा कि मरीज़ के जिस्म से ख़ून निकालना चाहिए।

"हालत ख़तरनाक है?" बेरसेनेव ने पूछा।

"बहुत ख़तरनाक।" डाक्टर ने जवाब दिया। "ज़ोरदार निमोनिया हो गया है। डबल निमोनिये की इन्तहा है। दिमाग़ पर भी असर हो सकता है। मरीज़ जवान है और यह ताक़त ही इस समय उसके ख़िलाफ़ है। मुझे देर में बुलाया। ख़ैर, साइंस जो कहती है, सब करेंगे।"

डाक्टर अभी स्वयं जवान था और विज्ञान में विश्वास करता था।

बेरसेनेव रात को वहीं रह गया। घर मालिक और घर मालकिन नेक लोग बल्कि कामलायक भी साबित हुए। ज़रूरी था ऐसा आदमी जो उनसे कहे कि क्या करना चाहिए। डाक्टर का सहायक आया और डाक्टरी अत्याचार होने लगा।

सुबह इनसारोव को कुछ मिनट के लिए होश आया। उसने बेरसेनेव को पहचाना और पूछा, "लगता है, मैं बीमार हूं?"

बेहद बीमार आदमी जैसी बुझी-बुझी, निढाल, कुछ न समझनेवाली नज़र से उसने अपने इर्द-गिर्द देखा और फिर से होश जाता रहा। बेरसेनेव ने घर जाकर कपड़े बदले, अपने साथ एक-दो किताबें लीं और इनसारोव के फ़्लैट में लौट आया। उसने वहीं रहने का फ़ैसला किया – कम से कम फ़िलहाल। पर्दा लगाकर उसने इनसारोव के पलंग को अलग कर दिया और अपने लिए सोफ़े के पास जगह बना ली। दिन उदासी भरा था और बहुत लम्बा खिंचा। बेरसेनेव केवल खाना खाने के लिए बाहर गया। शाम घिर आयी। उसने शेड लगाकर मोमबत्ती जलायी और पढ़ने लगा। आसपास घोर नीरवता थी। पार्टीशन के पार, मकान मालिक के कमरों से कभी दबी हुई फुसफुसाहट सुनायी पड़ती थी तो कभी जंभाइयों और आहों की आवाज़ें। ... वहां किसी को छींक आयी और धीमे से उसे झिड़क दिया गया। पर्दे के पीछे से कठिनाई के साथ असंतुलित सांस लेने की ध्वनि आ रही थी। बीच-बीच में क्षण भर को वह कराहता था और तकिये पर दायें-बायें सिर पटकता था। ... बेरसेनेव के दिमाग़ में अनोखे विचार दौड़ रहे थे। वह ऐसे व्यक्ति के कमरे में था जिसका जीवन अधर में लटका था, जिसको जैसा कि वह जानता था, येलेना प्यार करती है। ... याद आ गयी उसे वह रात जब शूबिन ने दौड़कर उसे पकड़ा था और ऐलान किया था कि वह उसे – बेरसेनेव को प्यार करती है! और अब ... "अब मैं क्या करूं?" उसने अपने आपसे पूछा। "क्या येलेना को इसकी बीमारी की ख़बर कर दूं? या ठहर जाऊं? यह ख़बर तो उससे भी ज़्यादा दुख भरी है जो मैंने पहले उसे बतायी थी। अजीब बात है, भाग्य मुझे बार-बार इन दो के बीच ला खड़ा करता है!" उसने तय किया कि अभी ठहरना बेहतर होगा। उसकी निगाह मेज़ पर गयी जहां कागज़ों का पुलिंदा रखा था ... "क्या वह अपनी योजनाएं पूरी कर पायेगा?" बेरसेनेव ने सोचा। "कहीं सब कुछ ख़तम तो नहीं हो जायेगा?" दम तोड़ रही जवान ज़िंदगी के लिए उसका दिल भर आया और उसे बचाने के लिए उसने कमर कस ली। ...

रात दर्दनाक रही। बेसुधी में रोगी ने बड़ा प्रलाप किया। कई बार बेरसेनेव अपने सोफ़े से उठकर दबे-पांव उसके पलंग तक

गया और दुख के साथ उसकी आंय-बांय सुनी। केवल एक बार, अचानक इनसारोव ने साफ़-साफ़ कहा, "मैं नहीं चाहता, नहीं चाहता। तुम्हें यह नहीं..." बेरसेनेव ने चौंककर इनसारोव को देखा। उसका चेहरा तकलीफ़ से बदहवास और साथ ही अकड़ा हुआ था। बेजान हाथ बराबर में पड़े थे।... "मैं नहीं चाहता..." उसने मरी आवाज़ में दोहराया।

सुबह डाक्टर आया। उसने सिर हिलाया और कुछ नयी दवाइयां लिखीं।

"तब्दीली अभी दूर है," उसने टोप लगाते हुए कहा।

"और तब्दीली के बाद?" बेरसेनेव ने पूछा।

"तब्दीली के बाद? दो में से कोई भी परिणाम हो सकता है: खाएंगे घी से नहीं तो जाएंगे जी से!"

डाक्टर चला गया। बेरसेनेव ने, जिसे खुली हवा चाहिए थी, थोड़ी देर सड़क पर चहलक़दमी की। लौटकर वह किताब पढ़ने लगा। रौमेर को वह कभी का खतम कर चुका था और अब ग्रोट* का अध्ययन कर रहा था।

अचानक किवाड़ों ने हल्की सी चीं-चीं की और मकान मालिक की बेटी ने सावधानी से कमरे में झांका। हमेशा की तरह उसके सिर पर बड़ा स्कार्फ़ बंधा था।

"महिला आयी हैं," उसने दबी आवाज़ में कहा, "जिन्होंने पहले मुझे दस कापेक..."

घर मालिक की बेटी का सिर यकायक छिप गया और उसकी जगह येलेना आ गयी।

बेरसेनेव ऐसे उचका मानो किसी ने डंक मारा हो। परंतु येलेना न तो हिली और न उसने चीख भरी।... पलक झपकते वह जैसे सब समझ गयी। उसका चेहरा सफ़ेद फक हो गया। वह पर्दे के पास गयी, अंदर झांका, हाथों को मरोड़ा और जड़ हो गयी। अगले ही क्षण वह इनसारोव की ओर झपट पड़ी होती, पर बेरसेनेव ने रोक लिया।

---

* १९वीं शताब्दी के ब्रिटिश इतिहासकार: 'यूनान के इतिहास' के रचयिता।

"आप कर क्या रही हैं?" कम्पित स्वर में उसने आहिस्ते से कहा। "आप उसकी जान ले सकती हैं!"

येलेना लड़खड़ायी। बेरसेनेव उसे सोफ़े के पास ले गया और बैठा दिया।

उसने बेरसेनेव के चेहरे को पढ़ा, फिर ऊपर से नीचे तक देखा और इसके बाद फ़र्श को ताकने लगी।

"क्या वह मर रहे हैं?" उसने ठंडी आवाज़ में, इतने शांत भाव से पूछा कि बेरसेनेव भयभीत हो गया।

"भगवान के लिए! येलेना निकोलायेव्ना!" उसने कहा, "आप कैसी बात करती हैं? हां, वह बीमार है और सख़्त बीमार है... लेकिन हम उसे बचा लेंगे। मैं आपको आश्वासन देता हूं।"

"क्या वह बेहोश हैं?" उसने पहले जैसी आवाज़ में पूछा।

"हां, अभी बेसुध है।... ऐसी बीमारियों में शुरू में हमेशा यही होता है। पर यह कोई ऐसी बात नहीं है। मैं विश्वास दिलाता हूं, कोई ऐसी बात नहीं है। लीजिए, थोड़ा पानी पी लीजिए।"

उसने नज़र उठायी और बेरसेनेव समझ गया कि येलेना ने उसके जवाब नहीं सुने।

"अगर वह मर जायेंगे," वह उसी आवाज़ में बोली, "तो मैं भी ज़िंदा नहीं बचूंगी।"

इसी क्षण इनसारोव हल्के से कराहा। वह कांप उठी, हाथों से सिर थाम लिया और फिर टोपी के फ़ीते खोलने लगी।

"आप कर क्या रही हैं?" बेरसेनेव ने पूछा।

उसने जवाब नहीं दिया।

"आप कर क्या रही हैं?" उसने दोहराया।

"मैं यहां रुक रही हूं।"

"क्या... कितनी देर के लिए?"

"मालूम नहीं। हो सकता है सारे दिन, सारी रात... हमेशा के लिए। मालूम नहीं।"

"येलेना निकोलायेव्ना, भगवान के लिए अपने को सम्हालिए। ज़ाहिर है, मैं सोच तक नहीं सकता था कि आपको यहां देखूंगा। लेकिन फिर भी... मेरा ख़्याल है, आप यहां थोड़ी देर के लिए आयी हैं। सोचिए, पता चल सकता है कि आप घर में नहीं हैं..."

"तो क्या होगा?"

"आपको खोजने निकलेंगे... ढूंढ़ लेंगे।..."

"तो क्या होगा?"

"येलेना निकोलायेव्ना! देखिए... इस समय वह आपकी रक्षा नहीं कर सकता।"

उसने सिर झुका लिया मानो सोच में डूब गयी हो। वह रूमाल अपने होंठों के पास ले गयी और यकायक प्रचंड रुदन उसके सीने को चीरकर तन-बदन को झकझोरता हुआ फट पड़ा।... विलाप को रोकने की कोशिश में वह मुंह के बल सोफ़े पर गिर पड़ी परंतु उसका सारा शरीर बिंध गये पक्षी की तरह उठ-गिर रहा था, फड़फड़ा रहा था।

"येलेना निकोलायेव्ना... भगवान के लिए!..." पास में खड़ा बेरसेनेव बार-बार कह रहा था।

"ओह! क्या है?" अचानक इनसारोव की आवाज़ गूंजी।

येलेना सीधी हुई। बेरसेनेव अपने स्थान पर काठ हो गया।... लमहे भर ठहरकर वह पलंग की ओर बढ़ा। इनसारोव का सिर पहले की तरह तकिये पर अशक्त पड़ा था और आंखें बंद थीं।

"सरसाम में बड़बड़ा रहे हैं?" येलेना ने अस्फुट स्वर में पूछा।

"ऐसा ही लगता है," बेरसेनेव ने जवाब दिया। "लेकिन यह कोई ऐसी बात नहीं है। हमेशा यही होता है, विशेष रूप से अगर..."

"बीमार कब पड़े?" येलेना ने बीच में टोका।

"परसों। कल से मैं यहां हूं। येलेना निकोलायेव्ना, मेरा भरोसा कीजिए। मैं उसे एक मिनट के लिए नहीं छोड़ूंगा और इलाज के वास्ते हर कोशिश की जायेगी। ज़रूरत हुई तो सलाह के लिए डाक्टरों का कमीशन बुलवा लेंगे।"

"वह मेरी अनुपस्थिति में मर सकते हैं," येलेना ने अपने हाथ मरोड़ते हुए कहा।

"मैं वचन देता हूं कि बीमारी की हालत की आपको हर रोज़ सूचना दूंगा। अगर सचमुच ख़तरा पैदा हो जायेगा..."

"क़सम खाइये कि दिन हो या रात – किसी भी वक़्त आप

मुझे फ़ौरन बुला लेंगे। मेरे ही नाम पुर्ज़ा भेज दीजिए... अब मुझे कोई परवाह नहीं है। सुना आपने? आप वायदा करते हैं कि ऐसा ही करेंगे?"

"भगवान के आगे वायदा करता हूं।"

"क़सम खाइये।"

"क़सम खाता हूं।"

येलेना ने यकायक उसका हाथ थाम लिया और इससे पहले कि वह खींच पाये, उससे अपने होंठ छुआ दिये।

"येलेना निकोलायेव्ना, यह क्या कर रही हैं," वह फंसे गले से बोला।

"नहीं... नहीं... नहीं चाहिए..." इनसारोव अस्पष्ट रूप में बड़बड़ाया और ज़ोर से आह भरी।

येलेना पर्दे के पास पहुंची, रूमाल में दांत गाड़ दिये और बड़ी देर तक रोगी को देखती रही। निःशब्द आंसू उसके गालों पर बह रहे थे।

"येलेना निकोलायेव्ना," बेरसेनेव ने उससे कहा। "वह होश में आ सकता है, आपको पहचान सकता है। ईश्वर ही जाने, उसका क्या नतीजा होगा। और मुझे डाक्टर का इंतज़ार है। वह किसी भी क्षण आ सकता है।..."

येलेना ने सोफ़े से टोपी उठाकर लगायी और ठिठक गयी। उसकी दुख भरी दृष्टि सारे कमरे में घूमी। जान पड़ा कि यादें ताज़ी हो गयीं।...

"मैं नहीं जा सकती," आख़िर उसने हौले से कहा।

बेरसेनेव ने उसका हाथ दबाया।

"हिम्मत बांधिए," वह बोला। "अपने को शांत कीजिए। आप उसे मेरी निगरानी में छोड़ रही हैं। आज ही शाम को मैं आपके यहां आऊंगा।"

येलेना ने उसकी ओर देखकर कहा, "ओह मेरे अच्छे दोस्त!" रुलाई फूट पड़ी और वह निकल भागी।

बेरसेनेव ने दरवाज़े की टेक ले ली। दुख भरी, कड़वी भावना ने उसके हृदय को झिंझोड़ा परंतु उसमें सांत्वना का भी एक अनोखा पुट था। "मेरे अच्छे दोस्त!" उसने सोचा और कंधे झटक दिये।



"यहां कौन है?" इनसारोव की आवाज़ सुनायी पड़ी।

बेरसेनेव उसके पास पहुंचा।

"मैं हूं, द्मीत्री निकानोरोविच। कुछ चाहिए? अब कैसी तबियत है?"

"अकेले हो ?" बीमार ने पूछा।

"अकेला।"

"और वह कहां है?"

"वह कौन?" घबराते हुए बेरसेनेव बोला।

इनसारोव मौन हो गया।

"ख़ुशबू," उसने अस्फुट स्वर में कहा और आंखें फिर बंद हो गयीं।

२६

पूरे आठ दिन इनसारोव जीवन और मृत्यु के बीच झूलता रहा। डाक्टर बराबर आता रहा क्योंकि नौजवान होने के नाते कठिन केस में उसे विशेष दिलचस्पी थी। शूबिन इनसारोव की ख़तरनाक हालत की ख़बर सुनकर देखने आया। देशवासी बलगार भी आये। उनमें बेरसेनेव ने दो अजीब हस्तियों को पहचान लिया बंगले में जिनके अप्रत्याशित आगमन से उसे अचरज हुआ था। सभी ने हार्दिक सहानुभूति व्यक्त की। कुछ ने बीमार की तीमारदारी के लिए बेरसेनेव की जगह लेने का प्रस्ताव रखा मगर उसे येलेना को दिया गया वायदा याद था और वह राज़ी नहीं हुआ। वह हर रोज़ येलेना से मिलता था और छिपाकर–कभी शब्दों में तो कभी छोटा सा पुर्ज़ा लिखकर बीमारी की तमाम तफ़सीलें उसे बता देता था। कितने धड़कते दिल से वह उसकी बाट जोहती थी, किस तरह कान लगाकर सुनती थी और पूछती थी! वह ख़ुद इनसारोव के पास जाने को बेताब थी, लेकिन बेरसेनेव ने ऐसा न करने की विनती की। बोला, इनसारोव मुश्किल से कभी अकेला होता है। पहले दिन जब उसे बीमारी का पता चला, वह ख़ुद खाट पकड़ते-पकड़ते बची। घर लौटते ही उसने अपने को कमरे में बंद कर लिया। लंच के लिए बुलाया गया तो ऐसी सूरत लिए वह डाइनिंग रूम

में पहुंची कि आन्ना वसील्येव्ना सहम गयीं और उसे फ़ौरन आराम करने के लिए वापस भेजना चाहा। परंतु येलेना अपने पर क़ाबू पाने में कामयाब हो गयी। बार-बार वह अपने से कहती थी, "अगर वह मर गये तो मैं भी ज़िंदा न रहूंगी"। इस विचार से उसे ढारस मिला और उसने बेपरवाही दिखाने की शक्ति बटोर ली। यों किसी ने उसे ज़्यादा तंग नहीं किया। आन्ना वसील्येव्ना अपने सूजे गाल के चक्कर में थी; शूबिन भयंकर लगन से काम में जुटा था; ज़ोया ने अपने को उदासी के हवाले कर दिया था और 'वेरथेर'* पढ़ने की सोचती थी। स्ताख़ोव 'विद्यार्थी' के अक्सर आने से बहुत नाख़ुश थे। ख़ास तौर से इसलिए कि कुरनातोव्स्की के सम्बंध में उनकी "योजना" ठीक से बढ़ नहीं पा रही थीं। व्यवहारवादी चीफ़ सेक्रेटरी को संशय था और वह हवा का रुख़ देख रहा था। येलेना ने बेरसेनेव को धन्यवाद तक न दिया : कुछ ऐसी मेहरबानियां होती हैं जिनके लिए शुक्रिया अदा करने में ज़बान कटती है और शर्म आती है। केवल एक बार, बेरसेनेव से चौथी मुलाक़ात के समय (इनसारोव की रात बहुत बुरी कटी थी और डाक्टर ने डाक्टरों का कमीशन बुलवाने का इशारा दिया था) – केवल तभी येलेना ने उसे क़सम की याद दिलायी थी। "अच्छा, तो चलिए," बेरसेनेव ने उससे कहा। वह उठी और बाहर के कपड़े पहनने के लिए जाने लगी। "नहीं," बेरसेनेव ने कहा, "कल तक ठहर जाइये।" शाम होते-होते इनसारोव की हालत सुधरने लगी।

यातना आठ दिन भोगनी पड़ी। येलेना यों शांत दिखती थी पर उसकी भूख मर गयी थी और रात की नींद उड़ गयी थी। अंग-अंग में मंद पीड़ा होती थी और सिर में मानो सूखा, गरम धुआं भर गया था। "हमारी स्वामिनी मोमबत्ती की तरह पिघल रही हैं," उसकी नौकरानी ने कहा।

आख़िर नवें दिन तब्दीली हुई। येलेना बैठक में आन्ना वसील्येव्ना के पास बैठी उन्हें अख़बार 'मोस्कोव्स्की वेदोमोस्ती' पढ़कर सुना रही थी हालांकि ख़ुद उसे सुध नहीं थी कि कर क्या रही

---

* पिछले शताब्दी के जर्मन साहित्यकार गैटे की रचना 'युवा वेरथेर का दुख'।

है। बेरसेनेव अंदर आया और येलेना ने आंखें उठाकर देखा (पहली नज़र जो वह उस पर डालती थी, हर बार ही तीव्र और सहमी हुई, भेदती हुई और चिंता भरी होती थी)। फ़ौरन समझ गयी कि वह ख़ुशख़बरी लाया है। बेरसेनेव ने मुस्कराकर हल्के से उसकी दिशा में सिर हिलाया। स्वागत के लिए वह उठ खड़ी हुई।

"उसे होश आ गया। वह बच गया। हफ़्ते भर में बिलकुल ठीक हो जायेगा," उसने फुसफुसाते हुए कहा।

येलेना ने हाथ बढ़ाये मानो प्रहार से अपने को बचा रही हो, पर बोली कुछ नहीं। सिर्फ़ उसके होंठ थरथरा रहे थे और पूरा चेहरा लाल हो गया था। बेरसेनेव आन्ना वसील्येव्ना से बातें करने लगा। येलेना अपने कमरे में जाकर घुटनों पर गिर गयी और परमात्मा के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करने लगी। प्रसन्नता के सहज, स्वच्छ अश्रु उसके गालों पर ढुलक रहे थे। यकायक उसे लगा कि वह बेहद थक गयी है। तकिये पर सिर रखकर उसने अस्फुट स्वर में कहा, "बेचारे अंद्रेय पेत्रोविच!" और आंसुओं से भींगी पलकें और गीले गाल लिए वह फ़ौरन सो गयी। बहुत दिनों से वह न तो सोयी थी और न रोयी थी।

२७

बेरसेनेव के शब्द आंशिक रूप में ही सही साबित हुए। ख़तरा दूर हो गया था, मगर इनसारोव के बदन में ताक़त धीरे-धीरे लौटी। डाक्टर ने बताया कि उसके पूरे शरीर को गहरा शॉक लगा है। फिर भी इनसारोव बिस्तर से उठ खड़ा हुआ और कमरे में टहलना शुरू कर दिया। बेरसेनेव अपने फ़्लैट में लौट गया परंतु अभी भी अपने कमज़ोर दोस्त के पास वह हर रोज़ जाता था और पहले की तरह हर रोज़ येलेना को उसकी हालत के बारे में बता देता था। इनसारोव ने उसे लिखने का साहस नहीं किया, केवल बेरसेनेव से बातें करते समय अप्रत्यक्ष ढंग से उसकी ओर संकेत किया। और बेरसेनेव ने ऊपर से बेपरवाही दिखाते हुए स्ताख़ोव परिवार के यहां अपने जाने के बारे में बताया और उसके आगे स्पष्ट करने की कोशिश की कि येलेना बहुत व्याकुल हो गयी थी लेकिन अब संभल

गयी है। येलेना ने भी इनसारोव को चिट्ठी नहीं लिखी। वह किसी और उधेड़बुन में थी।

एक दिन बेरसेनेव ने खुशी-खुशी उसे सूचना दी कि डाक्टर ने इनसारोव को कटलेट खाने की इजाज़त दे दी है और शायद वह जल्दी ही बाहर निकल सकेगा। येलेना ने कुछ सोचते हुए सिर झुका लिया।...

"अनुमान लगाइये कि मैं क्या कहना चाहती हूं," वह बोली।

बेरसेनेव दुविधा में पड़ गया। वह समझ गया था।

"शायद आप कहना चाहती हैं," उसने दूसरी तरफ़ देखते हुए जवाब दिया, "कि आप उसे देखने की इच्छुक हैं।"

येलेना शर्मा गयी और अस्फुट स्वर में बोली:

"जी हां।"

"मुश्किल क्या है? मेरी समझ में आप यह आसानी से कर सकती हैं। छिः," उसने सोचा, "मेरे मन में कितना मैल है!"

"आपका मतलब है, मैं पहले भी..." येलेना ने कहा। "लेकिन मुझे डर लगता है... आपने बताया न, अब वह अकेले कम ही होते हैं।"

"समस्या का हल आसान है," बेरसेनेव ने अभी भी उसकी ओर न देखते हुए जवाब दिया। "ज़ाहिर है, मैं उसे पहले से सावधान नहीं कर सकता। मगर आप मुझे उसके लिए पुर्ज़ा दे दीजिए। एक पुराने परिचित को लिखने से, जिसकी आप चिंता करती हैं, आपको कौन रोक सकता है? इसमें कोई बुरी बात नहीं है। उससे मिलना तय कर लीजिए... मतलब है, आप लिख दीजिए कि कब पहुंचेंगी।..."

"मुझे झिझक होती है," येलेना आहिस्ते से बोली।

"पुर्ज़ा मुझे दे दीजिए। पहुंचा दूंगा।"

"इसकी ज़रूरत नहीं है। अंद्रेय पेत्रोविच, मुझसे ख़फ़ा न होइयेगा, आपसे एक निवेदन है। कल आप उनके पास मत जाइये।"

बेरसेनेव ने होंठ काट लिये।

"ओह! हां, समझा। ठीक है, ठीक है।" फिर दो-चार शब्द और कहने के बाद वह जल्दी से चला गया।

"यही बेहतर है, यही बेहतर है," उसने घर जाते हुए सोचा।

"मेरे लिए यह कोई नयी बात नहीं, पर यही बेहतर है। पराये घोंसले से चिपके रहने के लिए मैं इतना आतुर क्यों रहता हूं? मुझे किसी बात का अफ़सोस नहीं है, जो आत्मा ने कहा, वही मैंने किया। लेकिन अब बहुत हो चुका। उनका जो जी चाहे, करें! पिता जी ने मुझसे ठीक ही कहा था: मेरे बेटे, तुम और मैं रासलीला नहीं रचाते, हम रईसज़ादे नहीं हैं, ज़िंदगी और कुदरत ने हमारे दिमाग़ ख़राब नहीं किये। हम शहीद भी नहीं हो रहे – हम तो मेहनतकश हैं, मेहनतकश। इसलिए ओ मेहनतकश, चमड़े का एप्रन पहनो और काली वर्कशाप में अपने काम की जगह देखो! सूरज को दूसरों के लिए चमकने दो! परंतु हमारे नीरव जीवन में भी अपना अभिमान और अपना सुख है!"

अगले दिन सुबह इनसारोव को शहरी डाक से एक छोटा सा पुर्ज़ा मिला। "मेरा इंतज़ार करना," येलेना ने लिखा था, "और सबको इन्कार कर देना। अं० पे० नहीं आयेंगे।"

२८

इनसारोव ने येलेना का पुर्ज़ा पढ़ा और फ़ौरन कमरा ठीक करने में लग गया। घर मालकिन से उसने दवा की शीशियां हटाने को कहा और गाऊन उतारकर कोट पहन लिया। कमज़ोरी और ख़ुशी से उसका सिर चकरा रहा था और दिल की धुकधुकी बढ़ गयी थी। उसकी टांगों ने जवाब दे दिया। वह सोफ़े पर ढह गया और घड़ी को दखने लगा। "अभी बारह बजने में पंद्रह मिनट हैं," उसने अपने से कहा, "बारह से पहले वह किसी हालत में नहीं आ सकती। पंद्रह मिनट दूसरी बातों के बारे में सोचूंगा वरना बर्दाश्त न हो पायेगा। बारह से पहले वह किसी हालत में नहीं आ सकती।"

दरवाज़ा खुला और सिल्क की महीन फ़्रॉक पहने बहुत पीली पर अत्यंत निर्मल, युवा और आनंद भरी येलेना अंदर आ गयी। दबी हुई ख़ुशी की किलकारी के साथ वह इनसारोव के सीने से जा लगी।

"तुम जीवित हो, तुम मेरे हो," उसका आलिंगन करते हुए, उसके सिर को सहलाते हुए वह बार-बार कहने लगी। वह

एकदम अचल था। इस नैकटय, इस स्पर्श और इस हर्ष के कारण उसके लिए सांस लेना कठिन हो रहा था।

बराबर में बैठकर येलेना उससे चिपक गयी और प्रमुदित, स्नेह भरी, कोमल दृष्टि से उसे देखा जो केवल प्रेम में डूबी नारी की आंखों में ही हो सकती है।

यकायक उसके चेहरे पर उदासी घिर आयी।

"तुम कितने दुबले हो गये हो, प्यारे द्मीत्री," येलेना ने उसके गाल पर हाथ फेरते हुए कहा। "और दाढ़ी कितनी बढ़ गयी है!"

"तुम भी तो दुबला गयी हो, प्यारी येलेना," उसने उसकी उंगलियों को चूमते हुए जवाब दिया।

येलेना ने ख़ुशी से अपनी लटें झुलायीं।

"कोई बात नहीं। अब देखना, कितनी जल्दी हम वज़न बढ़ाते हैं! आंधी-तूफ़ान आया, उसी तरह जैसे उस दिन आया था जब हम गिरजे में मिले थे। आया और चला गया। अब हम ज़िंदा रहेंगे!"

जवाब में वह सिर्फ़ मुस्करा दिया।

"ओह, कैसे ये दिन थे, द्मीत्री! कितने ख़ौफनाक दिन थे! जिससे प्यार हो, उसके बाद कोई ज़िंदा कैसे रह सकता है! हर बार मुझे पहले से पता हो जाता था कि अंद्रेय पेत्रोविच मुझे क्या बतायेंगे। सच, मेरी ज़िंदगी की लौ भी तुम्हारी ज़िंदगी के साथ घट-बढ़ रही थी। जियो, मेरे द्मीत्री!"

वह नहीं जानता था, क्या कहे। बस उसके क़दमों में गिरने की इच्छा हो रही थी।

"एक बात और मैं जान गयी," येलेना ने उसके बालों को पीछे करते हुए कहा, "(तुम्हारी इस बीमारी के दौरान बहुत सी बातें मेरी समझ में आयीं), मैंने महसूस किया कि जब व्यक्ति बहुत दुखी होता है तो जो कुछ उसके इर्द-गिर्द होता है, सब की तरफ़ बड़ी बेवकूफ़ी से ध्यान देता है! सच मानो, कभी-कभी मैं मक्खी को देखते बैठी रहती थी। मेरे मन में डर समाया हुआ था, सब कुछ सर्द हो गया था। मगर अब वह सब दूर हो गया, हो गया न? आगे प्रकाश ही प्रकाश है, है न?"

"मेरे आगे तुम हो," इनसारोव ने जवाब दिया। "मेरे लिए प्रकाश ही प्रकाश है।"

"मेरे लिए भी! याद है, जब मैं तुम्हारे यहां आयी थी... नहीं, पिछली बार नहीं," उसने बरबस सिहरते हुए कहा, "उस बार जब हमने बातें की थीं, मालूम नहीं क्यों, तब मैंने मृत्यु की चर्चा की थी। तब मुझे अनुमान तक नहीं था कि मृत्यु घात में बैठी है। लेकिन अब तो तुम स्वस्थ हो, है न?"

"पहले से बहुत अच्छा हूं। लगभग स्वस्थ हूं।"

"तुम स्वस्थ हो। मृत्यु तुम्हें नहीं छीन पायी। ओह, मैं कितनी सुखी हूं!"

कई क्षण कोई नहीं बोला।

"येलेना?" इनसारोव ने पूछा।

"क्या, मेरे प्यारे?"

"बताओ, तुम्हें ख़्याल तो नहीं आया कि यह बीमारी सज़ा के रूप में हमारे पास आयी थी?"

येलेना ने उसे गंभीर भाव से देखा।

"ख़्याल आया था, द्मीत्री। लेकिन मैंने सोचा: आख़िर किसलिए मुझे सज़ा दी जायेगी? अपना कौन सा कर्त्तव्य मैंने भुला दिया, किसके प्रति मैंने अपराध किया? हो सकता है, मेरी आत्मा दूसरे लोगों जैसी न हो, पर वह चुप रही। कहीं मैं तुम्हारे आगे तो अपराधी नहीं हूं? मैं बाधक बन रही हूं, तुम्हें रोकती हूं..."

"तुम मुझे नहीं रोकतीं, येलेना, हम साथ-साथ जायेंगे।"

"हां, द्मीत्री, हम साथ जायेंगे। मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलूंगी... यह मेरा कर्त्तव्य है। मैं तुम्हें प्यार करती हूं... कोई दूसरा कर्त्तव्य मैं नहीं जानती।"

"ओह येलेना!" इनसारोव बोला। "तुम्हारा हर शब्द मुझे कैसे अटूट बंधनों में बांध रहा है!"

"बंधनों की बात क्यों करते हो?" येलेना ने टोका। "मैं और तुम स्वाधीन लोग हैं।" विचार में खोकर फ़र्श को ताकते हुए और एक हाथ से पहले की तरह उसके बालों को सहलाते हुए उसने कहा, "हां, पिछले अरसे में मैंने बहुत कुछ भोगा है जिसका पहले कभी अंदाज़ तक नहीं था! अगर किसी ने पहले

मुझसे कहा होता कि मैं – एक सभ्य, सुसंस्कृत महिला तरह-तरह के बहाने बनाकर अकेली घर के बाहर जाऊंगी! और जाऊंगी कहां – एक नौजवान के फ़्लैट में, तो मैं आग-बबूला हो गयी होती! यही सब हुआ और मुझे ज़रा भी बुरा नहीं लगता। भगवान की सौगंध, ज़रा भी नहीं!" उसने इनसारोव की ओर मुंह करते हुए कहा।

वह उसे इतनी प्यार भरी दृष्टि से देख रहा था कि येलेना ने धीरे से अपना हाथ उसके बालों से खिसकाकर उसकी आंखों पर रख दिया।

"द्मीत्री," वह फिर बोली, "तुम्हें नहीं मालूम, लेकिन मैंने तुम्हें वहां – उस भयंकर पलंग पर देखा था। मैंने तुम्हें मौत के शिकंजे में, बेहोश देखा था..."

"तुमने मुझे देखा था?"

"हां।"

वह लमहे भर को चुप हो गया।

"और बेरसेनेव यहां था?"

उसने सिर हिलाकर हामी भरी।

इनसारोव उसकी ओर झुक गया। "ओह येलेना!" उसने धीमे से कहा। "तुम्हारी ओर देखने का साहस नहीं होता।"

"क्यों? अंद्रेय पेत्रोविच तो बहुत नेक हैं! मुझे उनके आगे शर्म नहीं आयी। और शर्म आये क्यों? मैं सारी दुनिया के आगे ऐलान करने को तैयार हूं कि मैं तुम्हारी हूं। ... और अंद्रेय पेत्रोविच का मैं भाई की तरह विश्वास करती हूं।"

"उसने मेरी जान बचायी!" इनसारोव बोला। "वह सबसे सहृदय, सबसे नेक आदमी है!"

"हां... और जानते हो, हर बात के लिए मैं उनकी आभारी हूं? जानते हो, सबसे पहले उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम मुझसे प्रेम करते हो? अगर मैं सब कुछ खोलकर कह सकती... हां, वह सबसे सहृदय व्यक्ति हैं।"

इनसारोव ने टकटकी बांधकर येलेना को देखा।

"वह तुम्हें प्यार करता है, सच है न?"

येलेना ने आंखें झुका लीं।

"वह मुझसे प्रेम करते थे," उसने अस्फुट स्वर में कहा।

इनसारोव ने उसका हाथ दबाया।

"तुम रूसियों के दिल सोने के हैं!" उसने कहा। "उसने मेरी तीमारदारी की, आंखों ही आंखों में रातें काट दीं।... और तुम, तुम तो देवी हो! कोई उलाहना नहीं, कोई दुविधा नहीं और यह सब मेरे लिए, मेरे लिए..."

"हां, हां, सब तुम्हारे लिए क्योंकि हम लोग तुम्हें प्यार करते हैं। ओह द्मीत्री! कैसी अजीब बात है! शायद मैं तुम्हें बता चुकी हूं – कोई बात नहीं, मैं ख़ुशी से दोहरा दूंगी और तुम्हें भी सुनकर ख़ुशी होगी – जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था..."

"तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों?" इनसारोव ने उसकी बात काटी।

"मेरी आंखों में? आंसू?" उसने रूमाल से आंखें पोंछ लीं। "ओ भोले महाराज! तुम्हें अभी तक मालूम नहीं कि आंसू ख़ुशी से भी छलक पड़ते हैं। हां, तो मैं कह रही थी: जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था, मुझे तुममें कोई ख़ास बात दिखायी नहीं दी थी, सच। मुझे याद है, शुरू में शूबिन मुझे कहीं ज़्यादा अच्छा लगा था हालांकि मैंने उससे कभी प्रेम नहीं किया। जहां तक अंद्रेय पेत्रोविच की बात है... हां, एक लमहा था जब मैंने सोचा था: यही है क्या? और तुम – ज़रा भी प्रभाव नहीं। लेकिन... बाद में... बाद में... तुमने मेरे हृदय को ही हर लिया!"

"मुझ पर दया करो।..." इनसारोव बोला। वह उठना चाहता था लेकिन तुरंत बैठ गया।...

"क्या हुआ?" घबराकर येलेना ने पूछा।

"कुछ नहीं... थोड़ा कमज़ोर हूं।... इतना सुख अभी सहा नहीं जाता।"

"तो बोलो नहीं। हिलो-डुलो नहीं, उत्तेजित मत हो।" उसने तर्जनी से धमकाते हुए कहा। "और, जनाब, आपने अपना गाऊन क्यों उतार दिया? बनने-ठनने के लिए अभी जल्दी है! बैठिए और मैं आपको कहानियां सुनाऊंगी। सुनिए और मौन रहिए। बीमारी के बाद आपके लिए ज़्यादा बोलना मुज़िर है।"

वह उसे शूबिन के बारे में, कुरनातोव्स्की के बारे में बताने लगी। फिर बताया कि पिछले दो हफ़्तों में उसने क्या किया, बोली,

अख़बारों की ख़बरों से लगता है कि लड़ाई होकर रहेगी और इसलिए ज्यों ही वह पूरी तरह ठीक हो जाये, उन्हें एक मिनट भी बरबाद किये बिना जाने के साधन खोजने होंगे। ... यह सब वह उसके बराबर में बैठी, उसके कंधे का सहारा लिए कहती रही। ...

वह उसकी बातें सुनता रहा, कभी उसका चेहरा पीला पड़ जाता था तो कभी लाल हो जाता था। ... कई बार उसने उसे रोकना चाहा ... और अचानक वह सीधा-सतर हो गया।

"येलेना," उसने एक अजीब सी तेज़ आवाज़ में कहा, "मुझे अकेला छोड़ दो। चली जाओ।"

"क्या?" वह भौंचक्की रह गयी। "तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?" उसने जल्दी से कहा।

"नहीं ... मैं ठीक हूं ... पर मेहरबानी करके मुझे अकेला छोड़ दो।"

"तुम्हारी बात समझी नहीं। तुम मुझे निकाल रहे हो? ... अरे, तुम क्या कर रहे हो?" उसने यकायक यह देखकर कहा कि वह सोफ़े से लगभग फ़र्श तक झुक गया है और अपने होंठ उसके पैरों से लगा दिये हैं। "यह मत करो, द्मीत्री ... द्मीत्री ..."

वह उठ खड़ा हुआ।

"बस, मुझे अकेला छोड़ दो! येलेना, जानती हो जब मैं बीमार पड़ा तो चेतना फ़ौरन नहीं चली गयी। मैं समझ रहा था कि मौत के दरवाज़े पर हूं। तेज़ बुखार की हालत में, प्रलाप के समय भी मैं धुंधला-धुंधला देख रहा था कि मौत मेरी तरफ़ बढ़ी आ रही है। मैंने जीवन से, तुमसे, हर चीज़ से विदा ले ली। मैंने आशा छोड़ दी ... और अचानक यह पुनर्जन्म हुआ, अंधकार के बाद यह प्रकाश आया। तुम ... तुम मेरे बराबर में, मेरे कमरे में आ गयीं ... तुम्हारी आवाज़, तुम्हारा सांस लेना ... यह मेरी सहन शक्ति के बाहर है! मैं महसूस करता हूं कि तुम्हें बेहद प्यार करता हूं। सुनता हूं कि तुम खुद कहती हो, तुम मेरी हो ... मैं अपने पर नियंत्रण खो रहा हूं ... तुम चली जाओ!"

"द्मीत्री," येलेना ने आहिस्ते से कहा और उसके कंधे में सिर छिपा लिया। उसकी बात अब वह समझ गयी थी।

"येलेना," वह बोला, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं और तुम

यह जानती हो। तुम्हारे लिए मैं अपने प्राण देने को तैयार हूं... लेकिन तुम मेरे पास अभी क्यों आयीं जब मैं कमज़ोर हूं, जब अपने ऊपर मेरा वश नहीं है, जब मेरे सारे ख़ून में आग लग गयी है... तुम मेरी हो, तुम कहती हो... तुम मुझे प्यार करती हो..."

"द्मीत्री," उसने दोहराया और एकदम सुर्ख़ हो गयी। उससे वह और ज़्यादा चिपट गयी।

"येलेना, मेरे ऊपर दया करो। तुम चली जाओ। लगता है मेरा दम घुट सकता है। भावनाओं का यह ज्वार मैं बर्दाश्त न कर पाऊंगा।... मेरा दिल तुम्हें पुकार रहा है।... सोचो, मौत ने हमें जुदा कर ही दिया होता... और अब तुम यहां हो, मेरी बाहों में... येलेना..."

येलेना के सारे शरीर में सिहरन दौड़ गयी।

"तो ले लो मुझे," उसने दबी आवाज़ में फुसफुसाकर कहा।...

२६

निकोलाई अर्तेम्येविच स्ताख़ोव अपने कमरे में आ-जा रहे थे। भौंहों में गांठें पड़ी थीं। और शूबिन पैर पर पैर रखे, खिड़की के पास बैठा आराम से सिगार पी रहा था।

"कृपा करके इधर से उधर टहलना बंद कर दीजिए," उसने सिगार की राख झाड़ते हुए कहा। "मैं इंतज़ार कर रहा हूं कि आप कुछ बोलें। आपको तकते-तकते मेरी गर्दन दर्द करने लगी है। आपकी चाल में कोई तनाव, कोई उफनती नाटकीयता दिखायी पड़ती है।"

"आपको बस लोगों की खिल्ली उड़ाना आता है," स्ताख़ोव ने जवाब दिया, "आप मेरी हालत पर ध्यान देना नहीं चाहते। आप समझना नहीं चाहते कि वह महिला मेरी ज़िंदगी में दाखिल हो गयी हैं – कि मैं उनसे बंध गया हूं और उनकी अनुपस्थिति से मुझे क्लेश होना चाहिए। अक्तूबर का महीना चल रहा है, जाड़ा दूर नहीं है। आख़िर वह रेवेल में कर क्या रही हैं?"

"मोज़े बुनती होंगी... ज़ाहिर है अपने लिए। आपके लिए नहीं।"

"हंस लो, हंस लो। लेकिन मैं आपको बता दूं कि मैंने ऐसी कोई दूसरी स्त्री नहीं देखी। वह ईमानदारी का, निस्वार्थ भावना का मूर्तरूप है..."

"क्या उन्होंने उस प्रौमिसरी नोट की अदायगी के लिए दावा कर दिया?" शूबिन ने पूछा।

"निस्वार्थ भावना का वह मूर्तरूप," स्ताख़ोव ने आवाज़ ऊंची करते हुए दोहराया, "आश्चर्यजनक है। लोगों का कहना है, दुनिया में लाखों औरतें पड़ी हैं और मैं कहता हूं: ये लाखों हैं कहां? दिखाइये मुझको ये लाखों – मैं कहता हूं। दिखायें तो ज़रा मुझको! और वह मुझे चिट्ठी नहीं लिखतीं। बस यही सहा नहीं जाता।"

"आप प्रभावशाली वक्ता हैं पाइथोगोरस की तरह," शूबिन ने कहा, "लेकिन जानते हैं, मैं क्या सलाह दूंगा?"

"क्या?"

"अव्गुस्तीना ख़्रिस्तिआनोव्ना जब वापस लौटें... मेरी बात समझ रहे हैं?"

"तो?.. तो क्या?"

"जब आप उनसे मिलें... आप मेरे विचार की दिशा पकड़ रहे हैं?"

"हां, तो?"

"उनकी ठुकाई कर दीजिए। इसका नतीजा क्या होगा?"

स्ताख़ोव ने खीजकर मुंह फेर लिया।

"सोचा था, मुझे सचमुच कोई कामलायक सलाह दी जायेगी, लेकिन इनसे आशा ही क्या की जा सकती है! कलाकार – न कोई नियम, न धरम..."

"नियम नहीं! और सुना है आपके वह प्रेम-भाजन जो हैं – वह नियमों के पिटारे जनाब कुरनातोव्स्की, उन्होंने कल आपको चांदी के सौ रूबलों की चपत लगा दी। कुछ ज्यादती कर दी, है न यही बात?"

"क्या हुआ? हम पैसा लगाकर खेल रहे थे। हां, मैं अनुमान लगा सकता था... परंतु इस घर में उनके गुणों का इतना कम आदर किया जाता है..."

"इसीलिए शायद उन्होंने सोचा: हो भी जाये!" शूबिन ने

बीच में अपनी बात जोड़ दी, "ससुर बनते हैं या नहीं बनते, यह केवल विधाता को पता है... पर सौ रूबल बड़े काम के हैं – खास तौर से ऐसे आदमी के लिए जो रिश्वत नहीं लेता।"

"ससुर? .. ससुर की भी खूब चलायी! श्रीमान जी, आप बहक रहे हैं! कोई दूसरी लड़की होती तो ऐसा मंगेतर देखकर खुशी से फूली न समाती। सोचिये ज़रा: आदमी चतुर है, बुद्धिमान है, खुद अपनी राह बनायी है, दो प्रान्तों में डटकर मेहनत की..."

"और क... प्रांत में गवर्नर को चूना लगा दिया," शूबिन बोला।

"हो सकता है। शायद वह इसी के लायक़ था। यह तो व्यवहारी, कामकाजी व्यक्ति है..."

"और ताश खेलने में उस्ताद है," शूबिन ने फिर से कोंचा।

"हां, ताश खेलने में भी उस्ताद है। मगर येलेना निकोलायेव्ना... क्या उसकी थाह पायी जा सकती है? बताओ मुझे, है कोई आदमी जो पता चला सके कि वह क्या चाहती है? अभी खुश है और अभी सूरत रुआंसी हो गयी। अचानक इतनी दुबली हो जाती है कि उसकी ओर देखा नहीं जाता, फिर अचानक वज़न बढ़ने लगता है – और इस सबकी कोई वजह नज़र नहीं आती।..."

इतने में भौंडा सा एक नौकर ट्रे लिए दाखिल हुआ जिसपर काफ़ी, क्रीम और बिसकुट रखे थे।

"पिता को लड़का पसंद है," स्ताखोव ने बिसकुट हिलाते हुए कहा, "पर बेटी को कानी कौड़ी परवाह नहीं। पहले, पितृसत्ता के काल में उसका महत्व था, लेकिन अब हमने सब कुछ बदल डाला है। हां, सब बदल दिया है। अब कुलीन युवती जिससे चाहे बातें करती है, जो चाहे पढ़ती है, टहलुए के बिना, नौकरानी के बिना अकेले मास्को में घूमने निकल जाती है, मानो यह पेरिस हो – और इस सबको स्वीकार किया जाता है। पिछले दिनों मैंने पूछा: येलेना निकोलायेव्ना कहां हैं? सुनने को मिला, बाहर गयी हैं। कहां? मालूम नहीं। यह कोई ढंग है?"

"अपना प्याला लेकर आदमी को छुट्टी दीजिए," शूबिन बोला। फिर कुछ धीमे से जोड़ दिया, "खुद ही कहते हैं, 'भृत्ये समक्षे' ठीक नहीं है।"

नौकर ने भौंहें चढ़ाकर शूबिन की तरफ़ देखा। स्ताख़ोव ने प्याला उठाया, उसमें क्रीम मिलायी और चार-छः बिसकुट ले लिये।

"मैं कहना चाहता था," नौकर के जाते ही उन्होंने शुरू किया, "इस घर में मेरी कोई पूछ नहीं है। बस, यही बात है। आज हमारे ज़माने में आदमी को उसके रूप से आंका जाता है। वह खोखला हो, बेवकूफ़ हो लेकिन अगर वह वज़नदार दिखता है तो उसे हाथों-हाथ लिया जाता है। दूसरे आदमी में प्रतिभा भले ही हो, जो बड़ी लाभकारी हो सकती है... सिद्ध हो सकती है, परंतु उसकी विनम्रता के कारण..."

"ओह निकोलाई, आप राजनीतिज्ञ तो नहीं हैं?" शूबिन ने आवाज़ पतली करके पूछा।

"मसख़री बंद करो!" स्ताख़ोव गुस्से से गरज उठे। "आप अपनी हैसियत भूल जाते हैं! यह एक और सबूत है कि इस घर में मुझे कोई नहीं पूछता। कोई नहीं!"

"आन्ना वसील्येव्ना आप पर अत्याचार करती हैं... बेचारे!" शूबिन ने सीधे होते हुए कहा। "ओह निकोलाई अर्तेम्येविच, ईश्वर से डरिये! बेहतर होगा कि आप आन्ना वसील्येव्ना के लिए कोई तोहफ़ा तैयार कर लें – उनके जन्म दिन के लिए! मालूम है, आपकी ओर से चिंता की मामूली सी निशानी की भी वह कितनी क़द्र करती हैं।"

"हां, हां," स्ताख़ोव ने फ़ौरन जवाब दिया, "आपका बड़ा शुक्रिया जो याद दिला दी। ठीक है, ठीक है, ज़रूर... मेरे पास एक हार है भी; छोटा सा नेकलेस जो पिछले दिनों मैंने रोज़ेनश्त्राउख़ के यहां ख़रीदा था। लेकिन कौन जाने, ठीक रहेगा या नहीं?"

"आपने इसे उनके लिए, रेवेलवाली महिला के लिए ख़रीदा होगा?"

"आं... मैंने... हां, मैंने सोचा था..."

"तब, संभव है, काम चल जायेगा।"

शूबिन कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"पावेल याकोव्लेविच, आज शाम को हम कहां चलें?" स्ताख़ोव ने विनीत भाव से उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा।

"आप शायद क्लब जा रहे हैं।"

"क्लब के बाद … उसके बाद।"

शूबिन ने फिर से बदन सीधा किया।

"नहीं, निकोलाई अर्तेम्येविच, कल मुझे काम करना है। किसी और दिन चलेंगे," और वह कमरे से निकल गया।

स्ताख़ोव के माथे पर बल पड़े, कमरे में एक-दो बार टहले, सेफ़ से नेकलेस का मख़मली डिब्बा निकाला और देर तक उसे देखते रहे। रेशमी रूमाल से उसे साफ़ किया। फिर वह आयने के सामने बैठ गये और अपने घने काले बालों को बाक़ायदे काढ़ने लगे। चेहरा गंभीर बनाकर वह कभी सिर को दायीं तरफ़ झुकाते थे तो कभी बायीं तरफ़ और ज़बान से गाल को फुलाते थे पर निगाह बराबर मांग पर गड़ी हुई थी। पीठ पीछे किसी के खांसने की आवाज़ आयी। मुड़कर देखा, नौकर खड़ा था, वही जो काफ़ी लाया था।

"क्या चाहिए?" उन्होंने पूछा।

"निकोलाई अर्तेम्येविच!" नौकर ने बड़ी संजीदगी से कहा। "आप हमारे मालिक हैं!"

"जानता हूं। क्या बात है?"

"निकोलाई अर्तेम्येविच, मेहरबानी करके मुझ पर गुस्सा न करियेगा। छोटी उम्र से मैं आपका दिया खा रहा हूं। मैं आपकी ख़िदमत करता हूं। आपको कुछ बताना मेरा फ़र्ज़ है…"

"क्या, बात क्या है?"

नौकर ने पैर बदले।

"मुझे माफ़ करिये," वह बोला, "आप कह रहे थे, आप नहीं जानते येलेना निकोलायेव्ना कहां गयी थीं। मुझे पता है।"

"गधे, क्या बक रहा है?"

"हुज़ूर, आप मालिक हैं, लेकिन चार दिन पहले मैंने छोटी मालकिन को एक घर में घुसते देखा था।"

"कहां? क्या..? किस घर में?"

"पोवार्स्कोया सड़क के पास आ… गली में। यहां से दूर नहीं है। दरबान से मैंने पूछा, यहां कौन रहता है?"

स्ताख़ोव ने पैर पटका।

"चुप रह, हरामख़ोर! तेरी हिम्मत कैसे हुई? येलेना निको-

लायेव्ना ग़रीबों की मदद करने के लिए जाती हैं और तू ... निकल यहां से, नालायक़ ! "

डरकर नौकर दरवाज़े की तरफ़ जाने लगा।

"ठहर जा ! " स्ताख़ोव चिल्लाये। "दरबान ने तुझसे क्या कहा ?

"नहीं ... कहा कुछ नहीं। बोला – कोई छा ... छात्र ... "

"चुप रह, हरामख़ोर ! और सुन ले, पाजी, अगर तूने सोते में भी किसी से इसके बारे में कहा ... "

"कैसे हो सकता है, हुज़ूर ... "

"चुप रह ! अगर तूने बड़बड़ की ... अगर किसी को ... अगर मैंने सुना ... तो पाताल में भी तू मुझसे नहीं बच पायेगा ! सुना ? भाग यहां से ! "

नौकर चला गया।

"हे भगवान ! यह क्या हो रहा है ? " अकेले रह जाने पर स्ताख़ोव सोचने लगे। "इस गधे ने मुझे क्या बताया ? ऐ ? पता चलाना होगा कौन सा यह घर है, कौन वहां रहता है। ख़ुद जाना होगा। हमारी ऐसी हालत हो गयी ! ... नौकर जानते हैं ! अपमान, घोर अपमान ! "

एक बार फिर ज़ोर से "नौकर जानते हैं ! " कहकर स्ताख़ोव ने नेकलेस सेफ़ में बंद किया और आन्ना वसील्येव्ना की तरफ़ चल दिये। वह गाल पर पट्टी बांधे लेटी थीं। मगर उनकी पीड़ा देखकर स्ताख़ोव और कुढ़ गये और थोड़ी ही देर में उनको रुला डाला।

३०

इस बीच पूरब में जो घटाएं घिर रही थीं, फट पड़ीं। तुर्की ने रूस के ख़िलाफ़ लड़ाई का ऐलान कर दिया। रियासतों को ख़ाली करने के लिए दिया गया वक़्त गुज़र चुका था। सिनोप में तबाही* का दिन दूर नहीं था। इनसारोव को पिछले अरसे में मिले ख़तों

---

* १८५३ में काले सागर के दक्षिणी भाग में सिनोप के पास रूसी बेड़े द्वारा तुर्क समुद्री बेड़े की तबाही।

में बराबर स्वदेश बुलाया जा रहा था। सेहत उसकी अभी भी पूरी तरह नहीं सुधरी थी। वह खांसता था, कमज़ोरी महसूस करता था, बीच-बीच में बुख़ार हो जाता था लेकिन वह घर में कम ही बैठता था। उसकी आत्मा से ज्वाला उठ रही थी, बीमारी के बारे में सोचने के लिए समय नहीं था। मास्को के कोने-कोने में लगातार दौड़कर वह गुप्त रूप से लोगों से मिल रहा था। रात-रात भर चिट्ठियां लिखता था, कई-कई दिनों के लिए ग़ायब हो जाता था। घर मालिक को उसने बता दिया था कि जल्दी ही चला जायेगा और अपना मामूली सा फ़रनीचर पहले से भेंट कर दिया था। उधर येलेना भी जाने की तैयारी कर रही थी। रिमझिम मौसम में एक दिन शाम को वह अपने कमरे में बैठी रूमाल में गोट लगा रही थी और खिन्न मन से बाहर हवा की सनसनाहट सुन रही थी। उसकी नौकरानी कमरे में आयी और बोली: पापा जी माता जी के कमरे में हैं और आपको बुला रहे हैं... येलेना उठकर चलने लगी तो आहिस्ते से उसने कहा, "माता जी रो रही हैं और पापा जी आपे से बाहर हो रहे हैं।..."

येलेना ने हल्के से कंधे बिचकाये और आन्ना वसील्येव्ना के शयन-कक्ष में चली गयी। आरामकुर्सी पर अधलेटी स्ताख़ोव की नरम-दिल पत्नी रूमाल से यू-डी-कोलोन सूंघ रही थीं। वह ख़ुद दीवार-अंगीठी के पास खड़े थे। कोट के बटन गले तक बंद थे, कलफ़ किया कालर और कड़ा क्रावाट लगाये थे। अंदाज़ कुछ-कुछ पार्लामेंट के वक्ता जैसा था। वक्ता जैसे ही हाथ के इशारे से उन्होंने बेटी को कुर्सी पर बैठने को कहा और जब उसने इशारा न समझकर उनकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि उठायी तो गौरव के साथ, गर्दन मोड़े बिना उन्होंने फ़रमाया, "आप बैठ जाइये।" (पत्नी को स्ताख़ोव हमेशा आप कहते थे और बेटी को असाधारण परिस्थितियों में।)

येलेना बैठ गयी।

आन्ना वसील्येव्ना ने बिसूरते हुए नाक साफ़ की। स्ताख़ोव ने अपना दायां हाथ सीने पर कोट के लैपेल में ठूंस लिया।

"येलेना निकोलायेव्ना," उन्होंने लम्बी चुप्पी के बाद कहा, "मैंने आपको यहां मामले की सफ़ाई के लिए, बल्कि कहना बेहतर होगा कि आपसे जवाब-तलब करने के लिए बुलाया है। मैं आपसे

असंतुष्ट हूं। नहीं, यह बहुत हल्का शब्द है, आपका व्यवहार मुझे दुखी करता है, मेरी तौहीन करता है – मेरी और आपकी मां की... जिनको आप यहां देख रही हैं।"

स्ताख़ोव केवल भारी, बास स्वर में बोल रहे थे। येलेना ने चुपचाप उनको देखा, फिर मां पर नज़र डाली और पीली पड़ गयी।

"एक समय था," स्ताख़ोव ने फिर शुरू किया, "जब बेटियां माता-पिता को नीची नज़र से देखने की बात सोच भी नहीं सकती थीं, जब माता-पिता के शासन में हठी संतान के प्राण सूख जाते थे। खेद है, वह समय अब नहीं रहा। कम से कम बहुत से लोग यही समझते हैं। मगर यक़ीन मानिए, क़ानून अभी भी मौजूद हैं जो इजाज़त नहीं देते... इजाज़त नहीं देते... यानी क़ानून अभी मौजूद हैं। कृपा करके इस बात पर ध्यान दीजिए: क़ानून मौजूद हैं!"

"लेकिन पापा," येलेना ने कहना चाहा...

"कृपा करके बीच में मत बोलिए। ज़रा भूतकाल की बात की जाये। आन्ना वसील्येव्ना ने और मैंने अपना कर्त्तव्य निभाया। आपकी शिक्षा-दीक्षा के मामले में आन्ना वसील्येव्ना ने और मैंने कोई कोताही नहीं की – न ख़र्चे की और न देखभाल की। उस देखभाल और उन ख़र्चों से आपको क्या लाभ हुआ, यह अलग सवाल है। परंतु मुझे यह सोचने का अधिकार था... आन्ना वसील्येव्ना को और मुझे यह सोचने का अधिकार था कि आप कम से कम नैतिकता के नियमों को, उन नियमों को पवित्र मानेंगी जिनकी... जिनकी हमारी एकमात्र बेटी के रूप में हमने आपको सीख दी, जो हमने आपको सिखाये। हमें सोचने का अधिकार था कि किसी भी तथाकथित नये विचार का इस पर, कहना चाहिए इस पवित्र मर्यादा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। परंतु हुआ क्या? मैं आपकी स्त्री जाति और आपकी अवस्था के लिए स्वाभाविक चंचलता की बात नहीं करता... परंतु किसे गुमान हो सकता था कि आप इस हद तक अपने को भूल जायेंगी..."

"पापा," येलेना बोली, "मैं जानती हूं, आप क्या कहना चाहते हैं।..."

"नहीं, तुम नहीं जानतीं, मैं क्या कहना चाहता हूं!" स्ता-

ख़ोव अपने पार्लामेंटी अंदाज़ की सारी गरिमा, अपनी धारा-प्रवाह वक्तृता की महत्ता और अपने बास स्वर को यकायक बिसारकर तीखे फ़ालसेट्टो में चीख़ उठे। "ढीठ लड़की, तुम नहीं जानतीं!"

"ईश्वर के लिए, निकोलाई!" हकलाकर आन्ना वसील्येव्ना बोलीं, "आप मुझे मार डालेंगे!"

"मुझसे यह मत कहिये, आन्ना वसील्येव्ना, कि मैं आपको मार डालूंगा। आप कल्पना तक नहीं कर सकतीं कि अभी क्या सुनने-वाली हैं। आपको सावधान कर रहा हूं, भयंकर बात के लिए तैयार हो जाइये!"

आन्ना वसील्येव्ना हक्की-बक्की रह गयीं।

"नहीं," स्ताख़ोव ने येलेना की ओर मुड़ते हुए कहा, "तुम नहीं जानतीं, मैं क्या कहना चाहता हूं!"

"मैं आपके आगे दोषी हूं," वह कहने लगी। ...

"ओह, आख़िर माना!"

"मैं आपके आगे दोषी हूं," येलेना ने कहा, "क्योंकि पहले ही मैंने स्वीकार नहीं किया ..."

"जानती हो तुम," स्ताख़ोव ने उसे टोका, "मैं एक ही शब्द से तुम्हें ख़तम कर सकता हूं?"

येलेना ने उनकी ओर आंखें उठायीं।

"हां, मदाम, एक ही शब्द से! इस तरह देख क्या रही हैं! (उन्होंने सीने पर हाथ बांधे।) क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपको पोवार्सकाया सड़क के पास आ ... गली का वह मकान मालूम है? आप उस मकान में गयी हैं? (उन्होंने पैर पटका।) बेशर्म लड़की, जवाब दो, चकमा देने की मत सोचो। टहलुओं ने, टहलुओं ने, मदाम – नीच नौकरों ने देखा कि आप वहां गयीं, अपने उसके ..."

येलेना का चेहरा लाल हो गया और आंखें चमकने लगीं।

"चकमा देने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है," उसने कहा, "हां, मैं उस मकान में गयी हूं।"

"बहुत ख़ूब! सुन रही हैं, सुनती हैं, आन्ना वसील्येव्ना? तो शायद आप जानती होंगी, वहां कौन रहता है?"

"हां, जानती हूं। मेरे पति रहते हैं।"

स्ताख़ोव ने फटी आंखों से उसे देखा।

"तुम्हारे ..."

"मेरे पति," येलेना ने दोहराया। "द्मीत्री निकानोरोविच इनसारोव से मैंने विवाह किया है।"

"तुमने?... विवाह कर लिया?..." मुश्किल से आन्ना वसील्येव्ना के मुंह से बोल फूटा।

"हां, ममी... मुझे क्षमा करो।... दो सप्ताह पहले हमने गुप्त रूप से विवाह कर लिया।"

आन्ना वसील्येव्ना आरामकुर्सी में ढह गयीं। स्ताख़ोव दो क़दम पीछे हटे।

"विवाह कर लिया! उस कंगाल, उस दक्खिनी स्लाव से! कुलीन वंश के निकोलाई स्ताख़ोव की बेटी ने एक आवारे, एक घटिया कितबिए से विवाह कर लिया! माता-पिता के आशीर्वाद के बिना! तुम सोचती हो मैं मामले को यहीं छोड़ दूंगा? नालिश नहीं करूंगा? तुम्हें इजाज़त दे दूंगा... कि तुम... कि... तुझे मैं मठ में भिजवा दूंगा और उसे कालेपानी की सज़ा दिलाऊंगा, कड़ी मशक्कत की क़ैद कराऊंगा! आन्ना वसील्येव्ना, कृपा करके इससे इसी क्षण कह दीजिए कि आपने इसे पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर दिया!"

"निकोलाई अर्तेम्येविच, ईश्वर के लिए!" आन्ना वसील्येव्ना कराह उठीं।

"यह कब हुआ, कैसे हुआ? किसने शादी करायी? कहां? कैसे? हे भगवान! अब दोस्त लोग, सारी दुनिया क्या कहेगी! बेशर्म, कपटी! ऐसी करतूत के बाद तू माता-पिता के घर में रह कैसे सकी! ... तुझे... ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं हुआ?"

"पापा," येलेना बोली, (वह सिर से पैर तक थरथरा रही थी, परंतु आवाज़ उसकी दृढ़ थी), "आप मेरे साथ जैसा चाहें बर्ताव कर सकते हैं, लेकिन बेशर्मी और कपट का आरोप आप मुझ पर बेकार मढ़ते हैं। मैं आपको... पहले से परेशान करना नहीं चाहती थी, मगर दो-तीन दिन में मैंने अपने आप ही आपको सब बता दिया होता क्योंकि अगले सप्ताह मैं पति के साथ यहां से जा रही हूं।"

"जा रही हो? कहां?"

"उनके देश, बलगारिया।"

"तुर्कों के हाथों में!" आन्ना वसील्येव्ना ने चीख़ मारी और मूर्छित हो गयीं।

येलेना मां की ओर लपकी।

"दूर रह!" स्ताख़ोव गरज उठे और हाथ पकड़कर कहा, "दूर रहो, नीच लड़की!"

इसी क्षण कमरे का द्वार खुला और पीला सा, पर चमकती आंखोंवाला चेहरा दिखायी दिया। यह शूबिन का चेहरा था।

"निकोलाई अर्तेम्येविच!" वह चिल्लाकर पूरे ज़ोर से बोला, "अव्गुस्तीना ख़्रिस्तिआनोव्ना आ गयी हैं और आपको बुलाती हैं।"

स्ताख़ोव गुस्से से भरकर घूमे, शूबिन को घूंसा दिखाया, पल भर को हिचकिचाये और तेज़ी से कमरे के बाहर निकल गये।

येलेना मां के पैरों में जा गिरी और उनके घुटनों से चिपट गयी।

* * *

उवार इवानोविच अपने पलंग पर लेटे थे। बड़ा बटन लगा, बिना कालर का कुरता मोटी गर्दन को घेरे था और उनके लगभग ज़नाने सीने पर, चौड़ी सिलवटों में मुड़ा, ढीला-ढाला फैला था। हां, लकड़ी का बड़ा सा क्रॉस और ताबीज़ दिख रहे थे। हल्के कम्बल ने विशाल डील-डौल को ढंक रखा था। रात के स्टूल पर क्वास* के मग्गे के पास मोमबत्ती मद्धम रोशनी दे रही थी। और उवार इवानोविच के पैरों के पास, पलंग पर ही, दुख से संतप्त शूबिन बैठा था।

"हां," उसने उदास भाव से कहा, "उसकी शादी हो गयी और वह जाने की तैयारी कर रही है। आपके भतीजे ने चीख़-चीख़कर सारा घर सिर पर उठा लिया। बात गुप्त रखने के लिए सोने के कमरे में जाकर द्वार बंद कर लिया था, लेकिन नौकर-नौकरानियों की बात छोड़िये, बाहर कोचवान भी सब सुन सकता था! वह अभी भी पैर पटक रहे हैं, फुंकार रहे हैं। मुझसे हाथापाई करनेवाले

---

* काली रोटी से बना रूसी पेय।

थे। बाप के शाप को छोड़ और कुछ सूझ नहीं रहा, जैसे भालू को कुंदा मिल गया हो। मगर दम नहीं हैं। आन्ना वसील्येव्ना चूर-चूर हो गयी हैं, पर विवाह से ज़्यादा दुख उन्हें बेटी के जाने का है।"

उवार इवानोविच ने उंगलियां नचायीं।

"मां है," वह बोले, "इसलिए... समझते हो।"

"आपके भतीजे साहब धमकी दे रहे हैं कि मैट्रोपॉलिटन के आगे, गवर्नर-जनरल और मिनिस्टर के आगे नालिश करेंगे," शूबिन ने कहा, "लेकिन होगा यही कि वह चली जायेगी। अपनी बेटी का सत्यानाश करके कौन सुखी होगा! बढ़-बढ़कर बातें करेंगे, आख़िर में टांय-टांय फिस।"

"अधिकार... नहीं है," उवार इवानोविच ने कहा और क्वास का एक घूंट लिया।

"नहीं है। और मास्को में निंदाओं, क़िस्सों, अफ़वाहों का कैसा बाज़ार गर्म होगा! वह इस सबसे नहीं डरती... वह इस सबके ऊपर है। वह जा रही है, और कहां – ख़्याल आते ही रूह फ़ना हो जाती है! कितनी दूर और कैसा अनजाना इलाक़ा! वहां उसकी हालत क्या होगी? उसे देखता हूं तो लगता है कि वह सराय को छोड़कर रात के अंधेरे में, बर्फ़ीले तूफ़ान में, शून्य से नीचे तीस डिग्री के शीतमान में निकल रही है। वतन से, सगे-सम्बंधियों से जुदा हो रही है। पर मैं उसकी बात समझता हूं। वह छोड़ किसे रही है? यहां मिला कौन? कुरनातोव्स्की, बेरसेनेव और मेरे जैसे लोग – और ये भी दूसरों से बेहतर हैं। तो फिर अफ़सोस क्यों हो? एक बुरी बात है: कहते हैं उसका पति – उफ़, यह कहने में ज़बान कटती है – हां, कहते हैं इनसारोव खांसता है तो ख़ून निकलता है। यह बुरी बात है। पिछले दिनों मैंने उसको देखा था: चेहरा ऐसा कि सामने बैठाकर अभी ब्रूटस* की आकृति बना लो... उवार इवानोविच, जानते हैं, ब्रूटस कौन था?"

"जानना क्या? आदमी था।"

"बिलकुल ठीक: 'आदमी था वह'। चेहरा बढ़िया है। लेकिन बीमार, बेहद बीमार आदमी का चेहरा है।"

---

* जूलियस सीज़र की हत्या की साज़िश में प्रमुख।

"लड़ने के लिए ... फ़र्क क्या," उवार इवानोविच ने कहा।
"ठीक है, लड़ने के लिए कोई फ़र्क नहीं। आज आपकी टीकाएं पूरी तरह चस्पां हो रही हैं। मगर ज़िंदा रहने के लिए तो फ़र्क है। और वह उसके साथ ज़िंदा रहना चाहती है।"
"नौजवानों की बात," उवार इवानोविच का जवाब था।
"हां, नौजवानों का ध्येय है, गौरवशाली और साहस भरा। मृत्यु, जीवन, संघर्ष, पतन, विजय, प्रेम, स्वतंत्रता, मातृभूमि। ... सचमुच श्रेष्ठ है। भगवान सबको दे! यह वैसी बात नहीं है कि गले तक दलदल में फंसे हैं और दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि तुम्हारे लिए कोई फ़र्क नहीं पड़ता, जबकि ठोस रूप में, वास्तव में तुम्हारे लिए कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। और वहां प्रत्यंचा खिंची हुई है – या तो टंकार सारी दुनिया में गूंजेगी या वह टूट जायेगी।"
शूबिन का सिर सीने पर झुक गया।
"हां," लम्बे मौन के बाद उसने कहा, "इनसारोव उसके योग्य है। मगर यह बकवास कैसी है! कोई भी उसके योग्य नहीं। बस इनसारोव ... इनसारोव ... झूठी विनम्रता में आखिर धरा क्या है? मान लिया वह हिम्मतवाला है, अपने क़ौल पर डट सकता है, हालांकि किया अब तक उसने भी वही है जो हम अधम लोग करते हैं। हम ऐसे कहां के निकम्मे हैं? उवार इवानोविच, मुझे लीजिए, क्या मैं निकम्मा हूं? क्या भगवान ने मुझे एकदम छूंछा छोड़ दिया? मुझे कोई क्षमता, कोई प्रतिभा नहीं दी? कौन जाने, हो सकता है एक दिन पावेल शूबिन का नाम सब तरफ़ फैल जाये! देखिये, आपकी मेज़ पर यह तांबे का सिक्का पड़ा है। कौन जाने, हो सकता है किसी दिन, सौ-एक बरस बाद पावेल शूबिन के कृतज्ञ वंशज इस तांबे को इस्तेमाल करके उसके सम्मान में मूर्ति स्थापित कर दें!"
उवार इवानोविच ने कोहनी का सहारा लेकर शरीर कुछ उठाया और उत्तेजित कलाकार को घूरकर देखा।
"शहनाई बजने में देर है," आखिर उन्होंने हमेशा की तरह उंगलियां नचाते हुए कहा, "दूसरों की बात और तुम ... अपना राग ..."
"ओ रूसी धरती के महान दार्शनिक!" शूबिन बोला, "आपके

श्रीमुख से निकला हर शब्द सच्चा मोती है। मूर्ति मेरी नहीं, आपकी स्थापित की जानी चाहिए और यह भार मैं लेता हूं। इस समय आप जिस पोज़ में लेटे हैं, जिसमें पता नहीं आलस ज़्यादा है या ताक़त? बस इसी रूप में मैं आपको ढालूंगा। मेरे अहं और मेरे घमंड को आपने ठीक ही तोड़ा। हां, अपना ढोल नहीं पीटना चाहिए, शेखी नहीं बघारनी चाहिए। जिधर चाहो, देखो, हमारे यहां अभी कोई नहीं है, असली आदमी नहीं है। जो हैं, वे सब या तो क्षुद्र जीव हैं, कुतरकर खानेवाले हैं, छुटके हैमलेट हैं, पिछड्डे उत्तरी हैं या फिर हैं अज्ञानी और कूप-मंडूक, दलाल और कोरी हांकनेवाले गपोड़िये और हैं नगाड़े की डंडियां! ऐसे भी होते हैं जो शर्मनाक बारीकी से स्वयं अपना विश्लेषण करते हैं, अपनी हर अनुभूति की नब्ज़ को बराबर टटोलते हैं और इसके बाद स्वयं अपने से कहते हैं, मैं यह अनुभव करता हूं, मैं यह सोचता हूं। लाभदायक, काम का पेशा है! अगर हम लोगों में असली आदमी होते तो वह लड़की, वह समझदार प्राणी निश्चय ही हमें छोड़कर न खिसक जाती जैसे मछली पानी में खिसक जाती है। उवार इवानोविच, यह सब है क्या? हमारा ज़माना कब आयेगा? सच्चे इनसान हमारे देश में कब पैदा होंगे?"

"वक़्त दो," उवार इवानोविच ने जवाब दिया, "होंगे।"

"होंगे? धरती के लाल! प्रकृति की संतान! तुमने कहा: होंगे? याद रहे, मैं आपके शब्द दर्ज कर लूंगा। लेकिन मोमबत्ती क्यों बुझा रहे हैं?"

"नींद आती है, जाओ, आराम करो।"

३१

शूबिन ने सच कहा था। येलेना के विवाह की अप्रत्याशित ख़बर ने आन्ना वसील्येव्ना को चूर-चूर ही कर डाला। वह बिस्तर से लग गयीं। स्ताख़ोव ने इसरार किया कि वह बेटी को अपने पास न आने दें। लगता था कि अपने को सही मायने में घर का मालिक, परिवार का असली प्रधान दिखाने का अवसर मिलने से उनको ख़ुशी हुई। वह बराबर नौकरों को डांटते-डपटते रहते थे। बीच-बीच में गरजकर

कहते थे: "दिखा दूंगा, मैं कौन हूं! तुम्हारी अक़्ल दुरुस्त कर दूंगा, ज़रा ठहरो!" जब तक वह घर में रहते, आन्ना वसील्येव्ना येलेना को नहीं देख पाती थीं और ज़ोया की मौजूदगी से संतोष करना पड़ता था। वह बड़ी लगन से उनकी सेवा करती थी और मन में सोचती थी: "इनसारोव को बेहतर समझा – और किनकी तुलना में!" लेकिन स्ताख़ोव के जाने भर की देर थी (जो अक्सर होता था क्योंकि अव्गुस्तीना ख़्रिस्तिआनोव्ना वाक़ई लौट आयी थीं) कि येलेना अपनी मां के पास पहुंच जाती थी जो डबडबायी आंखों से चुपचाप, देर तक उसे देखती रहती थीं। यह मौन उलाहना येलेना के हृदय को किसी भी दूसरे तिरस्कार से अधिक सालता था। उसे पश्चात्ताप नहीं था, परंतु उसकी गहरी, अनंत करुणा पश्चात्ताप के ही समान थी।

"ममी, प्यारी ममी!" वह मां के हाथों को चूमते हुए कहती। "मैं और क्या करती? मेरा दोष नहीं है, मैं उन्हें प्रेम करने लगी। मैं और कुछ नहीं कर सकती थी। भाग्य को दोष दीजिए। उसीने मुझे ऐसे इनसान से मिला दिया जो पिता जी को पसंद नहीं है और जो मुझे आपके पास से ले जा रहा है।"

"आह!" आन्ना वसील्येव्ना गहरी सांस लेतीं, "इसकी याद मत दिलाओ। ज्यों ही मैं सोचती हूं, तुम कहां जा रही हो, मेरा दिल टूक-टूक होने लगता है।"

"प्यारी ममी," येलेना ने जवाब दिया, "यही सोचकर मन को तसल्ली दो कि ज़्यादा बुरा हो सकता था; मेरी जान जा सकती थी।"

"यों भी तुम्हें फिर से देखने की उम्मीद नहीं है। या तो वहां किसी झोपड़ी के पास तुम अपना दम तोड़ दोगी (आन्ना वसील्येव्ना की कल्पना में बलगारिया साइबेरिया के टुंड्रा इलाक़े जैसा था) या मैं ही जुदाई बर्दाश्त न करके चल बसूंगी।"

"मेरी अच्छी मां, ऐसी बात मत करो। भगवान ने चाहा तो हम फिर मिलेंगे। और बलगारिया में भी यहां जैसे शहर हैं।"

"कैसे शहर! वहां आज लड़ाई छिड़ी है। मुझे लगता है, आज वहां चाहे जिधर मुंह करो, सिर्फ़ तोपें गरजती हैं... क्या तुम जल्दी जानेवाली हो?"

"जल्दी ही... अगर पिता जी... वह नालिश करना चाहते हैं। वह हमें जुदा करने की धमकी देते हैं।"

आन्ना वसील्येव्ना ने आकाश की ओर देखा।

"नहीं, लेनोच्का, वह नालिश नहीं करेंगे। इस शादी के लिए मैं खुद किसी भी तरह राज़ी न होती। मौत बेहतर होती। लेकिन जो हो गया, मिटाया नहीं जा सकता। मैं किसी को अपनी बेटी के मुंह पर कालिख पोतने नहीं दूंगी।"

इसी तरह कुछ दिन और बीते। आखिर एक दिन शाम को आन्ना वसील्येव्ना ने हिम्मत बटोरी और पति के साथ अकेले बात करने शयनकक्ष में चली गयीं। सारे घर में नीरवता छा गयी। सब दबक गये। शुरू में कुछ सुनायी नहीं दिया, फिर स्ताखोव की आवाज़ गूंजी, बहस होने लगी, चिल्लाहट और कुछ-कुछ सिसकने जैसी आवाज़ आयी।... नौकरानियों और ज़ोया के साथ शूबिन एक बार फिर रक्षा के लिए दौड़ पड़ने को हुआ लेकिन कमरे में शोर थोड़ा कम होने लगा। फिर आहिस्ते से बातें हुईं और इसके बाद सब शांत हो गया। हल्की सिसकियां कभी-कभी सुनायी पड़ीं, फिर वे भी बंद हो गयीं। चाबियां खनकीं, सेफ़ खोले जाने की चीं-चीं हुई।... द्वार खुला और स्ताखोव बाहर निकले। आगे आये सभी लोगों को उन्होंने कठोर दृष्टि से देखा और क्लब रवाना हो गये। आन्ना वसील्येव्ना ने येलेना को अपने पास बुलाया, कसकर गले लगाया और आंसू बहाते हुए कहा:

"सब तय हो गया। अब वह तूमार खड़ा नहीं करेंगे।... अब तुम्हारे यहां से जाने में... हमें छोड़ जाने में कोई बाधा नहीं है।"

"क्या द्मीत्री आपके पास आकर शुक्रिया अदा कर सकता है?" येलेना ने मां के कुछ शांत होते ही उनसे पूछा।

"बेटी मेरी, थोड़ा ठहर जाओ। हमें जुदा करनेवाले को मैं अभी नहीं देख सकती।... जाने से पहले मिल लूंगी।"

"जाने से पहले," येलेना ने दुख भरे स्वर में दोहराया।

स्ताखोव "तूमार खड़ा न करने" को राज़ी हो गये परंतु आन्ना वसील्येव्ना ने बेटी को यह नहीं बताया कि अपनी रज़ामंदी उन्होंने किस क़ीमत पर दी। नहीं कहा कि उनके तमाम कर्ज़ चुकाने का

उन्होंने वायदा किया और ऊपर से चांदी के एक हज़ार रूबल नक़द हाथ में दिये। इसके बाद भी स्ताखोव ने आन्ना वसील्येव्ना को दृढ़तापूर्वक सुना दिया कि वह इनसारोव की शक्ल देखना नहीं चाहते जिसे वह दक्खिनी स्लाव ही कहते रहे। और क्लब-घर पहुंचने पर वह अपने साथी, एक पेंशनयाफ़्ता इंजीनियर-जनरल को, बिना किसी आवश्यकता के, येलेना के विवाह के बारे में बताने लगे। "सुना आपने," उन्होंने जानबूझकर बेपरवाही दिखाते हुए कहा, "मेरी बेटी ने किसी छात्र से शादी कर ली – शायद ज़्यादा पढ़ाई का नतीजा है!" जनरल ने ऐनक के भीतर से उनको देखकर "हूं" की आवाज़ की और पूछा, वह क्या खेलना चाहते हैं।

३२

रवानगी का दिन क़रीब आ रहा था। नवम्बर समाप्त होने को था, इने-गिने दिन बाक़ी थे। इनसारोव ने अपनी सारी तैयारियां काफ़ी पहले कर ली थीं और वह जल्दी से जल्दी मास्को से निकल भागने को बेचैन था। डाक्टर भी उससे जल्दी करने को कहता था। "आपको गरम जलवायु चाहिए," उसने कहा, "यहां आप ठीक न हो पायेंगे।" येलेना भी अधीर थी, इनसारोव के पीलेपन और दुबलेपन से उसे चिंता होती थी। उसकी बदल गयी शक्ल को वह अक्सर, बरबस ही भय से देखती थी। माता-पिता के घर में उसकी स्थिति असहनीय हो रही थी। मां इस तरह बिसूरती थीं मानो बेटी मर चुकी है और पिता उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। निकट आ रही जुदाई से मन ही मन वह भी पीड़ित थे, लेकिन अपनी भावनाओं को, अपनी दुर्बलता को छिपाना वह अपना, एक अपमानित पिता का कर्त्तव्य समझते थे। आन्ना वसील्येव्ना ने आखिरकार इनसारोव से मिलने की इच्छा व्यक्त की। पीछे के दरवाज़े से उसे चुपचाप अंदर लाया गया। कमरे में उसके आने के बाद काफ़ी समय तक वह उससे बात न कर सकीं, उसे ठीक से देखने में भी समर्थ न हुईं। वह आदरसूचक शांत भाव से उनकी आरामकुर्सी के पास बैठा था और उनके कुछ कहने की प्रतीक्षा कर रहा था। येलेना मां का हाथ अपने हाथ में लिए वहीं बैठी थी। आखिर

आन्ना वसील्येव्ना ने आंखें उठायीं और बोलीं, "परमात्मा आपका न्याय करेगा, द्मीत्री निकानोरोविच..." वह चुप हो गयीं और उलाहना उनके होंठों में ही मर गया।

"आप बीमार लगते हैं!" उन्होंने कहा। "येलेना, यह तो बीमार हैं!"

"मेरी तबियत ख़राब थी, आन्ना वसील्येव्ना," इनसारोव ने जवाब दिया, "अभी भी एकदम ठीक नहीं हुआ हूं। लेकिन आशा करता हूं कि अपने देश की हवा में मैं पूरी तरह स्वस्थ हो जाऊंगा।"

"हां... बलगारिया!" आन्ना वसील्येव्ना ने अस्फुट स्वर में कहा और मन में सोचा, "हे भगवान, एक बलगार, पैर क़ब्र में लटके हुए, आवाज़ में दम नहीं और आंखें फटी-फटी। सूखकर कांटा हो गया है, कोट झूलता है मानो मांगे का हो, रंग टेसू के फूल जैसा पीला है – और वह इसकी पत्नी है, इसे प्यार करती है!.. कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही..." लेकिन फ़ौरन उन्होंने अपने को सम्हाल लिया। "द्मीत्री निकानोरोविच," वह बोलीं, "आपका जाना क्या एकदम... एकदम अनिवार्य है?"

"अनिवार्य है, आन्ना वसील्येव्ना।"

आन्ना वसील्येव्ना ने उसे देखा।

"ओह द्मीत्री निकानोरोविच, भगवान आपको वह दिन न दिखाये जो मैं देख रही हूं।... मुझे वचन दीजिए कि आप इसका पूरा ख़्याल रखेंगे, इसे प्यार करेंगे।... जब तक मैं जीवित हूं, आपको किसी चीज़ की तंगी नहीं होगी!"

आंसुओं ने गला रुद्ध कर दिया। उन्होंने बाहें फैलायीं और येलेना और इनसारोव उनसे लिपट गये।

क़िस्मत में बदा दिन आख़िर आ गया। तय हुआ था कि येलेना घर पर माता-पिता से विदा लेगी और इनसारोव के फ़्लैट से सफ़र पर रवाना हो जायेगी। रवानगी बारह बजे की थी। कोई पंद्रह मिनट पहले बेरसेनेव आ गया। उसका अनुमान था कि इनसारोव के यहां उसके देशवासी होंगे जो उसे विदा करना चाहेंगे। मगर वे

पहले ही जा चुके थे। रहस्यमय वे दो व्यक्ति भी, जिनसे हमारे पाठक परिचित हैं, चले गये थे (इनसारोव की शादी में वे ही गवाह बने थे)। "नेक साहब" को दर्ज़ी ने झुककर सलाम किया। किरायेदार के जाने के दुख से, या हो सकता है, फ़रनीचर मिल जाने की ख़ुशी में उसने ज़्यादा चढ़ा ली थी। पत्नी जल्दी ही उसे पकड़ ले गयी। कमरे में बोरिया-बिस्तर लपेटा जा चुका था। रस्सी से बंधा बक्सा फ़र्श पर रखा था। बेरसेनेव विचारों में खो गया, बहुत सी बातें उसे याद आ रही थीं।

बारह कभी के बज चुके थे। कोचवान ने घोड़ा जोत दिया था, पर "नव दंपति" अभी नहीं आये थे। आख़िर ज़ीने पर जल्दी-जल्दी चढ़ने की आवाज़ आयी और इनसारोव व शूबिन के साथ येलेना कमरे में आ गयी। येलेना की आंखें लाल थीं। वह मां को मूर्छित छोड़ आयी थी। विदाई अत्यंत दुखद रही थी। बेरसेनेव को येलेना ने एक सप्ताह से अधिक समय से नहीं देखा था। पिछले अरसे में वह स्ताख़ोव परिवार के यहां कभी-कभा ही गया था। उससे मिलने की येलेना को आशा नहीं थी। "आप! आने के लिए शुक्रिया!" कहते हुए वह उसके गले से जा लिपटी। इनसारोव ने भी उसका आलिंगन किया। ख़ामोशी असह्य हो उठी। ये तीन लोग क्या कह सकते थे? ये तीन दिल क्या महसूस कर रहे थे? कुछ कहकर इस पीड़ा को दूर करने की आवश्यकता शूबिन ने समझी।

"तीनों फिर मिल गये," उसने कहा, "आख़िरी बार मिल रहे हैं! आइये, क़िस्मत के लेखे के आगे सिर झुकायें, बीती बातों को स्नेह से याद करें और नयी ज़िंदगी के लिए दुआ मांगें! 'सफ़र है लम्बा साथ खुदा का,'" उसने गाना शुरू किया, पर रुक गया। यकायक उसे शर्म आयी और बड़ा अटपटा लगा। जहां शव पड़ा हो, वहां गाना गाना पाप होता है और इस घड़ी, इस कमरे में भूतकाल मर रहा था जिसकी उसने याद दिलायी थी, वह यहां जमा हुए लोगों का भूतकाल था। वह भले ही इसलिए मर रहा हो कि नये रूप में फिर से जन्म ले... लेकिन मर तो रहा था।

"तो येलेना," इनसारोव ने पत्नी की ओर मुड़कर कहा, "लगता है सब हो गया? किराया वग़ैरा चुका दिया, सामान समेट लिया। बस इस बक्से को नीचे ले जाना बाक़ी है। घर मालिक!"

वह पत्नी और बेटी के साथ कमरे में आ गया। कुछ-कुछ झूमते हुए उसने इनसारोव की हिदायत सुनी, बक्सा अपने कंधे पर रखा और जूतों की आवाज़ करता हुआ फटाफट ज़ीने से नीचे उतर गया।

"अब रूसी परम्परा के अनुसार बैठना चाहिए," इनसारोव बोला।

सब बैठ गये। बेरसेनेव पुराने सोफ़े पर बैठा। बराबर में येलेना थी। घर मालकिन और उसकी बेटी दहलीज़ पर सिमट गये। सब चुप थे। वे ज़बरदस्ती मुस्करा रहे थे लेकिन कोई नहीं जानता था, क्यों। विदाई के सिलसिले में हर कोई कुछ कहना चाहता था और हर कोई (ज़ाहिर है, घर मालकिन और उसकी बेटी को छोड़कर जो सिर्फ़ आंखें फाड़े देख रहे थे) — हर कोई महसूस कर रहा था कि ऐसे समय में सिर्फ़ आम बात की जाती है। यह सारपूर्ण, बुद्धिमानी की अथवा हार्दिक बात का समय नहीं होता; वे तो दिखावटी बन जायेंगी। इनसारोव सबसे पहले उठा और उसने क्रॉस का निशान बनाया। बोला, "हमारे कमरे, अलविदा!"

चुम्बन लिए गये — आवाज़ भरे, पर जुदाई के ठंडे चुम्बन। विदाई, अनकही कामनाएं, चिट्ठियां लिखने के वायदे और रुद्ध गलों से जुदा होते समय के आख़िरी शब्द कहे गये।

आंसुओं से तर येलेना गाड़ी में बैठ गयी। इनसारोव ने सावधानी से उसके पैरों को लोई से ढंक दिया। शूबिन, बेरसेनेव, घर मालिक, उसकी पत्नी, सिर पर लाज़िमी स्कार्फ़ बांधे उनकी बेटी, दरबान, धारीदार चोग़ा पहने कोई अनजाना कारीगर — सब ड्योढ़ी के पास खड़े थे कि सहसा एक आलीशान बर्फ़-गाड़ी जिसमें बढ़िया नस्ल का घोड़ा जुता था, दौड़ती हुई अहाते में दाख़िल हुई और उससे स्ताख़ोव, अपने ओवरकोट के कालर से बर्फ़ झाड़ते हुए, नीचे कूद पड़े।

"अभी भी मिल गये, ख़ुदा का शुक्र है," वह ज़ोर से चिल्लाये और दूसरी गाड़ी की ओर दौड़ गये। "लो येलेना, तुम्हारे लिए माता-पिता का अंतिम आशीर्वाद है," यह कहते हुए उन्होंने गाड़ी के चंदोवे के नीचे झुककर कोट की जेब से छोटा सा आइकन * निकाला

---

* धार्मिक प्रतिमा।

जो मख़मल की थैली में सिला हुआ था और उसे येलेना के गले में पहना दिया। वह रो पड़ी और उनके हाथों को चूमने लगी। उधर कोचवान ने बर्फ़-गाड़ी की अगाड़ी से शैम्पेन की बोतल और तीन गिलास निकाले।

"अच्छा! विदा करना चाहिए ... शुभकामना करनी चाहिए ..." स्ताख़ोव ने कहा और स्वयं उनकी आंखों से आंसू उनके ओवरकोट के फ़र कालर पर टपक पड़े। वह शैम्पेन ढालने लगे किन्तु उनके हाथ कांप रहे थे, फ़ेन गिलास में सिरे तक आ गया और नीचे बर्फ़ पर गिरने लगा। एक गिलास उन्होंने ख़ुद लिया और दूसरे दो येलेना और इनसारोव को दिये जो तब तक उसके बराबर में गाड़ी में बैठ चुका था। "भगवान करे ..." स्ताख़ोव ने कहना शुरू किया, पर वाक्य पूरा न कर सके। उन्होंने शैम्पेन पी ली। दूसरों ने भी गिलास ख़ाली कर दिये। "सज्जनो, अब आप लोगों को," वह शूबिन और बेरसेनेव की ओर मुख़ातिब होकर कहने लगे, लेकिन तब तक कोचवान ने घोड़े को हांक दिया। स्ताख़ोव गाड़ी के बराबर में दौड़े। "ख़त ज़रूर लिखना," वह फटती हुई आवाज़ में चिल्लाये। येलेना सिर बाहर निकालकर बोली, "अलविदा पापा, अलविदा अंद्रेय पेत्रोविच, पावेल याकोव्लेविच, अलविदा सब लोगों, अलविदा रूस!" और वह अंदर हो गयी।

कोचवान ने चाबुक फटकारा, सीटी बजायी और गाड़ी चरचराते हुए फाटक से दायीं ओर मुड़ी और आंखों से ओझल हो गयी।

३३

अप्रैल महीने का सुहावना दिन था। वेनिस को रेत की संकरी पट्टी लीडो से जिसे सागर ने बनाया था, अलग करनेवाले चौड़े लेगून में नुकीली अगाड़ीवाला गोंडोला तैर रहा था। लम्बे डांडे पर खिवैय्ये के हर धक्के के साथ वह हल्के से डोलता हुआ आगे बढ़ता जाता था। उसके छोटे केबिन में चमड़े की मुलायम गद्दियों पर येलेना और इनसारोव बैठे थे।

येलेना की आकृति मास्को छोड़ने के बाद से अधिक नहीं बदली थी, परंतु चेहरे का भाव बदल गया था। वह अधिक एकाग्र व

गंभीर हो गया था और आंखों में साहस भरा विश्वास झलकता था। सारा शरीर खिल उठा था और उसके श्वेत ललाट व गुलाबी गालों के इर्द-गिर्द झूलनेवाले बाल अधिक घने व आकर्षक लगते थे। केवल उस समय जब वह मुस्कराती नहीं होती थी, उसके होंठों की कठिनाई से पकड़ में आनेवाली हल्की रेखा निरंतर उपस्थित छिपी चिंता का भेद खोल देती थी। इसके विपरीत इनसारोव के चेहरे का भाव वही बना हुआ था जबकि आकृति में भयंकर परिवर्तन आ गया था। वह दुबला हो गया था, उम्र ज़्यादा लगने लगी थी, पीलापन बढ़ गया था और वह झुक भी गया था। रह-रहकर वह सूखी खांसी खांसता था और अंदर घुसी उसकी आंखों से अद्भुत ज्योति निकलती थी। रूस से आते हुए वह लगभग दो महीने वियना में बीमार पड़ा रहा था और मार्च के अंत में ही पत्नी के साथ वेनिस पहुंचा था। उसे वहां से ज़ारा होकर सेर्बिया और बलगारिया जाने की उम्मीद थी, दूसरे सभी रास्ते उसके लिए बंद थे। डैन्यूब नदी के किनारे लड़ाई छिड़ी थी। ब्रिटेन और फ़्रांस ने रूस के खिलाफ़ युद्ध की घोषणा कर दी थी।* सभी स्लाव प्रदेश भड़क उठे थे और विद्रोह की तैया-रियां कर रहे थे।

गोंडोला लीडो के भीतरी किनारे से जा लगा। येलेना और इनसारोव उतरकर तंग रेतीले रास्ते से लीडो के बाहरी किनारे – सागर की ओर चल पड़े। रास्ते के दोनों ओर छोटे-छोटे क्षय-ग्रस्त पेड़ लगे थे (वे हर वर्ष लगाये जाते हैं और हर वर्ष मर जाते हैं)।

वे तट के बराबर में चलने लगे। एड्रियाटिक सागर की मटमैली-नीली लहरें उनके आगे दौड़ी आती थीं। वे फ़ेन उगलती थीं, सरसरा-ती थीं, आगे बढ़ती थीं और रेती पर छोटी-छोटी सीपियां और समुद्री घास के फुचक्के छोड़कर वापस लौट जाती थीं।

"कितनी उदास जगह है!" येलेना बोली। "डर लगता है, कहीं ठंड तुम्हारे लिए ज़्यादा न हो। लेकिन मैं अनुमान लगा सकती हूं, तुम यहां क्यों आना चाहते थे।"

---

* तुर्की ने रूस के खिलाफ़ लड़ाई का ऐलान ४ अक्तूबर १८५३ को किया। ब्रिटेन और फ़्रांस ने तुर्की के पक्ष में क्रीमिया युद्ध में शामिल होकर रूस के खिलाफ़ युद्ध की घोषणा १५-१६ मार्च १८५४ को की।

"ठंड!" इनसारोव ने तुरंत कड़वी हंसी हंसते हुए दोहराया। "ठंड से घबराने लगा तो योद्धा मैं कैसा होऊंगा! और मैं यहां आया क्यों... सो तुम्हें बताता हूं। मैं इस सागर को देखता हूं और मुझे लगता है कि मेरी मातृभूमि निकट है। वह वहां है," उसने पूरब की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। "यह हवा वहीं से आ रही है।"

"यह हवा उस जहाज़ को तो नहीं ले आयेगी जिसका तुम्हें इंतज़ार है?" येलेना ने पूछा। "वहां वह सफ़ेद पाल दिखायी देती है। कहीं जहाज़ तो नहीं आ रहा?"

इनसारोव ने दूर सागर में ध्यान से देखा जिधर येलेना इंगित कर रही थी।

"रेनडिच ने हफ़्ते भर में हमारे लिए पूरा बंदोबस्त करने का वायदा किया है," उसने कहा। "मेरे ख़्याल में उसका भरोसा किया जा सकता है।..." फिर अचानक वह उत्साह से भरकर बोला, "सुना तुमने, येलेना, कहते हैं डलमाटिया के ग़रीब मछियारों ने अपने सीसे के लंगर गोलियां बनाने के लिए दे दिये हैं! जानती हो, उन्हीं के भार से जाल नीचे तली में जाता है। उनके पास पैसा नहीं था, मछलीमारी से ही उनकी गुज़र-बसर होती है – मगर अपनी आख़िरी सम्पत्ति उन्होंने ख़ुशी से कुरबान कर दी। अब उन्हें खाने के लाले पड़ गये हैं। कैसा जीवट है इन लोगों में!"

"ख़बरदार!" पीछे से कोई जर्मन में हेकड़ी के साथ चिल्लाया। घोड़े की टापों की आवाज़ आयी और छोटी भूरी वर्दी पहने, हरी टोपी लगाये एक आस्ट्रियाई अफ़सर उनके बराबर से घोड़ा दौड़ाता हुआ निकल गया।... मुश्किल से उन्हें एक किनारे हटने का समय मिला।

इनसारोव ने भुनकर उसकी ओर देखा।

"वह क़सूरवार नहीं है," येलेना बोली। "जानते हो, घोड़ों के अभ्यास के लिए उनके पास कोई और जगह नहीं है।"

"क़सूरवार भले न हो," इनसारोव ने कहा, "मगर अपनी चीख़, अपनी मूंछों, अपनी टोपी और अपनी पूरी शक्ल से उसने मेरा ख़ून खौला दिया। चलो, वापस चलें।"

"हां, लौटा जाये, द्मीत्री। यहां हवा भी तेज़ है। मास्को की बीमारी के बाद तुमने ठीक से फ़िक्र नहीं की और वियना में



उसकी क़ीमत चुकानी पड़ी। अब सावधानी बरतनी चाहिए।"

इनसारोव चुप रहा, केवल पहलेवाली कड़वी मुस्कान फिर से उसके होंठों पर आ गयी।

"तुम चाहो तो ग्रैंड कैनाल पर नौका विहार करें?" येलेना ने पूछा। "जब से हम यहां आये हैं, हमने वेनिस अच्छी तरह नहीं देखा। शाम को थियेटर चलेंगे। मेरे पास बॉक्स के दो टिकट हैं। सुना है, नया ओपेरा पेश कर रहे हैं। तुम चाहो तो आज का दिन हम एक दूसरे के लिए ही रखें? राजनीति, लड़ाई और सभी बातों के बारे में भूल जायेंगे – सिर्फ़ यह याद रखेंगे कि हम साथ-साथ जी रहे हैं, सांस ले रहे हैं, सोच-विचार कर रहे हैं और हम हमेशा के लिए जुड़ गये हैं।... चाहते हो?"

"तुम यह चाहती हो, येलेना," इनसारोव ने जवाब दिया, "तो में भी यही चाहता हूं।"

"मैं जानती थी," मुस्कराते हुए येलेना ने कहा। "चलो चलें।"

वे गोंडोला में लौट आये और बैठकर बोले कि आराम से ग्रैंड कैनाल की सैर करेंगे।

जिसने अप्रैल में वैनिस नहीं देखा, वह इस जादुई शहर के अवर्णनीय सौंदर्य की कल्पना नहीं कर सकता। मृदुल और कोमल वसंत वेनिस में उसी प्रकार आता है जैसे अदभुत जेनोआ में धूप से किलकती गर्मी और प्राचीन, महान रोम में सोना और लाली बरसाता पतझड़ का ज़माना। वेनिस का सौंदर्य वसंत की तरह तुम्हें गुदगुदाता है और आकांक्षा जगाता है। एक अनुभवहीन हृदय को वह रहस्यमय तो नहीं, किन्तु छिपे हुए और शीघ्र ही प्राप्त होनेवाले सुख के आश्वासन की तरह ललचाता और उत्तेजित करता है। वह निर्मल, स्पष्ट और किसी मोहक शांति की उनींदी धुंध में लिपटा जान पड़ता है। उसमें सब कुछ मूक है, पर स्वागत करता हुआ। वह नारी के समान है। नाम भी ऐसा ही है। और उसे सुंदर अकारण नहीं कहा जाता। विशाल राजमहल और गिरजे किसी युवा देवता के सुंदर सपने की तरह हल्के-फुल्के और अनुपम हैं। नहरों की मौन तरंगों की हरी-भूरी चमक व रेशमी थरथराहट, गोंडोलों की शांतिमय गति और नगरों जैसे कर्कश स्वरों, उठा-

पटक, धूम-धड़ाके तथा कोलाहल की अनुपस्थिति में एक अदभुत कथालोक जैसा वशीभूत करनेवाला आनंद है। यहां के निवासी आपसे कहते हैं, "वेनिस मर रहा है", "वेनिस सुनसान हो गया"। परंतु हो सकता है, यह अंतिम आकर्षण, सौंदर्य के विकास और बहार के समय ही मुरझा जाने का आकर्षण उसमें पहले न रहा हो। जिसने इसे नहीं देखा, वह इसे नहीं जानता। न तो कानाले-त्ती में और न गुआर्दी* में (नये चित्रकारों की बात छोड़िये) इतनी क्षमता है कि यहां की वायु की रुपहली कमनीयता, दूर भागते फिर भी निकट यहां के विस्तार और सुंदर रेखाओं तथा घुल रहे रंगों के मनमोहक मेल को अंकित कर सकें। जिसका समय बीत गया या जिसे जीवन ने परास्त कर दिया, उसे वेनिस नहीं आना चाहिए; उसके लिए तो यह आरंभ के भंग हो गये सपनों की याद की तरह कड़ुवा होगा। और मधुर यह उसके लिए होगा जिसमें अभी भी ओज है और जिसे अपने से संतोष है। अपना सुख लेकर वह इसके मनोहर आकाश के नीचे आये और वह चाहे कितना भी उज्ज्वल क्यों न हो, वेनिस उसके सुख में अपने अक्षय प्रकाश से चार चांद लगा देगा।

गोंडोला, जिसमें इनसारोव और येलेना बैठे थे, रीवा दे चियावोनी, डोज** के महल और पिआजेत्ता के बराबर से मंथर गति से गुज़रकर ग्रैंड कैनाल में दाखिल हुआ। दोनों ओर संगमरमर के महलों की क़तारें थीं। जान पड़ता था कि वे धीमे से तैरते हुए निकले जा रहे हैं और आंखों को अपनी सम्पूर्ण सुंदरता जी भरकर देखने और हृदयंगम करने का समय भी नहीं दे रहे। येलेना को बड़ा सुख मिल रहा था। उसके आकाश की नीलिमा में बस एक काला बादल था और लगता था कि वह भी छंट रहा है। उस दिन इनसारोव की तबियत कहीं बेहतर थी। रिआल्तो की खड़ी मेहराब के पास तक जाकर वे लौट पड़े। गिरजों की ठंड से येलेना को इनसारोव के लिए डर लगता था... इतने में उसे अनुपम कला

---

* १८वीं शताब्दी के वेनिस के चित्रकार।

** वेनिस के व्यापारिक प्रजातंत्र का जीवन भर के लिए निर्वाचित प्रधान।

अकादमी 'देल्ले बेल्ले आर्ती' की याद आ गयी और उसने गोंडोला के खिवैय्ये से उधर चलने को कहा। संग्रहालय बड़ा नहीं था और थोड़े ही समय में उन्होंने उसके सभी हॉलों को देख लिया। वे न तो कला-पारखी थे और न तथाकथित कलाप्रेमी, इसलिए अपने को सब कुछ देखने के लिए मजबूर नहीं किया। उनके मन अचानक सहज आनंद से भर गये और हर वस्तु उन्हें बहुत दिलचस्प जान पड़ने लगी (ऐसी अनुभूति बच्चों को आम तौर पर होती है)। तिंतोरेत्तो के चित्र 'सेंट मार्क' को देखकर, जिसमें वह सताये जा रहे गुलाम को बचाने के लिए पानी में मेंढक के कूदने की तरह आकाश से कूदते हैं, येलेना हंसते-हंसते इतनी बेहाल हुई कि तीन अंग्रेज़ दर्शक अपना सा मुंह देखते रह गये। उधर इनसारोव को हरा अंगरखा पहने बलवान व्यक्ति की पिंडलियां और पीठ देखकर बड़ा मज़ा आया जो तीत्सिआन के चित्र 'असम्पशन'* के अग्रभाग में मैडोना के पीछे हाथ उठाये खड़ा है। हां, स्वयं मैडोना – शांत भाव और गरिमा के साथ परमपिता परमेश्वर की ओर उन्मुख सुंदर और सशक्त नारी ने इनसारोव और येलेना, दोनों को प्रभावित किया। चीमा द कोनेल्यानो का गंभीर धार्मिक चित्र भी उन्हें अच्छा लगा। अकादमी से बाहर निकलते हुए उन्होंने एक बार फिर मुड़कर खरगोश जैसे आगे को निकले लम्बे दांतों और झूलते गलमुच्छों-वाले अंग्रेज़ों को देखा जो पीछे आ रहे थे – और वे हंस पड़े। उन्होंने अपने खिवैय्ये को देखा जो छोटी जाकेट और ऊंची पैंट पहने था – और वे हंस पड़े। फिर उन्होंने सिर के बीचोंबीच सफ़ेद बालों के गुच्छेवाली फेरीवाली को देखा – और वे पहले से ज़्यादा ज़ोर से हंसे। आखिर उन्होंने एक दूसरे के चेहरे देखे और वे खिलखिलाकर हंसने लगे। इसके बाद गोंडोला में बैठते ही उन्होंने एक-दूसरे के हाथ कसकर थाम लिए। वे होटल पहुंचे, दौड़कर अपने कमरे में गये और खाने के लिए आर्डर दे दिया। प्रसन्नता का यह भाव खाने के समय भी बना रहा। उन्होंने एक-दूसरे की प्लेटों को खाने से पाट दिया और मास्को के मित्रों के नाम पर जाम उठाये। ज़ायके-दार मछली लाने के लिए उन्होंने होटल के बैरे की तारीफ़ की

---

* ईसाई धर्म के अनुसार सशरीर स्वर्गारोहण।

और इसरार किया कि वह जीवित समुद्री खाना लाये। बैरे ने कंधे बिचकाये, फ़र्श पर पैर रगड़ा और कमरे से निकलते हुए सिर हिलाया। एक बार तो ठंडी सांस भरते हुए उसने आहिस्ते से कह भी दिया: बेचारे! खाने के बाद वे दोनों थियेटर चले गये।

ओपेरा वेर्डी का था। सच कहा जाये तो काफ़ी घटिया है हालांकि सारे योरप के स्टेजों पर सफलता से पेश किया जा चुका है। इस 'ला त्रावियाता' से हम रूसी लोग भी अच्छी तरह परिचित हैं। वेनिस में सीज़न खतम हो गया था, इसलिए कोई भी गायक औसत से ऊंचे दर्जे का नहीं था। हरेक गले में जितना ज़ोर था, उतना चीखता था। वियालेत्ता की भूमिका में उतरनेवाली कलाकार का कोई नाम नहीं था और उसके प्रति पब्लिक के निरुत्साह से साफ़ था कि उसे कोई खास पसंद नहीं किया जाता। फिर भी ऐसा नहीं था कि उसमें प्रतिभा न हो। लड़की जवान थी, आंखें काली थीं, पर विशेष सुंदर नहीं थी। गला पूरी तरह सधा हुआ नहीं था और अभी ही फटने लगा था। वेशभूषा सुरुचिहीन और एकदम मामूली थी। बालों के ऊपर लाल जाली थी। बदरंग नीली सैटिन की फ़ॉक उसके सीने को दबाये थी। मोटे दस्ताने उसकी नुकीली कोहनियों तक पहुंचते थे। वह युवती, जो शायद बेरगामो के किसी गड़रिये की बेटी थी, भला जान भी कैसे सकती थी कि पेरिस की नाज़नीं का पहनावा कैसा होता है! स्टेज पर चलने-फिरने का ढंग उसे नहीं आता था। परंतु उसके अभिनय में ईमानदारी और निष्कपट सादगी बहुत थी। गाना उसने अद्भुत उछाह और ठेके के साथ गाया जैसे इतालवी लोगों को छोड़ और कोई नहीं गा सकता। मंच के पास अंधेरे बॉक्स में येलेना और इनसारोव दो ही थे। कला अकादमी में आनंद का जो मूड उन पर हावी हो गया था, अभी भी बना हुआ था। मोहिनी के पाश में बंधनेवाले अभागे युवक का पिता जब मटर जैसे रंग के कोट और खिंचे-फैले सफ़ेद विग में मंच पर आया और खुद ही पहले से सकुचाते हुए, नीरस बास स्वर में "ट्रेमोलो" गाने के लिए टेढ़ा करके मुंह खोला तो ये दोनों ठट्ठा मारकर हंसते-हंसते रुक गये।... मगर वियालेत्ता के अभिनय ने उन्हें प्रभावित किया।

"इस बेचारी लड़की के लिए इक्के-दुक्कों को छोड़, कोई

ताली नहीं बजा रहा," येलेना ने कहा। "लेकिन मैं इसे दूसरे दर्जे की किसी भी दंभ भरी हस्ती से हज़ारगुनी बेहतर समझती हूं जिसे केवल असर डालने की चिंता होती है और इसके लिए अंग-प्रत्यंग को तोड़ती-मरोड़ती है। यह लड़की तमाशेबाज़ी नहीं कर रही ; ज़रा देखो, पब्लिक की तरफ़ इसका ध्यान ही नहीं है।"

इनसारोव बॉक्स के अगले सिरे पर झुक गया और टकटकी बांधकर वियालेत्ता को देखने लगा।

"हां," वह बोला, "इसके लिए यह तमाशा नहीं है। यह तो मौत को निकट देख रही है।"

येलेना मौन हो गयी।

तीसरा अंक आरंभ हुआ। पर्दा उठा।... सामने पलंग, अंधेरा करने के लिए खिंचे पर्दे, दवा की बोतलें और ढंके हुए लैम्प को देखकर येलेना कांप गयी।... कुछ ही पहले की बातें उसे याद हो आयीं... दिमाग़ में कौंधा, "और भविष्य क्या होगा?... और वर्तमान?" फिर मानो अभिनेत्री की दिखावटी खांसी के जवाब में ही बॉक्स में इनसारोव की दबी हुई सचमुच की खांसी सुनायी पड़ी।... येलेना ने तिरछी नज़र से उसे देखा और फ़ौरन चेहरे पर उद्वेगरहित शांत भाव ले आयी। इनसारोव समझ गया और मुस्कराकर धीमे-धीमे गुनगुनाने लगा।

जल्दी ही वह चुप हो गया। वियालेत्ता का अभिनय बेहतर से बेहतर और उन्मुक्त होता जाता था। सभी फालतू, बेकार की बातों को उसने भुला दिया और अपने को पा लिया जो एक कलाकार के लिए तृप्ति की बिरली और सर्वोच्च उपलब्धि है! अचानक उसने वह रेखा पार कर ली जिसका वर्णन करना असंभव है परंतु जिसके आगे सौंदर्य का वास होता है। दर्शक चैतन्य हुए और दंग रह गये। फटे गलेवाली असुंदर युवती पब्लिक पर जादू डाल रही थी, उसे अपने वश में कर रही थी। अब तो गायिका के गले से भी फटा हुआ स्वर नहीं निकल रहा था, उसमें गरमाहट और शक्ति भर गयी थी। आया अलफ़ेदो और वियालेत्ता की ख़ुशी भरी चीख़ से तूफ़ान पैदा हो गया जिसे उन्माद ही कहा जा सकता है और जिसके आगे हमारे उत्तरी दर्शकों की तमाम वाहवाही एकदम फीकी पड़ जाती है।... क्षण भर की बात थी—और दर्शक फिर शांत हो

गये। दुगाना शुरू हुआ जो ओपेरा का श्रेष्ठतम अंश है। इसमें स्वरकार पगली सनक में बरबाद हुई युवावस्था पर तमाम शोक और हताश व शक्तिहीन प्रेम के अंतिम संघर्ष को वाणी देने में समर्थ हुआ। पूरी तरह तन्मय, आम संवेदना के ज्वार में ऊपर उठती और आंखों में कलाकार के आनंद तथा सच्ची यातना के आंसू लिए गायिका ने अपने को उठानेवाली लहर के हवाले कर दिया। उसका रूप बदल गया। मौत के भयंकर पिशाच के आगे, जो यकायक निकट आ गया था, "मुझे जीने दो – भरी जवानी में क्यों मरना!" – ये शब्द आकाश तक को भेदनेवाली गुहार के रूप में उसके कंठ से इतनी शक्ति से निकले कि सारे का सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट और उत्साह भरी चीखों से गूंज उठा।

येलेना के शरीर में ठंडी सिहरन दौड़ गयी। धीरे से अपने हाथ से उसने इनसारोव का हाथ ढूंढा और मिल जाने पर कसकर थाम लिया। उसने भी हाथ दबाया परंतु न तो इसने उसके चेहरे की ओर देखा और न इनसारोव ने इसके चेहरे की ओर। हाथों का यह थामा जाना कुछ घंटे पहले के हाथ मिलाने जैसा तनिक भी नहीं था जब गोंडोला में उन्होंने एक-दूसरे का अभिनंदन किया था।

वे एक बार फिर ग्रैंड कैनाल से अपने होटल की ओर रवाना हुए। रात हो गयी थी – उज्ज्वल और कोमल रात। वे ही राजमहल फिर से मिलने के लिए बढ़े आते थे लेकिन वे कुछ भिन्न दीखते थे। जिन पर चंद्रमा का प्रकाश पड़ रहा था, वे रुपहली आभा लिए सफ़ेद दिखायी देते थे और इस सफ़ेदी में सजावट की बारीकियां तथा खिड़कियों व छज्जों की रेखाएं घुल-मिल गयी थीं। उधर छाया की हल्की चादर ओढ़े भवनों में ये रेखाएं अत्यंत स्पष्ट थीं। लगता था कि छोटी-छोटी लाल रोशनियोंवाले गोंडोले और अधिक निःशब्दता, और अधिक तेज़ी से दौड़े जा रहे हैं। उनकी इस्पाती चोंचें रहस्यमय ढंग से अंधेरे में चमकती थीं और रहस्यमय ढंग से ही पतवारें जलधारा की रुपहली तरंगों के ऊपर उठ-गिर रही थीं। गोंडोलों के खिवैय्यों के संक्षिप्त और धीमे उद्गार यहां-वहां मुखरित होते थे (अब वे कभी नहीं गाते)। और कोई आवाज़ लगभग सुनायी नहीं पड़ती थी। होटल जिसमें इनसारोव और येलेना ठहरे थे रीवा दे चियावोनी पर था। वहां पहुंचने से पहले

ही वे गोंडोला से उतर गये और 'सेंट मार्क' चौक के इर्द-गिर्द, मेहराबों के नीचे कई चक्कर लगाये जहां छोटे-छोटे कॉफ़ी-हाउसों के सामने मौज करते बहुत से लोग जमा थे। पराये नगर में, पराये लोगों के बीच अपने प्रिय व्यक्ति के साथ घूमने में एक अलग आनंद है। सब कुछ सुंदर और महत्वपूर्ण जान पड़ता है और हरेक के लिए हर्ष और शांति की कामना, अपने जैसे ही सुख की कामना हृदय से निकलती है। किन्तु अब येलेना अपने सुख का निश्चिंत भाव से अनुभव करने की स्थिति में नहीं थी। कुछ समय पहले की अनुभूतियों से थरथरा उठा उसका हृदय शांत नहीं हो रहा था। और इनसारोव ने डोज के महल के बराबर से गुजरते हुए चुपचाप आस्ट्रियाई तोपों के दहानों की ओर इशारा किया जो नीची मेहराबों में उठे हुए थे। उसने टोप खींचकर भौंहों तक कर लिया। वह थक भी गया था। उन्होंने सेंट मार्क गिरजे और उसके गुम्बदों को आ-खिरी बार देखा जिनके नीले सीसे पर रह-रहकर चांदनी का मंद प्रकाश चमक उठता था, और वे आहिस्ता-आहिस्ता ठिकाने पर लौट आये।

कमरे की खिड़कियां रीवा दे चियावोनी और जियूदेक्का के बीच फैले चौड़े लैगून की ओर खुलती थीं। उनके होटल के लगभग ठीक सामने सेंट गिओर्गिओ गिरजे की नुकीली मीनार थी। दायीं ओर डोगाना का सुनहरा गोला आकाश में ऊंचा चमकता था। पास में नयी नवेली दुलहन की तरह सजा, पल्लादिओ* द्वारा निर्मित सुंदर गिरजा रेदेनतोरे था। बायीं ओर जहाज़ों के मस्तूल और स्टीमरों की चिमनियां काली दिखती थीं। कहीं-कहीं आधे खुले पाल विशाल पंखों की तरह लटके थे और फरहरे मुश्किल से डोल रहे थे। इनसारोव खिड़की के पास बैठ गया मगर येलेना ने उसे दृश्य का आनंद देर तक उठाने नहीं दिया। अचानक उसे बुखार चढ़ आया और भयंकर कमज़ोरी ने पस्त कर दिया। येलेना ने उसे बिस्तर पर लिटाया और जब वह सो गया तो धीरे से खिड़की के पास लौट गयी। रात शांत और दुलार भरी थी, नीली हवा में निष्कलंक कोमलता का अजस्र प्रवाह हो रहा था और

---

* १६वीं शताब्दी के प्रसिद्ध इतालवी स्थापत्यकार।

इस उज्ज्वल आकाश के नीचे, इन पवित्र निर्दोष किरणों में हर पीड़ा, हर दुख को घटकर तिरोहित हो जाना चाहिए था! "हे भगवान," येलेना सोचने लगी, "मृत्यु क्यों हो? जुदाई, बीमारी और आंसुओं की क्या आवश्यकता है? या फिर यह सौंदर्य, आशा की यह मधुर भावना ही क्यों है, सुरक्षित आश्रय, विश्वसनीय बचाव और चिरंतन रक्षा की शांतिदायिनी चेतना क्यों है? मुस्करानेवाले, आशीर्वादों की वर्षा करनेवाले इस आकाश और इस सुखमयी, विश्राम भरी धरती का अर्थ क्या है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि यह सब हमारे भीतर है और हमारे बाहर शाश्वत शीत और सन्नाटा है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि हम अकेले हैं—नितांत अकेले और वहां, हर जगह, इन तमाम अथाह गहराइयों और अनंत विस्तारों में जो कुछ है—वह सब... सब कुछ हमारे लिए पराया है? तो फिर ईश की प्रार्थना करने की लालसा और उससे आनंद की प्राप्ति आखिर किसलिए? (उसके मन में गूंज उठे शब्द "भरी जवानी में क्यों मरना...") क्या हृदय द्रवित करना, होनी को टालना, उनकी रक्षा करना... सचमुच असंभव है? हे भगवान! क्या चमत्कार में विश्वास नहीं किया जा सकता?" उसने भिंची मुट्ठियों पर अपना सिर रख लिया। "क्या यही अंत है?" वह फुसफुसायी। "क्या सचमुच यही अंत है! मैं कुछ मिनट नहीं, कुछ घंटे नहीं, कुछ दिन भी नहीं—बल्कि हफ़्तों सुखी रही। इसका मुझे क्या अधिकार था?" अपने सुख से वह भयभीत हो गयी। वह सोचने लगी, "क्या यह प्राप्त नहीं हो सकता? कहीं ऐसा तो नहीं है कि यह मुफ़्त में नहीं मिलता? मिल तो स्वर्ग से रहा था... और हम साधारण लोग हैं, बेचारे हाड़-मांस के पापी... भरी जवानी में क्यों मरना!... ओ निष्ठुर पिशाच, दूर हो जा! उनके जीवन की, केवल मुझे नहीं, दूसरों को भी आवश्यकता है!"

"कहीं यह सज़ा तो नहीं है," वह फिर सोचने लगी, "कहीं अब हमें अपने अपराध का पूरा हिसाब तो नहीं चुकाना होगा? मेरी आत्मा चुप रही थी, वह अभी भी चुप है। लेकिन क्या यह निर्दोष होने का सबूत है? हे भगवान, क्या हम वास्तव में ऐसे अपराधी हैं! इस रात, इस आकाश के रचयिता, क्या सचमुच तुम हमें सज़ा देना चाहोगे क्योंकि हमने प्यार किया? और अगर ऐसी

बात है, अगर वह अपराधी हैं, अगर मैं अपराधी हूं," उसने उत्ते-जित होकर सोचा, "तो उनको, हे भगवान, हम दोनों को कम से कम इज़्ज़त की मौत, सम्मान की मौत मरने दो – यहां, इस अंधेरे कमरे में नहीं, बल्कि वहां, उनके वतन के मैदानों में जाकर मरने दो!"

"और बेचारी, अकेली मां का दुख?" उसने अपने से पूछा और प्रश्न का कोई उत्तर न पाकर घबरा उठी। येलेना नहीं जानती थी कि हर व्यक्ति का सुख दूसरे व्यक्ति के दुख पर आधारित होता है और जिस तरह मूर्ति के खड़े होने के लिए चौकी आवश्यक है, उसी तरह एक व्यक्ति के लाभ और सुविधाओं के लिए दूसरे व्यक्तियों की हानि और असुविधाओं की आवश्यकता होती है।

"रेनडिच!" नींद में इनसारोव बड़बड़ाया।

येलेना दबे पांव उसके पास गयी और उसके ऊपर झुककर चेहरे से पसीना पोंछा। थोड़ी देर तक इनसारोव ने तकिये पर सिर इधर-उधर पटका फिर शांत हो गया।

वह फिर से खिड़की की तरफ़ गयी और फिर से विचारों के भंवर में डूबने-उतराने लगी। उसने अपने को समझाने की, विश्वास दिलाने की कोशिश की कि डरने का कोई कारण नहीं है। अपनी दुर्बलता पर उसे शर्म भी आयी। "क्या वाक़ई ख़तरा है? क्या वाक़ई वह अब बेहतर नहीं है?" वह अस्फुट स्वर में बोली, "अगर आज हम थियेटर न गये होते तो यह सब भी मेरे दिमाग़ में न आया होता।" इसी क्षण, पानी से काफ़ी ऊंचाई पर उसे एक सफ़ेद सागर-पक्षी दिखायी दिया। शायद मछियारे ने उसे डरा दिया था और वह चुपचाप ऐसी जगह खोजता हुआ टेढ़ा-मेढ़ा उड़ा जा रहा था जहां उतर सके। "यदि वह इस ओर उड़ आये," येलेना ने सोचा, "तो यह शुभ लक्षण होगा। ..." सागर-पक्षी ने चक्कर लगाया, अपने पंख समेटे और घायल जैसा चीत्कार करते हुए कहीं दूर, काले जहाज़ के पीछे गिर गया। येलेना कांप उठी, फिर उसे अपने कांपने पर लाज आयी और वह कपड़े बदले बिना बिस्तर पर इनसारोव के बराबर में लेट गयी जिसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी।

३४

इनसारोव देर से जागा। सिर में मंद पीड़ा हो रही थी और जैसा उसने कहा, सारे शरीर में बेहिसाब कमज़ोरी थी। फिर भी वह उठ बैठा।

"रेनडिच नहीं आया?" उसका पहला सवाल था।

"अभी नहीं," येलेना ने जवाब में कहा और 'ओस्सेरवातोरे त्रिएस्तीनो' अख़बार का ताज़ा अंक उसे दे दिया। उसमें लड़ाई, स्लाव प्रदेशों और रियासतों की विस्तार से चर्चा की गयी थीं। इनसारोव पढ़ने लगा और वह उसके लिए कॉफ़ी बनाने लगी।... दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी।

"रेनडिच," दोनों ने सोचा, मगर दस्तक देनेवाला रूसी में बोला, "आ सकता हूं?" येलेना और इनसारोव ने आश्चर्य-चकित दृष्टि से एक-दूसरे को देखा। उधर जवाब का इंतज़ार किये बिना ठाठ के कपड़े पहने एक आदमी कमरे में आ गया, जिसका चेहरा छोटा व नुकीला और आंखें चंचल थीं। उसकी बाछें खिली जा रही थीं मानो उसने अभी-अभी बड़ी रक़म जीती है या उसे कोई बढ़िया ख़बर मिली है।

इनसारोव कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"आप मुझे नहीं पहचान रहे," बेतकल्लुफ़ी से उसकी ओर बढ़ते हुए और शराफ़त से येलेना के आगे झुकते हुए अपरिचित बोला। "मैं लुपोयारोव हूं। याद है, मास्को में हम य... के यहां मिले थे।"

"हां, य... के यहां," इनसारोव ने कहा।

"ठीक बात है! कृपा करके अपनी पत्नी से मेरा परिचय करा दीजिये। श्रीमती जी, द्मीत्री वसील्येविच का... (फिर सुधारते हुए) निकानोर वसील्येविच का मैंने सदा हृदय से आदर किया है। मुझे बड़ी ख़ुशी है कि आख़िर आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ज़रा सोचिए," उसने इनसारोव की ओर मुड़ते हुए कहा, "मुझे कल शाम ही मालूम हुआ कि आप यहां हैं। मैं भी इसी होटल में ठहरा हूं। यह शहर वेनिस भी ख़ूब है। बस काव्य समझिए! एक बात नाक़ाबिले-बर्दाश्त है–क़दम-क़दम पर आस्ट्रियाई शैतान

नज़र आते हैं। ओह, यह आस्ट्रियाई मुसीबत! बहरहाल, आपने सुना कि डैन्यूब नदी पर निर्णायक संग्राम हुआ। तीन सौ तुर्क अफ़सर मारे गये। सिलीस्त्रिया को फ़तह किया गया, सेर्बिया ने अपनी आज़ादी का ऐलान कर दिया!* एक देशभक्त के नाते आपको बहुत ख़ुश होना चाहिए, है न? मेरा अपना स्लाव ख़ून उबल रहा है! देखिए, मेरी सलाह है कि आप होशियारी बरतें। मुझे यक़ीन है कि आप पर नज़र रखी जाती है। यहां जासूस भरे पड़े हैं! कल एक गुरूघंटाल मेरे पास आया और पूछने लगा कि क्या मैं रूसी हूं। मैंने कहा, मैं तो डेन हूं।... मगर प्रिय निकानोर वसील्येविच, जान पड़ता है, आप बीमार हैं। आपको इलाज कराना चाहिए। श्रीमती जी, देखिए कि आपके पति का ठीक से इलाज हो। मैंने कल पागल की तरह महलों और गिरजों के चक्कर लगाये। आप भी तो डोज का महल देखने गये थे न? हर जगह कितना वैभव है! ख़ास तौर से उस बड़े हॉल में। और मारीनो फ़ालिएरो की ख़ाली जगह! लिखा भी साफ़-साफ़ है, 'अपराधों के लिए सिर काट दिया गया'। मशहूर जेलख़ाने भी मैंने देखे। वहीं मेरा क्रोध भड़क उठा। शायद आपको याद हो—सामाजिक समस्याओं में मुझे हमेशा दिलचस्पी रही है और कुलीनतंत्र का मैंने विरोध किया है। हां, मैंने यहीं—इन जेलख़ानों में कुलीनतंत्र के तरफ़दारों को ला पटका होता। बायरन** ने कितना सही लिखा था, 'खड़ा हुआ वेनिस में मैं आहों के पुल पर।...' यों वह स्वयं कुलीन थे। मैं तो हमेशा प्रगति के पक्ष में रहा हूं। तमाम नौजवान पीढ़ी प्रगति चाहती है। और अंग्रेज़ों व फ़्रांसीसियों के बारे में आपका क्या ख़्याल है? हम भी देखें, वे क्या कर पाते हैं—यह बुस्त्रापा*** और पामर्स्टन। आप जानते हैं, पामर्स्टन प्रधान मंत्री बन गया है। कुछ भी कहिए, रूसी घूंसा कोई हंसी-ठट्ठा नहीं है। यह बुस्त्रापा भयंकर धूर्त्त है! आप चाहें, तो विक्टर ह्यूगो का "प्रतिशोध"****

---

* ये तथ्य लुपोयारोव की कल्पना का खेल मात्र थे।

** १८वीं-१९वीं शताब्दी के प्रसिद्ध अंग्रेज़ कवि।

*** फ़्रांस का नेपोलियन तृतीय।

**** नेपोलियन तृतीय की तानाशाही के विरुद्ध काव्य-संग्रह।

मैं आपको दे सकता हूं। लाजवाब है! 'भविष्य है हरबा परमेश्वर का'—शब्द कुछ-कुछ धृष्टता भरे हैं। पर इनमें शक्ति कितनी है! राजकुमार व्याज़ेम्स्की* ने भी कितना ठीक कहा है, 'योरप बातें करता है बाश-कादिक़-लार की, लेकिन निगाह गड़ी है सिनोप पर।' कविता से मुझे बड़ा प्रेम है। प्रूधों की अंतिम पुस्तक** भी मेरे पास है। मेरे पास सब कुछ है। मालूम नहीं, आप क्या सोचते हैं, मगर मैं लड़ाई से ख़ुश हूं। सिर्फ़ मुझे स्वदेश वापस न बुला लें। मैं यहां से फ्लोरेंस जाने की सोचता हूं और फिर रोम। फ़्रांस जा नहीं सकता, इसलिए स्पेन का इरादा है। कहते हैं वहां की नारियां बेजोड़ हैं। बस ग़रीबी बहुत है और कीड़ों-मकोड़ों की भरमार है। मैं कैलीफ़ोर्निया जा सकता हूं—हम रूसियों के लिए कुछ भी असंभव नहीं। लेकिन एक सम्पादक को मैंने भूमध्य सागर में व्यापार के सवाल की बाक़ायदे खोजबीन करने का वचन दे दिया है। शायद आप सोचें कि विषय दिलचस्प नहीं है। यह एक विशेष विषय है परंतु हमें विशेषज्ञों की ज़रूरत है, बड़ी ज़रूरत है। दार्शनिकता की बातें हमने बहुत कर लीं, अब हमें चाहिए अमल, ठोस अमल।... निकानोर वसील्येविच, आपकी तबियत काफ़ी ख़राब है और हो सकता है, मैं आपको थका रहा हूं। लेकिन ख़ैर, थोड़ी देर और बैठूंगा..."

लुपोयारोव इसी तरह बहुत समय तक बकबक करता रहा और जाते हुए फिर आने का वायदा कर गया।

ऐसे अप्रत्याशित आगमन से निढाल होकर इनसारोव सोफ़े पर लेट गया।

"यही है आपकी नौजवान पीढ़ी!" उसने येलेना की ओर देखकर कटुता से कहा। "लोग बढ़-चढ़कर बोलते हैं, दिखावा करते हैं, लेकिन अंदर से वे भी ऐसी ही ढोल की पोल हैं जैसे ये हज़रत।"

येलेना ने पति से बहस नहीं की। इस समय उसे रूस की तमाम नौजवान पीढ़ी की हालत से कहीं अधिक चिंता इनसारोव

---

* १९वीं शताब्दी के रूसी कवि।
** फ़्रांसीसी विद्वान की पुस्तक 'सामाजिक क्रांति'।

की कमज़ोरी की थी।... उसके बराबर में बैठकर उसने क़सीदे का काम हाथ में ले लिया। इनसारोव आंखें बंद किये अचल पड़ा था। बहुत पीला और हड्डियों का ढांचा दिखायी देता था। येलेना ने उसकी अत्यंत तीखी हो गयी आकृति और निर्जीव से पड़े हाथों को देखा और यकायक उसके हृदय में भय समा गया।

"द्मीत्री ..." वह बोली।

उसके बदन में हरकत हुई।

"क्या है? रेनडिच आ गया?"

"अभी नहीं।... लेकिन सुनो, तुम्हें बुख़ार है, सचमुच तुम्हारी तबियत ख़राब है... डाक्टर को न बुला लिया जाये?"

"तुम्हें इस भड़भड़िये ने डरा दिया है। ज़रूरत नहीं है। मैं थोड़ा आराम करूंगा और सब ठीक हो जायेगा। खाने के बाद हम लोग फिर निकल चलेंगे।... किसी तरफ़।"

दो घंटे बीत गये।... इनसारोव अभी भी सोफ़े पर लेटा था पर सो नहीं पा रहा था। हां, आंखें बंद किये था। येलेना उसके पास से हटी नहीं। क़सीदे का काम गोद में गिरा दिया था और वह स्थिर बैठी थी।

"सो क्यों नहीं पाते?" आख़िर उसने पूछा।

"थोड़ा ठहरो," उसका हाथ लेकर उसने अपने सिर के नीचे रख लिया। "हां, अब ठीक है। रेनडिच ज्यों ही आये, मुझे फ़ौरन जगा देना। अगर वह कहे कि जहाज़ तैयार है तो हम फ़ौरन रवाना हो जायेंगे।... सामान समेट लेना चाहिए।"

"बांधने में समय नहीं लगेगा," येलेना ने जवाब दिया।

"यह ढपोरसंख लड़ाई के बारे में, सेर्बिया के बारे में क्या बक रहा था," इनसारोव ने कुछ देर के बाद कहा। "लगता है सब गढ़ लिया है। लेकिन हमें जाना चाहिए, जाना ही चाहिए। समय बरबाद नहीं कर सकते।... तैयारी कर लो।"

वह सो गया और कमरे में निस्तब्धता छा गयी।

येलेना ने अपना सिर आरामकुर्सी की पीठ पर टेक लिया और काफ़ी समय तक खिड़की के बाहर देखती रही। मौसम बिगड़ गया था। तेज़ हवा चलने लगी थी, बड़े-बड़े, सफ़ेद बादलों के टुकड़े आसमान में उड़ रहे थे। दूरी पर एक पतला मस्तूल झूम

रहा था और रेड क्रास के निशानवाला लम्बा फ़रहरा लहरा रहा था। वह लटक जाता था और फिर से लहराने लगा था। पुरानी घड़ी के पेन्डुलम की तकलीफ़ भरी टिकटिक में दुख की भनक थी। येलेना ने आंखें बंद कर लीं। सारी रात वह करवटें बदलती रही थी, अब धीरे-धीरे उसे झपकी लग गयी।

उसने एक अजीब सपना देखा। उसे लगा कि ज़ारीतसिन के जलाशय में वह कुछ अजनबी लोगों के साथ नौका विहार कर रही है। वे मौन और अचल बैठे हैं। कोई भी नाव नहीं खे रहा, वह अपने आप चलती जाती है। येलेना को भय नहीं लगता परंतु मन उदास है। वह जानना चाहती है कि ये लोग कौन हैं और वह उनके साथ क्यों बैठी है? उसके देखते-देखते जलाशय फैलने लगता है, किनारे ग़ायब हो जाते हैं। अब वह जलाशय नहीं, एक अशांत सागर है। विशाल, नीली, निःशब्द लहरें नाव को खूब झुला रही हैं। इतने में समुद्र की तली से कोई भयंकर चीज़ गरजती हुई ऊपर उठती है। अनजाने साथी यकायक उछल पड़ते हैं, चीखते हैं, हाथ फटकारते हैं।... येलेना उनके चेहरे पहचान लेती है। उसके पिता भी उनमें हैं। कहीं से एक सफ़ेद बवंडर लहरों के ऊपर उड़ता हुआ आता है... और सब कुछ चक्कर खाकर उलट-पलट हो जाता है।...

येलेना देख रही है: आसपास पहले की तरह हर वस्तु सफ़ेद है। परंतु यह बर्फ़ है – अनंत क्षितिज तक फैली बर्फ़। और अब वह नाव में नहीं है। वह गाड़ी में जा रही है जैसे मास्को से चली थी। वह अकेली नहीं है। उसके बराबर में फटे-पुराने ज़नाने कोट में सिमटा कोई छोटा सा प्राणी बैठा है। येलेना ने ध्यान से देखा: यह तो कात्या है, उसकी ग़रीब सहेली। येलेना को बड़ा डर लगा। सोचने लगी: "क्या वह मरी नहीं?"

"कात्या, हम दोनों कहां जा रहे हैं?"

कात्या उत्तर नहीं देती और ज़नाने कोट में दुबक जाती है, सर्दी से उसकी दांती बज रही है। येलेना को भी ठंड लगती है। वह रास्ते को देख रही है। आगे, बर्फ़ की गर्द के पार उसे शहर दिखायी देता है। रुपहले गुम्बदोंवाली ऊंची-ऊंची सफ़ेद मीनारें हैं।... "का-त्या, कात्या, क्या यह मास्को है?" – "नहीं," येलेना सोचती

है, "यह तो सोलोव्की मठ है, वहां छत्ते जैसी बहुत सी छोटी और तंग कोठरियां हैं। वहां जगह कम है, दम घुटता है – द्मीत्री वहीं क़ैद है। मुझे उसे छुड़ाना चाहिए। ..." अचानक एक भूरा सा चौड़ा अथाह खड्ड उसके आगे खुल जाता है। गाड़ी नीचे गिर जाती है और कात्या हंसती है। "येलेना, येलेना," पाताल से आवाज़ आती है।

"येलेना!" उसके कानों ने साफ़-साफ़ सुना। झटके के साथ उसने सिर उठाया, गर्दन मोड़ी और वह जड़ हो गयी। बर्फ़ जैसा, उसके सपने की बर्फ़ जैसा सफ़ेद इनसारोव सोफ़े पर आधा लेटा आधा बैठा फटी-फटी, चमकती हुई भयत्रस्त आंखों से उसे देख रहा था। बाल माथे पर उलझे थे और होंठ बेतरह खुले थे। यकायक बदल गये उसके चेहरे पर दुख भरे स्नेह में लिपटा ख़ौफ़ झलक रहा था।

"येलेना!" वह बोला। "मैं ... मर रहा हूं।"

चीख़ मारकर वह घुटनों पर गिरी और उसके सीने से चिपट गयी।

"सब ख़त्म ... हो गया," इनसारोव ने दोहराया। "मैं ... मर रहा हूं ... अलविदा, मेरी प्यारी! अलविदा, मेरे वतन!"

और वह सोफ़े पर पीठ के बल गिर गया।

येलेना कमरे के बाहर झपटकर मदद के लिए पुकारने लगी। बैरा डाक्टर को बुलाने दौड़ गया। येलेना इनसारोव से लिपट गयी।

इसी वक़्त चौड़े कंधे और धूप से तपे चेहरेवाला, मोटा ओवरकोट पहने और मोमजामे का नीचा टोप लगाये एक आदमी दहलीज़ पर आ खड़ा हुआ। घबराकर वह वहीं ठिठक गया।

"रेनडिच!" येलेना चिल्लायी। "आ गये! भगवान के लिए, देखिए इनकी क्या हालत है! इनको क्या हो गया? हे भगवान! कल यह घूमने निकले थे। अभी मुझसे बात कर रहे थे कि ..."

रेनडिच ने कुछ नहीं कहा और एक ओर को हट गया। विग पहने और चश्मा लगाये एक छोटा सा आदमी फुर्ती से उसकी बग़ल से अंदर आया। यह डाक्टर था जो उसी होटल में रहता था। वह इनसारोव के पास पहुंचा।

"सिन्योरा," उसने कुछ मिनट के बाद कहा, "विदेशी सज्जन की मृत्यु हो गयी। अनेयूरिज़्म और फेफड़े का रोग था।"

३५

अगले दिन उसी कमरे में रेनडिच खिड़की के पास खड़ा था और उसके सामने येलेना शाल ओढ़े बैठी थी। बराबर के कमरे में ताबूत में इनसारोव का शव रखा था। येलेना का चेहरा भयग्रस्त और निर्जीव था। उसके माथे पर भौंहों के बीच दो रेखाएं बन गयी थीं जिनसे उसकी स्थिर आंखों में कसाव का पुट आ गया था। खिड़की पर आन्ना वसील्येव्ना का खुला हुआ ख़त रखा था। उन्होंने बेटी को, अधिक नहीं तो, एक महीने के लिए ही मास्को बुलाया था। उन्होंने अपने अकेलेपन और स्ताख़ोव का रोना रोया था, इनसारोव का अभिवादन किया था, उसकी सेहत के बारे में पूछा था और उससे अनुरोध किया था कि वह पत्नी को जाने दे।

रेनडिच डलमाटिया का रहनेवाला जहाज़ी था। इनसारोव उससे अपने बलगारिया भ्रमण के समय मिला था, फिर वेनिस में ढूंढ़ लिया था। वह रूखा और गंवार आदमी था, पर था हिम्मती और स्लावों का ध्येय उसे प्यारा था। तुर्कों से वह नफ़रत करता था और आस्ट्रियावालों को देखना उसे गवारा नहीं था।

"आप वेनिस में कब तक रुकेंगे?" येलेना ने उससे इतालवी भाषा में पूछा। चेहरे की तरह उसकी आवाज़ में भी जान नहीं थी।

"एक दिन चाहिए ताकि शक पैदा किये बिना सामान लाद लें। फिर सीधे ज़ारा की तरफ़ बढ़ जायेंगे। अपने देशवासियों के लिए मैं कोई ख़ुशख़बरी नहीं ले जा रहा। बहुत समय से इनकी बाट देखी जा रही थी, इनसे बड़ी उम्मीदें थीं।"

"इनसे बड़ी उम्मीदें थीं," येलेना ने यंत्रवत दोहराया।

"आप इन्हें दफ़न कब करेंगी?" रेनडिच ने पूछा।

येलेना ने कुछ ठहरकर उत्तर दिया:

"कल।"

"कल? तो मैं रुक जाऊंगा। इनकी क़ब्र में मुट्ठी भर मिट्टी डालना चाहता हूं। आपका हाथ भी बंटाना चाहिए। काश इन्हें स्लाव धरती में लिटाया जा सकता!"

येलेना ने उसे ग़ौर से देखा।

"कप्तान," वह बोली, "मुझे इनके साथ जहाज़ पर चढ़ा लीजिए और यहां से दूर, सागर के उस पार पहुंचा दीजिए। क्या यह मुमकिन है?"

रेनडिच सोचने लगा।

"मुमकिन है, हां, दौड़-धूप करनी होगी। यहां के बेरहम हाकिमों से निबटना पड़ेगा। अच्छा, मान लीजिए हम यह सारा बंदोबस्त कर लेते हैं, इनको वहां दफ़ना भी देते हैं – लेकिन आपको मैं वापस कैसे लाऊंगा?"

"आपको वापस लाना नहीं पड़ेगा।"

"क्या? तो आप कहां रहेंगी?"

"अपने लिए जगह मैं खोज लूंगी। सिर्फ़ आप हमें ले चलिए; मुझे ले चलिए।"

रेनडिच सिर खुजलाने लगा।

"आप जानें; मगर इस सब में झंझट बहुत है। जाता हूं, कोशिश करूंगा। आप मेरा यहीं इंतज़ार कीजिए। दो-एक घंटे में आ जाऊंगा।"

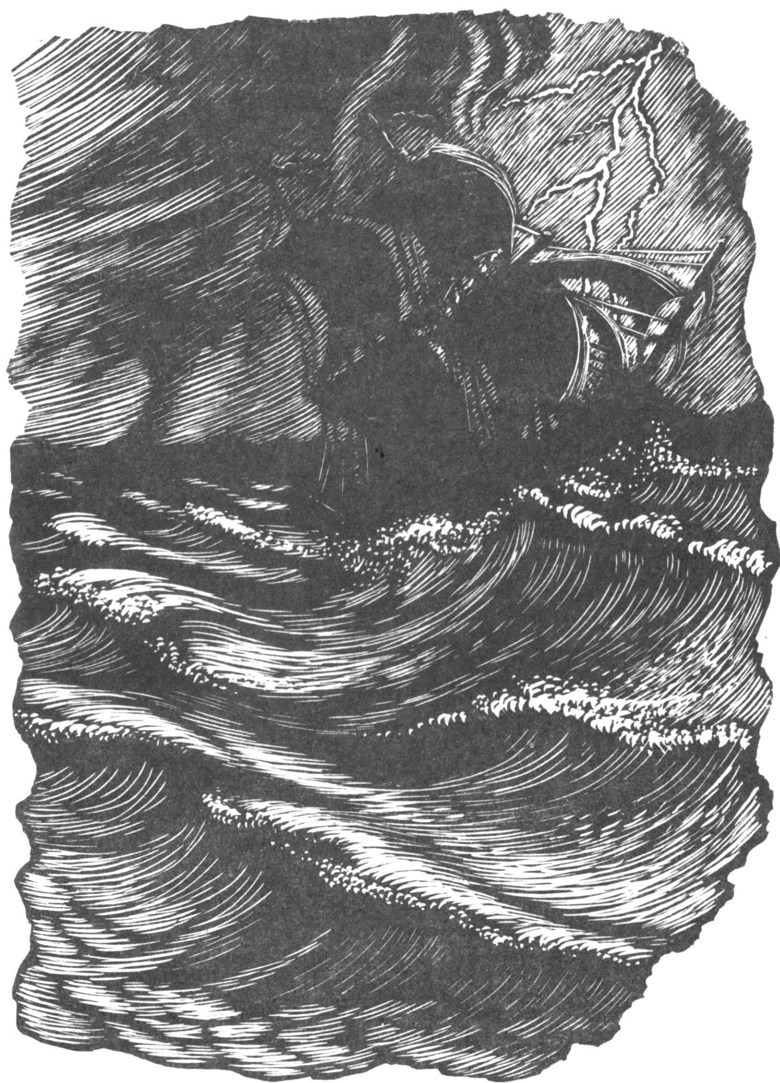
वह चला गया। येलेना बराबर के कमरे में गयी, दीवार से पीठ टेकी और बड़ी देर तक बुत बनी खड़ी रही। फिर वह घुटनों के बल बैठी परंतु प्रार्थना न कर सकी। उसके मन में शिकायत नहीं थी। ईश्वर से वह पूछने का साहस न बटोर पायी कि उसने इनसारोव को ज़िंदगी क्यों नहीं बख़्शी, उस पर दया क्यों नहीं की, बचाया क्यों नहीं और यदि उसने कोई अपराध ही किया था, तो अपराध से कहीं अधिक दंड क्यों दिया? हममें से हर कोई इस कारण ही अपराधी है कि वह जीवित है और ऐसा कोई महान विचारक नहीं है, मानवजाति का ऐसा कोई उद्धारक नहीं है जो, चूंकि उसने लाभकारी कार्य किये हैं, इसलिए उनके बल पर जीवित रहने के अधिकार का दावा कर सके।... किंतु येलेना प्रार्थना न कर सकी। वह तो पत्थर हो गयी थी।

उसी रात उस होटल से, जिसमें इनसारोव दम्पति रहे थे, एक चौड़ी नाव चल पड़ी। नाव में रेनडिच के साथ येलेना बैठी थी और काले कपड़े से ढंका एक लम्बा बक्सा रखा था। कोई घंटे भर के सफ़र के बाद वे आखिर दो मस्तूलोंवाले एक मामूली जहाज़ के पास पहुंचे जो बंदरगाह के द्वार पर ही लंगर डाले खड़ा था। येलेना और रेनडिच जहाज़ पर चढ़े। मल्लाहों ने बक्सा लादा। आधी रात के बाद तूफ़ान उठा मगर सुबह होने तक जहाज़ लीडो को पार कर चुका था। दिन के दौरान तूफ़ान ने भयंकर रूप धारण कर लिया। 'लायड' के दफ़्तरों में अनुभवी जहाज़ियों ने अपने सिर हिलाये और कहा: कुछ भी हो सकता है। वेनिस, ट्रिएस्ट और डलमाटिया के तटों के बीच एड्रियाटिक सागर बेहद खतरनाक है।

वेनिस से येलेना के रवाना होने के तीन सप्ताह बाद मास्को में आन्ना वसील्येव्ना को यह खत मिला:

"मेरे प्यारे माता-पिता, आप लोगों से मैं हमेशा के लिए विदा ले रही हूं। कल द्मीत्री का देहांत हो गया। मेरे लिए सब कुछ समाप्त हो गया। उनका शव लेकर आज मैं ज़ारा जा रही हूं। मैं उन्हें दफ़नाऊंगी, फिर मेरा क्या होगा, मैं नहीं जानती! लेकिन अब द... की मातृभूमि के सिवा मेरी कोई और मातृभूमि नहीं है। वहां विद्रोह की तैयारियां हो रही हैं, लोग लड़ने के लिए कमर कस रहे हैं। मैं नर्स बन जाऊंगी। बीमारों और घायलों की तीमारदारी करूंगी। नहीं जानती, मेरा क्या होगा, लेकिन द... की मृत्यु के बाद मैं उनकी स्मृति के प्रति, उनके समूचे जीवन के ध्येय के प्रति निष्ठावान बनी रहूंगी। मैंने बलगार और सेर्ब भाषाएं सीख ली हैं। हो सकता है, यह सब मैं सहन न कर पाऊं—वही बेहतर होगा। मैं खड्ड के सिरे पर पहुंचा दी गयी हूं और मुझे गिरना ही होगा। हमारा भाग्य अकारण नहीं जुड़ गया। कौन जाने, हो सकता है मैंने ही उनके प्राण ले लिए और अब मुझे अपने पास बुला लेने की उनकी बारी है। मैंने सुख की खोज की और हो सकता है, मृत्यु को प्राप्त करूं। शायद यही होना था, लगता है, मैंने सचमुच अपराध किया था... परंतु मृत्यु सब पर पर्दा डाल देती है, सब कुछ बराबर हो जाता है – है न यही बात? आप लोगों को मैंने जो भी दुख पहुंचाये, उनके लिए मुझे क्षमा कीजिए। वह मेरे





बस में नहीं था। मैं रूस लौटूं – तो किसलिए? रूस में मैं करूंगी क्या?

मैं अंतिम चुम्बन और शुभकामनाएं भेज रही हूं। मेरा तिरस्कार न कीजिए।

ये० "

उस समय से लगभग पांच वर्ष बीत गये हैं, परंतु येलेना की कोई और ख़बर नहीं मिली। सभी पत्रों और पूछताछ का कोई फल नहीं निकला। स्वयं निकोलाई अर्तेम्येविच स्ताखोव शांति हो जाने के बाद वेनिस और ज़ारा बेकार गये। वेनिस में उन्हें वही पता चला जो पाठकों को मालूम है। और ज़ारा में कोई भी उन्हें रेनडिच और उसके द्वारा किराये पर लिये गये जहाज़ की पक्की ख़बर न दे सका। गोलमोल अफ़वाहें ज़रूर सुनने में आयीं कि कुछ बरस पहले ज़बरदस्त तूफ़ान के बाद समुद्र की लहरों ने एक ताबूत तट पर ला पटका था जिसमें एक आदमी का शव था।... दूसरी, और अधिक विश्वस्त सूचनाओं के अनुसार ताबूत को समुद्र ने नहीं ला पटका था बल्कि वह एक विदेशी महिला द्वारा, जो वेनिस से आयी थीं, लाया गया था और तट के पास दफ़ना दिया गया था। कुछ लोगों ने यह भी कहा कि उस महिला को बाद में हेर्ज़े-गोवीना में एक सेना के साथ देखा गया था जिसका उन दिनों गठन हो रहा था। उसकी पोशाक तक बतायी गयी। कहा गया कि वह सिर से पैर तक काले लिबास में थी। हुआ कुछ भी हो, पर येलेना के चिन्हों का हमेशा के लिए पूरी तरह लोप हो गया। कोई नहीं जानता कि वह अभी ज़िंदा है, कहीं छिपी हुई है या उसकी छोटी जीवन-लीला समाप्त हो गयी, उसका हल्का बबूला फूट गया और मृत्यु ने अपना पावना पा लिया। ऐसा भी होता है कि आदमी की आंख खुलती है और वह घबराकर अपने से पूछता है: क्या, मैं तीस का... चालीस का... पचास का हो गया? ज़िंदगी इतनी जल्दी कैसे बीत गयी? मौत इतनी क़रीब कैसे आ गयी? मौत तो मछियारे की तरह है जो मछली को जाल में फंसाने के बाद कुछ समय तक पानी में ही रखता है; मछली अभी भी तैरती है

लेकिन वह जाल में फंसी है और मछियारा – जब उसका जी चाहेगा, खींच लेगा।

हमारी कहानी के दूसरे पात्रों का क्या बना?

आन्ना वसील्येव्ना अभी जीवित हैं। गहरी चोट के बाद वह बहुत बूढ़ी लगती हैं। शिकायत अब कम करती हैं, लेकिन ग़मगीन कहीं ज़्यादा रहती हैं। स्ताख़ोव भी बुढ़ा गये हैं और बाल सफ़ेद हो गये हैं। अव्गुस्तीना ख्रिस्तिआनोव्ना से उन्होंने नाता तोड़ लिया है।... अब वह सभी परदेशियों को खरी-खोटी सुनाते हैं। उनके घर की देखभाल करनेवाली एक तीस बरस की सुंदर रूसी नारी हैं जो सिल्क की पोशाकें और सोने की अंगूठियां व बुंदे पहनती हैं। कुरनातोव्स्की चूंकि रसिक जीव थे और काले बालोंवाले जवां-मर्द होने के बल पर प्यारी सुवर्णकेशियों पर डोरे डालते थे, इसलिए उन्होंने ज़ोया से शादी कर ली। वह उनकी इतनी आज्ञाकारिणी बन गयी है कि उसने जर्मन में सोचना तक बंद कर दिया है। बेरसेनेव हाइडेलबर्ग में हैं। राज्य के ख़र्च पर उन्हें विदेश भेजा गया। वह बर्लिन और पेरिस का भ्रमण कर आये हैं और अपना समय बेकार बरबाद नहीं करते। वह एक योग्य प्रोफ़ेसर बन जायेंगे। विद्वान लोगों ने उनके दो लेखों का स्वागत किया है। एक का शीर्षक है: 'अदालती सज़ा के सिलसिले में पुराने जर्मन क़ानून की कुछ ख़ासियतें' और दूसरे का शीर्षक है: 'सभ्यता के विकास में नगरों का महत्व'। खेद की बात केवल यह है कि दोनों लेख कुछ क्लिष्ट भाषा में लिखे गये हैं और विदेशी शब्दों का बड़ा उपयोग हुआ है। शूबिन रोम में हैं। उन्होंने अपने को पूरी तरह कला के चरणों में झुका दिया है और उन्हें एक सबसे उल्लेखनीय तथा उदीयमान युवा मूर्तिकार माना जाता है। छिद्रान्वेशी दर्शक सोचते हैं कि प्राचीन कला का उन्होंने पर्याप्त अध्ययन नहीं किया, उनमें "स्टाइल" नहीं है और वे उन्हें फ़ांसीसी शैली में शामिल करते हैं। अंग्रेज़ों और अमरीकियों से उन्हें बहुत आर्डर मिलते हैं। उनकी 'बैकांटे'* का पिछले दिनों बड़ा शोर हुआ। रूसी काउंट बोबोश्किन

---

* यूनान के मदिरा देवता बैक्कस की पुजारिन।

जो जाने-माने रईस हैं, उसे एक हज़ार स्कूडो में ख़रीदनेवाले थे, लेकिन बाद में उन्होंने दूसरे मूर्तिकार, एक शुद्ध फ़्रांसीसी को 'ऋतु-राज के सीने पर प्रेम की ख़ातिर दम तोड़ती ग्रामबाला' के लिए तीन हज़ार स्कूडो देना बेहतर समझा। शूबिन कभी-कभा उवार इवानोविच को चिट्ठी लिखते हैं – वही अकेले हैं जो ज़रा भी नहीं बदले। हाल में शूबिन ने उन्हें लिखा, "आपको याद है कि उस रात जब बेचारी येलेना के विवाह का पता चल गया था और मैं आपके पायंते बैठा आपसे बातें कर रहा था, आपने मुझसे क्या कहा था? आपको याद है तब मैंने पूछा था, 'क्या हमारे यहां सच्चे इंसान होंगे?' और आपने जवाब दिया था, 'होंगे।' ओ प्रकृति की संतान! अब मैं यहां से, अपने सुंदर प्रवास-स्थान से एक बार फिर पूछता हूं, 'बताइए, उवार इवानोविच, क्या वे होंगे?"

उवार इवानोविच ने अपनी उंगलियां नचायीं और रहस्यमय दृष्टि से दूर देखने लगे।

१८५६

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और यहां के लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी। हमारा पता है:

रादुगा प्रकाशन
१७, जूबोव्स्की बुल्वार,
मास्को, सोवियत संघ





इवान तुर्गेनेव (१८१८–१८८३) के कालजयी उपन्यास 'पूर्ववेला' का उनकी रचनाओं और पिछली शताब्दी के सातवें दशक के तमाम साहित्य में विशेष स्थान है। उपन्यास (१८५९) के प्रधान नायकों को तुर्गेनेव ने "नये जीवन के अग्रदूत" बताया था।

मातृभूमि से प्रेम, उसकी आज़ादी के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देने की लालसा ही बलगार इनसारोव के जीवन का मूलमंत्र है। और रूसी युवती येलेना पूरी आस्था के साथ उसका अनुसरण करती है, उसकी पत्नी बन जाती है। बीमार पति के साथ वह उसके देश जाती है और इनसारोव की मृत्यु के बाद समान ध्येय की ख़ातिर वहीं रहने लगती है।

येलेना स्ताख़ोवा का चरित्र "तुर्गेनेव की नारियों" की अद्भुत चित्रशाला का अभिन्न अंग है। लेव तोलस्तोय ने लिखा था, "... जैसे चरित्र उन्होंने आंके, वैसी नारियां, हो सकता है, न रही हों, लेकिन उनके द्वारा चित्रण के बाद ऐसी नारियों का जन्म हो गया। ... तुर्गेनेव की नारियों को स्वयं मैंने जीवन में देखा है।"

ISBN 5-05-001087-X